

Nagari Pracharini Granthmala Series—No. 3.

सूदन कवि कृत

^K
Sudama, Kavi सुजान चरित्र

अर्थात्

भरतपुर के राजा सुजानसिंह के युद्धों का

वर्णन

जिसे

श्री राधाकृष्णदास

ने

सम्पादित किया

और

काशी नागरी प्रचारिणी सभा

ने

प्रकाशित किया।

1902

PRINTED AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

Price Rs. 2.]

[रुप २]

भूमिका

—:०:—

हिन्दुस्तान में मुसलमानी राज्य के मित्र रूपी शत्रु प्रवल-प्रतापी औरङ्गजेब के सन् १७०७ ई० में मरने पर चारों ओर अराजकता फैल गई और मुसलमानी राज्य की जड़ में जो दीसक लग गए थे उन्होंने प्रगट रूप से काट काट कर पच्चड़ गिराना आरम्भ कर दिया। पञ्जाब में सिक्ख, दक्षिण में महाराष्ट्र और राजपुताने में मेवारी और मारवाड़ी क्षत्रिय तो जोर पकड़ ही रहे थे, इधर दिल्ली के परोस ही में भरतपुर से जाट जाति के एक साधारण ठाकुर ने दर्शन दिया और यहां तक अपना प्रताप बढ़ाया कि अनहोनी का होना कर दिखाया। जिस दिल्ली की ओर आंख उठाकर देखने का भी किसी को साहस नहीं होता था, उसे इन लुटेरों ने लूट कर तहस नहस कर डाला और लूट के माल को अपने डींग के भवन में चिरकाल तक स्मारक रूप में स्थापित करके अपनी अचल कीर्ति दृढ़ कर दिया—इस ग्रन्थ में उसी जाट वंश के आदि अभ्युदय का वृत्तान्त वर्णित है—यह ग्रन्थ विशेष आदरणीय दो कारणों से है। एक तो इसके ऐसे बीर रस के उत्तम काव्य हिन्दी में विरले ही मिलते हैं। दूसरे यह कि कवि स्वयं इन वृत्तान्तों को अपनी आंखों से देखकर लिखता है उस पर भी विशेषता यह है कि यद्यपि कवि को चिर प्रचलित प्रथा के अनुसार खुशामद से ग्रन्थनायक की बहुत कुछ बढ़ाई करनी पड़ी है, परन्तु फिर भी उसने शत्रुओं

के यथार्थ गुण वर्णन में कहीं त्रुटि नहीं की है और कहीं कहीं अपने स्वामी की हेठाई की बात भी बहुत ही चतुरता से बचाकर कह गया है। उत्तम कवि होने के अतिरिक्त वह कई भाषाओं का जानकार और विशेष अनुभवी मनुष्य था, जैसा कि उसके ग्रन्थ के देखने से विदित होता है। उसने उस समय के प्रचलित अस्त्र, शस्त्र, कपड़े, गहिने, बरतन, पशु, पक्षी, वाहन, मेवे, फल आदि यावत् पदार्थों के इतने नाम गिनाए हैं जिनका कुछ दिनों पीछे लोग नाम तक न जानेंगे—यदि स्वास्थ्य मुझे अवसर देगा तो मैं इस ग्रन्थ में आए पदार्थों और शब्दों का एक ठोटा सा कोष सा बनाकर पीछे से प्रकाशित करने की इच्छा रखता हूँ।

इस ग्रन्थ की खोज मैंने मुसल्मानी राज्य के अन्तिम समय के प्रसिद्ध इतिहास-वेत्ता मिस्टर हर्विन साहब के लिये की थी परन्तु ग्रन्थ मिलने पर मुझे ऐसा रुचा कि मैंने अकेले ही इसका स्वाद चखना उचित न समझा और ग्रन्थ-माला द्वारा अपने मित्रों को भी भेंट किया—इसकी कई प्रति भेगाई गई, पर प्रायः सभी ऐसी अशुद्ध मिलीं कि पढ़ना और समझना कठिन था, बड़े परिश्रम से कई प्रति मिलाकर शोध कर मैंने इसे प्रकाशित किया। एक बेर यह ग्रन्थ भरतपुर राज्य की ओर से लीथो में छपा भी था परन्तु अब उसका दर्शन भी नहीं मिलता और शुद्धता के विषय में वह प्रशंस्य ही है।

मिस्टर ग्राउस साहब ने अपनी मथुरा नाम की पुस्तक में इस वंश का वृत्तान्त यों लिखा है कि "इस वंश का

स्थापनकर
जिसने ही
छोटे छोटे
छूट मार
के समय २
दिया था,
मणि से ल
न प्राप्त हो
सिंह महार
बढ़ाई कर
बढ़ा दिया-
और बदना
रहे ठाकुर।
कर लिया ३
कर यह सर्व
उपनाम बुज
बुजानसिंह
आशाकारी
जब तक वह
मरने पर रा
मुगलों के हा
राजा हुए।।
है, ग्रन्थकर्ता
का वृत्तान्त
करते हुए ग्र

र कहीं
चतुरता
रेक्त वह
गुण था,
। उसने
बरतन,
के इतने
तक न
ग्रन्थ में
बनाकर

अन्तिम
हृष के
के मैंने
ग्रन्थ-
ो कई
पढ़ना
साकर
ग्रन्थ
अब
। वह

स्तक
का

स्थापनकर्ता चूड़ामणि नाम का एक लुटेरों का सदाँर था, जिसने डींग से कुछ दक्षिण धून और सिनसिनी गाँव में दो छोटे छोटे किले बनवाए थे— इन्हों किलों से वह इधर उधर लूट मार मचाया करता था, यहां तक कि दक्षिण की चढ़ाई के समय उसने औरङ्गजेब की सेना को भी बढ़ने से रोक दिया था, थोड़े दिन पीछे जयपुर के महाराज जयसिंह, चूड़ामणि से लड़ने के लिये भेजे गए परन्तु जैसी चाहिए सफलता न प्राप्त हो सकी। कुछ दिनों के पीछे चूड़ामणि का भाई बदनसिंह महाराज जयसिंह से आकर मिला। इसकी सहायता से चढ़ाई करके छ महीना लड़कर जयसिंह ने धून के किले को ढहा दिया— चूड़ामणि अपने बेटे मुहकम के साथ भाग गया और बदनसिंह डींग में जाटों का सदाँर स्थापित हुआ और इसे ठाकुर का खिताब मिला। बदनसिंह को चूड़ामणि ने कैद कर लिया था, इसीसे उसे क्रोध आया और कैद से भाग कर यह सर्वनाश किया।” इन्हीं बदनसिंह के बेटे सूरजमल्ल उपनाम सुजानसिंह थे जिनका चरित्र इस ग्रन्थ में वर्णित है सुजानसिंह पिता से अधिक पराक्रमी होने पर भी ऐसे आज्ञाकारी थे कि बिना उनकी आज्ञा कुछ न करते और जब तक वह जीते रहे आप राजगी का खिताब न लिया, उनके मरने पर राजा हुए। सुजानसिंह सन् १७६४ में शाहदरा में मुगलों के हाथ से मारे गए, और उनके बड़े बेटे जवाहिर सिंह राजा हुए। परन्तु इस ग्रन्थ में पूरा वृत्तान्त सूरजमल्ल का नहीं है, ग्रन्थकर्ता ने केवल मरहट्टों से लड़ाई आरम्भ होने के पहिले का वृत्तान्त दिया है और भगवान से इनकी जय की प्रार्थना करते हुए ग्रन्थ समाप्त कर दिया है। पर समाप्त करने पर भी

उसने ग्रन्थ की 'इति' नहीं की है, क्योंकि हर एक अङ्क के अन्त में ग्रन्थकर्ता ने "भूपाल पालक भूमिपति बदनस नन्दकुमार है" यह छन्द लगाया है परन्तु अन्त में न तो यह छन्द ही लगाया है और न "इति श्री" ही लगाई है, इससे स्पष्ट जान पड़ता है कि कवि की इच्छा उस समय तक के वृत्तान्त लिख कर फिर आगे के वृत्तान्त लिखने की थी, जो किसी कारण से पूरी न हो सकी और ग्रन्थ यहाँ तक रह गया। जो हो ग्रन्थ इतिहास और काव्य दोनों दृष्टि से उत्तम हुआ है और आदरणीय है।

श्री राधाकृष्णदास ।

१ प्रथम पङ्क्ति—महाराज
बदना, भाषा ५
नित्य वपन, भर

२ द्वितीय पङ्क्ति—कोट
पुत्र नवाय फले
सिंह के यहाँ ५
चढ़ाई का समा
सुजानसिंह का
उनका भाकर
(सम्मत १८०२)

३ तृतीय पङ्क्ति—मुख
सहायता में था
फिर प्राय प्राय
में आकर डेर
लड़ाई के लिये

४ चतुर्थ पङ्क्ति—युद्ध
असद खाँ का
सेना का भाग
भेजकर सुजान

५ प्रथम पङ्क्ति—मा
माधोसिंह के

के अन्त
दुकुमार
छन्द ही
से स्पष्ट
वृत्तान्त
कि किसी
गया।
उत्तम

दास।

सूची

प्रथम जङ्ग

पृष्ठ

- १ प्रथम अङ्क—मङ्गलाचरण, संस्कृत कवियों की वन्दना, भाषा कवियों के नाम और वन्दना, निज वर्णन, भरतपुर राजवंश वर्णन, ... १ से ७
- २ द्वितीय अङ्क—कोल के नवाब साबित खां के पुत्र नवाब फ़तेह अली के दूत का सुजानसिंह के यहां आना और असद खां की चढ़ाई का समाचार कहकर सहायता मांगना सुजानसिंह का फ़तेह अली को बुलाना उनका आकर मिलना और परामर्श होना (सम्बत १८०२) ... ७ से १२
- ३ तृतीय अङ्क—सुजानसिंह का फ़तेह अली की सहायता में चण्डीस को सेना भेजना और फिर आप आना, असद खां का भी चण्डीस में आकर डेरा जमाना, दोनो सेना का लड़ाई के लिये सज कर सामना करना ... १२ से १८
- ४ चतुर्थ अङ्क—युद्ध आरम्भ होना, गोली लगकर असद खां का मारा जाना, और उसकी सेना का भागना, फ़तेह अली को कोल में भेजकर सुजानसिंह का घर लौटना ... १८ से २४

द्वितीय जङ्ग

- १ प्रथम अङ्क—ग्रामेर के राजा ईश्वरसिंह पर माधोसिंह को साथ लेकर दक्षिणियों की

(२)

चढ़ाई, आमेरवालों का सुजानसिंह से सहा-
यता मांगना, सुजानसिंह का जानेके लिये
प्रस्तुत होना (सम्वत् १८०४) ... पृष्ठ २४ से २८

२ द्वितीय अङ्क—सुजानसिंह का कुम्भेर से कूच
करना, दो मुकाम करके जैपुर पहुँचना,
राजा ईश्वरीसिंह से मिलना, लड़ाई के लिये
दोनो सेनाओं का सजकर सामना करना,
लड़ाई का आरम्भ, दक्षिणी मल्लारराव की
सेना का हार खाकर इस मोती डूंगरी
की लड़ाई से पीछे हटना ... २८ से ३२

३ तृतीय अङ्क—मल्लारराव का पीछा करके
बगरू महल में जैपुर नरेश का डेरा देना,
दक्षिणियों का छिप छिप कर रात को छापा
मारना, सुजानसिंह और ईश्वरसिंह का
परामर्श करके मरहटों पर एकबारगी चढ़ाई
कर देना, घोर युद्ध होना, सुजानसिंह का
विजय पाना, ऐसीही कई एक युद्ध हारने पर
मरहटों का ईश्वरसिंह से दो पगने माधो-
सिंह को दिलाकर सन्धि करके लौट जाना,
सुजानसिंह का ईश्वरसिंह से हाथी घोड़े
आदि बहुत कुछ पाकर विदा होना और
आकर पिता के पैर पड़ना ... ३२ से ३६

तृतीय जङ्ग

१ प्रथम अङ्क—दिल्ली के बादशाह के बखशी
नवाब सलाबत खाँ की भरतपुर पर चढ़ाई
(सम्वत् १८०५) सुजानसिंह का आगे से
बढ़कर लड़ने के लिये निकलना और नौगांव
में डेरा देना ... ३६ से ३९

- २ द्वितीय अङ्क—सुजानसिंह का सलाबत खां के पास समझाने के लिये दूत भेजना. सलाबत-खां का दौं करोड़ रुपया मांगना और अपनी आधीनता स्वीकार करने का प्रस्ताव करना, वकील का रष्ट होकर लौट आना, सुजानसिंह का सब सेना छोड़ केवल छः सहस्र छंटी हुई सेना लेकर आगे बढ़ना, दस कोस चलकर डेरा देना, दूसरे दिन पांच कोस चलकर डेरा देना, और वहांसे हजार हजार सेना की पांच चौकी बनाकर पांच सरदारों की आधीनता में दिल्ली की सेना पर चारों ओर से घेरने के लिये भेजना, सेना का घेरा डालना ... ३९ से ४३ पृष्ठ
- ३ तृतीय अङ्क—कुछ दिनों तक घिरे रह कर दिल्ली की सेना का लड़ाई के लिये बाहर निकलना, घोर युद्ध होना, दिल्ली दल के अलाकुली खां, फतेह अली और कुंवरा का भागना ... ४३ से ४७
- ४ चतुर्थ अङ्क—दिल्ली दल के हकीम खां और हस्तम खां का मारा जाना ... ४७ से ५१
- ५ पञ्चम अङ्क—सलाबत खां का सन्धि के लिये सुजानसिंह के पास दूत भेजना, सुजानसिंह का सन्धि स्वीकार कर अपने पुत्र जवाहिरसिंह को नवाब के पास भेजना और आप मथुरा में लौट आकर व्याह करना ... ५१ से ५२

चतुर्थ जङ्ग

- १ प्रथम अङ्क—नवलराम का पठानों के हाथ से मारा जाना सुनकर बजीर मनसूरजङ्ग का

क्रोध करना और अहमद शाह को प्राज्ञा से पठानों पर चढ़ाई करना (सम्बत १८०६), कोल में आकर डेरा डालना, सहायता के लिये सुजानसिंह को बुलाना, सुजानसिंह की कूच ... ५३ से ५५

२ द्वितीय अङ्क—सुजानसिंह का कोल पहुँचना, मनसूरजङ्ग का अगवानों के लिये इस्माइल-खाँ को भेजना, मनसूर का दर्बार करके सुजानसिंह से मिलना, दूसरे दिन एकांत में मिलकर लड़ाई की सलाह करना, दूसरे दिन मनसूर का सुजानसिंह के डेरे में आना, सुजानसिंह का पिता को लिखकर और सेना बुलाना ... ५६ से ६३

३ तृतीय अङ्क—कोल से कूच करके मनसूर का नदरई और कासगञ्ज में डेरा करते हुए नौलखा में व्यूह रचना करना, अहमद खाँ पठान का लड़ने के लिये तयारी करना, और गङ्गा के पार उतर कर डेरा डालना, सुजान सिंह का लड़ाई के लिये आगे बढ़ना, अहमद खाँ का सुजान सिंह के पास दूत भेजना, सुजान सिंह का कोरा उत्तर देना, लड़ाई आरम्भ करने की तयारी ... ६३ से ७१

४ चतुर्थ अङ्क—लड़ाई का आरम्भ, रुस्तम खाँ से और सुजान सिंह से घोर युद्ध ... ७२ से ७९

५ पञ्चम अङ्क—ईसा खाँ और मनसूर का घोर युद्ध, मनसूर का भागना परन्तु सुजान सिंह का दृढ़ता के साथ लड़ते रहना ... ७९ से ८४

६ षष्ठ अङ्क—सुजान सिंह का घोर युद्ध करना, रुस्तम खाँ का मारा जाना, पठानों का

- पृष्ठ
भागना, जाटों का पीछा करना, फिर जमुना के तट पर आकर अपनी और सेना से मिलना, ... ८४ से ९२
- ७ सप्तम अङ्क—मनसूर का दिल्ली आकर मल्लार-
राव को बुलाना, मल्लार और सुजान सिंह के साथ फिर पठानों पर चढ़ाई करना, पठानों का मारा जाना तथा हारना और मल्लारराव के द्वारा संधि करना ... ९२ से ९६

पञ्चम अङ्क

- १ प्रथम अङ्क—सं० १८०९ में घासहरे के बड़-
गूजर सरदार राव बहादुर सिंह पर दिल्लीश की आज्ञा से सुजान सिंह का चढ़ाई करना, जवाहिर सिंह का भी सेना लेकर पिता से आकर मिलना, बड़गूजर सरदार का गङ्गा तट से घासहरे में लौट आना ... ९७ से १०२
- २ द्वितीय अङ्क—लड़ाई का आरम्भ होना, घास-
हरे के राव का घायल होकर गढ़ में लौट जाना, सावधान होने पर फिर रणभूमि में आना और मोरचों की रक्षा का उपाय करना ... १०२ से ११०
- ३ तृतीय अङ्क—दूसरे दिन फिर युद्ध होना, लोगों का सन्धि के लिये घासहरे के रावको दबाना, जालिम सिंह का संधि के लिये भेजा जाना सुजान सिंह का दस लाख रुपया और सब तोप रहकले लौटा देने पर सन्धि करना स्वीकार करना परन्तु राव बहादुर सिंह का रुपया देना तो स्वीकार करना पर तोप रह-
कला देना न स्वीकार करना, अपनी बात जाने से दुखित होकर जालिम सिंह का आत्म-

हत्या करना, सुजान सिंह का अमर सिंह पृष्ठ
को राव के पास समझाने को भेजना, राव
का छलकर के सन्धि के बहाने अपने लड़के
के पास दिल्ली में माल भेज देना, सुजान-
सिंह का भेद जानकर क्रोध करना ... ११० से १२१

- ४ चतुर्थ अङ्क—घोर युद्ध आरम्भ होना, मोर
पनाह बखशी का पहिले कोट पर कूद कर
दखल कर लेना और वहाँ मारा जाना, राव
बहादुर सिंह का दूसरे कोट से लड़ाई
करना, लोगों का समझाना राव का एक
न मानना, सब को उत्तेजित कर अपनी स्त्री
से भेट कर विदा होना, स्त्रियों का जौहर
व्रत करना अर्थात् प्राण-त्याग करना, राव
का लड़ाई को निकलना, घोर युद्ध होना,
राव बहादुर सिंह का मारा जाना, ... १२१ से १४२

षष्ठ जङ्ग*

- १ प्रथम अङ्क—(सं० १८१० में मनसूर जङ्ग की
सहायता में दिल्ली पर सुजान सिंह की
चढ़ाई) दिल्ली का इतिहास वर्तमान समय
अर्थात् अहमद शाह तक का वर्णन, अहमद
शाह के वजीर मनसूर जङ्ग और बखशी
गाजियुद्दीन खां से द्वेष होना, बखशी का
बादशाह के आगे खुगली करना, अहमद
शाह का वजीर को दिल्ली से निकाल देना,
वजीर का क्रोध करके अपने पक्षपातियों
को बुलाना, सुजान सिंह को बुलाना, सुजान
सिंह का समझाना, मनसूर का हठ करना,
सुजान सिंह का सलाह देना कि हमलोग
तख्त के बन्दे हैं इसलिये किसी को तख्त

* भूल से ग्रन्थ में सप्तम अङ्क छप गया है ।

पृष्ठ

पर बैठा कर उसकी आज्ञा से दिल्ली पर
चढ़ाई करना चाहिए, मनसूर का यह
सलाह मानना ... १४२ से १४२

० से १२१

२ द्वितीय अङ्क—काम बख्श के पोता को तख्त
पर बैठाना, अकबर शाह नाम रखना, दिल्ली
पर चढ़ाई करना, शहर बाहर के बारह
पुरों को लूटना, तोपखाना छीन लेना,
अहमद शाह का गाज़िउद्दीन खां को सामना
करने के लिये भेजना, घोर युद्ध होना, सूरज
मल का लाल दर्वाजे को तोड़ना, बाज़ार
में हरबड़ी पड़ना, नाना जाति और देश
की स्त्रियों का नाना भाषा में बिलखना,
भांति भांति के पशु पक्षियों, अस्त्र शस्त्रों,
बरतनों, बाजों, खेमों, कपड़ों, गहनों, केसर
कस्तूरी आदि किराने और मसालों, दवा-
इयों, अतर, मिठाई, अथों आदि का लुटना,
बाज़ारों का जलाया जाना... १४२ से १६४

११ से १४१

३ तृतीय अङ्क—लूट बन्द करके लड़ाई आरम्भ
करना, कोटरा में घोर युद्ध होना ... १६४ से १७२

४ चतुर्थ अङ्क—उस पार उतर कर लड़ाई करना
राजेन्द्र गोसाईं का मारा जाना, फिर दिल्ली
के पास घोर युद्ध होना, गोकुलराम गौड़
का मारा जाना, सुजान सिंह का तिलपत्ति
की ओर लौटना, गाज़िउद्दीन खां का
बादशाह से आज्ञा लेकर इन लोगों के पीछा
करने को निकलना, मैदान में घोर युद्ध
होना और दिल्ली को सेना का हारकर
भागना ... १७२ से १८१

५ पञ्चम अङ्क—कुछ दिन मैदान में ठहर कर
सुजान सिंह का फिर दिल्ली पर चढ़ना,

शाही सेना का मरहट्टों की सहायता के साथ लड़ने को निकलना, घोर लड़ाई होना, शाही सेना का हार कर भागना, कुछ दिन टहर कर सुजान सिंह की सेना का घर की ओर लौटना, फिर गाज़िउद्दीन खां का चढ़ना और दिल्ली से दो योजन हटकर युद्ध होना, शाही फौज का उस दिन फिर हारना १८१ से १९२

पृष्ठ

- ६ षष्ठ अङ्क—फिर गाज़िउद्दीन खां का माधो-सिंह और दक्षिणियों को सहायता के लिये बुलवाना, शाही फौज का फ़रीदाबाद में डेरा डालना, सुजान सिंह का दक्षिणियों के आने के पहिले ही शाही फौज पर चढ़ दौड़ना, घोर युद्ध होना, शाही फौज का फिर हार कर भागना, अमेरपति माधव सिंह का आना और दोनों में सन्धि करा देना, मनसूर का सूबा अवध पाना ... १९२ से २०२

सप्तम जङ्ग

- १ प्रथम अङ्क—मरहट्टों का शाही फौज के साथ ब्रज पर चढ़ाई करने का समाचार पाकर सुजान सिंह का भेद लेने के लिये रूपराम का मरहट्टों के पास भेजना, बल्लू चौधरी के विश्वासघात से मारे जाने का समाचार पाकर सुजान सिंह का जवाहिर सिंह को सेना लेकर बरसाना की ओर जाने की आज्ञा देना, और जवाहिर सिंह का बरसाने में डेरा डालना, रूपराम का जैपुर से मरहट्टों के आने पर तहसीलने आदि की खबर देना रूपराम से मल्लारराव का दो करोड़ रुपया मांगना, रूपराम का अस्वीकार करना, रूप-

राम व
की लं
२ द्वितीय
खंडेरा
करने
को लूट
सिंह
मल्लार
से वि
पुर्वो
रोकना
इकट्ठे
रसद
हड़ता
इधर
लिये
रूपरा
जतान
कहना
जीता

पृष्ठ

राम का व्रज की शोभा और श्री कृष्णचन्द्र पृष्ठ
की लीलाओं का वर्णन करना ... २०३ से २१४

- २ द्वितीय अङ्क—मल्लारराव का अपने बेटे
खंडेराव (खंडू) को व्रज पर आगे से चढ़ाई
करने को भेजना, खंडूराव का मेव लोगों
को लूटना, लड़ाई के लिये इधर से जवाहिर-
सिंह का प्रस्तुत होना, सुजान सिंह और
मल्लारराव को अपने अपने पुत्रों की लड़ाई
से चिन्ता होना, और दोनों का अपने अपने
पुत्रों को बिना अपने आप लड़ाई करने से
रोकना, दीध में सुजान सिंह आदि का
इकट्ठे होकर मंत्रणा करना और गोला बारूद
रसद आदि का प्रवन्ध कर लड़ाई की
तैयारी करना और मोरचाबन्दी करना,
इधर से मल्लारराव का जैपुर से लड़ाई के
लिये कूच करना, फिर मल्लार राव का
रूपराम को बुलाना और अपना आतंक
जताना, रूपराम का मुचकुन्द की कथा
कहना और कहना कि चाहे कुछ करो
जीतोगे नहीं ... २१४ से

११९२

१२०२

२३४ तक

श्री गणेशायनमः । श्री गुरुभ्योनमः ॥

सुजान चरित्र

छटपथ

प्रणति गिरा गिरिईस गवरि गौरी गिरिधारन
गोकर गायत्री सुगोधरन तिय गोहारन
गङ्गा गाइ गोमती गलौ ग्रहपति अरु सुरगिर
गंधपेस गोर्वानु गुहापति गन्धवाह गुर
गुन गुडाकेस गांगेयहु गगनचरहु सुनि लिजियै
करजोरि प्रणति सुदन करत इक ग्रह गोपति किजिये ॥ १

उसनाईस कवोस बहुरि वाल्मीक व्यास मुनि
पवनपूत विधिपूत सूत सनकादि बहुरि गुनि
संकर अरु जयदेव दन्डि जज्जट मम्मट नर
कैयट भार्गव विदित श्रीधररु कालिदास वर
वर वेपदेव श्रीहर्ष कहि माघ महोदधि जानि चित
सुर नर मुनि सुर सद् कवि प्रनति करतु सुदन सहित ॥ २

देहा

ज्यौ ज्यौ कलि उद्धत भयो त्यौ त्यौ घटि गई बुद्ध
अबके कवि भाषा कहत तऊ न समझत सुद्ध ॥ ३

कवि नाम भाषा के कवित्त

केशव किशोर कासी कुलपति कालिदास
केहरि कल्याण कर्न कुन्दन कविन्द से
कञ्चन कमच कृष्ण केसैराय कनकसेन
केवल करीम कविराइ कौकवन्द से

(२)

कुँवर किदार खानिखाना खगपति खेम
गङ्गापति गङ्ग गिरिधरन गयन्द से
गोप गह गदाधर गोपीनाथ गदाधर
गोरधन गोकुल गुलाब जी गुबिन्द से ॥ ४

घन घनस्याम घासीराम नरहर नैन
नाइक नवल नन्द निपट निहारे हैं
नित्यामन्द नन्दन नरोत्तम निहाल नेही
नाहर निवाज नन्द नाम अजवारे हैं
चन्द वरदाई चन्द चिन्तामनि चेतन हैं
चतुर चतुर चिरजीव चतुरारे हैं
छोतरु छवीले जडुनाथ जगनाथ जीव
जयकृष्ण जसुवन्त जगन विचारे हैं ॥ ५

टोकाराम टोडर तुरत तारापति तेज
तुलसी तिलोक देव दूलह दयाल से
दया देव देवीदास दूनाराइ दामोदर
धीरधर धीर भौ धुरन्धर विसाल से
पण्डित प्रसिद्ध पुषी पीत पहलाद पातो
प्रेम परमानन्द परम प्रतपाल से
परवत प्रेमो परसेतम विहारी वान
धीरवर धीर विजै बालकृष्ण बाल से ॥ ६

बलिभद्र बलभरसिक बिन्ध (वृन्द?) वृन्दावन
बन्सीधर ब्रह्म भौ वसन्त बुद्धरावरे
भूषनसे भूधर मुकुन्द मनिकण्ठ माधौ
मतिराम मोहन मलूक मत बावरे
मण्डन मुमारख मुनीस मकरन्द मान
मुरली मदन मित्र मरजाद गावरे
अच्छर अनन्त अग्र आलम अमर आदि
अहमद आजमखान अभिमान आवरे ॥ ७

इच्छाराम

राधाकृष्ण

लीलाधर

सूरदास

सोमनाथ

सेनापति

हरिपर

जसके

मथुरा

पिता

मच्छ

वामन

सनक

व्यास

नर न

अवता

अदि

(३)

इच्छाराम ईसुर उमापति उदय ऊषा
 उद्धत उदयनाथ आनंद अमाने हैं
 राधाकृष्ण रघुराह रमापति रामकृष्ण
 रामसे रहीम रनछोर राह राने हैं
 लीलाधर लीलकण्ठ लोकनाथ लीलापति
 लोकमनि लाल लच्छलछो लोक जाने हैं
 सूरदास सूरसे सिरोमनि सदानंद से
 सुन्दर सभा से सुखदेव सन्त माने हैं ॥ ८
 सोमनाथ सूरज सनेही सेख स्यामलाल
 साहिब सुमेरि सिवदास सिवराम हैं
 सेनापति सुरति सरवसुख सुखलाल
 श्रीधर सुवलसिंह श्रीपति सुनाम हैं
 हरिपरसाद हरिदास हरिवंस हरी हरि
 हर हीरा से हुसेनि हितराम हैं
 जसके जहाज जगदीसके परममीत
 सूदन कविन्दन कौ मेरो परनाम हैं ॥ ९

सौरठा

मथुरापुर सुभधाम माथुर कुल उतपत्ति घर
 पिता वसन्त सुनाम सूदन जानहु सकल कवि ॥ १०

लुप्पय

मच्छ कच्छ वाराह सिंहनर कपिल मन्वन्तर
 धामन हरि दुजराम राम बलिराम धन्वन्तर
 सनकादिक रिषदेव हंस मोहनी धुवच्छर
 व्यास जग्य दत्रेय बुद्ध नारद सुमुनीवर
 नर नाराइन निकलहु प्रभु ए चौबीसं सरूप लहि
 अवतार अवधि परब्रह्म की परमावधि ब्रजचन्दकहि ॥ ११

कवित्त

अदित प्रसोक भरी सोक भरी दिति और
 दोष भरी पूतना अदोष करी ओपिका

(४)

कंस हिये भौ भरी भौ भरी है ग्रन्धवंस
पण्डव के कीरति अकीरति की लोपिका
लाज भरी द्रोपदी सुराज भरी ब्रजभूमि
*कूबरी इलाज सो अवाज करी कोपिका
देवकी अनन्द भरी ऊँ वृजचन्द घरी
भाग भरी जसुधा सुहाग भरी गोपिका ॥ १२

छन्द अनुगीत

तिहिं वंश में परसंस लाइक नृपनु के अवतंस
अरि कंसलैं निरवंस कोने तपत नभ ज्यो हंस
जग उदित उद्धत जडुकुलनु में भयौ भूरे भूप
ताकै भयौ सुत रौरिया सो रौरि ही के रूप
वह रौरिया अरि रौरिया रनवंस में उद्दोत
परताप मैटन भौ पचे परताप कौ सो गीत
तिहिं पचे के सुन्दर सचे ताकै महु महिपाल
महुसर्दनी महि के महीपनुसाहि कौ उरसाल
ताकै भये प्रथिराज सुत प्रथिराज के परवान
पहिलें प्रथीपति नाम दीनो पैज करि भगवान
पुनि भयौ मकनि भुवाल भूपह भय विनासन जोग
जिनि कियौ ससिकुल प्रगट भूपर निखिल बसुधा भोग
सुत भयौ तिनके खानचन्द अमन्द चन्द समान
तिनि आवनी किरिवान सौ बसु कियौ सकल जिहान
ब्रजराज तिनके ओर तौ ब्रजराज के परताप
जिनि साहि के दल गाहिके निज साहिबी करि थाप
पुनि भयौ भूपति भावसिंह भुजान वर भरपूर
रविवंस में ज्यो करनु ल्यो ससिवंस कौ वह सूर
ता भावसिंह भुवाल के बदनस नाम नरेस
नहिं ता समान धनेसहु नखतेस और दिनेस
हैं बदनसिंह महेंद्र महिपर धर्म धुरधर धीर
ता कौ कुवौर सुजानसिंह सुकरे पर उर पीर

* पठांतर—कूबरी इलाज भरी वाज वय कोपिका ।

जिनि अ
इक श्री
सुत भग
जिनि स
सुलतान
और रा

सुरजमः
सिंहप्र
संग नि
जोखी
सो प्रत
रहौ व
जोधहिं
देर स
देर स
भुज
अपैसिं
महाध
सुलत
सुनौ
समा
साहि
सकल
तेग
मान
सौर

(५)

जिनि जीति वसुधा नीति सों कहुं भीति राखी नाहिं
इक प्रीति श्री हरदेव की कै पिता के पद माहिं
सुत प्रगटियौ तिनके जवाहर जगत जाहर वीर
जिनि साहि के दरवार माहि सुकिये हुकमी मीर
सुलतान अहमदसाहि आपु सराहि नौवत दीन
और राजा राइ तें पदवी सवाई कीन ॥ १३

दोहा

सूरजमल कुवॉर कैं भयौ सहोदर वीर
सिंहप्रताप प्रतापनिधि जाकौ जस गंभीर ॥ १४
संग निजामुलमुलक कौ गढ़ भूपालमंभार
जोत्यौ बाजीराव सौं सिंहप्रताप कुवॉर ॥ १५
सो प्रताप सुर लोक कौ वेधि गयौ परलोक
रह्यौ बहादुरसिंहसुत राजनीति कौ ओक ॥ १६
जोधसिंह जग जोध पुनि देवीसिंह अमान
दोइ सहोदर ए भय साहस-सीलनिधान ॥ १७
दोइ सहोदर द्वै सु ए मेदसिंह मरदान
अनुज भवानीसिंह लघु नलकूवर परवान ॥ १८
अपैसिंह अमनैत इक खल खण्डन बलवण्ड
महाधीर गम्भीर अति जाकी तेग प्रचण्ड ॥ १९
सुलताननु जाहर भयौ सो सुलतान कुवॉर
सुतौ गयौ सुरलोक कौ सुत भौ छत्र विदार ॥ २०
सभाशम साहस भर्यौ सरस सील कौ घाम
साहति जाकौ साहिबी सुंदर सुहृद सुनाम ॥ २१
सकल कला पूरन प्रवलराम सुवल इह नाम
तेग धरै त्रिपुरारि सौं कुद्ध युद्ध के काम ॥ २२
मानसिंह रन रङ्ग में मानव सिंह समान
त्यौगुमान गुरुवौ बहुरि पीवन पर के प्रान ॥ २३

(६)

दिल दलेल दल दलमलन सिंह दलेल कुवँर
जाके दिल की ना लहै समता सक उदार ॥ २४
बीरनराइन वीर अति पीर हरन रनधीर
गुन गाहकु दाहकु अरिनु बाहक सुजस गंभीर ॥ २५
रामकृष्ण करोर नहिं बलिधारी बलिराम
सिंह खुस्याल खुस्याल मुख समर सुभट अभिराम ॥ २६
लालसिंह लाइक गुननु लाजवंत जसवन्त
उदैसिंह लघु तनय के गुन जानत गुनवन्त ॥ २७
सबै वीर सब धीर अति सबै सुधारन काज
हैं ब्रजेस के पूत बहु पै सुजान सिरताज ॥ २८
त्योही सिंहसुजान केँ प्रथम जवाहर जान
नाहर रतन उमै सु ए नवलहरी बहुमान ॥ २९

कावित्त

पांच कुरएसकेँ महेसकेँ उभय भये
तैसेँही दिनेस के सुपक है निसेस के
दोइ अलकेसकेँ जदेस केँ प्रगट दोइ
सुदन गनेश केँ यहै अँदेस सेस केँ
काहू अमृतेस केँ कपेस केँ जलेस हू केँ
राज काज पूरौ सूरौ सालतु दिगेस केँ
भूमि केँ नरेस केँ सुरेस केँ भयो न होइ
जैसेँ भयो सूरज ब्रजेस वदनेस केँ ॥ ३०

दोहा

हुकुम मानि वदनेस कै सूरजमल कुवँर
प्रथम मारि मेवात कै कियौ आप अधिकार ॥ ३१
पुनि माँझौगढ़ मालुवै जोत्यौ सिंहसुजान
कूरम की रच्छा करी निज कर गहि करिवान ॥ ३२
पुनि कूरम सौं विरचियौ छोड़ति देखि भजाद
बचन जीत तासौं भयो सूरज आपु जवाद ॥ ३३

(७)

छन्द हरगीत

भूपाल पालन भूमिपति वन्दनेस नन्द सुजान हैं
जानैं दिली दल दक्खिनी कोने महाकलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलक सुदन कछौ छन्द बनाइ कै
कहि देव ध्यान कवीस नृप कुल प्रथम अंक सुनाइकै ॥ ३४

इति प्रथम अङ्क ॥ १ ॥

दोहा

ठारै सैव दुहोतरा अगहन मास सुजान
बैठि सजलगढ़ नौहकै किय आखेट विधान ॥ १

छरपय

कालिन्दी तट दुग उग सरवर मन मोहत
जलचर जलज अनेक तहां खग मृग बहु सोहत
करतु सरस जलकेलि कभू मोनहिँ गहि लावतु
कबहुँ हौ असवार धाइ उड्डार धुकावतु
इहि भांति रमत आखेट नित वदन पूत मजबूत मन
सब भांति चैन दिन रैन सुख पै न परति कल विना रन ॥ २

दोहा

एक दिवस दरवार करि बैछ्यो सिंहसुजान
आस पांस भूपतिनुकै बैठे तनय अमान ॥ ३

छन्द रोला

ज्यौ पारस के बीज विना आरस रवि वरसै
उडगन सहित मयंक सरद पूरन दुति सरसै
ज्यौ गयन्द गन मद्धि महा जूथप मद वरसै
सुरपति ज्यौ सुर समा इती उपमा जा पर सै

पैरि खड़े प्रतिहार रजत आसा चमकावत
 राइरान नृपखान तहां सनमानहिं पावत
 तिनके बाजदराज द्वार गजराज विराजत
 पाइक अरु पालकी सहस्र सहस्रनुहो छाजत
 तुरकी ताजी कुहो देस खंधारी बलकी
 अरबी पेराखोर पर्वती कच्छी थलकी
 काविल के किलवांक कच्छ दच्छी दरिआई
 उम्मत के हवसान जंगली जाति अलाई
 लीले लक्खी लक्ख बोज बादामो चीनी
 चहर चगर अरु चाल चौधर चटक नवीनी
 सिरगां समैदा स्याह सेलिया सूर सुरंगा
 मुंसकी पँचकल्यानी कुमेता केहरि रंगा
 हरे हरदिया हंस खिंग गरा फुलवारी
 सुरखा अरु संजाव सुरमई अबलख भारी
 जरदा जिरहो जांग सुनौची ऊदे खंजन
 कर रकवाहे कवल गिलि गिली गुलगुल रंजन
 कारुनी सन्दली स्याह कनेता रनी
 ठुकुरा और दुवाज वोरता है छवि दुनी
 कंश्चन के तन जोन मोन मनि जटित जवाहर
 जलज गुहे कि सवार रहे जग मग से जाहर
 नैने मैने नैन कान सोहत लघु चंचल
 जिनके रूपहिं देखि रहत फरकत जनु अंचल
 जिनकी चाल विलोकि चाल चुकि जात जु मन की
 को कुरंग खगराइ ताब नहिं पवन गवन को ॥ ४

हाथी वर्णनम् कवित्त

दन्तन सौ दिग्गज दुरन्तर द्वाइ दीने
 दीपति दिराजु चारु घंटन के नह हैं
 सु डनि भूपट्टि कै उलटत उदमग गिरि
 पट्टत सुसद्वल किंमत विहह हैं

सुदनी

रदकी

 यौ गज
 ज्यौ जय
 तिही व
 साबित
 तब करि
 जहाँ नर

 धारु
 करि

 सुरज
 तब व

 तब वकी
 तब सुज

 तब हो
 रहि है न
 निकसी
 तब तें सु

 इस सहा
 दर कूँ ख
 धरे जिते
 इन मै न

 * पाठानुसार-
 गिरि धारि है मानव

(९)

सूदन भनत सिंहसूरज तुम्हारे द्वार
झूमत रहत सदा ऊंचे बड़ु कहैं
रह करि कज्जल जलह से समझ रूप
साहत दुरह जे परदलदलह हैं ॥ ५

छरपय

यौं गज वाज अपार द्वार दरवार मद्धि नर
ज्यौं जयन्त सुरकन्त तनय अरि अंत करन वर
तिही चार हक मीर भाइके खबर कराइय
साबितखां सुत मोहि कुर्वै के पास पठाइय
तब करि सलाम प्रतिहार ने दूत बचन जाहर करयो
जहां नर सुजान मरदान मुख भट समूह उदभट भरयो ॥ ६

देहा

भाइसु दै प्रतिहार कौ लीनौ ताहि बुलाइ
करि सलाम सनमुख भयो बैठ्यो आदर पाइ ॥ ७
सूरज कही नवाब के है आनन्द सरीर *
तब वकील बिनती करी कृपा पाइ जदुवीर ॥ ८

सारठा

तब वकील कर जोरि अरज करी कछु अरज को
तब सुजान दग मोरि मसलति को सारति करी ॥ ९

छन्द हरगीत

तब तो वकील सिताबही करजोरि कहिय सुजान सौं
रहिहै नवाब फतेअली जौ राखि लेउ भुजान सौं
निकस्यो सुन्यो पुरइन्द्र तैं जब तैं असदखां कोर कौ
तब तैं सुसाबितखान ने निरखैं तिहारी ओर कौ
दस सहस बाज दराज साजैं अरु अरावौ संगलै
दर कूच आवतु है चलयौ मनमाँह जङ्ग उमङ्ग लै
पेहैं जितेकमहालतें सब भानुजा मधि गङ्ग के
इन में न एकौ छोड़िहै वह असदखां बल जङ्ग के

* पाठांतर-सारठा-तब वकील करजोरि बिनती करी नवाब की । सूरज कही
दिव जोरि है आनन्द नवाब के ॥

(१०)

क्या कोलटप्पर नौह जेवर सहित ईखू लेहगा
चण्डौस खुरजा हाथ करि तब पाह आगें देहगा
इस वास्ते तुमसें अरज करि जोर कीजति है बली
अब हाथ उसपर रक्खिये तौ जङ्ग लेहि फुतेअली
यह सुनि सँदेस सुजान बुलिय मनहुं फुलिय कज्ज है
हमसें नवाबु न सांचु राखत करत खातर रङ्ग है
तुम जाइ कहहु नवाब सेां जौ सांचु राखत जीय में
तौ एक बार मिलै हमें नहि बात कहनी बीय में ॥ १०

देहा

येसे बचन सुजान के सुनि वकील सुख कान
फिर बोल्यौ हित स्वामि कौ करत बहुत सनमान ॥ ११

छन्द भुजङ्गी

महाराज बढनेस भौ भाग पूरै
भयौ तासके पूत पनपाल करै
रहै भूप सोई तिहारौ कहावै
सबै सुख पावै सरन ताकि आवै
बसै बांह की छांह में छत्रधारी
हिये साहि के साहि के सङ्ग पारी
सबै राइरानैनु अवलम्बु लीनौ
कियौ खान सुलतान कौ मान हीनौ
जवै इन्द्र के नग्न कौ सेतु फूट्यौ
तहां बीर तैंहो जसे एक लूट्यौ
हुते सत्रु जेत भये ते भिखारी
मवासे मवासीनुकी जौम भारी
किते काम कोधी विरोधी विहण्डे
छिपे छुद्र छैला छली छिद्र खण्डे
चलाई सबै राह दिन राति माहीं
बिना दोष के लोक कौं टेक नाहीं

रह
आ
जो
स
स
स
स
स
स

स
स

(११)

प्रजापाल जनपाल पनपाल होसौ
भयो भूप बन्देस सुत पाइ तो सौ
करी कीर्ति ईरान तुरान ताई
फिरङ्गा तिलङ्गान हयसान गाई
जिसै पाल लीने महीपाल औरौ
तिसै आपनौ नाम की ओर दौरौ
करो आपनौ ही फतेह अली कौ
नहीं डील कीजै बने जौं भलीकौ
महाराज की जो अबै सीख पाऊं
दिना दोह के तीन में ले मिलाऊं
घरो चार को खेल आखेट साजें
महाराज हू आइ ईखू विराजें
फतेह अली आइ है आप पासै
करै बन्दगी कौ यहै वाहि आसै ॥ १२

दोहा

रखसत पाइ सुजान ते' सो वकील सिरनाइ
आयो जहाँ फतेहली कही सुकही बनाइ ॥ १३
जो कछु कही वकील ने फतेहली मन मानि
सूरज सां मिलनौ भलौ तौ जीवन जिय जान ॥ १४
साइत सोधि सबार हूँ करि सलाह सजि सैन
सूरज हू आखेट मिस ईखू लयौ ससैन ॥ १५
फतेहली आयो उतै संग पांच सै ज्वान
जहाँ हुतौ सूरज बली बदन पूत भुवमान ॥ १६

सोरठा

फतेहली हय छोड़ सूरज पै आयो पगनि
जैसे रवि की गोड़ ससि आवतु तप तापतै ॥ १७

(१२)

फतेमली सिरनाइ लौही सूरज हू कियौ
मिले परस्पर धाइ दुहू अङ्ग भरि अङ्ग सौं ॥ १८
जिते सङ्ग सिरदार तिन सौं मिल्यौ फतेमली
कुसल वृष्णि तिहुँवार बैठ गये दोऊ निकट ॥ १९

छन्द पवड़ा

फिरि बदनेस कुवार वियौसु फतेमली
बैठे इकले जाइ करन मसलति भली
घरी दोइ बतराइ दुहू के मन रले
कौल बचन करि एक दोऊ डेरा चले ॥ २०

दोहा

सावितखां सुत कोल में जबहीं पहुँच्यौ जाय
सूरज हू आखेट करि आयौ सहज सुभाइ ॥ २१

छन्द हरगीत

भूगल पालन भूमि पति बदनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिली दल दक्खिनो कोने महा कलकान हैं
ताकौ चरित्र कल्लुक सूदन कछो छन्द बनाइ कै
सु फतेमली सूरज मिलन पै अङ्ग दुतिय सु गाइ कै ॥ २२
इति द्वितीय अङ्क ॥२॥

छन्द दुपई

असद खान खानजादौं ऐसे सुनिकै आयौ
फतेमलीरुकुवर साहिब कौ चौरौ बेगि पढायौ ॥ १
सुनत तुरत महाराज कुवर ने चकसी आपु बुलायौ
तुम चन्डैस जाहु नकदी लै मोकौ जानो आयौ ॥ २
हुकुम पाइकै श्री सुजान कौ दलपति निज सिर नायौ
बोलि नकीब कही सिरदारनु तुरतै कूच करायौ ॥ ३
भले भले सिरदार सूर मिलि तनक न देर लगायौ
चारुन वरन नरन में उद्धत निजु निजु पटह बजायौ ॥ ४

(१३)

कवित्त

कूरम रठौर गौड़ हाड़ा चहुंवान मौर
 तेमर चन्दैल जादौं जंग जितवार हैं
 पौरच पुंडीर परिहार औ पंवार वैस
 सेंगर सिसौंदिया सुलंकी दितवार हैं
 सुरकी बघेले खीची खीचर बुंदेले बाँके
 बारहे बनाफर सदाही इतवार हैं
 बीर बड़ गूजर जसाउत सिकर वार
 होत असवार जे करत निर वार हैं ॥ ५

जाइस जघारे जूझा भामरे भरत भीर
 धाकरे धधल धाये मानत अमाने कौं
 मुगल पठान सेख सैयद भुजान भारे
 मेघमतवारे खानजादे बांधि बानेकौं
 गूजर अहीर मैना घरगी घलाहक से
 बाहक भुसुण्डी ललचाने जंगबठाने कौं
 बाजत निसाने फहराने हैं निसाने कैयौं
 सूरज ने माने ते नमाने राइराने कौं ॥ ६

१२२

दोहा

आयो मंदति सुजानदलु फतेअली सुनि कान
 कोस आठ चलि कोलतै आयौ देतु निसान ॥ ७
 सूरजबली फतेअली दोऊ एक निहारि
 जिमोदार की रारि यह आयौ राउ विचारि ॥ ८
 फतेअली ने फिर लिख्यौ सुनि महाराज कुंवार
 विना आपुके आवने मुझसे थमै न रारि ॥ ९
 सुनत सँदेस नवाबकौ श्री सुजान बलवान
 चारि तबेले सङ्गलै ईष लयौ पयान ॥ १०
 असदखानहूँ कूँच करि आयौ कोस छ सात
 काहकी मानी नहीं समुझ बैरकी बात ॥ ११

४

(१४)

चारिहुं ओर चंडोसकी चारि तीनि द्वै कोस
चारौ सिरदारन दये डेरा निजु निजु रोस ॥ १२

छन्द बत्तीसा कवित्त

उद्धत असदखान कुद्ध कौ निधान जान
लैन उनमान फतेमली ने पठायौ दूत
कहियौ नवाब सौं सलाम मैं भी हाजर हैं
जानत न कौल दरपुस्त यह मेरा कूत
ईधर न आग्यौ तौ मेहर फुरमाग्यौ मुझै
बन्दे हम साहि के हमेसा हमें तुम्हें सूत
खातिर न भावै तौ सुवाही बन्दा बन्दगी मैं
मौला जिसै देहिगा रहैगा खेत मजबूत

सुनौ दूतबानी महामानी खानजादे जब
हिंयै अहटानी हैं रिसानी देह ता समैं
दूत कौ बुलाइ कहो जाह तेरे आगा पास
कोई रोज चाहै जान जाना तौ अघास में
मुझै आया जाने जाया माने तौ ठिकाने रहि
फजर की गजर बजाऊं तेरे पास में
लाऊं उसै रास मैं सभा समैं सबै सुनाइ
तेगही के वास में हुतास जैसे घास में

छन्द दुमला

ऊतर यह दैकें दूत पठैकें असदखान यह रोस भर्यौ
बोल्थौ सब बीरनकुल के धीरन जिनन चरन रन उलटि धर्यौ
तुमकरौतयारी सब इसवारी मैं दिल यह इतकाद कर्यौ
मुझकौं तौ लरना देर न करना आइ साहि कौ काज पर्यौ

छन्द लच्छीधर

खानजादे सबै घोर घादेतहीं-आपुकीया सहो होइगा सोवह्नी
पै इती बन्दगी भी हमारी सुनौ-रोज दो तीन मैं लै हरीकै धुनौ

(१५)

साहिब के काजपै आपु चाये चले-देर सौ काज कीये' दिखायौ भले
फौज केती इतै और बेरी किते-साधि लीए बिना जङ्ग कोऊ जिते
एक तौ जानते हैं फतेहीअली-जह्दजाहुवा सङ्ग ताके बली
आपनी फौज तौ आवती है चली-होइ दूनी जबै जङ्ग कीजै भली
और कीजै इकट्ठे जिमीदार भी-जे तुम चाहते पार भी वार भी
तोपखाना दिया साहि का आय है-ताहि आगै धरे' जङ्ग को पाय है
हाल तो हस्त हज़ार घोड़े सही-तोपखाना कछु तयार हुवा नहीं
बीस हज़ार असवार दिन दोइमें-साथ हूये' लरै' ताब है कोय में
आप डेरा करौ एक कै दो दिना-जङ्ग कोऊ करै जङ्ग कीये बिना
यौ हमें बन्दगी कौ बजायें वजा-और कीजै वही आप की जो रजा १६

छन्द दुपई

ऐसैं अरज करी उमरावतु असदखान फुरमायौ
तुम जो कही सही मैं कीनो दिल कौ दरद न पायौ ॥१७॥
जो न लरै हैं काल्हि उन्हीं सौ तौ दिल अंदर आनौ
फतेअली सुरज के लोगैं घेरा कीया जानौ ॥१८॥
अब तुम कहत फौज का आवन सो आवन नहीं पावै
दाना घास घीव आटा जय रुपये सेर बिकावै ॥१९॥
और सुनौ खानजादा हैं घेरा क्या जु करावैं
इस जीने से मर्ना भर्ना लर्ना हीं बनि आवैं ॥२०॥
जाना होइ जाउ सो डेरें मैं भी इसमें राजी
मेरा भी फरजन्द चलैगा मेरा मानि कहा जी ॥२१॥

॥ चौबोला छन्द ॥

निसा साम जाइ सो जावै एक जाम जब साम रहै
डङ्का वै असवार होंहुगा बड़ी फजर समसेर वहै ॥२२॥
जो कोइ चला बिदाकरि तिसकौ असदखान फुरमाइ उठ्यौ
पहर राति सौ होहि नगारा खाबगाह कौ गया कठ्यौ ॥२३॥

॥ दोहा ॥

तीन पहर इतकाद सौ अपना इष्ट मनाय
पहर राति रहते घसत डङ्का दियौ बजाइ ॥२४॥

(१६)

आपु गुसल करि सिलह करि हुवै नगारे दोइ
देत नगारे तीसरे हौ सवार सब कोइ ॥२५॥

कड़खा छन्द

होत असवार तिह वार हय नैनतैं
नीर छूट्यौ चढ़त तङ्ग दूट्यौ
कङ्क वाइस उलू गिद्ध सुर असुमकहि
बदन कौ रङ्ग उहि वार छूट्यौ
पवन रूखो बह्यौ सबनु नाहीं कह्यौ
कण्ठ मानौ किहुं मान घूँट्यौ
होत उतपात रनजात मानैं नउर
काल बस जंगतैं नाहिं हूट्यौ ॥२६॥

किते पखरैत बखतरनि साजैं चढ़े
किते साधे कढ़े धनुष धारी
किते निज बाज पर बाज पढ़े लिये
किते कढ़े नु बरछी सँभारी
किते बन्दूक बेचूक फरसा किते
तेग तेगा सुधारी दुधारी
मीरजादे सजे भानुजादे सही
खानजादेन को सो सवारी ॥२७॥

देत डंके चढ़े हौ निसके बढ़े
सवै आयुधमढ़े तेह तत्ते
मुच्छ पर हत्य तन मुच्छ अम्यर धरे
मुच्छ नहिं बीर रसरंग रत्ते
हुवहीहुव भट पुव चाहत चलयौ
दुखि रहना नहीं यों उमत्ते
साजि छहजार असवार आये चली
स्वामि के काम हित कहत फत्ते ॥२८॥

जाल जजाल हयनाल गयनाल हू
वाननीसान फहरान लागे

(१७)

सूर मुख नूर सूर तूर जब पूरिया
भेरि भभकार सुनि कूर भागे
नदत दुन्दुभि ठका वदत मारु हका
चलत लागत धका कहत आगे
समर की चाह उच्छाह घह बाहिनी
सुनतही सार चहुँ ओर जागे ॥ २९

देहा

असदखान असवार है जबहीं कियौ पयान
फतेअली के चर तबै खबर करी यह आनि ॥ ३०
तबही सिंह सुजान के हलकारा ने दैरि
फतेअली सौ रारि है जो कलु करनी गौरि ॥ ३१

छन्द पटुड़ी

तवहीं सवार है कै सुजान-कलि भारथ कै मनुभीम आन
चहुँ ओर घोर बज्जे निसान-गज्जे जलह मानो भयान
फहरान धुजा मनु अंसभानु-कै तड़ित चहुँ दिस तरतरान
सज्जे हयन्द जे भरे सान-गज्जे सुभट्ट लै लै दवान
चहुँवान चण्ड चन्देल गौर-कूरम वधेल राठौर मौर
तोमर पवार खीची खगार-परिहार सुजादव कसि हथ्यार
सैंगर सिसौदिया करि सिलाह-पौरच बहुगुजर सजे वाह
जे भप बाहु तिहुँलोक ईस-सज्जे सुजान सँगते महीस
जदुचंस जट्ट सज्जे सुभट्ट-सिनिसिनियवार गवर गरट्ट
खूँ टैल सुसोगरवार वीर-चाहर जग जाहर समरधीर
सजि देस वार भौंगरे वाज-रुतवार घौर खिनवार साज
नुहवारसु गोधेहगा चट्टि-भिनवार गूदरे कदिय वट्टि
डागुर पक्षांदरे धरि मरोर बहुजट्टठट्ट वट्टे सजोर
सब आनि मान वदनेस पूत-सजि सैन चलिय सरिता अभूत
एक सहस वाज साजै जुझौर-हैं आगै गोकुल राम गौर
सत सात तुरी कूरम प्रतापु-दाहिने रखौ पर दल उथापु

ब्रजसिंह पांच सत हय अमान-करि वाम बाहु रच्छक सुजान
 अरु रामचन्द्र तोमर कुंवार-ठाकुर सुदास सेंगर उदार
 पुनि फतेसिंह बलवान वैस-वह समरसिंह चन्देल हैस
 है मेदसिंह चहुंवान वीर-सत पांच तुरङ्गम प गंभीर
 अपने अगार हरवल्लपिठि-ए श्री सुजान सेंग रहे दिठि
 गजसिंह महामति समरधीर-सो तौ सुजान के रह्यो तीर
 स्यौसिंह द्विजनु वरु उदैभान-राखे ब्रजेससुत सन्निधान
 हरिनाराइन लघु वैस चण्ड-सोहू सुजान आगै प्रचण्ड
 अरु किते वीर चन्दौल राखि जिनके सुजीति परतीति साखि
 गति धीर धीर वह चली सैन-रजरञ्जित अम्बर अक ऐन
 डङ्का निनह छाये अहह-रनसिंह तूर वेहह सद्
 यह फतेअलीहू खबर पाइ-आयौ सहस्र द्वै हय बनाइ
 नौवति निसान बहुमान अग-गज ऊपर वैठ्यौ धरि उमगा
 तिहिं संग ठानठाने पठान-बहु मुगल सेख सैयद अमान
 चण्डैस खेत पग देत लेत-साजे सनाह पाये सहेत
 इक ओर सहस्र हय राउ सङ्ग-ठाडो वड़ गूजर दुहुं प्रसङ्ग
 चार्यौ निसान चार्यौ दिसान-फहरावति आवति धरि धवान
 चढ़ि चारघटी असमान भान-सुत साबितखां अर असदखान
 दुहुं दलन परस्पर भई दीठि-हथियार चमकि चहुंघा बसीठि
 छुट्टी जँजाल दुहुं घां कराल-बन्दूकवान हयनाल जाल
 अरु लौहजन्त्र जग्गे विसाल-मन गजतु घोर दुहुं ओर काल ॥ ३२

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेसनन्द सुजान हैं
 जाने दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं
 ताकौ चरित्र कळक सुदन कह्यौ छन्द बनाइकै
 दुहुंसेन दरसन युद्ध परसन त्रितिय अंक सुनाइकै ॥ ३३
 इति तृतीय अङ्क ॥ ३ ॥

छापय

मिली परस्पर डीठि वीरपगिय रिस अगिय
 जगिय जुद्धविरुद्ध उद्ध पलचर सग खगिय

अगिय
 लगिय
 रगिय
 सगह

अमभमत
 मनु सहि
 अमभमत
 रजमण्ड
 सैन नैन
 फैन नैन
 खैन नैन
 धैन नैन
 दुहुं पिल
 मद जे क
 काके क
 लेले करे

अनीते

हार्य

भातु

वीर

खानजादे
 तेगतेगो वि

भगिय सद भ्रगाल काल दै ताल उमगिय
 लगिय प्रेत पिशाच पत्र जुगिनि लै नगिय
 रगिय सुरग रम्भादि गण रुद्ररहसि आवजधमिय
 सन्नाह करकि उच्छाह भट दुहुं सिपाह जब भमभमिय॥१

हरगीत छन्द

भमभमत सिपर सेल सांगह जिरह जेगा दीसिय
 मनु सहित उड़गन नवग्रहनु मिल जुद्ध रचि बरीसिय
 धमधमत धरनि धवानि धावत चण्ड हत्य भुसण्डिय
 रजमण्डिय भुवखण्डिय हय कण्डिय पर दण्डिय
 सँ नँ नँ नँ नँ नँ छुटिय सर जुटिय नहिं हुटिय
 फँ नँ नँ नँ नँ नँ तनफुटिय उरटुटिय भुवलुटिय
 खँ नँ नँ नँ नँ नँ घुटिय लगि वानसै अस्मिमुटिय
 धँ नँ नँ नँ नँ नँ छुटिय भट मुटिय गरघुटिय
 दुहुं पिलत आयुध एकरे फिरि एकरेसु अनेकरे
 वद जे करे ते टेकरे जे ने करे सुजुदे करे
 करके करे गहि टेकरे सुजुटेकरे इक एकरे
 ले ले करे दे दे करे सुरप करे सुअनेकरे ॥२

कवित्त

अनीदोऊ बनीघनी लोहकोहसनी धनी
 धर्मनुकी मनी वान बीतत निपङ्गमें
 हाथी हटि जात साथी सङ्गनथिरात श्रौन
 भारती में न्हात गङ्गकीरति तरङ्ग में
 भानुकी सुतासी कविसूदन निकारी तेग
 बहत सराहत कराहत न अङ्ग में
 वीर रस रङ्ग में यौ आनन्द उमङ्ग में सो
 पगुपगु प्राग होत जोधनकों जङ्ग में ॥३

छन्द लछमीधरा

खानजादे इते मोरजादे दुधौ-खेत माहीं भिरे जुद्ध भारी हुवौ
 तेगतेगौ किते सांगसांगौ मिले-सेलसेलों पड़े हलकौये, पिले

सुजान

र

र

र

जाखि

न

ग

वान

शान

पिठि

॥ ३२

३३

वांकडारी फरस्सानि लै दावकौं-खजुरौं पजुरौं में करैं घाव कौं
 बाढ़दोनी कढ़ोहाथ जम डाढ़ सौं-गाढ़ पारी भटौ वैरकी चाढ़सौं
 फूँ किदीनी किधूँ हूँकि बन्दूक कौं-कूक कोनी किहूँ मारिकेँ मूँककौं
 लूँकि केते रहे धूँकि केते गए-चूँकि केते ढप सूँकि केते चहे
 सीस कट्टे किहूँ रीसदै तेग कौं-सांग फँकी वियै धारिकेँ वेग कौं
 बाहु छुट्टी किहूँ बाहि समसेर सौं-ढालही के ढका ढावहाँ ढेर सौं
 एक हथ्यौं विना पाय मथ्यौंकरै-लथ्य पथ्यौं किते वथ्यवथ्यौंभरे
 बीरके सौं खुटे भीम मैसौं जुटे-कर्ननासा छुटे श्रौनधारौं जुटे
 इक्वमथ्यो विना धाड़ हथ्यौं करैं-वाज धक्काधुकेँ धम्म भूमी परै
 एक कण्ठों गहे रत्तरत्तौं बहे-तेह तत्ते तने लेह कत्ते कहे
 चंड चंडे करौं खंड खंडे हुवे-रंड मुंडौं विना वीर सेजौं सुवे
 तीर तीखे तने फोरि दीखै परे-ब्यालछौंना मनौं भीतितैं निकरे
 सेलसन्नाह कौं फोरि दोऊवखा-चारि वाहौं लरै रूप ऐसा लखा
 हक्क हक्का रटै हथ्य खगों खुटे-भक्क भक्काकरेँ घाव वाहों दुटे
 धूरि नैनारुके तक्किसक नही-भूरि को हो भरे चाट चौटों वही
 खानजादे उतै साविता कौं-तने मारु ऐसी करीवैनहीं सौंवने॥४

॥ छप्पय ॥

सैयद मुगल पठान सेखजादे खांजादे
 सरज केहर वल्ल जट्ट तुपकनदे वादे
 असदखान करि हल्ल जङ्ग दुहुं और मचाइय
 सनमुखही अरिडिट्टि सुभट बहुकट्टि हटाइय
 लखि चली फौज फत्तेअली तजि गयन्द हय पर चढ़िय
 चल विचलसान नीसान मुख गहि कवान करमैं कढ़िय॥५
 ल्यौ लखि सिंह सुजान निकट गजसिंहहिं भाखी
 असदखान करि जङ्ग कछु यामैं नहिं राखी
 और आपनी फौज रही इत उतही चाहति
 जौं न गौर अवकरी तौव यह जाहि वृथा हति
 यौं कहि हयन्द हकिय हरषि दन्त चवि सेलहिं लहिय
 पन पाल पिल्यौ जनपाल कौज्यौ गुपाल पथ्यहिं गहिय ॥६

गद्दी एकही
 कही सो ह
 मिले फौज
 परे एकही
 किते वीर
 किते सेल
 किहूँ दूरि
 किहूँ दै क
 किहूँ पान
 उभै लै लु
 हुवे खान
 खनके ल
 फनके ब
 भटके पर
 लटके तह
 विना सो
 बिना पम
 महाधूरि
 परे सेल
 कहूँ खप
 जहाँ मा
 महाधो

॥ छंद भुजङ्गी ॥

गही एकही वार सन्धै वरच्छी । कही एकही एक है चोट अच्छी
 कही सो हयन्दान सो दौर कच्छी । सही पौन के पूत हैं देत सच्छी
 मिलै फौज दोऊ उभै मेघमानो । तहां खानजादो करै घोर घानौ
 परे एकही वार दै दै दरेरे । हथौ सैं हथी तोमरौ लै करेरे
 किते वीर रारे हलादै हँकारे । भका फौज फारे भुसुं डीन मारे
 किते सेलदैकै तहाँ तेग कढढी । मनौ सापिनी हथ्य बेली सुचढढी
 किहू दूरिहीते दप हरि नेजा । विथै सङ्ग सौं फोरि डारै करेजा
 किहूदै कटारीन सौं थौंदि फारी । तहाँ दूसरे आनिकै सीस भारी
 किहू वानकौ कानलौ खैचि मुठ्ठी । किहू आनिदीनी करो मुट्ठि छुट्ठी
 उभै लै तुरी सौं तुरी जोर दीने । तिन्हें खजुरौं के घने हथ्य कीने
 हुवे खानजादे उतारे हकारे । तिन्हें राजपूता जुटे जट्टमारे
 खनकै लगे तेग तन आन दुष्टैं । ठनकै परै टोप पै वान दुष्टैं
 फनकै जबै सेल सौं सेल जुष्टैं । भनकै कटै कौच सौं भूमि छुष्टैं
 भटकै पटकै कटकै सुमथ्य । सटकै चलावै अटकै न तथ्य
 लटकै तहाँ यौ हटकै जुसथ्य । चटकै सुअस्त परै लथ्यपथ्य
 बिना सीस के यौ भरे रीस उष्टैं । फिरै धावते यों मनो राहु रुष्टैं
 बिना पगके खगाही लै फिरावै । बिना हथ्यके दन्त ओठों चवावै
 महाधूरि की भूरि सौं होइ अन्धे । किहू दौर के यौ कवन्धै जुसंधे
 परे सेल दूटे कहुं खगा खूटे । कहुं वाज स्यौ साजके जातबूटे*
 कहुं खप्परे सूर सभाह कट्टे । कहुं रुंड कहुं मुण्ड भुज दण्ड पट्टे
 जहां मारु ही मारु यौ वीर वादे । तहां खानजादे लरै होइ प्यादे
 महाधीर ब्रजवीर हू हुब आछैं । रहे जङ्ग जोरे मुरे नाहिं पाछैं ॥७

छप्पय

गौर सुगोकुल रामसिंह परताप कमठ कुल
 रामचन्द्र कुल पांडु मेद चहुंवान खगा खुल
 सूरतराम प्रसिद्ध कुसल तन अरु पाखरिया
 पैमसिंह प्रथिसिंह अमर वाला सौगरिया

* पाठान्तर—कहुं खप्पे औ सुपड औ दण्ड पट्टे ।

हरिनारायन सुकिसोर वै स्यामसिंह सब रोसमन
औरौ उदग कर खगधरि अग पग धर धरिय रन ॥८

छंदपदुरी

धरि धरनि पाय धमकैत धीर । जहं असदखान रन करिय धीर
सर सेल सांग समसेर चर्म । दुहुं ओर सुभट किय घोर कर्म
इक देत सोस परखग घाइ । विय लेत डाल पर तिहिं बचाइ
इक सांग सांग संग्राम जुटि । बहु सेल सेल गप सोस फुटि
अरु किते वीर भालेनु भाल । जमडाढ़ काढ़ रन में कराल
इक चंड हथ कोदण्ड संधि । तकि तीर देत तूनीर वंधि
इक खजूर पट्टे अरु दुधार । चञ्जंत परसपरकरि उधार
तनफसत अमिन तऊ धसत जात । छतजात जात तऊ करत घात
चहुं ओर भुसुडिनु की अपार । अति अरध धुन्धुवर सन्तसार
ज्यौं असदखान आवतुरिसान । ल्यौं लगे आनि गोली भयान
वह लगत मान तजि प्रान सान । तजि या सरीर बैख्यो विमान
लखि तासु वीर* अति भये कुद । फरतैं अट्टुटिकर करिय युद्ध
उड़ि मुण्ड परत कहुं हय सु तुण्ड । कहुं हथ चरन कहुं परिय डुण्ड
विललात परे इक कटे गात । इक फटे सोस भूमैं घुमात
करि रुधिर गाढ़ वरषा सु कीच । खुदि मेदगूद फर भूमि बीच
कटि केस वेसं मनु उई दूव । कर मुण्ड परे ज्यौं वेलि तूव
धर चरन सहत धर यौं लसन्त । मनु भषत वाय अजगर अनन्त
कहुं श्रोन छिच्छ अति लाल लाल । जनुइन्दु वधू करि रहिय जाल
बहु भूषण कञ्चन के दिपन्त । जुगनू जमात चमकत छिपन्त
कहुं सेल परे उर फोरि पार । मनु नाग करत भूमहिं विहार
वहल उमह जैसैं जलह । गोली बर बूंदें परि विहह
कहुं घाइ करत अति घोर सह । मनु दादुर बोलत हैं उमह
कहुं धीर धीर दुन्दुभि धुकार । गज्जनि अपार वरसंतुसार
तड़ितान तूल तरि वार सोभ । सुरधनुष धनुष धुजा लहिय गोभ
पल भषन हार पच्छी अपार । गिलिगिलि विहार करि डार डार
मारु मलार बहु होतु रागु । जुगिन रस भुगिन गनिय भागु

* पाठांतर—लखि ता बरीर । † पाठांतर—जनु ॥

वह भूमि भई
वै असदखान ज

छत जु
नर धर
तह वै
तेग मन
किलका
करि अ

असद खान प्रान
परिय भूमि का
सखन डारि हा
सख के सरन
हय गप तोप र
चमू कोस चाहि
केरि फौज सर
सिंह सुजान फ
तिवहि देख स

कोह के

कीलौ द

काटे त

जस के

(२३)

वह भूमि भई भारी भयान । पावस निसि! आंधी ज्यों पयान
वे असदखान जूझे पछार । तिह* सुभट करी इक घरी* मार ॥९॥

छुप्पय

छत जु अम्बु छिरकाइ कवच कटि फरस कराइय
नर धर वर मसनन्द सोस उस्सीस धराइय
तह* वैठिय नृप काल ताल दै जुगिन नच्चिय
तेग भनक पंसुर घाइ मिरदंग सुरच्चिय
किलकार गीत सुनि मुदित हूँ बीरसीस वकसीस किय
करि अंगराग चरवी बसा अंतहार आभारदिय ॥ १०

अरिल्ल

असद खान प्राननु* करि विचिय । निरखि सेन स्वामी नहि* रितिय
पहिय भूमि कटि नर वीरन । हटिय निठि पिठि धर धीरन
सखन डारि डारि कोऊ बखन । कोऊ देखि देत मुख में अन
सूरज के सूरन गंहि लुटिय । तुपक तेग जज्जालन लुटिय
हय गय तोप रहंकला लिन्निय । भूषन वसन असन गहि छिन्निय
चमू कोस चारिक लैं मारिय । असदखान कीजीतिनिहारिय
फेरि फौज सूरज की आइय । श्रीहरि देव जित्ति यह घाइय
सिंह सुजान फते यह पाइय । जित्त सेन सूरज ढिग आइय
तिनहिं देख सूरज उर भेटिय । जुद्ध कुद्ध अम सब कौ भेटिय ॥ ११

कवित्त

कोह कौ असदखान लोह के मचायौ रन
छोह सों लुहायौ समुहायौ आयौ ता समैं
कीनौ घमसान समसान फर मण्डल मैं
घाइनु अघाइ अघवाए वीर वासमैं
काटे तन प्रान निज प्रानन पयान होतु
सूरज ने भेज्यौ वैठ्यौ सूरज के पास मैं
जस के उजास मैं अकास मैं प्रकासी तेग
गोरवान गनिका विराजी आस पास मैं ॥ १२

* पाठांतर—हैं ।

देहा

असदखान कौं खाइ रन फतेअलीहि वचाइ
हरनाकुस प्रहलाद की लीला करी बनाइ ॥१३॥
फतेअली कौं कोल में तबही दियो पठाय
आप आइ निज गढ़न में देखे पितु के पाय ॥ १४॥
सदन सदन आनंद भये बदन बदन के फूल
सुत सुजान के विरद गुन सुनत भवन सुखमूल ॥१५॥

कवित्त

कोप्यो मानौ काल सौ बदन महिपाल पूत
दोठि बाँकी करि के निहारै और तू जा की
तूही अवतार भुवभार के उतारन कौं
सार के सँभार नहिं ताव नर दूजा की
सूदन समर्थ अरि रुदन कौं पथ सम
कीरति अकथ रत्नाकर लौं भूजाकी
दिली दलदहन सुकहन मलेच्छ वंस
देस देस जाहर प्रचण्ड तेग सूजा की ॥१६॥

छन्द हरगीत

भुवपाल पालन भूमिपति वदनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिलीदलदखिनी कोने महाकलिकान हैं
जाको चरित्र कलूक सूदन कह्यौ छन्द बनाइ के
रन असदखाँ कौ जोति सूरज अंक चौथौ आइ के ॥ १७॥

इति चतुर्थ अङ्क ॥ ४ ॥

सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज वजेन्द्र कुंवार सुजानसिंह हेतवे
कवि सूदन विरचिते सुजानचरित्रे असदखान हतनो नाम
प्रथम अङ्क समाप्त ॥

अ

रुक्म अचर
त्रिविध पद
सेनानी सु
गङ्गा धरनि
गिरिसुता
गननाथ न

ठारे
महि
सुरपु
हुतौ
तासै
माधै

देखि दे
पत्र लि

करी ब
पत्र पु
आयौ
सुत ।

अथ द्वितीय जंग लिख्यते

छप्पय

रुकम अचल वरभूमि सुभग सुरसरि जल बिलसत
त्रिविध पवन जह गवन भवन दुति ससिफर मिलिसत
सेनानी सुर देत ताल वेताल लगावत
गङ्ग धरनि भषि भङ्ग रङ्ग सौं डवँरु बजावत
गिरिसुता सहित आनन्द सौं दै चुटकी थेई थेई कहत
गननाथ नचत तांडव रचत सुण्डि हलति विघननु दहत ॥ १

दोहा

ठारै सै अरुचार मैं पावस सावन मांस
मदति करिय सुरेस की किय दखिनीं दल नास ॥ २ ॥
सुरपुर कौं जैसिंह गये बोते बहुत दिनान
हुतौ भूप आमेर कौ ईसुरसिंह अजान ॥ ३ ॥
तासौं दक्खिन के दलनु रोपी आन सुजङ्ग
माधौसिंहहि सङ्ग लै दियौ देस मैं दङ्ग ॥ ४ ॥

सोरठा

देखि देस कौ चाल ईसुरसिंह भुवाल ने
पत्र लिख्यौ तिहि काल वदनसिंह ब्रजपाल कौ ॥ ५ ॥

दोहा

करी काज जैसी करी गरुडध्वज महाराज
पत्र पुष्प के लेत ही थैं आज्यौ ब्रजराज ॥ ६ ॥
आयौ पत्र उताल सौं ताहि वांचि ब्रजपस
सुत सुरज सौं तब कह्यौ थांभि हुंढाहर देस ॥ ७ ॥

छंदमरहठा

यह सुनिकँ सूजा पितु पग पूजा हरषानी सव देह
नृप दीनति भाखी हम पर राखी जग साखी जस लेह
चित धरि पितु वानी सूरज मानी कर जोरै करि लापु
आइसु तुव पाऊं नृपति छुड़ाऊं घर आऊं हरि तापु ॥ ८

दोहा

तबही सिंह सुजान कौं विदा कियौ वदनेस
सुभ नछत्र रवि ससि भले सोधि मुहुरत बेस ॥ ९

छप्पय

द्रस हजार असवार सहस ब्रै लै पदाति गन
रथ गयंद हरदन्द जिते चाहियत अपने मन
सहस दोइ वरछैत जे न कबहूँ मुख मोरत
छुछ जुँ जमरूप दन्ति के दन्तनु तोरत
फहरै निसान भुवभान दुति कटि कृपान आपुन कसिय
मंगल विधान द्विज दान दै मङ्गल गज ऊपर लसिय ॥ १० ॥
वज्जे पटह प्रचंड तूर भरपूर गरज्जिय
भूरि भेरि भङ्गार दुवन भय भार लरज्जिय
सुनि दुन्दुभि भुङ्गार धराधर धर धर बुल्लिय
डिढन रहे डड्ढार वाघ वन चरवन डुल्लिय
हिंसत हयन्द गज्जत करी रज उमन्डि अवर मढ़िय
मानहुं उदेत गिरि सिखिर तैं सूरज सौ सूरज चढ़िय ॥ ११ ॥
किते विप्र कसि धनुष जङ्ग रङ्गनु के जेता
किते रथनु असवार सुजस कीरति के देता
किते पुरान प्रवीन किते जोतिस के जाता
किते वेदविधि निपुन किते सुसृतन के शाता
अप अपने कर्मन मैं निपुन जयति जयति वानी रढे
मघवान भांन उपमान जब सैन साजि सूरज चढ़े ॥ १२

छंद संजुता

सङ्ग चढ़े सिनसिनवार हैं-बहु जङ्ग के जितवार हैं
 खल खण्डने खूंटैल हैं-कबहुं न ते मन भै लहैं
 चढ़ि चाहि चाहर डेर दै-दल दे सवार दरेर दै
 असवार होत अँबारिया-जिन कितै वैरि चिदारिया
 डर डारि डागुर धाड़्यौ-बहु भैनवार सु आइयो
 गुनवन्त गूदर चढ़िदियौ-सर सेल सांगन मढ़िदियौ
 सजियौ प्रचंड सु भौंगरे-जितवार जङ्गल के करे
 बिनवार गोधे बङ्ग हैं-जिनि किये राजा रङ्ग हैं
 सिरदार सांगरवार हैं-रन भूमि मांभ पहार हैं
 सिरदार सोरह ते सजे-रन काज ते रन लै गजे
 सजि नौहवार निसङ्ग हैं-रतवार रावत बङ्ग हैं
 मुहि नाम याद इते कहैं-बहु जाति जाट किते कहैं
 सबही सजे भट आगरे-सबही प्रतापु उजागरे ॥१३

छंद पटुड़ी

सज्जे प्रचंड कूरम कठोर चहुवान चढ़े उर धरि मरोर
 हाडा हुंकार हटके निधान साजें भुजान कम्मान वांन
 राठौर मौर चन्देल गौर सजि सजि तुरङ्ग चढ़ि करी दौर
 खीची पवार खरहरे खूब चढ़ि चढ़ि चलाक हयदै हवूब
 जादैं जुभार जाहर जहांन सीसौंदिया सुसज्जे अमान
 धन्धेल धीर धाण धवान धाकरे खीचरे कसि कूपान
 पोरच पुड़ीर पखरैत चढ़िदियौ निकसे मजेज हिय हरपि बढ़िदियौ
 बुन्देल वधेले बल अपार उच्छलत तुरङ्गम है सवार
 सुरकीर सुलंकी समर चाह साजें हथियार बहु वेस नाह
 तोमर तुरीन चढ़िके प्रचंड तन तेज दिपत कर तेग चंड
 ऊमट अनेक अचनी निधान अरवीन चढ़े आये अमान
 परिहार सार समहार हथ्य जे जङ्ग रङ्ग जानत समथ्य
 जसवन्त जसांवत साजवाज चढ़े कि क्यान करि करि गराज
 बलवन्त वैस सैन्धव सपट्टि आये चहुं ओरन ते भपट्टि

सब देह
 खी जस लेह
 ॥रैं करि लापु
 न हरि तापु ॥ ८

स
 वेस ॥ ९

न

प्रापुन कसिय
 लसिय ॥ १० ॥

१

मदिय
 चदिय ॥ ११ ॥

१ रडे
 चदे ॥ १२

(२८)

धाकरे भाभरे भरत भीर बड़गूजर धाय बल गँभीर
अरु सिकरवार करि करि सलाह ससिमान वंस सब धरनि नाह
गूजर गरूर गाढ़े गरज्जि तीखे तुरङ्ग चढ़ि चलें सज्जि
वेपीर वीर चल्ले अहीर मै नाम लूक मद मन्त धीर ॥१४॥

छंद त्रिभङ्गी

केते मुगलाने सेख पठाने सैयद वाने बांधि चढ़े
काइथ खतरैटे लोह लपेटे देत चपेटे चाइ बड़े
पाइक जे लाइक परदल घाइक लै धनु साइक लोहमढ़े
कोलाहल बढ्ढिय रविरज मढ्ढिय खलमन डढ्ढिय देखि कढ़े ॥१५॥

छन्द छप्पय

पूरव परिय पुकार भूमि दिगपालन छंडिय
पच्छिम तच्छिन गच्छि जमन ग्रह खल भल मंडिय
उत्तर सकल उदास त्रास तें ग्रास न भावै
दच्छिन पर्यौ भगान कहत सुरज कहुं आवै
आतंक मानि दव्वे दुवन देव दिगीसनु सुख बढ्यौ
ब्रज चक्रवर्त्ति वदनेस सुत श्री सुजान जबहि चढ्यौ ॥ १६ ॥

हरगीत छंद

भूपाल पालन भूमिपति वदनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकी चरित्र कळक सुदन कह्यौ छन्द बनाइ के
बह पत्र आवन दल सजावन प्रथम अङ्क सुनाइ के

इति प्रथम अङ्क ॥ १ ॥

दोहा

प्रथम कूच कुम्भेर तें करिकें सिंह सुजान
खान पान सेनहिं दियौ बहुरौ कियौ पयान ॥ १ ॥

धुमा
इय
सुत
उद
धुरे
पता
किं
किं
किं
बद
मद

दुपई

तीन कूँच अरु हूँ मुकाम में जाइ सु जैपुर लीनौ
जाने खबर करी ता नरकों नरपति बहु धन दीनौ ॥ २ ॥

दोहा

प्रथम ईसुरीसिंह ने मन्त्री दियौ पठाइ
फेरि आपुही आइयौ सुरज पै चित चाह ॥ ३ ॥
जथा जोग सनमान करि कीनौ मन्त्र विचार
ईसुर कही कि कुचर जो हूजै आप अगर ॥ ४ ॥
ऐसे कहि कूरम नृपति गए आपने गेह
आगे कौ सुरज तवै कियौ पयान सतेह ॥ ५ ॥
जलज अचल डेरा दए सिंह सुजान उमण्ड
निमै हूँ कूरम नृपति पाछै चल्यौ घुमण्ड ॥ ६ ॥

छन्द भुजङ्गी

घुमण्डे घने दन्ति घण्टान वारे उमण्डे मनो सह ते मेघ कारे
हयन्दा परिन्दानु के वेंग लीने खगाधीस मानौ घने रूप कीने
सुतरनाल घुड़नाल हथनाल वारे मनो काल के बालकेई पधारे
उदण्डी भुसण्डी लियै हथ केते चलै चाल उचाल आतङ्क देते
घुरै वार नीसान ढक्का डमकै दुरै दैरि दीने सुने सभु सके
पताका कितो है न ताका प्रमानै लताकित्त की के पताके समाने
किते बाम कम्मान अम्मान बांधै किते तेग तेगा धरै ढाल कांधै
किते वीर तनुवान कौ अङ्ग साजै किते ओपचो हूँ धरै ओप गाजै
किते वान पट्टे फरस्सा फिरावै किते दाव डोरी सुदावै बतावै
बढ़्यौ सह नर नद वेहह भारी सजी चारिहू अङ्ग की सेन रारी
अढ़्यौ कोप आमावती भूप ऐसै कढ़्यौ दैत्य के नास जंभारि जैसै ॥ ७ ॥

दोहा

आगे सिंह सुजान दलु पाछै कूरम भूप
जुद्ध काज उद्धत भए धरै वीररस रूप ॥ ८ ॥

(३०)

उतै विकल दल दक्खिनी सनमुख पहुँचे आइ
जिन के आसन सावहीं दिल्लीपति उमराय ॥ ९
कहि पठयो सूरज तवै कूरम सौं ता वार
हम इन कौ देखैं नृपति आप रहे पुठवार ॥ १०
फेरि कहौ निज सेनपति और सूर जे सङ्ग
सावधान सनमुख लरौ ज्यों नहिं विगरै जङ्ग ॥ ११
सिम्भू अरु सुखराम कौ आगें कियो सुजान
जङ्ग भार सब सौंपि कें जुद्ध हेत बलवान ॥ १२

छरपय

कुद्ध जुद्ध के काज दुहँ भट भण सनमुख
सूरन के मुख नूर कायरनु सूखि गए मुख
धरि धरि मुच्छनु हथ्य सेलु सागन पटतारत
लोह जन्म जम डाढ़ वान किरवान सम्हारत
धरि अग पग फर मग मैं खग कहत जुगिन जगिय
दुहँ स्वाम काम संग्राम मैं वीर वीर रस मैं पगिय ॥ १३

छंद नाराच

दिसानि भूरि पूरि कें निसान घोर गज्जियौ
क्रसान के समान छोड़ि थान थान भज्जियौ
किलकि कूदि कालिका उताल चाल आइयौ
कराल चन्दमुन्द के पिशाच पूत धाइयौ
शिवा शृगाल गोध जाल कङ्क काक कूकही
करै कलोल कोचरी उलूक उद्ध दूकही
चलै क्रवान वान आस मान भूग रज्जियौ
धवान दै दवान को रूपान हीय सज्जियौ
कितेक सेल सांग लै ह्यन्द हकि अगई
कितेक लंब ग्रीव चढ़ि लै जजाल दगई
किते पदाति खगघात लेत खेत पगई
कितेक लागिधकई नहीं सम्हार सकई
कितेक छाड़ि सकई सुसामुहैं सरकई

(३१)

कितेक धारि धारिके अरीन ओर तकई
कितेक ओट पाइके उठाइ मूँड भकई
कितेक धीर घोर तीर भीर मांभ कड्डिके
लगाय चोट आपनी उखाह हीय वड्डिके
घरीक मांभ घोर सार धूरि पूरि छाड़्यौ
ग्रहीस दीठि ना परै दुहुँ सरीस धाड़्यौ ॥१४॥

देहा

सहज राम सुखराम अरु सिंभू गोकुलराम
घौरौ वीरन संगलै कियौ घोर संग्राम ॥१५॥

छन्दत्रिभङ्गी

उथ्यौं मरहट्टे भालेपट्टे लै लै कट्टे सरपट्टे
इथ्यौं ब्रजवासी जे बलरासो हुवे, हुलासी भरपट्टे
हय सौं हय छुट्टे नेकु न हुट्टे तेगौं कुट्टे सिरफुट्टे
छोहौं भंरि छुट्टे कैसौं खुट्टे छुट्टक छुट्टे भुव लुट्टे ॥१६॥
भुव लुट्टे उट्टे जम ज्यौं रुट्टे बांधे मुट्टे रोस भरै
कठौं रज घुट्टे लोचन खुट्टे मानौं छुट्टे भेष धरै
तीरों के चुट्टे अगनित गुट्टे लै लै सुट्टे रन विफरै
तारे जिंमि दुट्टे साथ विछुट्टे केई दुट्टे फिरि न फिरै ॥१७॥
फिर फेरि भटकैं पंकरि पटकैं सांग सटकैं मारु कहैं
इक इक हटकैं देत दडकैं सेल तटकैं श्रौन वहैं
बिन हथ्य भटकैं भरत बटकैं मास गटकैं देखि रहैं
इक जांत पटकैं खग खटकैं सोस कटकैं दौर गहैं ॥१८॥
गहि दैरि दवावैं टेरि बुलावैं जौं गहि पावैं समुहावैं
जम डाढ़े काढ़े रन में ठाढ़े गहि गहि गाढ़े करि धावैं
विनु पाइ सरकैं उठत भरकैं देत करकैं सरतावैं
सिरबिनु उठि धावैं बग भिरावैं सनमुष आवैं भुव पावैं ॥१९॥
पावैं नहिं जावैं भुजनि भुजावैं मुण्ड भिरावैं समहरावैं
खज्जरनु चलावैं दन्त चलावैं भौह चढ़ावैं धर धावैं

(३२)

ढालनु ढलकावैं ढकनु ढकावैं डावत आवैं भटभारे
इक श्रौन सपेटें धूरि धुरैटे काल चपेटे भूपारे ॥२०॥

छुपपय

घरी इक उद्धत जुद्ध चाल दखिनी दल खाइय
सिम्भू अरु सुखराम जङ्ग बहु रङ्ग मचाइय
रहे खेत सत एक चेत विनु भरहुठ भज्जिय
निजु द्रुगि लखि महार हार अपने हिय लज्जिय
वज्जत निसान बुल्लत फते श्री सुजान धन वरषियौ
यह खबर पाइ सूरज बली सहित देस कुल हरषियौ ॥२१॥

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेस नन्द सुजान हैं
जानै दिली दल दखिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलक सदन कह्यौ छन्द बनाइ कै
यह समर मोती झू गरी कौ दुतीय अङ्क गनाइ कै ॥२२॥

इति द्वितीय अङ्क ॥ २ ॥

दोहा

उसरि राउ महार ने डेरा किए पछार
पाछेंही कूरम चलयौ सूरज मल्ल अगार ॥ १ ॥
वगरू महलनि पहेंच कै नरपति डेरा दीन
चहूँ ओर अपनी चमू सावधान करि लीन ॥ २ ॥
सनमुख जङ्गन जोरहौं वरगीदिन दिन मांझ
चहूँ ओर चमकत फिरैं ज्यौं विजुरी नभ सांझ ॥ ३ ॥
एक दिना कूरम नृपति सूरज मल्ल कुंवार
मन्त्र कियौ दोऊन मिलि लीजै धाइ मलार ॥ ४ ॥
यहै मन्त्र करि कटक कौ सावधान कहि दीन
जैसंहौं डेरा परत तैसें चलौ प्रवीन ॥ ५ ॥

जिहि भाँ
सुरेस ह
जिमि है
घरिके भाँ
घजियौ अ
फहरे धुन
गजगजई
घलकें सु
ललकें सु
ललकें अ
भलकें वि
गलकें सु
ललकें रा
ललकें प
नलकें सु
घरिकें र
उमड़े सु
मिलियौ

बहि बाँ
असि अ
अनगन
तज्जत
अनु ते
अव ले

कड़े मरहट
बड़े हय बाउ

(३३)

छंद तोमर

जिहि भांति मन्त्र डिढाह-तिहि भांति सैन चढ़ाह
इसुरेस है असवार-करि दुन्दुभी धुधकार
जिमि है सुजान सपूत-करि निजु वलै मजबूत
धरिकैं भयौ असवार-जितमें हुतौ मल्लार
वजियौ अनेक निसान-गजियौ सुभू असमान
फहरैं धुजा अति पीत-हरदेव की परतीत
गजगजही गिरिरूप-हय हैं जलह सरूप
वलकैं सुऊंट कतार-तिनपै अनेक सवार
ललकैं सुपाइक सथथ-पलकैं न राखत मथथ
ढलकैं अनन्त सुढाल-सलकैं सुसैल विसाल
भलकैं जिरह भौ टोप-दलकैं सु बाढ़त ओप
गलकैं सुसेली स्याम-वलकैं सुवचन उदाम
छलकैं गयन्दनु मद्-मलकैं सरीर अहद्
हलकैं धरत धर पाइ-थलकैं श्रवतु जलु आइ
नलकैं घुरत घन घण्ट-जलकैं करत उज्झण्ट
धरिकैं सरीरनु जोस-भरिकैं सुनैनु रोस
उमड़े सुभट्टनुठट्ट-जितमें हुते मरहट्ट
मिलियौ परस्पर डीठि-हथियार चमकि बसीठि ॥ ६

छंद छप्पय

बढ़ि बढ़ि निकसे वीर तीर तुपकनि कौ सन्धैं
असि दूँ दूँ तूनीर तुङ्ग तोमरि धरि कन्धैं
अनगन गोमुख तबल सबल वज्रत गल गज्जत
तज्जत भौति अभीति तुरङ्गनु वेगहि सज्जत
प्रभु हेत हेत जय देत पग नेत नेत बानी कहत
अव लेत लेत अव लेत अव खेत खूँदि सम्मुख चहत ॥ ७

छंद मुक्तादाम

कढ़े मरहट्ट सुभट्ट सजोर चढ़े हय चञ्चल देत मरोर
बढ़े हय बाज दराजहि हथ्य रढ़े मुख मारहि मार समथ्य

उढ़े मनु रूप लसै इहरूप
 मढ़े बहुकञ्जन भूषन अङ्ग
 पढ़े रन रङ्ग अभङ्ग सुधीर
 भए मुखमेल दुहँ दल सह
 धए धरि तेंग सुघौट उदण्ड
 दए इक इकनु कैं उर वान
 लए जब कौसनु तैं करखग
 खए लगि वांह उसारि उसारि
 ठए न ठए पठए जमलोक
 नएननए सनए मुखरत्त
 रएरल ए सुभ ए घल मेल
 खनङ्कत सेल वखत्तर तोर
 ठनङ्कत टोपनु पै लगि बाज
 रनङ्कत हैं टुटिकैं गरमाल
 फनङ्कत साइक चारिहुं ओर
 ठनङ्कत मूर्तिनु लागि कृबाल
 तनं कितहुं कितहुं किय मुं ड
 कटे कटिते इक व्है दुव वट्ट
 फटे इक सीस लगै असि घोर
 पटे पुहमी पर व्है बिनु मुं ड
 जटे इकतीरन सौं बिललात
 लटे तन जात किते छत जात
 घटे नहिं कोह भरे उर छोह
 नचे करतालनु दै हरताल
 धचे सिर के करि के कटताल
 सचे सुरलेत सुमारव राग
 भभकत घाह हबकत सांग
 धमकत धिंग घरा पर आह
 उमंडि कितेकनु चोट चलाह
 भज्यौ दखिनी झलु यौ भहरात

गढ़े जिन कैयक है महिभूष
 जढ़े मनु पाहन पावक सङ्ग
 ठढ़े रन भूमि जहां जदुबीर
 तए अति तेह करे बहु नह
 छए रसवीर चलाइय चण्ड
 गए छिन में तिनके कढ़ि प्रान
 हए हए हंकि बियै फरमग
 भये इत उत्त जवै रिसधारि
 ठए हय पिठनु तैं करि ओक
 वए मनु मुण्ड परे भलकत्त
 झनङ्कत सांग करे धरूपेल
 छनङ्कत तेग जझीरनु मोर
 सनङ्कत सिप्पर फूल दिसान
 हनङ्कत हैं कटि सीस कराल
 भनङ्कत गोलिनु की घनघोर
 टनङ्कत ढाय परे छुटि नाल
 सनंमुख मारु भए तऊ रुंड
 रतैं इक मारुही मारु सुभट्ट
 हटे हरदूत लखै मुखमोर
 छटे मनु वृच्छ परे फसि डुंड
 वटे हयटापनु सौं दविगात
 डटे इकघाह अघाह घुमात
 नटे मसहार धरे मन मोह
 मचे सुत भूतन के जहं ख्याल
 रचे जिनि तंडवनाच कराल
 पचे करिवीन वजे कर खाग
 घुमात खरे मनु खाइय भांग
 भभकत श्रोनित कीचहि पाइ
 भुसिंदिनु मारि दए अहुटाइ
 गज्यौ सुनि इन्द्र मराल सुजात ॥८

छन्द छप्पय

श्रोणित सलिल सिवार केस बहु वेस परे जहँ
मेद गूद करि पङ्क सूकि पंकज सम सिर तहँ
दादुर बोलत घाइ वेलि मुरभाइ परै कर
मलिन मोन तरफरत धरत बहु रूप तहाधर
बहु गोध काग खग बसत जहँ लसत नहौ काहू धरिय
सूरज प्रताप के ताप भुव छीन सरोवर सम करिय ॥ ९

विजय पाइ दुन्दुभि वजाइ आप सुजान भट
बहुत भाइ सनमान पाइ बैठे सुजान तट
कहत जुद्ध विरतन्त अन्त अरि कौ करि आइय
श्रीहरिदेव प्रतापु आपु जस कीर्ति वढ़ाइय
यह खबर पाइ जय साह सुत भर उछाह धनि धनि कहिय
वदनेस नन्द ब्रजचन्द पर खल खण्डन वरुते लहिय ॥ १०

सोरठा

ऐसें कैऊ जुद्ध जीते सिंह सुजान ने
तव मलार है सुद्ध कूरम सौं एकौ कियौ ॥ ११

दोहा

दोइ परगने लै दिप ईसुर सों मलार
मधुकर कौ समभाइ कै पठै दियौ ननसार ॥ १२

पनु जोख्यौ मलार कौ मनु जोख्यौ इसुरेस
रन जोख्यौ सूरज वली थांभि दुंढाहरदेस ॥ १३

छन्द पवड़ा

तव कूरम चित चाय सुजान बुलाइके
हय गय मुकाहार बंसन पहराइ के
कियौ अधिक सनमान विदा करि देस कौ
कहियौ यह सन्देस नृपति वदनेस कौ ॥ १४

(३६)

सोरठा

ज्यों जैसाहि नरेस करत कृपा तुव देस पै
त्यों व्रजेस वदनेस करत रहौ हम पर कृपा ॥ १५

फिरि आप निजु ग्रह सहित नेह सबदेह सौं
जैसैं भावतु मेह बहुत काल सुखा भणं ॥ १६

दोहा

पग भेटे वदनेस के सूरज मन वच काइ
तव उठाइ सिर सूँघि कै लीनो अङ्ग लगाइ ॥ १७

तव सूरज कर जोरि कै कहे जुद्ध विरतन्त
महाराज परिताप तैं करि आप अरि अन्त ॥ १८

सुनि सन्देश वदनेस ने कियौ बहुत सनमान
जथाजोग सब सूर कौं कीनो मान बखान ॥ १९

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेसनन्द सुजान हैं
जाने विलीदल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलूक सुदन कह्यौ छन्द वनाइ कै
यह जीति वगरु महल पाइय त्रितिय अङ्क सुभाइ कै ॥ २०

इति तृतीय अङ्क ॥ ३ ॥

सिद्धि श्री मन्महाराजाधिराज व्रजेन्द्र वदनेस कुमार श्री
सुजानसिंह हेतवे कवि सुदन विरचिते सुजान
चरित्र वगरु महल इङ्गरी जुद्ध विजय
वर्णन नाम द्वितीय अङ्क
सम्पूर्ण ॥

अथ तृतीय जंग लिख्यते

कवित्त

बापु विस चाखै मैया खट मुख राखै देखि
आसन में राखै वसवास जाको अचलै
भूतनु के छैया आसपास के रखैया
घोर कालो के तथैया हू के ध्यानहू ते न चलै
वैल बाघ वाहन वसन कौ गयन्द खाल
भांग कौ धतूरे कौ पसार देतु अचलै
घरफो हवालु यहै सङ्कर कौ बाल कहै
लाज रहै कैसे पूत मोदक कौ मचलै ॥ १

दोहा

ठारौसौरपचातरा पूस मांस सित पच्छ
भीसुजान विक्रम कियो ताहि सुनौ नर दच्छ ॥ २

छन्द अरिल्ल

बहुत दिना बीते निज देसहिं	तबहीं दूत कह्यो सन्देशहिं
दिल्लीपति वकसी इहि देसहिं	आवत तुम सौं करन कलेसहिं
सहस तीस असवार सङ्ग गनि	पैदल पील फील बहुतै भनि
जोरें तुरक सहस दस बांसहिं	आवत तुमसौं करि मन रीसहिं
अलाकुली रस्तमखां सङ्गहिं	हकोमखां कुवरा हित जङ्गहिं
फतेअली औरौं बहु मोरन	राजाराउ लयें सङ्ग धोरन
इन्द्र नगर दच्छिन दिस कहूँ हिय	निपट गहर पूर हिय चढ़ूँ हिय
कछु दिननुं आवै मेवातहिं	करिहै तहाँ अधिक उतपातहिं
यातें वेगि करै कछु घातहिं	जातें बाकौ होइ निपातहिं
अब जौ नीक होइ सो कीजहिं	याहिं मारि जग में जस लीजहिं
यै कहि दूत नाइ निज सीसहिं	सूरज आइ कह्यो ब्रज ईसहिं

तुरक सहस जोरें दस बीसहिं दिल्ली तें निकस्यौ धरिं रीसहिं
हम सौं जुद्ध करन मन राखतु महाराज मैं हूं अभिलाषतु
आयुस ईस तुमारौ पाइय तौ याकौ कछु हाथ लगाइय
तब ब्रजेस सुनिकैं यह भाषिय तात मतौ मो मन यह राखिय ॥३॥

सोरठा

दिल्ली तें कढ़ि दूरि जब आवै मैदान भुव
एक भपट करि सूर याकौ दूरि गरूर करि ॥ ४ ॥

देहा

मतौ मानि वदनेस कौ सूरज उदित प्रतापु
आइसु लै असवार हौ करि हरदेव सुजापु ॥ ५ ॥

छंदपट्टि

जव चढ़्यौ सिंह सूरज अमान वज्रौ निसान घन के समान
पोरे निसान सोमित दिसान अरि गहन दहन मानहुं कसान
सुन्डाल चलत सुन्डनि उठाइ जिन कै जंजीर भन भनतपाइ
घन घनत घन्ट अरु धुधुर माल भन भनत भवर मद पर रसाल
छन छनत तुरङ्गम तरहदार फनफनत वदन उच्छलत वार
सनसनत सिमिटि जव करत दौर गुनगिनत सुतिन के कविनु मौर
सोहैं अनेक गज गाह वन्त चमकन्त चारु कलगी अनन्त
भलकन्त जिरह वखतर नवीन तमकन्त वीररस भट प्रवीन
टमकन्त तबल टामक विहद ठमकन्त टाप विनु भुव गरद
ढमकन्त ढोल ढफला अगार धमकन्त धरनि धौसा धुंकार
खमकन्त वीर करि करि सुचाख लमकन्त तुरङ्गम पाइ पोष
हमकन्त चले पाइक अनेक इक जङ्ग रङ्ग जानत विवेक
कोदन्ड चन्ड करकटि निषङ्ग इक चन्ड भुसन्डी लै तुफङ्ग
इक सेल सांग समसेर चर्म रनभूमि भेद जानत सुपर्म
सब चढ़े वड़े उच्छाह पूरि छपि गयौ गगनरवि उडिय धूरि
चतुरङ्ग चमू सतरङ्ग रूप सजि चढ़्यौ सूर सूरज अनूप ॥६॥

दस
तरा

भूपाल
जाने वि
ताकौ
सजि है

सूरज
साम
कल
विदा
देस
स्वा
वहु
पर
खान
करी
नैन
करी
क
फ

ीसहिं
तु
इय
खेय ॥३

(३९)

दोहा

कूच कियो डेरा दियो नौ गार्ह मेवात
तरन तनेने तेह सौ जुद्ध हेत ललचात ॥ ७

हरगीतछन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेस नन्द सुजान हैं
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कछुक सुदन कहौ छन्द बनाइ कै
सजि सैव सुरज चढ़िदियौ कहि प्रथम अङ्क सुनाइ कै ॥८

इति प्रथम अङ्क ॥ १ ॥

छन्द पवड़ा

सुरज चारि उपाय प्रवीन सुचित्तई
साम दाम अरु भेद दण्ड धरि निचई
खल के मन की लैन बात करि सील की
विदा करी समुझाई प्रवीन वकील की ॥ १

देस काल बल ज्ञान लोभ कारि हीन है
स्वामि काम मैं लीन सुसील कुलीन है
बहु विधि बरने वानि हियें नहिं भै रहै
पर उर करै उदेग दूत तासौं लहै ॥ २

खान सलामत पास वकील सु जाइ कै
करी सलाम कवाद अदाब वजाइ कै
नैननु लई सलाम सलाबतखाननैं
कहौ कहा कहि वेग सुतोहि सुजान ने ॥ ३

दोहा

कुंवरवहादुर ने प्रथम तुमकौ कहौ सलाम
फेरि कही कि नवाव इत आप हैं किहि काम ॥ ४

॥न
सान
पाइ
साल
॥र
मौर
न
।
इ
र

धुरि
॥६

करत चाकरी साह की हम पाये यह देस
ताहि उजारत आप क्यों तुम को कछौ संदेस ॥ ५

जो कछु तुम्हें दिलीस नैं कछौ ताहि कहि देउ
तामाफिक हमसौं अवै आप चाकरी लेउ ॥ ६

छन्दनिसानी

इसी गल्ल धरि कन्नमें वकसी मुसक्याना
हमनू वृभत हो तुसी क्यों किया पयाना
असी आवने भेद नू अवलैं नहिं जाना
साह अहम्मद ने मुझे अपना करि माना
तखत आगरा ग्वालियर हिंदौन वयाना
होडिल पलवल अलवरौ मेवात सध्याना
चार पार मथुरातलक हूवा फरमाना
वकसी की जागीर दै वकसी में ठाना
इन में ते जे तुझ तरैं तहँ करि मोथाना
दो करोर दै साहिनू सङ्ग होहि सयाना
होर कछा है साहिनू सो भी सुन जाना
असदखान सिरकार दा चाकर क्यों भाना
तैं अपने मन में गना वृडा तुरकाना
कै एक गल्ल कवल करि कै हो मरदाना
जब यौ कछा नवावने सुन दूत अमाना
मामलतिनहिं न होइसी दिल अन्दर जाना
तिसी घड़ी नवाव सैं कर जोरि वखाना
जेहा जिसनू लोडियै तेहा फुरमाना
वह वन्दा है साहिदा दरपुस्त पुराना
दोना तखतौ दै बिचौं तदही ठहराना
जिसका नाउ सुजान है देसी नहिं आना
जमीं न अंगुल छोड़सी यह उस दां बाना
मैंनू रुखसद दीजिये नाहक बतराना
हुण वन्दा दुहुं ओर दा बन्दगी सुजाना

एक कंद
ब्रह्मा
विष्णु
कले वि
विष्णु
रत जीत
वक्त्र
बुद्ध
वह संतु
ग्री सै
जल जो
दुम ज्यो
दस कोर
निस पव

देस
तो संदेस ॥ ५

कहि देउ
लेउ ॥ ६

ना

(४१)

ये जुवाव नवाव सुनि दिल माहिं रिसाना
तद वकील सैं यों कथा करि जाहि पयाना
उसी चखत सिर नाइ कैं सो हुवा रवाना
आगें सिंह सुजान कौ भेजा परवाना
अवल आपनी वन्दगी वकसी सतरपना
जसी कही तेई लिखी नहिं नेकु भुलाना
होर लिख्या इस तुरक नू तेहा अधिकाना
जङ्ग अखाड़े में इसैं कीजै सनमाना* ॥ ७

सोरठा

श्री ब्रजेस कौ नन्द कागद वाचि वकील कौ
अङ्ग अङ्ग आनन्द हरखि हियें हरदेव कहि ॥ ८
सूरज कियौ विचार सब डेरा छाई रहें
चञ्चल हय असवार पाइक चले चलाक सैं ॥ ९

छंद सोटक

रथ ऊंट गयन्द मुकाम कियं	तिन सङ्ग पदातिनि राखि दियं
छ हजार सवार तयार लियं	तिहिं सङ्ग सुजान हरषि हियं
रवि उगत चार पयान कियं	हय के असवारन और वियं
करलै किरवान निसान दियं	जिहिं के सम सूर न और वियं
तिहं चार तुरङ्गम साजि घनं	असवार भयौ वदनेस तनं
रन जीतन कौ मन राखि पनं	करि दुन्दुभि दीह अवाज घनं
जव कूच कियौ रसवीर सनं	तव पीत पताकन सों भवनं
जनु चंचल दामिनि सोभ घनं	हय टापन सों कहुं होत उनं
वह सेनु दरेनु देति चली	मनु सावन की सरिता उभली
अहि सैल मनो मुख काढ़ि रहे	अरु ढालनु कछु रूप गहे
जल जोरि तुरङ्गम देखि रहे	जनु मीन जहां भुज देह लहे
ठुम ज्यौं ठुम ढाहति आवत है	इम सैन नदी सु कहावत है
दस कोस सुभूमहिं पीठि दियं	तिहिं थान मुकाम सुजान लियं
निस एक वसे परभात भयौ	तव आइस सिंह सुजान दियौ ॥ १०

सोरठा

है नवाव दस कोस कोस पांच घौरी चलै
दिखा दिखी कै जोस रोस भरे लरिहैं भले ॥ ११
यों कहि सिंह सुजान पांच कोस कौ कूच करि
चौकी करी अमान सहस सहस असवार की ॥ १२

छंद पट्टरी

सिरदार सुगोकुलराम गौर । जिहिं सङ्ग सहस हय करत दौर
तसु अनुज सु सूरतिराम सङ्ग । सतचार तुरीवर लेत जङ्ग
सत पांच तुरी कूरम प्रताप । सँग लियैं जुद्ध परबल उथाप
अरु एक सहस वलिराम वीर । हय हँकि हँकारत समर धीर
सत चारि वाज स्यौसिंह धीर । इक सथ्य हथ्य बल करि गँभीर
एक सहस वाज कीने सनाह । वह धीर वीर महमद पनाह
सत वेद किष्याननु सहित जोर । रन भूमिसिंह राना कठोर
सत एक हयंदनु लै उदग । हरिनारायन जिहिं प्रबल खग
इहि भाति घौर बलवान जोध । सब सत्रु हेत हिय धरत क्रोध
इनके सुगोल किय चारि चण्ड । खल खण्डन तिनकौ बल अखण्ड
इनतैं जु अरध निजु राखि सथ्य । जे हथियनिहू सौं करत हथ्य
इहि भाति पांच चौकी बनाइ । यह कह्यौ बचन तिन सौं सुनाइ
तुम जाउ चहुँदिस तैं मरइ । परबलहि घेरि दीजै दरइ
जहं खान पान पावै नजान । अरु जुद्ध वार सब सन्निधान ॥ १३

दोहा

ऐसैं बचन सुजान के सवै सुभट उरधारि
बकसी की तकसी करन चले सेल पटतारि ॥ १४

छन्द भुजङ्गप्रयात

चहुँ ओर धाप धराधूम धारैं । धमकैं धरें पाइ दै दै हँकारैं
सवै ओर तैं धाइ कैं धूम पारी । सुनैं सैद की फौजनैं भीति धारी
हुते फौज तैं बाहरे ते डराने । कुल खी लगैं ज्यौं पराए पियाने
किहू धाइ कैं ज़ाह कैं पील लीने । किहू फील पाठे पटक *हाथ कीने

श्री चलें
रहैं भले ॥ ११
कौ कंच करि
सवार की ॥ १२

स हय करत और
चर लेत जङ्ग
परवल उथाप
हारत समर धीर
स्थवल करि गँगीर
महमद पनाह
सुह राना कठोर
हिं प्रवल खग
हिय धरत क्रोध
दनकौ वल प्रखण्ड
हूँ सौं करत हण्य
तिन सौं सुनार
जै दरद
च सन्निधान ॥ १३

धारि
टतारि ॥ १४

दै दै हँकारें
जनें भीति धारी
पराय पियाने
पटकि हाथ कोने

किहूँ छैल नैं वैल लै गैल चाही । किहूँ लैतुरी कौ घनी सैन गाही
कहूँ फील फैले मनोहैं घटा ए । भुसुण्डीन सों मारि काहूँ हटाए
भए सैदके लोग सबवै इकट्ठे । मनौ सिंह की संक सौं रोभपट्टे
तहाँ सार वाढ़यो कहैं जट्ट आए । करौ सावधानी रहै ठौरठाए
सवै सैदकी फौज यों खलभलानी । लगै आगिके ज्यौँ उठै घौटि पानी
कहौ दैरि काहूँ सुनी आप वकसी । लगै एकही वारही में धमकसी
घरी एक में चेत हूँ वीर बुल्यौ । घणी वारलों आपनी सीस डुल्यौ
करौ बेकरौ बेगही सावधानी । बुलाघौ नकीवौ नहीं बात मानी ॥ १५

देहा

तब नकीव सों यों कियौ हुकुम सलाघत खान
लोप वान अर रहकला चौकस करौ दवान ॥ १६
कटक घोच में राखिके इनसें यह कहि देउ
आप आपने मोरचा सब चौकस करि लेउ ॥ १७
लाघदार रक्खो कियं सवै अरावौ एहु
ज्यौं हरीफ आवै नजरि तवै धड़ाधड़ देहु ॥ १८
तबही सूरज के सुभट निकट मचायो दुन्द
निकसि सकै नहिं एकहु करौ कटक मसमुन्द ॥ १९

हरगीतछन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेसनन्द सुजान हैं
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलूक सुदन कह्यौ छन्द बनाइकै
वकसीहि बेदन सुभट सूरज दुतिय संकहि धाइकै ॥ २०
इति द्वितीय अङ्क ॥ २ ॥

छप्पय

छुटन लगे उदण्ड चण्ड कोदंड भुसंडी
जबर जङ्ग घनघोर मारु गोलखु की मंडी
आस पास ब्रज वीर भीर बहु मीरखु पारतु
निकसि सकै नहिं कोई रैन दिन जुद्ध विचारतु

इह भीति कलुक वासर गये तब वकसी रोसहिँ भर्यौ
सिरदार मद्धि दरवार जे तिनहिँ आपु आयुस कर्यौ ॥१॥

देहा

तुम सवार इसवार हो निकसौ सवै अगार
मैं भी साइत देखिकैं एक करौंगा मार ॥२॥
खान सलावत कौ हुकुम वे अमीर सुनि कान
अपने अपने मन लगे जुद्ध हेत ललचान ॥३॥
रुस्तम खां सुहकीम खां अरु कुंवरा अति चंड
फतेअली सु अलाकुली साजी सैन उदंड ॥४॥

छप्पय

उन्नत असित मतङ्ग ललित कञ्चन अम्बारिय
घन दामिनि के भेस गजनु घंटनु धुनि धारिय
रुक्मरजत वरवाज साज साजे बहु रङ्गनि
तङ्गन लिए पतङ्ग मनौ इम भरत छलङ्गनि
अंगन अनूप कवचनि कसिय लसिय मनौ फनिधर खदे
हय नाल हंकि हथनाल हुव सुतनाल सनमुख घरे ॥५॥
दै दै दिग्घ निसान वान नीसान अग्गाधरि
चढ़े गयन्दनु पिट्टि दिट्टि अति रोस रङ्ग भरि
चंवर चलत चहुं ओर चाह सिप्पर चमकावत
चलत चमू चतुरङ्ग मनहुं पावस घन धावत
उकत तबल इकगल रव मल्ल भल्ल फेरत भले
सूरज प्रताप पावक निरधि मनु पतङ्ग आवत चले ॥६॥

पावकुलक छन्द

जवहीं कटक निकट तैं कढ़े पांचौ चपल गयन्दनि चढ़े
तबहिँ अग्र उतपात सुबढ़े गिद्ध आइ सनमुख रव रढ़े
लरत विलाउ सामुहैं आप आमसिंह अवननि फटकाए
सिवा शृंगल सामुहैं रोए रजकु वख लाये बिन घोए

अगिन धुंघात मनुज कर लाप मुकुलित केस जटिल दरसाप
 आनि उलूक धुजा पर बैठे पलचर परत चमू में पैठे
 चलत गयन्द अचानक धुकेँ अकसमात चालकौं चुकेँ
 आंकुस गिर्यौ महावत करते गद्गद् कंठ भए रन डरते
 नैनन नीर वह्यौ तिहि वेरे उठे रोम मानौ जम घेरे
 भए इते उतपात महा ए बस परि काल नहीं मन लाप
 मानौ जंमपुर जात पलाप पांचौ चढ़े गयन्दनि आप
 सहस दोइ दोइ हय साजे पैदल पील बहुत गल गाजे
 भए आनि रन भूमि इकठ्ठे निकट सिंह के ज्यौं मृगपट्टे
 कोर बांधि पांचौ भए ठाड़े आगे धरै जँजालनु गाढ़े
 हथ नालरु हयनाल उदंडी तोप रहकला और भुसंडी
 अपनौ कटक घेरिके ठाड़े कोस दोइ डेढ़क भुव वाढ़े ॥७

दोहा

तबही सिंह सुजान सों कही दूत ने धाइ
 आजु तुरक बाहर कढ़े सजे सैन बहु भाइ
 रुस्तम खां सु हकीम खां कुवरा अरु बलधारि
 फतेअली सु अलाकुली निकसे जङ्ग बिचारि ॥ ९

सोरठा

सुनि तहँ सिंह सुजान चार्यों चौकी दढ़ करी
 सहस दोइ* लै ज्वान आपु चलयो पुठवार कौ ॥ १०

छन्द अनुगीत

दुहुँ और धुंधिय धूरि हंधिय चमक चुंधिय रुद्ध
 घनपटह बज्जिय गज गरज्जिय भीति भज्जिय कुद्ध
 हथनाल हड्डिय तोप डड्डिय धुनि धमड्डिय चण्ड
 हयनाल छण्डिय तरु भुसुण्डिय धर निखण्डिय खण्ड
 दुन्दुभि धमड्डिय भेरि भड्डिय तूर सड्डिय कूर
 अति घोर सोर भयानवद्विदय मारु रद्विदय सूर

* पाठांतर-सहस दोइ परमान ज्वान वङ्ग निज लै चढ़यो ।

(४६)

लखि दूर नहिँ कद विहहिँ वदन बहहिँ टेरि
कुहकन्त वान चलाइ चण्डिय देत गोल वखेरि
धरं धरत देत धवान कौं खरखरत वखतर भंग
तरतरत तेहनु सौं भरे ढरढरत ढाल निषङ्ग
कर करत धनुषन कौं खरे भरभरत वीर सुतीर
धरधरत धरु डिहाव सौं नहिँ टरत एकहुं वीर
दुहं देखि दपटत हयन भपटत जाइ लपटत बाइ
फिरि फेरि अहुटत चलत चुहटत दुहं पुहटत आइ
नहिँ जमनि ठठ अहट्ट खाइय रहिय पाइ रुपाइ
वज्र वीरहु रन धीर रुपिय जैति हेत लुभ्याइ ॥ ११

छापय

या विधि जुद्धहिँ करत दिवस वीतन जब लगिय
तुपक तोप* जजाल चोट इनही की दागिय
यह सुनि सूरज कहिय आज ए जान न पावै
करिहैं श्री हरिदेव सोव करनौ कहा तामैं
यौं वचन मानि सबही सुभट सनमुख धाइय रोस धरि
इकवार सिमटि चहुं ओरते कहत देव हरिदेव हरि ॥ १२

भुजङ्गी छन्द

छुटे एकही वार सो जुद्ध काजै । जुटे जाइकें धाइकें छेह साजे
छुटे खभंग हथथौं अरवीनु चहुटे । हटैं नाहिँ कोऊ सबै साथ बढे
चहुं ओर सौं सारथीं घोर काथै । मनौ सिन्धु सदे हवा कौं हलायै
किंहुं सेल सम्मारिके हांक कीनी । विथै तेग सौं काट कै डारिदीनी
किंहुं वाढ़ के सेर समसेर वाही । किंहुं लैं भुसुण्डीनु सौं देहदाही
तहां चण्ड कोदण्ड लै हथथ केते । धए सनु के सामुहें पग देते
कहूं लेहुरे लेहुरे लेहु सदै । कहूं देहुरे देहुरे घोर बदै
अहट्टैं भयौ सद्ता भूमि माहीं । तहां आपनी आपनी चोट वाहीं
कहूं सेल सन्नाह कौं फेरि बैठे । मनो भानुजा में फनी जात पैठे
कहूं सांग दुहुं सांग कौं भेदिअच्छी । किधौं औं नपानी चली भाजिमच्छी

बढ़िं देरि
ल घखेरि
अतर अंग
निपङ्ग
धीर सुतीर
एकहुं वीर
अपटत बाइ
पुहटत बाइ
तइ रुपाइ
अभ्याइ ॥ ११

तब लगिय
गाय
पावै
मैं
तइय रोस बरि
हरिदेव हरि ॥ १२

इकें छोह साजे
सबै साथ बढे
हवा कौं हलार्यो
इकें डारिदीनी
तु सौं देहदाही
हिं पग्न वेते
वीर बहै
गनी चोट बाहीं
फनी जात पैटे
अलीभाजिमच्छी

(४७)

लगे तीर तोखे कछु भाल* दीसै । मनौ तीन नैना धरे ईसरी से
कहू तेग तेगौं भरै भार उठी । मनौ जोर ज्वालामुखी जङ्ग रुठी
किते भाल भालेनु सौं लाल कीने । मनौ फाग के ख्यालके रङ्ग भोने
भरे बत्थसौं बत्थकै लथ पथ । मुखौं मारुही मारुकाँ वीर कथ्यै
पलक एक पेसें भई मार भारी । लखै दूरिही तै हँसै रैन चारी
घण सूर के सूर दै पाइ अगो । डराने तहाँ खान के लोग भगो
जिन्हँ स्वामिके कामको लाज भारी । खड़े खेत खूनी नहाँ सङ्ग धारी ॥ १४

दोहा

अलाकुली सु फतेअली कुवरा गए पलाइ
रुस्तम खां रु हकीम खां ए पग रहे गड़ाइ ॥ १४

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिलो दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कछुक सूदन कह्यो छन्द बनाइ कै
अति दुन्द जुद्ध विरुद्ध उद्धत तृतीय अङ्क सुनाइ कै ॥ १५
इति तृतीय अङ्क ॥ ३ ॥

दोहा

तुहं गयन्दन पै चढ़े धनुष बान गहि हथ
जम किंकर जिमि कोहकै नरनु करत लथ पथ ॥ १

छप्पय

तिन के जुद्धहि देखि बहुत चरवीचर आइय
जुगिनि जोरि जमाति जहां जाहर जमुहाइय
कालो करत कलोल खलखलै तह खवीस गन
भैरव भभर्यो फिरत पिता के हार हेत रन
जह ईस दूत जगदीस के गौरवान गनिका उमगि
जह रुस्तम खां रु हकीम खां स्वामि काम हित रहिय पगि ॥ २

* पादांतर-पार ।

सजुता छंद

रन तै न पाइ चलाइये धनु बान लै समुहाइये
 चलु आपनौ सब सङ्गलै विफरे सुवीर उमङ्गलै
 तिहि देखि जटभपट्टिए पल एक माहि दपट्टिए
 तह गौर गोकुलराम ने बहु रङ्ग जङ्ग मचावने
 करि कुद्ध जुद्धहिं पिल्लियौ गहि सेल सांगनु भिल्लियौ
 तिहि भ्रात सुरतिरामहैं बहुसूरता कौ धाम हैं
 बलिराम विक्रम आगरौ गहि तेग जुद्धि उजागरौ
 परताप कूरम केहरी वरसाइ बाननु की भरी
 सिवसिंह सार समहार के भिलि गयौ फौजहिं फारि कै
 अरु मोर वीर विहण्डनौ बहु रीति जुद्धहिं मण्डनौ
 लहि तेग तीरन जुद्धियौ परभूमि तै नहिं हुद्धियौ
 सर स्याम सिंह समहारि कै अरि मारिये ललकारि कै
 ब्रजसिंह वीर महाबली जिनि लै अनौ अरि की दलो
 पखरैत पाखरमल्ल हैं करि धयौ पारतु हल्ल हैं
 अरु किसनसिंह दरेर दै गहि दई सांग करेर दै
 बलवंड सिंभू कौ तनै जिहिं नाम हरिनाराइनै
 अरु भौरङ्ग बहु सूर हैं पर प्राण पीवन पूर हैं
 इतमें इते बलवान हैं उत सेख मुगल पठान हैं
 तिन में मच्यौ घमसान है सरसेल सांग कृपान है
 उहुं दट्टि दट्टि दवट्टहों अरि नाम लै लै रट्टहों
 इक देत घाइ भटकि कै हय तै सुदेत पटकि कै
 इक देत हल हटकि कै इक एक परत लटकि कै
 सुहकीमखां भुज दंडतैं अरु रुस्तमां बलवंड तैं
 ज्यौं कुपित सेही अङ्ग तैं ल्यौं छुटत बान निषंग तैं
 तिहि देखि सिंभू कौ बली रिसज्वाल अंतर उच्छली*
 फटकार सेलहिं हथ में हय हंकियौ अरि गथ में
 सुहकीमखां लखि आवतौ जो हुतौ चाप नचावतौ
 तिहिं कान लैं कसिवान कौ तकि दियौ ताकि भुजान कौ
 सर सो लग्यौ उर आइकैं छत कर्यौ श्रौन बहाइकैं

* पाठांतर-तिहि देखि सिंभू का तनै—रिस ज्वाल उर अंतर सनै ।

वह वीर ती
 हय हंकियौ
 यौ सिंह ग
 फटकारि से
 वह सेल ग
 तव ही सुत
 हय स
 तवही सुदि
 गज कुंम द
 फरि धाइ
 सु हकीम व
 इमि गिरत
 तवही सुसे
 तवही सु
 करि एक प
 तवही सुदि
 सिरदार ज
 तीव्रकें ह
 ब्रज वीर

तवही
 चाप य
 श्री चा
 जह जह
 फेरि व
 जहां प

हुत पै ।

है समुहारै
 र उमङ्गलै
 हि दण्डिए
 मचावने
 गनु भिलियै
 धाम है
 हि उजागरौ
 को भरी
 नहि फारि के
 इहि मण्डनौ
 हि बुद्धियो
 लकारि के
 रि की दलो
 उ हलु है
 करे दे
 हरिनारायै
 न पूर है
 पठान है
 रूपान है
 है रदही
 पटकि के
 लटकि के
 लवड तै
 निषंग तै
 उच्छली*
 र गद्य मै
 नचावतौ
 मुजान को
 बहाइके
 र बने ।

(४९)

वह वीर तीरहि कटकि के रस वद रङ्गहि बहकि के
 हय हुंकि यौ गजदन्त पै मनु राखि के अरि भन्त पै
 ज्यौ सिंह गज मदमन्त पै हय लस्यौ सौं करि दन्त पै
 फटकारि सेलहि उदकौ तकि आपुनो अरि सुद कौ
 वह सेल गज ग्रह मेद के सुहकीम सां तनु छेद के
 तव ही सुतीरन बुद्धियो सु हकीम सां रन रुद्धियो
 इक द्यौ सरकटि तकि के वह लग्यौ हिरनहि धाकि के
 तबही सुसिंभू पूतने गहि तेग बल मजबूत ने
 गज कुंभ दह्य करकि के मनु परिय विजु तरकि के
 फिरि धाइ गज गद्दी दलो कसना विदारिय भुजबलो
 सुहकीम सां भुव पारियौ गज पुद्धिते गहि डारियो
 इमि गिरत लोग निहारियो मनु कन्ह कंस पछारियो
 तबही सुसेलर सांग की बरपा भई चहुं प्रांग की
 तबही सु औरन दारिके लिय रुस्तमा भक भोरि के
 करि एक एकहि चोट सौं राख्यौ हकीमहि जोट सौं
 तबही सुतिन के साथके करि एक एकहि हाथके
 सिरदार जूझत खेत में भजि गए बहुत अचेत में
 तजिके हथियारनु पिठि दै धंस गए लसकर निठि दै
 ब्रज वीर हू तिन संगही चलि गए कटक उमंगही ॥ ४

दोहा

तबही बकसी के कटक खल मल परी अपार
 आए आए सब कहै सूरज सुभट उदार ॥ ५
 घरी चारि डेरा लुटे बुटे तुरक बेहाल
 जट जट कहते फिरै सबने जान्यौ काल ॥ ६
 फेरि बगद ब्रज वीरसां आए ताही खेत
 जहां परे रुस्तम बली भर हकीम सां रेत ॥ ७

कवित्त

हुब पै हकीम सां सुघक पक छेड़ि धायौ
 पंग न डिगायौ भरि आयौ मन रीस नै ।

(५०)

निपेट भयान छिनमान रनधान कर्यौ
सान धरै बाननु चलाइ दसवीस नै
रेत खेत भयौ तऊ सेत जस लेत रह्यौ
नेत नेत गायौ कौटि तीन पौर तीस ने
जोगिनी रकत पायौ तन ताकौ प्रेतपूत
सीस पायौ ईसने असीस ब्रज ईस नै ॥८

तोम तम छाप सुलतान दल आए
साँ तौ समर भजाए उन्हें छाई है चकसी
काल कैसी रसना कराल किरवाल तेरी
ब्याल भाल काढ़ि के करन लागी तकसी
सुदन सुजान मरदान हरिनाराइन
देव हरिदेव जङ्ग जैति तोहि बकसी
जूमत हकीम खां अमीरनुकै धकसी
औ बकसी के जियमें परी है धकपक सी ॥९

लौकतु चकत्ता जाके कत्ता की कराकनि सैं
सेल की सराकनि न कोऊ जुदै जङ्ग है
कैयक अमीर मीर पीर तें फकीर करै
वीर बल वीर कौं सदाही सुभी सङ्ग है
सुदन सकल देस देसन अदेस भयो
भाजत दुवन ज्यों लियैं तुरङ्ग तङ्ग है
जैति कौं निधान तेज भान के समान मान
आजु तौ जिहान में सुजान मुख रङ्ग है ॥१०

सवैया

जुद्ध जुदै न मुरै ब्रज वीर सु सेलन सैं धकपेल मचाए
जुगिन खप्पर पूरि नची पर के सिर दैर हरै पहराए
फेर फिरे तन श्रोन भरे मनु भोर के भान सुरेस पै आए
देखत सिंह सुजान अमात भुजान भरे उठि अक लगाए ॥ ११

(५१)

त्रिभङ्गी छन्द

बाजे सहदाने सुजस पुराने तूर पुराने, गुन गाने
सकसो दल भाने मङ्गल माने यों सुख साने हरबाने
आप अतुराने बाँधे बाने जे मरदाने समुहाने
ते कण्ठलगाने दैवहु माने सूरज माने जग माने ॥ १२

छन्द हरगीत

भूपाल पालक भूमिपति वदनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिली दल दक्खिनो कौने महा कलिकान हैं
ताको चरित्र कलूक सुदन कह्यो छन्द बनाइ कै
सु हकीम दस्तम बित्तियौ रन अंक चौथौ गाइ के ॥ ४

इति चतुर्थ अङ्क ॥ ४ ॥

तोमर छन्द

तबही सलावति खान मन में भयौ कलि कान
हत जानि दोऊ वीर अब को धरै रन घोर
जबही सुसाम उपाइ अपने दिथै ठहराइ
तबही वकील बुलाइ कहियौ बहुत समुझाइ
तू जा सुजानहि पास हमसौं करै इखलांस
सब मुलक उसको देहु अरु आपने संग लेहु
ज्यौं बनें त्यों तू लाउ करि हौं बड़ा उमराउ
जब यों कहो नवाव सुवकील दोन जुवाव
ज्यौं कहत आपु नवाव त्यों कहौं जाइ सिताव
वह है सुजान अमान जो मानिहै बलवान
कहियो उठ्यो सिर नाइ तिहिं वार आयौ धाइ
जहँ हो ब्रजेस कुंवार रनभूमि कौ जितवार
तिहिं निकट पहुँच्यो जाइ करि राम राम बनाइ
तिहिं देखि सिंह सुजान कछु लग्यो मृदु मुसिकान ॥ १

दोहा

कहि भेज्यौ सु नवावने सो सब सुनी सुजान
कही कि कह्यौ नवाव कौ हम कौं सवै प्रमान ॥ २
तब सुरज ने यों कह्यौ मन्द मन्द मुसिकाइ
मेरी जाय सलाम तू कहियौ सोस नवाइ ॥ ३
वेमदबी हमते बनी ताहि न राखैं चित्त
ज्यों चाकर हम साहि के ल्यों नवाव के निस्त ॥ ४
चिनती एक नवाव सौं मेरी रुखसद देहि
लाला सिंह जवाहरै अपने हरवल लेहि ॥ ५
जैसी कही नवाव की मानी सिंह सुजान
ल्योंहीं सुरज की कही करी सलावति खान ॥ ६
लाला सिंह जवाहरै लीनो वेगि बुलाइ
सब सेना ताकौ दई वकसी दियौ मिलाइ ॥ ७
श्रीसुजान के पूत कौ हरवलु लियौ नवाव
कूच दुंढाहर कौ कियौ दोउन गांठगौ दाव ॥ ८
मुस्तकीम लखि तनय कौं हिय हरिदेव मनाय
घायो आयो व्याह कौ रेन दिना इक भाय ॥ ९
तीन कर्ममें एकहू ज्यों मथुरा में होइ
फेरि न आवै जगत में यह विचार चित टोइ ॥ १०
दोइ कर्म परवस निरषि एक जान निज हाथ
करैग व्याह मथुरा पुरहिं रूपा पाइ यदुनाथ ॥ ११
इति श्रीमन्महाराजाधिराज श्री व्रजेन्द्र वदनेस कुमार श्रीसुजान
सिंह हेतवे कवि सुदन विरचिते सुजानचरित्र सलावत खां
समर विजय वर्णनो नाम तृतीय जङ्ग समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थं जगं लिख्यते

उत्पद्य

वृत्तिर केस मयवृत्तिर मेव जेचन दिनेस सिधु

वन्द्यमाल विषयन जालमाला कपाल किमु

कर कपाल जेगुन सुखाल संग खान माल घर

मसि विपुल पदवाङ्क इमर कर मस दिगम्बर

सिधु सिधा नन्द समसान मरु समर सुखापावहिँ करहिँ

जय वटुकनाथ जगनाथ जय मूल साध जय उच्चरहिँ ॥ १

दीक्षा

महादेवा पर वरसिखि पावस भादीं मास

सूरज है मनसूर संग किम पठान दल नास ॥ २

नवल राय मार्यो गयो करि पठान सौं सुख

सुनि वज्जीर मनसूर के तन मन उपज्यो फुल ॥ ३

पुरत महामद साहि सौं मरज करी यह जाय

भाई काहमखान के समल विगार्यो माय ॥ ४

मुक्त कौं खलखल दीखिये ज्यौं न ज्यौं कहु देर

हुकुम पाइ के साहि कौं जारों मऊ वखेर ॥ ५

सुनत साहि दीनो हुकुम जो कहु बहिषे जेव

बेमदवी ओई कही तिलै जेर करि देव ॥ ६

सिरोपात्र समसेर है करि सलाम पर माइ

जिबे रिखाळे साहि के ते सब लिप बुझाइ ॥ ७

जिबो मार्यो सार हो सौं सब जौनो सङ्ग

उतारि पार डेरु दप ठठि पठान सौं जङ्ग ॥ ८

बाईसी सब साह की कियो खजानी हाथ

कियो फौं व मनसूरने दस हजार हथ साथ ॥ ९

* पाठान-महादेव पर वरस पावस भादीं मास ।

सिखान
व खा
३ ॥

१४

०

८

४

॥ २

तोमर छन्द

इक कूँच एक मुकाम चलते लण बहुग्राम
 दस पाँच दिन के बीच पहुँचै सुकाल नगोच
 तिहँ थान कीन मुकाम बहु सैन साजि सकाम
 दस सहस हैं असवार दस दोइ पाइक तयार
 सत तीन कुञ्जर गुञ्ज रथ ऊँट पुञ्जनिपुञ्ज
 तिहिँ सैन नौवति आठ सु निसान के बहु ठाठ
 अरु जवर जङ्ग अगार सत एक बहुत जजार
 यह सैन सङ्ग वजीर धरि काल बैठिय धीर
 जिय जानि कै बलवान वह राउ बुद्धि निधान
 हय साजि दोइ हजार वह परयो आइ अगार
 पोरच पुँडोर नरेस सजि आइयो यह वेस
 गहिकै सुकलम नवाव लिखियौ सुपत्र सिताब
 अजराज कुँवर सुजान तुभसा न हिन्दू आन
 यह देखतै फरवान करना मुझै बलवान
 इस वखत ढील न होइ चढ़ि आवना सब कोइ
 रब करैगा कछु खूब यह जानियौ न हवूव
 हम सै तुम्है इखलास दरपुस्त सै यह रास
 कछु खरच की नहौ ढील हय लाउ पैदल पोल
 नाहँ देर का यह वखत मुझ पै परी अब सखत

दोहा

यौ लिखिकै रुक्मा दयौ दयानाथ के हाथ
 सुतरसवार चलाइदै तुभकौ रहना साथ ॥ ११
 यौ सुनि हुकुम वजीर कौ तब वक्रील सिर नाइ
 झौढ़ी बाहिर आइकै दीनो डांक चलाइ ॥ १२
 सुतुर सवार सवार हो चलयौ चाल उत्ताल
 पहुँच्यो आइ सहार में जहाँ कुँवर वज्रपाल ॥ १३
 करि सलाम कागद दयौ अरज करी यह बोल
 सफदरजङ्ग नवाव अब डेरा कीने कोल ॥ १४

मुझे आपके पास कौं रखसद किया नवाव
 कुछ पठान की तरफ से जाना होतु दवाव ॥ १५
 सफदरजङ्ग वजीर कौ कागद बांचि सुजान
 अरज करी बदनेस सौं तबही बुद्धिनिधान ॥ १६
 लिखि भेज्यौ मनसूरने दीन वचन महाराज
 जु कह्यु आप आयसु करौ करने मोहि सुकाज ॥ १७
 सुनि ब्रजेस अज्ञा दई करनौ याकौ सङ्ग
 पै इन तुरकन सौं कछु वृक्तु नहीं प्रसंग ॥ १८
 जौ यह भेज्यौ साहकौ चलयौ पठाननु पास
 तौ तोहकौ पहुँचनौ पै न करौ विसवास ॥ १९
 आइसु लै बदनेस कौ सुभ दिन कियौ पयान
 ठौर ठौर को फौज कौं भेजि दए परवान ॥ २०
 उतरि पार डेरा दए कालिन्दी के तीर
 सुनि सुजान के वचनकौं आप सब ब्रज वीर ॥ २१
 भले भले सिरदार जे ते सब पहुँचे आइ
 तौं लैं सफदरजङ्ग कौ रक्का आयौ धाइ ॥ २२
 बखत नहीं अब देर का सुनियौ सिंह सुजान
 इस कागद के बांचतें करियौ वेग पयान ॥ २३
 देखत रक्का कुँवर जी कही हरौलहिं बोल
 अब वहीर चलती करौ काल्हि पहुँचनो काल ॥ २४
 हुकुम पाइ कुतवाल ने दई वहीर लदाइ
 सूरज सूरज उदित ही चलयौ काल कूँ धाइ ॥ २५

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति बदनेसनन्द सुजान हैं
 जाने दिली दल दक्खिना कोने महा कलिकान हैं
 ताकौ चरित्र कछुक सूदन कह्यो छन्द बनाइकें
 सजि सैन काल पयान कीने प्रथम अङ्क सुनाइकें ॥ २६
 इति प्रथम अङ्क ॥ १ ॥

बहुग्राम
 नगीच
 जे सकाम
 क त्यार
 निपुञ्ज
 बहु ठाठ
 जजार
 ठय धीर
 निधान
 अगार
 अ वेस
 सिताव
 आन
 शान
 अ कोइ
 हवव
 रास
 पोल
 सखत

११

नाइ

१२

॥ १३

ल

३

छप्पय

धमिय धमाधम बंब धमक धरनी धर धक्किय
 धाम धाम अरि धूम धरा धूरह धव रुक्किय *
 धावत धवनि हयन्द गयन्दनि की वररवकनि
 उगिय दुग्ग पताक ताकि दुसमन लिय दवकनि
 तूरिय अवाज पूरिय दिगनि सुनत जमन दरक्खी हियै
 वजराज पूत मजवूत मन जवाहि कूच कोलहि कियै ॥१॥
 विप्र वरन बहु सीस बाहु अवनीस बाहु भव
 बनिक उरु अत्यन्त चरन चय चरन भए सव
 सेल सांग सर रोम रजत अवतंस भुजावर
 सूरज सूरज नैन चन्द चमचमत छाह कर
 पूषन मयूष भूषन भमक वहै कहै कवि तेज तपु
 गज वाज कन्ध वजराज वपु मानौ लसतु विराट वपु ॥२॥

छंद गाहा

सुनियं खबरि वजीरं बदन तनं आइय सह सूरं
 इसमाइल तिहि अगं दिय पठाइ छाव सुखपूरं ॥३॥

कुंडलिया

सूरज इसमाइल मिले दुहुं परस्पर धाइ
 ज्यौं सूरज भुवसुत मिलत एक रासमें आइ
 एक रास मैं आइ दुहुं आनन्दन छाए
 इसमाइल लै आइ मिसल डेरा करवाए
 करवाए सनमान भेज मीरन मन सूरज
 भूरज राखनहार जवै आयौ सुनि सूरज ॥४॥

सोरठा

सफदरजङ्ग नवाव आयौ जान सुजानकौं
 हियै मिलनकौ छाव करि बैछ्यौ दीवान तब ॥५॥

* पाठांतर-धमिय धमाधम बम्ब धमकि धरनी धुव रुक्किय
 धाम धाम अरि धूम धरा धरनी धर धुक्किय ।

(५७)

खबरि भई तिहिं वार सुरज मल्लकुंवारकों
कही कि जौ दरवार तौ चलि मिलैं नवाव सेां ॥६॥

येां कहि सिंह सुजान त्सार भयो दरवारकों
जे निजु कृपानिधान तिनु सिरदारनु संगलै ॥७॥

कवित्त

जीत रनजीत हठीसिंह भौ अनूपसिंह
जैतसिंह बलु बलिराम वीर बड्डा है
बडा चहुंवान मरदान भीरदुरजन
गोकुल सुराम सुखराम अनसङ्का है
रामचन्द तोमर कटारिया सुरतिराम
पाखर सुमल्ल जो करनु रन हड्डा है
उद्धत उदार सिरदार दरवार काज
साज चढ्यौ सूरनु सुजान देत डड्डा है ॥८॥

आयो सिंह सुजा हिंदूतासम न दूजा
भीर सुनत वजीरन समात फूल्यौ अङ्ग में
आगै उठि लीनो भरि मोद अङ्ग भीनो बहु
कीनौ सनमान सबही कौ परसङ्ग में
बूझि कुसरात महि हाथ सैां सुजान हाथ
बैठक बताय इकलास के प्रसङ्ग में
भीर उमरावन की भीर में दिपत दाज
भानु भृगु सोहैं ज्यौ सुरासुर के सङ्ग में ॥९॥

हाथी हय हीरा सिरपेच जेगा चीरा सङ्ग
केते सरोपाव पासवान लै लै भाष हैं
अतर गुलाब बीरा होत हैं पवनसीरा
लैकर नवाव सबही कौ पहराय हैं
सफंदरजङ्ग ने सुजान सनमान हित
सबै सिरदारनु के कीने मन भाष हैं

* पाठांतर-सुरज ।

न
न हियौ
कियौ ॥१॥

वपु ॥२॥

॥३॥

(५८)

दससद पाइ सुखपाइ खले घज धीर
ज्यों धनेस धाम तैं सुरेस सुर धाय हैं ॥१०॥

पवंगाछंद

दूजे दिन दरवार सुजान सुघाईकै
देखत ही मनसूर महा सुख पाईकै
खिलवति करी नवाव जताइ वकील सों
मसलति बूमन काज सुजान सुसीलसों ॥११॥
तब वजीर मन सुर कुंवर बर बुझियौ
मेरा इस मैदान भावना सुझियौ
नाहक अहमद खान पठान अरुझियौ
नवल राइ करि जङ्ग तिन्हैंसै जुझियौ ॥१२॥

दोहा

नवल राय मार्यो नहीं मार्यौ मोहि पठान
तौलैं कल नहिं देंउगौ जौलैं इस तन जान ॥ १३ ॥

पवङ्गाछन्द

जौलैं इस तन जान पठान न रक्खिहैं
मऊ फरकाबाद खोदि कै नक्खिहैं
बङ्ग सबंस बिगारि नारि नहिं छडिहैं
विन पठान करि भूमि फेरि घर मंडिहैं ॥१४॥
यही अरज मैं करी साहिसों जायकै
पाइ साहकौ हुकुम चलयौ सुख पाइकै
जु कछु अरावौ ल्यार लयौ सुघराइकै
दस हजार असवार पार उतराइकै ॥१५॥

दोहा

रमजानी अरु इसाखां मीर वकाय साथ
भाप जुजवी फौजसों नहीं इन्हें के साथ ॥१६॥

पहें ॥१०

पाइकै

सुसोलसैं ॥११

भयौ

सुजिभयौ ॥१२

॥१३

खहैं

मंडिहैं ॥१४

पाइकै

इकै ॥१५

६

छन्द पवड़ा

नहीं इन्हों के साथ रिसाले साहके
रेजा और बमीर नखातिरखाहके
मेरा तो इतकाद एक है तुज्भसैं
बच करना सो कहौ कुंवर जी मुज्भसैं ॥१७
केती लाए फौज और क्या आवनी
सो सब लेउ बुलाइ न देर लगावनी
जो कोइ तेरे साथ मिलैगा साहकै
करनी तिसकौ गौर मुझे सुख पाइकै ॥१८

दोहा

यौ सुनिके बदनस सुत तावजीर के वैन
बोली तासैं भरि दवन हिये बढावन चैन ॥१९
ठाकुर साहिब ने कहौ मेसैं चलती वार
जो कछु हुकुम नवाव कौ करनौ तुमकू सार ॥२०

पवड़ा छन्द

करनौ तुमकौ सार न देर लगाइये
नवलराय कौ बैर बेग बगदाइये
एक लाख तरवार जुसिसिनवारको
सो नवाव के साथ पार घौ वार को ॥२१

दोहा

ठाकुर साहब की प्रकृति है सो सुनौ नवाव
जासैं पनुपरि जातु है फिरै न कोटि दवाव ॥२२

छन्द पवड़ा

फिरै न कोटि दवाव हौहिं जौ साहिके
जासैं पनु परिजाइ रहैं वे साहिके
मेसैं चलती वार कहौ उन डेरिकै
मेरो धर्म धिराइ करौ सो हेरिकै ॥२३

(६०)

दोहा

मैं आया दिय आपके जो कुछ आशा देउ
ताकौ मैं हाजिर अवै करि हैं श्री हरिदेव ॥२४

सवैया

जो कुछ फौज रही वज मैं अब सो सब आप के पास बुलाऊं
चाहत जो सिरदार हमें निरधार तुमारे ही पास लगाऊं
श्री वदनेस के आपु प्रताप तैं बन्दगी मैं न कुछ कम लाऊं
साहिके काजकी आपकौ लाज है राजके काज कौ मैं उठि धाऊं ॥२५

दोहा

ऐसे वचन सुजान के सुनि कै सफदर जङ्ग
बोली सब हि दून मैं है अजेद्र मुखर ग ॥ २६
रूप सिं ह तेरा चचा और सहादत खान
है सलूक दर पुस्त सै दूना किया सुजान ॥ २७
यौ कहि कै मनसूर ने लै मोतिन को माल
श्री सुजान के कण्ठ में डारी होत खुसाल ॥ २८
श्री सुजान सिदनाह कै करि सलाम कर जोरि
अरज करी मनसूर सौ अपनी बुद्धि बटोरि ॥ २९

छप्पय

जो नवाव की फौज रही पूरव में छाई
लोअै बोलि सिताव डील काहे जु लगाई
भूमि भंदावर देस सिं ह हिम्मत है राजा
तासौ लोअै काम गौर करि करियै ताजा
मैं हू जवादि खुरजादि के सबै सुभट आवत चले
अरु जोन आइ हैं या समै जानि परै जु बुरे भले ॥ ३०

कुण्डलिया

ऐसे कही सुजान ने सुनि वजीर सुखपाई
तेरा आवन जो हुवा तौ क्या रही तवाइ ॥ ३१

गङ्गा देउ
हि हरिदेव ॥२४

आप के पास बुलाऊं
ही पास लगाऊं
न कलू कम लाऊं
राज कौ मैं उठि धाऊं ॥२५

सफदर जङ्ग
मुखरंग ॥ २६
इत खान
शु सुजान ॥ २७
को माल
त खुसाल ॥ २८
लाम कर जोरि
दि बटोरि ॥ २९

ख में छाई
ल काहे जु लगाई
मति है राजा
करि करियै ताजा
मुमट आवत चले
परै जु बुरे भले ॥ ३०

।

र सुखपाई
ही तवाइ ॥ ३१

(६१)

तौ क्या रही तवाइ करौ चारिक मुकाम अब
आइ इकट्ठे होइ लोग मेरे तेरे सब
सब सलूक हो जाइ आप करना है जैसे
अब डेरे कूँ जाहु कही मनसूर सु पेसे

सोरठा

तबही सिंह सुजान करि सलाम आयौ चलयौ
सहित मन्द मुसिकान दाखिल निज डेरनु भयौ ॥ ३२

तोमर छन्द

दिन दूसरे मनसूर इखलास राखन पूर
करि आपनो दरवार सब कौं कह्यौ तिहवार
चलना मुझे इसघार जु सुजान के दरवार
इकु बोल के प्रतिहार करि पालकी अब त्यार
अबही जु होतु सवार करनी न सोहि अवार
सुनि दूत ने ततकाल करि खबरि सूरज माल
इत आइ पालकि हाल चढ़ियौ बजोर विसाल
चढ़ि आइयौ बड़ भाल बदनस कौं जहं लाल
लखि आवतौ मनसूर उठि धाइ सूरज सूर
करि कै अनेक सलाम धरि कै नजरि बहु दाम
गज वाज साज ललाम जिन के सुमोल उदाम
अरु आपु अदबु बजाइ दरबार गयो लिवाइ
मसनन्द बैठि नवाव जहं और को नहिं ताव
तब देख सफदरजङ्ग कहियौ जु रुहित उमङ्ग
अब बैठि सिंह सुजान हमसै तुम्हें नहिं आ-
तबही अदाबु बजाइ बैठ्यौ सुजान सुभाइ
जब ही विलौकिय वीर लगि हौं न सीत समीर
अरु आस पास खवास बहु वेस वेस सुवास
धरि हैम संपुट बीच धरि कै सुगन्ध नगीच
अरु पानदान अपार भरि के धरे सु अगार
सु बजीर सौं कर जोर कहियौ सुजाब निहोर ॥ ३३

(६२)

कवित्त

हम जिम्मीदार सिरदार किए आपु आइ
हमै निरधार बन्दगी में नित जानौगे
राजा रानाराय उमराय सब साहिब के
कहे एक वार के अनेक करि मानौगे
सुदन सुजान कहै साहिब नवाव सुनौ
करनौ हैं मोहि जोई मुखतें बखानौगे
चकवै चकत्ता जूके चोरनु कौ चूर* करि
चुगल चवाइन कौ चौकस कै भानौगे ॥ ३४

दोहा

ऐसे वचन सुजान के सुनि वजीर मनसूर
बोलायौ जो हम तुम मिलै तौ सब होइ जरूर ॥ ३५
यौं कहि सफदरजङ्गने लीने पाव उठाइ
अपने डेरनु कूँ चलयौ सूरज सौं सुख पाइ ॥ ३६
फेरि कछौ मनसूर ने करि मुकाम हां दोइ
लोग बाग की हाजरी कूँच आगिले होइ ॥ ३७

रोला छन्द

यौं कहि कै मनसूर आपने डेरनु आयौ
सूरज निज दरवार बैठि आनन्दहिं पायौ
ठाकुर साहिब पास पत्र इक तवै पठायौ
लिखि वजीर कौ मिलनु और डेरनु जो आयौ
फेरि लिख्यौ महाराज देस जो फौज रही है
मेजौ करि ताकीद जङ्ग की बात सही है
दिना दोइ में कूँच होइ आगै नवाव कौ
तातै ढील न होइ काम यह है सिताव कौ ॥ ३८

* पाठान्तर-चूर।

छः

भै लिखि सिंह सुख
जाके उर नहिं प्राप्ति

हरः

भूपाल पालक भूमि
जाने दिली इल दानि
ताकौ चरित्र कछु
मनसूर सूरज की रि
ति नि

फिर धीरे है तीन नि
काह भेलौ नृप कुं यत्र
यह सुनि कै सूरज
जित कौ कूँच नवाव

सफदर जङ्ग नवाव
सेर जङ्ग रमजान मी
इस छान कौ पादि
हिमति सिंह नरिम
शैरी मुवात लघु हा
चालीस सहस हय

डुनिके सोर चहुं
माने घन छे
धवल पताकाते यल
कैयौ रक्त
मीन मनु दामिनि
बाजत हय

छन्द आभीर

ये लिखि सिंह सुजान-व्रजपति चित्त सुखदान
जाके उर नहि आन-श्रीहरिदेव समान

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमि पति वदनेस नन्द सुजान हैं
जाने दिलो दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं
तांको चरित्र कल्लूक सूदन कह्यौ छन्द बनाइ कै
मनसूर सूरज को मिलनु कहि दुतिय अङ्क सुनाइ कै ॥ ३९
इति द्वितीय अङ्क ॥ २

देहा

फिर बीते छै तीन दिन सफदरजङ्ग नवाव
काहि भेज्यौ नृप कुंवर सौं करियै कूच सिताव ॥ १
यह सुनि कै सूरज कही अवहाँ डंका देउ
जित को कूच नवाव को तित को पैड़ा लेउ ॥ २

छप्पय

सफदर जङ्ग नवाव बीर वदनेस तनय वर
सेर जङ्ग रमजान मीर वक्का उद्धत घर
ईस खान कौं आदि और उमराव दिली के
हिम्माति सिंह नरिन्द राव अरु रंग भली के
औरौ भुवाल लघु हाल कै जिमीदार कौं लगि गिनै
चालीस सहस हय कूच किय सजल जलद धाप मनै ॥ ३

कवित्त

डङ्कनिके सेर चहुं ओर महाघोर घुरे
मानो घन घोरि घोरि उठे भुव ओर तै
अवल पताकाते वलाका नील पीत स्याम
कैयौ रङ्ग रङ्ग के विहङ्ग आदि मोरतै
मीन मनु दामिनि गयन्द मदनिरपाट
बाजत हयन्द ज्यौ परतु जल जोर तै

गौगे

गौगे

गौगे

गौगे ॥ ३४

८ ॥ ३५

३६

३७

गौगे

॥ ३८

पावस प्रकास कौं चढ़त पाक सासन ज्यौ
सफदर जङ्ग ने पयाना करौ कोर तैं ॥ ४

पावकुलक छन्द

सिन्धुजगंज देह कैं पाछैं देरा किए कटक लै आछैं
कलुक दिननु मुकाम करवाए पुनि धाप मारहरे आप
तह मुकाम कीये बहु तेरे सुरज सुरट भए बहु मेरे
असी हजार हयन्द इकठे सफदर जङ्ग सङ्ग भए पठे
पन्दई सहस सङ्ग सूजा के धरा धरा के धीर लराके
ऊंट गयन्दनु की को बूझै पैदल कौ जुअखैदल सुभै
रथ पालकि नालकी अहई चलत चाल भुव चाल जमई
सफदर जङ्ग जङ्ग कौं कोप्यौ डेरा जाइ नदरई रोप्यौ
कारी नदी उतरि चतुरानौ कांसगञ्ज पहुँच्यौ तर रानौ
कांसगञ्ज दिन पांचवसि कैं श्रीसुजान राख्यो वह हंसिकै
फिर करि कुँव नौ उखा लोनौ तहां व्यूह रचना कौ कीनौ
सफदरजङ्ग बुद्धि करि नीकौ जथा जोग्य दई बांति अनी कौ ॥ ५

छन्दपद्य

सेर सिंह* भुज वाम तासु ढिग राउ बहादुर
मीर वका इक ओर पुठि रयजान खान पुर ॥
ईस खान कर जोर अगाधरि हिम्मत राजा
इसमाइल धरि पुठि जङ्ग रङ्गनि मैं ताजा
अरु आपु मद्धि सु अषद्धि है यौ नवाव निजु बल धरिय
उद्धत उदण्ड भुजदण्ड बल श्री सुजान हर बल करिय ॥ ६

छन्ददुपई

यह सुनि अहमद खां पठान ने सब पठानन सौं भाखी
अब वजीर आयौ समुहायौ तुम क्या मसलति राखी
आवन कहत रुहेलेते भी आप कळ न आप
जिसे तेग बांधे को हिम्मत ते क्या रहै दुराए

* पाठांतर-बङ्ग।

ज्यौ
कोर तैं ॥ ४

कटक लै गाले
ए मारहरें आए
ट भए बहु मेरे
झु सङ्ग भए पहु
के धीर लराके
हु अलैदल सुम्मे
भुव चाल जमई
ए नदई रोयौ
हु ज्यौ तर रानौ
ए ख्यो वह हंसिके
ए रचना कौ कीनौ
ए टि अनी कौ ॥ ५

एदुर
र ॥
ना

एजु वल धरिय
वल करिय ॥ ६

ए सों भाखी
ठति राखी
ए
राए

(६५)

भाई काइम खां के भाई जेते घड़े कहाए
ते सब कटै हटै नहों रन सें सबही काम सु आए ॥ ७
अब बीबी साहिब ने मुझ कौ ए हथियार बंधाए
जे भाई इस काज लाज पै मेरे जान खुदाए ॥ ८
रुस्तम खां भाई से कहना अब हरीफ चढ़ि आए
मऊ पठान वारहें सैयद काहे विरद कहाए ॥ ९
यौं सुनि अहमद खां का कहना सब पठान उठि धाए
जौ पठान तिस कौ तौ लरना ऐसे वचन सुनाए ॥ १०

कवित्त

बङ्गस की लाज मऊ खेत की अवाज यह
सुने बजराज से पठान वीर वचके
भाई अहमद खान सरन निदान जान
आयो मनसूर तौ रहै न अब दवके
चलना मुझै तौ उठ खड़ा होना देर क्या है
बार बार कहे तें दरार सीने सब के
चण्ड भुजदण्ड बारे हयन उदण्ड बारे
कारे कारे डोलनु संवारे होत रव के ॥ ११

छन्द चौबोला

अहमद खां देखत ही देखत सब पठान बर बाज चढ़े
मनौ अदित सुत कौ प्रताप सुनि दित तनूज धरि तेह कढ़े ॥ १२
तब काइम खां कौ लघु भाई दिल अन्दर यह सोच चढ़्यो
अब पठान मुरने न जङ्ग सों है सवार निज मन्त्र पढ़्यो ॥ १३

दोहा

चलत अहमद खान के जेती जाति पठान
लरके जोरु सङ्ग धरि आए बुद्धि निबान ॥ १४

छप्पय

कञ्चन कलित तुरङ्ग बलित कञ्चन दुति भूषन
 विसद वसन धनुवान धरिय मनु चन्द मयूषन
 तेगा तीछन हथ्य किते नेजान फिरावत
 दुक्त तथल निसान असित धावत फहरावत
 सित असित डढ्योरे दोह तन सजि सनेह रोसन सने
 बङ्गस सुभट्ट संघट्ट है करि उभट्ट चाहत रने ॥ १५

छन्द दुमिला

सुनि सफदरजङ्ग चित धरि जङ्ग करि सिलाह उच्छाह मढे
 दस सहस रहेले सारस केले गङ्ग पारते उतरि ठढे
 दै दुन्दुभिडङ्गे होत निसके कर ग्रह ज्यों कोपि कढे
 अहमद खां संगे करत उमंगे ठानि अठान पठान चढे ॥ १६

दोहा

सफदर जङ्ग नवाव ते पांच कोस के ग्रीच
 गङ्गा खादर देखि कै डेरा किए नगीच ॥ १७
 रुस्तम खां अरु हवस खां सुत सुजात करि टेक
 सुनि कै अहमद खां कौ आण सूर अनेक ॥ १८
 तनय महम्मदअली ने कहि भेज्यौ तिह वार
 मुझको आया जानियो तुम से चलत हथ्यार ॥ १९
 अहमद खां* सनमुख भयौ यह सुनि सफदर जङ्ग
 मसलति करी सुजान सौं करनौ कहौ सुढङ्ग ॥ २०

सवैया

सुनि सूरज भूरज राखनहार विचार यहै निरधारकहौ
 अब जङ्ग क्रिये विन रङ्ग नहीं यह गङ्ग के तीर पठान रह्यौ
 तुम सैन सजै पुठवार रहौ अब आयसु देहु न और सह्यौ
 हम जाय जुरे पहले उन सौं तुम गौर करौ लखि लोह बह्यौ ॥ २१

यो करि
 पायौ व

पीछे का
 सूरज नि

तव
 सब
 सुवा
 लखि
 अह
 सजि
 यह
 तव
 मन
 एक
 सब
 लखि
 चदि
 कहि
 करि

जब

तब

सोरठा

यों कहि सिंह सुजान करि सलाम मनसूर कों
पायों बहु सनमान निज डेरनु कों आइयो ॥ २२

दोहा

पीछें कटक नवाब के निज बहीर कौ राखि
सूरज कियौ विचार चित जिमीदार मति भाखि ॥ २३

छन्द संजुता

तबही नकीब बुलाइ कैं कहियौ सुताहि सुनाइ कैं
सब सैन में अब जाइ कैं कहि भाउ यों समझाइ कैं
सुबहोर कों लदवाई कैं मनसूर के ढिग जाइ कैं
लखि ज्यों रहौ सुख पाइ कैं गजहू बहीर पठाइ कैं
अरुहैं सवार हयन्द के सबही सुजात विलन्द के
सजि आवही में पास कों लघु रहैं दाना घास कों
यह पाय आयुस धाइयो कहियौ सुत्यों कहि आइयो
तबही बहीर लदाइयो कुतवाल लै पहुंचाइयो
मनसूर डेरन पुट्टि में डेरा किया एक मुट्टि में
इकजात बाजनु पै चढ़े सरसेलु सांगनलै बढे
सब आइ सूरज तीर कों करि राम राम सुधीर कों
लखि सो सबैदलु आइयो तबही हयन्दु मंगाइयो
चढ़ि सूर वीरन सौं कही बर जङ्ग लोजति है सहो
कहियौ चढ़ौ सूरज बली सबही कही सुभली भली
करिकैं निसानन घोर कों पियरी धुजा चहुं ओर कों ॥ २४

कवित्त घनाक्षरी रूपक

जब होत असवार भुव भार के निवारक
बन्दी सिरदार बदनेसको कुंवार
तब सिनसिन बार है अवारिया अगार और
खुटैला जुभार बीर आहर अपार

न

सन सने
॥ १५

छाह मढे

॥ १६

॥ १८

॥ १९

॥ २०

हो
रह्यो
सह्यो
वह्यो ॥ २१

पुनि सागरवार भिनवार नौहवार सूर
सवै इकसार खिनवार रुतवार
सव साजे नर वार भीर भोगरे उदार चढे
गुदरे गुरार दै दरेर दे सवार ॥ २५

हरगीत छन्द

रनजीत जीत अनूपसिंहजु हठोसिंह अवारिया
वह जैतसिंह अरिङ्ग ठाकुर पाखरान सवारिया
बलिराम अरु बलराम बल्लू वीर बालक चट्टिया
किसनेस गोकुल राम और प्रताप कूरम बढ्ढियौ
भट मीर मोहनसिंह सूरतिराम सूर कटारिया
बर रामचन्द्र कुवार ठाकुरदास सेंगर रारिया
वह समर सिंह चंदेल जादौ सकत धनसिंह गौर हैं
अरु उदैमान सुभ्रातस्यौसिंह फूतेसिंह जुझौर हैं
वह मिसुर हरनागर उजागर सहित भ्रातन सङ्ग में
चढ़ि कैं उदैत अनूप सिंह सुद्विजनु द्विजवर जङ्ग में
अरु वीर लछमन दास पैमा पृथी सिंह उमङ्ग में
जयकृष्ण मनसाराभ स्यौ सिंह लोकमन एक रङ्ग में
मतिवन्त किरपा राम तोफा राम हरनाराइनौ
अरु स्याम सिंह सुजैत सिंहहुं जङ्ग रङ्ग मचावनौ
औरो अनेक सुएक मन करि सङ्ग सूरनु सोहियौ
करि ग्वाल बालन सङ्ग में मनुकृष्ण कंसहि कोहियौ ॥ २६

छप्पय

चन्द्रमाल विषभू कराल सुरभोग मन्द हैंसि
कंबु कण्ठ मदकोह रोग रिपु रुपाश्रीय असि
सुर गज गति सुर बाज चढ़िय सारङ्ग धनुष लसि
कामदगाइ सुकिस्ति काम द्रुम करहि वृषभवासि
रम्भादि सक्ति भूषहि प्रभा कौस्तुभ मान उर उर वसिय
यो भूरज राखन रतन जुत सागरसम सूरज लसिय ॥ २७

तोन कोस स
चारिहुं ओर
आस पास दल
कहू पठान
ऐसे दोर तीन
बोल दूत तिह
मेरु भवल स

भारि सूर

जो तुम स
ति

इस वज्रि
ति

भवल वदेह
ति

जबती कर
बो

जु बनु मा
इह

तौमी हम
भो

कसम खा
तु

तोप रहकर
बो

नवल राय
उ

छन्द अडल

तीन कोस सूरज भुवलिंनिय घेरिपठान सबै इककिंनिय
चारिहुं ओर धूम करिदिंनिय तऊ पठान रोस नहिं भिंनिय
आस पास दलदल बहु पिखिय यातें रार होत नहिं दिक्खिय
कछु पठान बानदै बुट्टिय इतहु वान दवान बहु छुट्टिय
ऐसैं दोइ तीन दिन चित्तिय वङ्गस सुत भेदहि चित चित्तिय
बोल दूत तिहुंवार पठाइय सूरज पास जाह तू भाइय
मेरा भवल सलाम सुनाइय पाछैं कहना सो सुनिजाइय ॥ २८

छन्द नीसानी

भाई सूरज मल्ल सैं कहना यह भाई
हम तुम बन्दे साहिके बुज्झे न लराई
जो तुम सङ्ग वज्जीर कैं तौभी नहिं बुज्झै
जिमीदार सौं आइकैं जिमीदार न बुज्झै
इस वज्जीर दा सङ्ग क्या करना था तुज्झै
जिसकौं अपना गैर का कुछ सोच न सुज्झै
भवल रुहेलैं सैं लरैं काइमखा मूवा
तिसी वस्तु सुनि साहि सैं यह रुखसद हूवा
जबती करने आइया हम भी यह जानो
बीबी साहब सङ्ग लै हूवे अगमानी
जु कछु माल था सो दिया उसने कपठानी
इस जमीन दे रखने गङ्गा विच आनी
तौभी हम सैं ना टरा वह नेक विचारा
ओलदै हम साहि कौं कोना निरवारा
कसम खाइकैं गङ्गकी यह मुलक बताया
तुमकौं वकस्या साहिने मै भी फुरमाया
तोप रहकला माल सब लै ओल सिधाया
बैठि जिहानाबाद मै तौभी न सिराया
नवल राय मर्दूद को हम पै सिखलाया
उसने चारों ओरसैं यह मुलक छुड़ाया

५

था
रया
ट्टियौ
ट्टियौ

१

१

गौर हूँ

हूँ

जङ्ग में

जङ्ग में

मैं

जङ्ग में

त्रनौ

प्रा

हिथै ॥ २६

सि

र वसिय

सय ॥ २७

तब चारिक खंदे मिले वह मारि गिराया
 यह लोभी इस देसदां हम पै खुनसाया
 भोल हमारा साहिसै लै जिमै कराया
 एते पै सब फौज लै देखौ चढ़ि आया
 अब इस्सैं हमसैं वही जो रब बनाया
 करिके इस इतवार कौ कहि कौन सिराया
 हमतौ अच्छैं आप सैं यों कहि पठवाया
 तुमसैं हम नहीं लड़ेंगे क्यौं आन दबाया
 सफदर जङ्ग नवाब सैं मेरा है दाया
 उसकौं आगैं दें लड़ौ कीजै मन भाया ॥ २९

दुपई छन्द

अहमद खां समभाइ दूत कौं सूरज पास पठाया
 अपने स्वामि काम के काजैं सौ सूरज पै आयै
 जैसे कही अहमदखां ने तैसैं अरज करी है
 श्रो सुजान सुनकैं यह भाखी अबतौ रारि खरी है ॥ ३०
 अब तौ रारि बनेगी जैसे तैसैं लरनौ आयै
 काल्हि वजोर हरीफ तुमारो भोरहि आवै धायै ॥ ३१
 ऐसैं ज्वाव पाइ सूरज सौं दूत जु निजु सिर नायै
 करि सलाम अपने आगा कौं ज्यौं कौ त्यों समभायै
 सुनत पठान यहै ठहरायै जब वजोर कौ देखौ
 अपनो फौज त्यार करि रखौ नहीं और सों लेखौ ॥ ३२

दोहा

सूरज ह मनसूर सौं कहि भेल्यौ तावार
 ए पठान मारे धरे जौ तुम होउ सवार ॥ ३३
 सुनत कही मनसूर ने सुनियौं सिंह सुजान
 लरना इन पाजोन सैं मुझकौं क्या मैदान ॥ ३४
 एतो फौज करौ खड़ो जिसका यह उनमान
 घोड़ों ही की लीद में मारैं भाटि पठान ॥ ३५

हिमतिः
 होनहारः

पुनि पै सुनि रि
 अब आप कहा
 अब तौ सब बी
 पठो तुमरे मन

है मेरो म
 वीरज सौ
 इसाखा
 जङ्ग विज
 ले भरते
 करि का
 सुनि क
 सबही
 करि स
 आप र
 करि स
 जहां मो

भूपाल
 जानै वि
 ताको
 मनसूर

गराया
 पै खुनसाया
 गया
 छद्मि आया
 है कौन सिराया
 राया
 आन दबाया

मन भाया ॥ २९

आस पठाया
 पै आया
 री है
 आरि खरी है ॥ ३०
 आयौ
 वै धायौ ॥ ३१
 सिर नायौ
 पै समझायौ
 देखौ
 सों लेखौ ॥ ३२

३३

त
 ॥ ३४

त
 ३५

(७१)

हिंमति गई वजीर की पेसी कीनी बुद्धि
 होनहार जैसी कळू तैसीयै मन सुद्धि ॥ ३६

सवैया

पुनि यों सुनि सिंह सुजान बली मनसूर के पास रिसाय गयौ
 अब आप कहा फुरमावत है बिन जङ्ग कहुँ अरि जेर भयौ
 अब तौ सब बीस हजारहि हैं फिर लाख तुरें नहिं जाय हयौ
 अरुजो तुमरे मनमें यह बात तौ काहे कौ मोहि अगार दयौ ॥ ३७

दोहा

है मेरी मसलति यहै अब सवार तुन होहु
 धीरज सों ठाढ़े रहौ देखौ वजै सुलोह ॥ ३८
 इसाखानहु यों कहौ मसलति यहो नवाब
 जङ्ग बिना क्या मुद्दई मानें और दबाव ॥ ३९
 जे मरने कौ त्यार है तिसकौ फौज करोर
 करि क्या सके लड़ेबिना चङ्ग व्यार बिनडोर ॥ ४०
 सुनि वजीर तैयार हूँ कहौ कि होहु सवार
 सबही लसकर में कहौ बाधें वेगि हथ्यार ॥ ४१
 करि सलाम सूरज कहौ मोकौं रखसद देउ
 आप होहु असवार जब सब चौकस करि लेउ ॥ ४२
 करि सलाम सूरज बली आगें कियौ पयान
 जहां मोरचा आपने आयौ ताही थान ॥ ४३

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति बदनस नन्द सुजान हैं
 जानें दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं
 ताकौ चरित्र कळूकसदन कहौ छन्द बनाइ कैं
 मनसूर सूरज चढिठयौ अहमदखां समुभार कैं ॥ ४४
 इति तृतीय अङ्क ॥ ३ ॥

छन्द सज्जुता

तब तो वजोर सितावही सबकौं सुमिसिल बतावहीं
 वह राउ संग गहीरलै कहूँ सेर जङ्गहिँ मोरलै
 रमजान खां बकसी तनै संग मोर वक्का सै सनै
 ए पांचहु भट आगरे हो जबरदस्त उजागरे
 इसमाइलै वुलवाइकै वृष हिम्मतै समभाइकै
 वह जेरदस्तहिँ ओर कौ रन रुपियौ करजोर कौ
 अरु जे भुवालइ संग में सब राखि पुस्त उमंग में
 अरु इसाखां पनपालकौं सनमुख राखिय ढालकौं
 तिहिँतै अगार जङ्गालदै हथनाल औ गयनाल दै
 धरितासु अगार तापकौं करि कोपकौं अरि लोपकौं
 सबतै अगार सुजान हैं वह जङ्ग रङ्ग निधान हैं
 अरु पुट्टि राखि वहीरकौं तिहं संग रक्खिय धीरकौं
 बल्यौ वजोर बनाइकै गज पै चढ़्यौ वह धाइकै
 बहुमान दुन्दुभि वज्जियं भर पूर तूर अवज्जियं
 तबहो सुभट सब सज्जियं असमान आस गरज्जियं
 फहरी अनन्त सुहैं धुजा सित स्याम रङ्ग कितो कुजा
 मनसूर सूरनु लै चढ़्यौ कलिकाल कोपहिँ ज्यौ बढ्यौ
 इकलवख दलहै संगमें बहुपोल पैदल जङ्गमें
 खुरथार धूरि उछलियं गति धीर धीर सुचलियं
 लखियौ वजोरहिँ आवतौ मनु सिंधु भूमि द्विपावतौ
 तबहो पठाननु सैनमें करिकै सिलाह सचैन में
 अहमदखां सवसौं कही ततबीर क्या तुमकौं सही
 तब थौ पठाननु भाषियौ मरना हमैं दिल राखियौ
 सुनिकै सुबङ्गसपूत नै तबही कह्यौ मजबूत नै
 मरना हमैं क्यों मारना किसरीति जङ्ग विचारना ॥१

छरपय

तबहिँ मन्त्र यह कियौ सवै सिरदाररारि हित
 अलीमहम्मद पूत मोर वक्का लहनाजित

चतावहीं
 मोरलै
 सनै
 गरे
 नाइकै
 गार कौ
 मंग में
 ढालकौ
 गाल दै
 रे लोपकौ
 धान हँ
 र धोरकौ
 धाईकै
 जजय
 रज्जिय
 कितो कुजा
 ह ज्यों बड़ो
 जूमै
 सुचलिय
 छिपावतै
 सचै न मै
 कौ सही
 राखियौ
 वृत नै
 विचारना ॥१

हित

(७३)

सादिल खाँ कौ जङ्ग इसा खाँ सैनहिं टरना
 इसमाइल की तरफ हवसखाँ कौ धुकि परना
 अरु तुम वजीर जितकौ रहौ सुस्तमखाँ सै यौ कहौ
 हजार हफ्त पठान लै सूरज सै तेगै गहौ ॥२
 यौ कहि उठे पठान बानकिरवान सँम्हारत
 मनौ रुठे जमदूत भीति भूतन कौ धारत
 धरि धरि आयुध हथ गथ के गथ उछलिय
 दै दै विघ्ननिसान करत आपुस मै रलिय
 चलिय उछलि चहुँ ओर तैं* घुमड़ि घनाघनघोर से
 धरि असित अग नीसान कौ वेई नाचत मोर से ॥३

दोहा

उतपठान अहमदखाँ इत वजीर मनसूर ।
 उद जुद्ध कौ कुदि कै रुपे खेत भरपूर ॥४

छन्द हरगीत

भरपूर भेरिभयान भंकिय सुनत संकिय कायरं
 दुहुँ ओर पटह प्रचण्ड वज्जिय मनहुंगज्जिय सायरं
 लखि दै निसाननु कुहक बाननु पञ्च आनन के तनं
 हथनाल अरु हयनाल दैत जजाल कालनि के तनं
 रव धुन्धमांक धमाकधुन्धर धडड धुङ्कुत धनननं
 धर धूम धामधड़ाक धद्धर धूम उद्विय बनननं
 भभकार भभभड भडडडं भङ्गार भग्गत भनननं
 कहुं सनननं कहुं खनननं कहुं भनननं कहुं ठनननं
 इकसार उड़त हजार गोला और गोली छारसे
 कहुं उठत धूम पहार से मनुकाल भूजत भार से
 कुहकंत वान कुहक्कुहं कहुं होत सद् धरा धरा
 दिस धुंधरी चकचुंधरी मुसमुंधरी सुबसुन्धरा
 बेहद नद गरद मै सुदुरद कट्टिय आरसी
 लगि गोल सौं गहि गोल फुट्टु करतुजाम ज्यों फारसी

* पाठांतर-अलिय कहत ।

(७४)

तहं जवर जंगनि अंगतें वह कढ़ति धूम करालसी
धुनिकालसी विकरालसी मधु पाइ मीचु डकारसी

छन्द भुजंगी

सुनै सहकौ जुगिनी जूह ठहरे
धप प्रेतपूता लप बांधि मुठे
तहाँ कालिका काललै संगधाई
सिवा ईस के धाम में पैव धाई
खलभमच्छ गच्छे तजे ग्रेह अच्छे
तिहाँ जुद्ध के उद्ध में लच्छ लच्छे
तहां फ्याहुरी यौ फिरै व्याहुरीसी
शृगालीनुके हीय में चाहुरीसी
कितीजछ्छनी गच्छनी व्योमरंगा
महामीचु हूं ने लई जागि जूभा
चिकारी चहुं ओरतें चाह चिल्ली
घरौ काइरौक सुने माइ ठिल्ली
उल्लोचरी टिट्टिमा और कौवा
फिरै फूल फैले मनौ ए वधैवा
हरणी धरत्ती हियें यौ उमाहो
तहां तेग तेगोन की जङ्ग चाहो
हुतौ बीच में धीर ब्रज चीर गाढो
मनौ स्वर्न के वर्न कौ खंभ ठाढ़ो
कछु धीर धारैं चले अग वहुदे
सवै सूर के सूर संग्राम रददे
तवै दूत ने धाइ मनसूर पासैं
करी चीनती जोर जा ओर रासैं
रहेले जिते जंग कौ मोरचका
इसाखान सौ सादला लेइ धका
तरफ दाहिनी कौ हवसखान आवै
तरफ आपकी कौ अहंमद गावै

(७५)

कही रुस्तमा ने सुनौ वीर भाई
जहां सिंह सूजा तहां है लड़ाई
सुनें दूत की बात मनसूर मानो
तरफ दाहिनी को कमी फौज जानो ॥ ६

दोहा

तब वजीर वा दूत कौं दै इनामु कहि खूब
जहां खड़ा सूरजवली तहां जाइगा तब ॥ ७
करि सलाम वा दूत ने तबहो कियौ पयान
धायो आयौ नौन बस जा थल सिंह सुजान ॥ ८
जो कछु कही नवाव ने सो कहि दीनो दूत
सुनत दाहिने कौं मुरौ सूरज पन मजबूत ॥ ९
बढ़ौ दाहिनी ओर कौं सूरजमल कुमार
बल्लू बल्लम गढ़पती राख्यो आप अगार ॥ १०
जैतसिंह और मेव सब दीने ताके संग
दै निसान ठाढ़े भए गांव ओट लै जंग ॥ ११

छन्द प्रमानिका

तहाँ बलू हला करौ	उठाइ शत्रु मैं परौ
जड़ाकदोइतीनकैं	दै कृपान वीन कैं
हयंद पांच सात कौं	कियौ जु आप हाथ कौं
फिरौ सुफेरि साथकौं	फते निसान गाथ कौं
सुआइ आपुने बलै	जताइ जुद्ध यौं थलै
उहोपठान कुदियौ	हियैं विरुद्ध रुदियौ
कही सुजाइ रुस्तमैं	रहे सुबैठि पुस्त मैं
न देखतेहवालकौं	गहौ न तेग ढालकौं
लड़ौ कि भाग जाइयै	न आव कौं घटाइयै
तवै सुरुस्तमा कही	कहौ सुमोहि है सही
जवैपठान बुलिये	हियैं विचार खुलिये
भंगाइयै तुरंग कौं	चलौ चलौ सुजंग कौं
सवैपठान अगाही	लड़ै सुसाथ पगाही

(७६)

पठान बीज होइकैं	भजै सुभाव खोइकैं
लड़ैसु नाहिं वाफिरै	तिसै सुजान काफिरै
जवै सुभाइ यों कही	किण सुस्तमासही
भँगाइ तब पालकी	नहीं सुजंग चाल की
गह्यौ कवान ढाल कौं	लियौ करै रमाल कौं
बदन्न कौं सुधारिकैं	दुहुं करौ उभारिकैं
सुमंत्र आपनौ पढ़्यौ	तुवै सुपालकी चढ़्यौ
कह्यौ सुवीर तासमैं	सवै सुनाइ वा समैं ॥ १२

दोहा

मैं मरने कौं त्यार हौं जो कोइ साथहिं देउ
 काम कहारौं का नहीं हाथ पालकी लेउ ॥ १२
 सुनत पांच सौ ज्वान ने घोड़े दीने छोड़
 तिनमें तैं दस बीस नै लई पालकी ओड़ ॥ १४
 तहां पांच सत पैदरनु लिये हाथ मैं वान
 उनहुंतें आगैं भये लै लै स्याम निसान ॥ १५
 पांच हजार सवारहुँ रहे पालकी पुटि
 काढ़ि काढ़ि तेगान कौं चले जंग कौं रुटि ॥ १६

छप्पय

ऊठ्यौ रस्तमखान रुठ्यौ पालकी चढ़्यौ जब
 षट् हजार पठान संग आगैं पाछैं सब
 चलिय वीर उछलि हलि करि युद्धहिं भुक्किय
 पाईक चण्ड चलाक धाइ वानन सब मुक्किय
 तिहि पुटि तेग तेगा कढ़े तासु मद्धि रस्तमलसिय
 मन सहस किरिनि ग्रीषम रितुहि दलबदल भीतर धसिय ॥ १७

छन्द अरिल्ल

प्रथम वीर बल्ल संग जुटिय
 तहां दवान वान बहु जुटिय

खोइकै
। काफरै
मासही
चाल की
माल कौं
गरिकै
ते चंदरौ
वा समै ॥ १२

हैं देउ
लेउ ॥ १२
गड
गेड ॥ १४
वान
। ॥ १५
हुं
रुठि ॥ १६

।य

सिय
तेतर घसिय ॥ १७

सेल सांग सर सररर वज्जिय
मारु मारु मुखतैं भट गज्जिय
तेग तराक तराक तरकिय
तेरि सनाह करकि फरकिय
तहां वीर बलू गहि सेलहिं
करिय रेल हूँ कै धकपेलहिं
तब ही चैन सिंह दग दिनिय
करि उभट्ट आयौ रिस भिनिय
लसि पठान केते भये चालन
तहां वीर हाल्यौ नहिं हालन
प्रथम सेल पुनि तेग संभारिय
किते पठान भूमि गहि डारिय
स्वामि हेतु आपुन सिर दिन्यहु
हरनै दैरि आप सिर लिन्यहु
तिहिं लखि साहिवराम उमंडिय
तात भ्रात पाछैं जब छंडिय
महावीर रनघोर सपट्टिय
हय भपट्टि अरि व्यूह लपट्टिय
इकै सेल इकै हिय पोहिय
साहिवराम रुद्र रस मोहिय
फेरि काढ़ि दूजे कै हाथर
लगत पठान लटकिय ताथर
जबही सेल हवक्कन चाहिय
तबही सत्रु आनि सिर चाहिय
सेल छोडि खगहि करि लिनिय
साहिवराम रोस रस भिनिय
दई सीस अपनौ अरि तकिय
गरतैं सिर भुष जाइ फरकिय
तबही वान आन उर लगिय
तऊ वीर खगहि नहिं वगिय
तजत प्रान नहिं आन निहारिय

(७८)

गिरत गिरत एकहिं गहि मारिय
यौं लखिकै खुट्टावह वाभन
करिय एड आयौ चित चावन
कही साहिवा मो विनि चलिय
आवतु साथ गथ्य यह भलिय
यौं कहि वीर धुक्यौ अरि गथ्यहि
किते पठान किये लथ पथ्यहि
तिनहुं प्रान दिये तिन सथ्यहिं
दुहुं सूर मंडल लिय पथ्यहि
तहां तिलोकसिंह वह तोमर
रुप्यउ जंग खैंचिकै तोमर
निमिष इक सुंधार वरष्यय
तवहीं जान बंदूक धरक्खय
लगत मान गोली के लुट्टिय
परिय भूमि तऊ प्रान न बुट्टिय
लखिय बोरबलू मन मोहिय
आत पूत रन में पर सोहिय
गहि करि तेग दई अरि सीसहिं
देखैं तौ संग सुभट न दोसहिं
तबही चित्त राज मत आइय
सूरज पास जंग यह ठाइय
जवहीं बोरवाग गहि मोरिय
सूरज दृष्टि दई तिहिं ओरिय
निकट देखि मातुल सुखरामहिं
तासौं हुकुम कियौ तिहिं ठामहिं ॥ १८

दोहा

सूरज नै सुखराम सौं कही कि मांमां वेगि
जाहु जहां हैं चौधरी उड़ी बहुत क्यौं रेग ॥ १९

(७९)

सोरठा

यौं सुनिकैं सुखराम आगैं चलयौ रचकि कैं
बिना सुभट संग्राम देख्यौ आवतु चौधरी ॥ २०

हरगीत छंद

भूपाल पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलि कान हैं
ताकौ चरित्र कलूक सुदन कह्यौ छंद बनाइ कैं
जहां खान रुस्तम भिल्लिबौ कहि अंक चौथौ गाइकैं ॥ २१
इति चतुर्थ अङ्क ॥ ४ ॥

दोहा

तबही अहमद खान पै खबरि गई अमु पाइ
रुस्तमखां करि जंग कौ लीनी फौज उठाइ ॥ १

छन्द मुतियादाम

अहमद खान सुनी तिहिं वार
कहोअन वीर बजावहु सार
तवै सुनि सादलखां किय हल्ल
बड़े सिरदार महाभट मल्ल
तहाँ मद मन्द अली सुत धाइ
हवस्ससुखान तुरंग दवाई
करी जित दैरि सुवङ्गसपूत
हुतौ मनसूर जहां मजवूत
कुहकिय चारिहुं ओरन वान
चुहकिय घामहु मीचु दिसान
मुहकिय नह जुहकिय वाज
लुहकिय हथ हुहकि अवाज
उमंडिय कोह घुमंडिय धूरि
जुमंडिय रारि पटाननु भूरि

त्य

र

ग्रहि

॥ १८

वेगि

ऐग ॥ १९

(८०)

भुसंडिय और कुवण्डिय साधि
परे दुहं ओरन तें भट आंधि
रवकि इतैरु उतै धक पेल
ववकि ववकि भये घम सेल
हवकि हवकि चलाइय सांग
जवकिय वीर वियें दुहं आंग
दवकिय सोइ न चकिय कोइ
सवकिय जीय तंवकिय खोइ
जुटंत तहां इक इकन चंड
छुटंत सुसाइक खैंचिकुवण्ड
फुटंत कपालकहूं गज मुंड
तुटंत कहूं तरिवारन तुण्ड
कुटंत कितेक भए तन रुंड
झुटंत मुटंत सुटंत निषुंड
घुटंत गरे भठ धूमनुमुंड
गुटंत हुटंत वुटंत सुझुंड
लराकनि आइ धरा कहि दीन
मरा कहि कै सुभरांक जमीन
जरा रहियौ बहुरौ रिस भीन
खरा कहि खंजर मारिय सोन
कराक कराक सनाह कढ़ंत
छराक छराक धरा सुपढ़ंत
सराक सराक सरौं सननाइ
भराक भराक विदारिय काइ
पराक पराक परें भुज दंड
चराक चटकत हाड़ुदंड ॥ २

छन्द नीसानी

सान धरें फरसान लियें घमसान करैं
वान कितेकिरवान कटे तनत्रान परैं

ठानत इक अठान पठाननु आनि भिरे
खट्टिय खून उखट्टिय हट्टिय नाहिं घिरे
कट्टिय सीस विकट्टिय चट्टिय श्रौनभरे
उट्टिय भूरि कवन्ध सुरट्टिय अन्ध अरे
सकत सूर सरकत सकत लोह लियै
तकत आवत वकत रकत रंग कियै
हकत हुन्व हयन्द हवकत संगरमै
चकत कोइ उचकत जकत जंगर मै
झुकत इक विझुकत कुकत कोइ सने
मुकत सीसनु सांग सुरकत धुकि वने
घाइन इकु घुमाइ अघाइय रत्त वहे
सत्त रहे नहिं गत्त तऊ तन ग्रीव गहे
दवत लुत्थिनु अवत इक सुखवत से
चवत लोह अचवत श्रौनितगवत से
खुट्टित खुट्टित केस सुलुट्टित इकमही
जुट्टित खुट्टित सीस सुफुट्टित तेग गही
कुट्टित घुट्टित काइ विछुट्टित प्रान सही
छुट्टित आयुध हुट्टित गुट्टित देह दही
अंतनि इक अरुभिभ पदंतनि पीस रहे
हंतनगंत मुरंत अनंतन रीस गहे
दंतनु के गहि दंत चढे इक अंत कसे
रंतकि आइ धुरंत तकि संत सुरंत कसे
कहनि इक विहहनि नहनि पूरि रहे
वहनि वहिय इक दुरहनि इक गहे
महनि मूलि गरहनि हट्टनि नाहं चहै
गहनि गह उमह जुसहनि सख वहे
अंगन श्रौनित रंग किते उतमंग फटे
तंग कटे भट भंग तुरंगनि टाप वटे
पंग परे इक लंगनि अंगनि तेग कटे
तीर तुफंगनिखंग अरंगनि जंग पटे

छप्पय

घरी अद्ध अति उद्ध जुद्ध भट कुद्ध कुद्ध किय
 वज्जे सादल हवस वीर उद्गीर रुक्मिलिय
 महमदअली तनूज तवहि निज सैन हंकारिय
 तरफ आपुनो जवर जङ्ग हलकी क्यौं पारिय
 सब सुनत रहेले रोस भरि सहस इक्क असि खैंच लिय
 चलिय उद्धलि अलिय कहत पर दालिय भिलिय वलिय ॥ ७
 निपट विकट असिधार निकट उदभट भट आवत
 दहन गहन वन कूप कूर डर काइ छिपावत
 बांधत शस्त्र अनेक उदर पालन हित सब कुल
 सनमुष घाइ सुखाइ और नहिं सुकृत तासु तुल
 देही अनित्त मृतु नित्त है विनु निवित्त परि है नरन
 लहिं जित्त किन्ति ज्यौं वित्त है स्वामि हित्त यह सूरपन ॥ ८
 यह पन महमदअली तनय भट धरिय जङ्ग महं
 घाइयं होत निसंक संक पारिय पर दल कहं
 तिहिं लखि भगिय सेर जङ्ग वकारम जानी
 राउ वलोच अहीर पिठि दिय तजि दग पानी
 लखि चलत चमू विचलित कटक चकित उजीर सरोस हिय
 रनधीर इसाखां वीर तहँ भोर चोर जङ्गहि लहिय ॥ ९

सारंग छन्द

नगौं गहँ खग अगोलखे वीर भगो किते चाहि खगो किते धीर
 रुप्यो इसाखानु कुप्यौ लखैं जङ्ग रंगे किते श्रौन अंगे किते भंग
 हूवे सुमेले रहेले महा चंड ले ले कहेतेगरेले दिये दंड
 संनावते इक्क फंनावते वान खँनावते खग घंनावते आन
 ढंनावते ढाल मंनावते मुच्छ ठंनावते मुंड गंनावते गुच्छ
 भंनावते सांग संनाह कौं तोरि धँनावते धिंग वंदूक दै मोरि
 तंनावते चाय घुम्मावते सेल लनावते सूर हुवे घलामेल
 धक्के परेते धुकाए धराधीर भक्के करे फोज सक्के नहीं धीर

पेठे
ले
छ
वा
ती
वा
वा
का
का
अ
फ
का
का
त
सं
लो
पि
हि
कु
यो
स
म
ह
त
के
के
ति
स
व
र

पैठे रहले सकेले घनौ कोह
तेगा भरें भान जेगानु पै ठन
जुट्टे भमाभम्म देते धमाधम्म
बाजौं चट्टे नेज बाजौं खमाखम्म
तीरो जटे इक्क वीरो गहे खग
धक्का धुके इक्क हक्का रटैं नीठि
चह । दचक्का मचक्कान दे सूर
खण्डे कहूँ हथ हण्डेनुसै मुण्ड
कन्धे टुटे इक्क अन्धे फुटे नैन
अन्धे कबन्धे दुरन्धे करे अङ्ग
फट्टे कहूँ पेट कट्टे कहूँ अंत
कट्टे सपट्टे लपट्टैं हटे नाहिं
कत्तेन सौं देह लत्ते करे खेत
तत्ते भये इक्क फत्ते कहूँ जुद्ध
सीसे सरीसे सुदोसे फुटे सीस
जोसे गये एक फीसे रहे डारि
पिल्ले रहिल्ले सुभिल्ले करी पास
खिल्ले खरेखग गिल्ले भए रत्त
बुल्ले कुजाहस्त इस वस्त मंसूर
यौं भाखते राखते ज्यौं कट्टी ज्वाल
सब्यै रहले किये नैन यौं लाल
त्यौं हौं इसाखानहुं खौंचि कमान
तानैं धनैं बान तानैं धरैं सान
माने जनेते अमाने रहैं सङ्ग
काने जने ते न जाने कहां जङ्ग
हथ्यौ चठ्यौ हथ्यौ मड्यौ वीर
मथ्यौ कितो सेन सथ्यौ कटे तीर
तव्यै रहलेनु लै लै करी रेल
खेलैं मानो फागु देले भये मेल
कोई चठ्यौ दन्ति दै दन्त पैपाउ
काहू गहो पुच्छ की राह कै दाउ
केती छनाछत्र बाजी तहां तेग
मानो महामेघ मै चञ्चला वेग
किन्नो इसाखान कौं मारिकै चूर
कट्ट्यो तज सीस हट्ट्यो नहीं सूर
हाथी सुधांसव्व हाथी पर्यौ खेत
संग्राममें स्वामिके काम के हेत
कुट्ट्यो इसाखान लुट्ट्यो धरा पिट्टि
बुट्ट्यो लखै छुट्टि मंसूरहु निट्टि
मंसूर कौ भागनौ सो कहै कौन
मानौ घटै गौन लागै महा पौन

(८४)

अस्सी सहस बाज छोड़ी सबै लाज जैसैं कुलङ्गा बुटैं देखते बाज
जा खेत मंसूर भग्यौ सुधा मोर ता खेत सृजा रुप्यौ है महाधीर ॥१०॥

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेस नन्द सुजान हैं
जानैं दिलो दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलक सुदन कह्यौ छन्द बनाइ कै
जुझियौ इसखां भगियौ मनसूर पंचम गाइ कै ॥ ११ ॥

इति पंचम जङ्ग ॥ ५ ॥

चंचला छन्द

तथ्यही समथ्य सथ्य हस्तमां करी सुहल
सामुहैं विलैकियौ सुजान वीर है अटल
चलियौ वजोरहू तऊ न हलियौ सुजान
रलियौ उठाइ वाग दलियौ घने पठान
पलियौ वजेस पैज मलियौ मही समान
खिलियौ सबै सुखेल हलियौ खुमान खान
खान हस्तमां पठान भानसौ सुजान कुद
उद जुद कारने दुहूँ रहे विरुद रुद
कालसे कराल वीर आवते उताल चाल
ब्यालसे करौ कृवाल घालते विसाल भाल
हालसे हवाल पक धावते धरनि पिढि
लालनैन ज्वाल भाल सी भरौ दुसाल दिढि
काढ़ि काढ़ि तेग कौ सवेग वीर धाइ धाइ
सारि चाहि खेतगाहि पैठियौ सुवीच आइ
जबबही धसे पठान तबबही कितेक वीर
दबबही हयंद अग नबबही कमान तीर
ता समैं हरी जुसिंह चैनसिंह सौ सुनाइ
सेल लै करी सुरेल सत्रु कै दियौ घुमाइ
एक कौ पटकि फेरि दोइ कौ भटकि दीन
सौ अचान बान लागि भट्ट दै पररौ जमीन

(८५)

ज्यों मुहकमां अमान सार धार कौं सम्हार
मार मार भाखियौ द्वारिज्यौ अरीनु जारि
थौं अपार देत मार आइयौ पठान सब्ब
ता समैं कितेक अग्न हूँ गये कितेक गव्व
आगिले भये पछार पाछिले भये अगार
को हरौल को चंदौल नारही कछू सम्हार
भूरि धूरि धारमैं भूमा भूमो वजंति तेग
सेल सांग टूटही जु जूटही तजन्त वेग
इक्क सोस फुट्टिगे सुलुट्टिगे धरा धराक
तुट्टिगे चरन इक्क कुट्टिगे कराकराक
बुट्टिगे कपूत धूत खुट्टिगे हथ्यार हथ्य
घुट्टिगे सरौर भीर गुट्टिगे सुलथ्य पथ्य
बज्जई कृवाल ढाल गज्जई सुमार मार
तज्जई तुरीन सह सज्जई हथ्यार डार
गज्जई गरूर सूर भज्जई अनेक कूर
रज्जई कितेक घाइ व्है गये सुभूर चूर

कवित्त

गरद मसान किरवान वरछा वान
रुस्तमखान धमसान धोरकरतौ
कहूँ रहैं मुंड कहूँ तुंड भुजदंड छुंड
कहूँ पाइ काइ फर मंडल कौ भरतौ
सेल सांग सिप्पर सनाह सर श्रौनित मैं
कोट काट डारे धर पाइ तौ सौ धरतौ
हरतौ हरीफ मान तरतौ समुद्ध जुद्ध
कुद्ध ज्वाल जरतौ अराकनि सौ अरतौ ॥ २
गरद गुवार मैं अपार तरवार धार
मानौ नीहार मैं किरनि भीर भान की
कहरि लहरि प्रलै सिंधु मैं * अधीर मोन
मानौ धुरवान मैं तमक तड़ि तान की

* पारांवर-अधोन ।

(८६)

दावानल * ज्वाल है कि ज्वाला कौ अचल चल
ऐसी जंग देखी तहां प्रवल पठानकी
भृकुटी भयानकी भुजान की उभय सांन
मंगल समान भई मूर्ति सुजान की ॥३॥

दोहा

रुस्तमबां सनमुख लख्यौ करि सुजान दग लाल
कालजमन के कालकौं ज्यौं मुचकुन्द भुवाल ॥ ४ ॥

छप्पय

भल भलात रिस ज्वाल वदनसुत चहुंदिसि चाहिय
प्रलय करन त्रिपुरारि कुपित जनु गङ्ग उमाहिय
तिहिं लखि सब वज वीर उमड़ि गन जिमि रङ्गनिधरि
अङ्गनि भरे उमङ्ग जङ्ग हित भुवभङ्गनि करि
दै अग पग फरमग मैं रग वग सायुध धइय
लै लै दवान मैदान मैं सब अमान सनमुख भइय ॥ ५ ॥
दै धमांक धनाक धूमधुंकार धराधार
धरधरात धरधाम धमक धुकि जात परापर
उठिय धूम अतिप्रबल मनहुं नोहार बितानिय
मनहुं गङ्ग कौ मिलन सूरतनया तररानिय
इमि घोर मारु चहुंओर दै फेरि सेल सांगहिं लहिय
सरसान सिरोही सिप्परनु सूरज के सूरनु गहिय ॥ ६ ॥

पहुडी छन्द

गहि सेल सांग समसेर ढाल धाप सुजान भट रन कराल
बड़ हथ्य बलू बलिराम वीर महमद पनाह वह मीर धीर
गहि गौर सुगोकुलराम सेल परताप कमठ कुल करिय रेल
सूरत सुराम वह कुसल पूत ब्रजसिंह सिंह रन में सपूत

* पाठांतर-ज्योतिन की ।

सु
कि
वां
लै
ह
प्र
स्ये
वह
भा
कु
कु
प्रो
वां
कि
सा
ल
त
सं
क
क
व
का
क
क
ह
पर
पर
क
क
क

सुखराम सम्हारि सब सहित सूर हरनाराइन सामन्त पूर
 किय हल सुपाखरमल तथ्य अरु रामचन्द्र तोमर समथ्य
 वाला सोगरिया सहित सथ्य गहि सेल सुतोफाराम हथ्य
 जैकृष्ण सुमंसाराम सङ्ग रनसिंह सुधाइय रन अभङ्ग
 हय दद्विय ठाकुरदास जव्व धनसिंह गौर धाइय सुगव्व
 अरु पैमसिंह पृथिसिंह धाइ वह स्यामसिंह उडिय रिसाइ
 स्यौसिंह वीर हिय धारि क्रोध पुनि स्यामसिंह बलवान जोध
 वह जैतसिंह सेवा तनूज द्विज उदेभान स्यौसिंह अनूज
 मतिवन्तसिंह मौहन उदण्ड हरनागर बहुवीरन प्रचण्ड
 हुव माथुर कुल जाहर जहान उदत अनूपसिंह हु अमान
 कुलकौ उदोत धाइय उदोत जैसिंह सिंह सम कौन गोत
 प्रोहित प्रचण्ड घमण्डी अमान सुत चन्द्रभान सम चन्द्रभान
 अरिलोप करन वह लोकमन्नि सुगरा सम्हारि सांगहि करनि
 किसनेस वीर पुहपा कुंवार सुत सारदूल धाप उदार
 सावन्त सूर औरौ अपार सूरज अगार हूँ करी मार
 लखि रुस्तमखां आवतु रिसान उतमें पठान अति क्रोध ठान
 इत श्रीवज्रसेस वीरहु अमान तिन भई परस्पर जङ्ग जान
 ज्यौँ दैत्यदेव बलि इन्द्रमान सररात बान घर घोर धान
 फररात तीर अहिपूतमान छररात गात तैं कढ़ि भयान॥
 खररात सेल बखतरन तोरि थररात तेग चिलतहनु मोरि
 ठहरात कोइ भररात कोइ हहरात इक भररात जोइ
 कहुं भरत बाहु तरवार सेल झुकि परत कहूँ पर घाव झेल
 भटकन्त इक गहि गहि भुजान खटकन्त खग बखतरनु भानि
 कटकन्त सीस लटकन्त पुट्टि मनु केतु राहु सौं चलिय रुट्टि
 हटकन्त हूल करि हूह सह सटकन्त सरोही चिय मरह
 पटकन्त वीर गहि सांग जोर अटकन्त नहौं असि लागि घोर
 गटकन्त रुधिर जे कटिय जाव ठठकन्त इक लगि मर्म घाव
 छटकन्त धरनि भट हूँ अचेत नटकन्त मनहुं महि कला लेत
 चटकन्त सुभट जे परिय टूटि घटकन्त प्रान इक पेट फूटि
 भटकानि उडत उतमंगउद्ध नटवटा फिरावतु मनहुं दसु

य
 ररि

य
 १६

ल
 वीर
 रेल
 पूत

(८८)

फटकान फटकि असि चलतघोर मानहुं अलात मंडल अछार
लटकान लेत घाइल सुमार पटकानि पटक इक बिन हथ्यार
घटकानि भरत गटकानिलेत घटकानि घटक श्रोनित समेत
खटकानि करत सरसेल टोप लटकानि भिरत भुव भरत ओप
मटकानि सरिस मुंडनि वगाइ सटकानि सटक भुज पाइकाइ
कै देहु देहु वियलेहु लेहु बरसंत सार उरभरे तेहु
सिविका सवार रुस्तम पठान नरवाहन ज्यौ पुष्पकविमान
तिहं संग वीर पलभच्छ जच्छ करि घोर मार भुव परे दच्छ
इक तीर पीरहु वे गरक कटि कटे इक धर पर फरक
असि देत लेत वजवीरधाइ तहं रुस्तमखां किय घोर घाइ ॥ ७

छन्द त्रिभंगी

लखि रुस्तमखां कौ करि करि हांकौ सब भटवांकौ असिभारा
पालकी विदारी भुव पर पारी उनिवा ढारी कर धारी
सबही पठनेटे लोह लपेटे देत चपेटे हथ करे
देते गनि भटके सांगनि सटके खंजर खटके रत्त भरे ॥ ८

छप्पय

करौ जुद्ध अति उद्ध सुद्ध भट स्वाम काम पर
उठिय भूरि कबंध लुटि केतेक धराधर
बिना मथ्य बिनु हथ्य काइ बिनु पाइ फरकिय
कढ़ैं दंत कहुं अंत लुथिय पर लुथिय अरकिय
तिहिं देखि खान रुस्तमवली कूदि पालकी तैं परिय
तहैं कछु पठान तिहिं अग्न हूँ लहि खगहिं जंगहिं करिय ॥ ९

छप्पै अभिराम

गजिय भट वजिय कवाल तजिय पठान तन
सजिय रिस भजिय न कीइ मजिय सुपाथ गन
भरिय सार तिहिं पर अपार मुखमारु मारु रर
ज्यौ पहार पर जलद धार बरसंत सांग सर

छोर
न हथ्यार
समेत
रत ओप
इकाइ
हु
मान
दच्छ
फरक
घाह ॥७

उभारा

८

य ॥ ९

।

(८९)

चटकेनु पटक भटकेन सौं ब्रजवीरनुरन उद्धरिय
उदभट पठान मैदान में रुस्तमखां बिनु सिर करिय ॥१०

कवित्त

गैदा से गुलफ गुलमेहँदी से अंत भार
कुण्यकलिततास खोपरी सुभाल की
नासा गुलवासा मुख सूरजमुखी से भुज
कलगां वधूक ओठ जीव दुति लालकी
कोकनद कर ज्यों करन गुलकोकन से
इंदीवरनैन बाल जाल अलि मालकी
पानी किरवानी सौं हरपानी कर सूरज कैं
पर भूमि फूली फुलवारी मानो काल की ॥ ११

यथा

एकै एक सरस अनेक जे निहारे तन
भारे लाज भारे स्वाम काम प्रतपालके
चंग लौं उड़ायो जिन दिल्लो कौ वजोर भीर
पारी बहु मोरनु किये हैं बेहवालके
सिंहबदनेस के सपूत श्रीसुजानसिंह
सिंह लौं भपटि नख दीने किरबालके
वेई पठनेटे सेलु सांगन खखेटे भूरि
धूरि सौं लपेटे लेटे भेटे महाकालके ॥ १२

छंद त्रिभंगी

रुस्तमखां अंगे बिन उत्तमंगे लखि भट जंगे छोड़ि गए
अति संकहिं मानैं नहिं समुहाने तजि तजि वाने बिकल भए
ज्यों टूटत बंधैं जात कबंधैं क्यों फिर संघैं खीन खए
ब्रजवीर अवाने देत धवाने सब मरदाने पिढ़ि भए ॥ १३

दोहा

चढ़े पिढि दस कोस लौं सब ब्रजबीर भवान
फते पाइ सूरजवली ठाड़ौ ता मैदान * ॥ १४
रुस्तमखां सुर भानसौं भान्यौ जाही खेत
दै असोस जदुबंसकौं ईसनच्यो गति लेत ॥ १५

सवैया

अइ परे सुउछाह भरे नहिं नेकु डरे रस बीर बिलासी
खाइकै घाइ अघाइ गए तरवार की धार लहो तिनुका सी
सूदन सोई सराह करैं मुख तैं उचरैं धनरे ब्रजवासी
तोहि असीसत सिंहसुजान पठान भए जे विमान के वासी ॥ १६

सौरठा

यह अचरज की बात दोऊ जीते जङ्ग में
उत पठान हरखात इत सुजान नरसिंह सौ ॥ १७

दोहा

रुस्तमखां तन दै छुट्यो भाजि छुट्यो मनसूर
अहमदखां सूरज वली दुहं रहे मगरूर ॥ १८

छप्पय

जहां मोर मुगलान सेख सैयद पठानगन
तहां खान सुलतान राउ राजा उद्धत मन
छोड़ि छोड़ि गज वाज साज तजि लाजन भगिय
सहित सैत मनसूर जात पलकौ नहिं लगिय
लखि सनमुख प्रबल पठानकौं इक लख हय पिढि दिय
तिहिं खेत खगिय सूरजवली जङ्ग जित्ति जयपत्ति लिय ॥ १९

दोहा

साठ सवारनु सी खडौ रन में सूरज सूर
तहां खबर पाई यहै भग्यौ कूर मनसूर ॥ २०

* पादोतर-खडौ खोलि पीछान

भग्यौ सुन्यौ मनसूर जब सूरज मन रिसधारि
फिर पठान सौं जङ्गहित चलयौ सेल पटतारि ॥ २१
उद्धत जानि सुजान कौं जुद्धहेत ब्रजवीर
अरज करी कर जोरिकैं ज्यौं समुझै रनधीर ॥ २२

सोरठा

सुनि महाराज कुंवार ए पठान दस सहस हय
इत मैं साठ सवार कहौ रारि कैसें बनै ॥ २३

छन्द पट्टड़ी

अरु कहत बड़े लोगहु प्रमान है जुद्ध रीति दुहुं बल समान
दस पांचहु की वरनी सुजङ्ग सत एक भिरैं यहनहिं प्रसङ्ग
अरु आप फौज पहुंची अगार भग्यो पठान तिन के पछार
जब लगि सुभेले होइ सब तब लगि रहौ इक ओर अब
इमि सुनत कुंवर बर नरनुनाह विरम्यौ पलास वन की सुखाह
लखि पीत धुजा पुच्छिय पठान इह खेत कौन खगिय अमान
तब कही दूत यह है सुजान जिनि रुस्तमखां खाइय पठान
सो सुनत कही अहमन्दखान सनमुख न जाउ इसके पठान
इत सूरज तूरज कौं बजाइ इक जाम तहां बिसराम पाइ
अपनी अनीक की राह देखि यह कही सिंह सूरज विसेखि
मम फौज कौन विधि मिलै आइ सोई उपाय कीजै बनाइ
तब अरज करी सबहो सुनाइ कालिन्दी पै इकन कौ आइ
जौ आप कही तौ कहत एहु चलि कारी सरिता तटहिं लेहु
यौं सुनत सिंहसूरज गम्भीर कीनौ पयान गति धोर धोर
निसि एक बसे तिहि तीर पास सत दोइसुभटहुवनिकटजास ॥ २४

दोहा

तहां खबरि निज फौज की पाई सिंहसुजान
कलूक मैडू मैं रही कलूक मथुरा थान ॥ २५
त्योंहीं सुनी वजीर नैं दिल्ली कियौ पयान
तब आयौ निजदेश कौं आपुन सिंहसुजान ॥ २६

धीर प्रवान
इन ॥ १४
खेत
लि लेत ॥ १५

चलासी
तिनुका सी
यासी
न के वासी ॥ १६

॥ १७

१८

भगिय
भग्य
य पिडि दिय
यपत्तिलिय ॥ १९

(९२)

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति बदनैसनंद सुजान है
जानें दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलूक सुदन कह्यौ छंद बनाइ के ॥ २
रन मांझ विस्तिर रुस्तमा छठयौ सुअंक सुनाइ के ॥ २
इति षष्ठ अङ्क ॥ ६ ॥

सौरठा

मुख गयंद सिर चन्द दुति अमंद वंदन धरें
जयति जयति भवनन्द दुख निकंद आनंद कर ॥ १

देहा

साहिजहांनावाद में जाइ फेरि मनसूर
लिखि भेज्यौ मल्लार कौं आयौ आप जरूर ॥ २
अर्थलख हय लै चलयौ दच्छिन तैं मल्लार
खबर पाइ मनसूर फिर डेरा कियो अगार ॥ ३

मालती छन्द

फिरयौ मनसूर कियौ बल पूर कढ़्यौ करि कोप धरें बहु तोप
करै सन मान बुलाइ सुजान कियौ बहु मान वजीरहिं आन
लियौ सुअगार सुजान कुंवार कियौ सुपयान दुहं बलवान ॥ ४

आभीर छन्द

पुनि उतरि पार जमुना अपार उत में पठान हुव सावधान

देहा

एक ओर मल्लार दलु दूजैं सिंहसुजान
उतहि रहेलें अगधरि सनमुख भए पठान ॥ ६
चहुं ओर घौसान के छाप सह अहद
मनहुं गंगके मिलन कौं आयौ सिंधु बिहद ॥ ७

॥

सुजान है
महा कलिकान्त
छन्द बनाई
सुचक सुनाई ॥ २

मंद वंदन करें
कर प्रानंद कर ॥ १

मनसूर
चाप जरूर ॥ २
तैं मल्लार
क्रोधा अगार ॥ ३

हरि कोप धरें बहु तोष
मान वजोरहिं मान
दुपपान दुहं बलवान ॥ ४

मान हुष सावधान

सिंहसुजान
भय पठान ॥ ६
महद
संसु विहद ॥ ७

(९३)

देह जाम वीतन लगे खड़े सुभट विनु जङ्ग
तब सुजान के दलबलनु आगैं करी उमंग ॥ ८

तोमर छन्द

करिकै उमंग अगार	सिरदार सिनिसिनवार
गहि सेलु सांगनु हथ	लहिकै बंदूकनि सथ
उततैं कुहकिय वान	हतसेल सांग कृपान
दल दक्खिनी इक ओर	विय ओर जटु कुल जोर
तिन सौं रुपये बलवान	ठानै अठान पठान
रव धुंधमांक धनाक	सरसेल सांग भमाक
रस धुंधरी दिग चारु	मुख सह माखहि मारु
दल दक्खिनी करि रलु	भिलि गए लै भुज भलु
भमकी भमाभम तेग	घन माहि दामिनि वेग
धरि मुच्छ गुच्छनि ताउ	इकलेत सीसनि घाउ
इकतानि वान कमान	धरि कान के उनमान
तकि देत सीस भुजान	तन वान वेधत जान
जुटि सक्ति सौं गहि सक्ति	तन फोरि वोरिय रक्ति
असिवार सौं असिवार	निज वार सौं निजवार
फरसानि सौं फरसानि	वरछानि सौं वरछानि
करि चोट सिप्पर ओट	कहुं होत लोटकपोट
छत जात गात अन्हात	भहगत फिर झुकि जात
पुनि उट्टि मुट्टिय वन्धि	असि देत रोसहिं अंध
किलकार पार अपार	इक कहत डारि हथ्यार
उचटन्त चर्मनि फूल	तन तूल ही के तूल
सननात सेल सनाह	खननात खगं सिलाह
सर छोड़ि छोड़ि रठंत	इक ओड़ि ओड़ि हटंत
करिकै महा घमसान	खगि रहे खेत पठान ॥

देहा

उततैं धायो तांतिया इततैं सिंहसुजान
दुह दबटि दल मैं परे जिहिं थल रुपये पठान ॥ १०

छन्द कन्द

चली सिंह सूजा करी रौर जा ठौर
 जहां खेत खूनो पठानो करी दौर
 कितेकौ धमंकी धमाधम्म वन्दूक
 कितेकौ गए लूकि केते गए सूक
 किते वीर दै तीर चोरैं घनो भीर
 मिलै छोर मैं छोर ज्यौं नीर मैं नीर
 वजै दुन्दभी औ गजै मारुही मारु
 महा धूरि मैं सह मानो भुजै भारु
 चलै सेल सांगैं घलामेल है सूर
 भलैं रे भलैं रे रहनौ सह यौं पूर
 भनकैं भमाभम्म तेगा धरे सान
 ठनकैं ठनाठन्न तन्वान पै बान
 भरैं कोहलैं लोह धाए बिना मोह
 रंगे रक्त मैं गत्त वाढ़े महा छोह
 जुटे इक सौं इक औ दोइ सौं दोइ
 कहुं सोट से लोटपोटौं रहे सोइ
 कटे झुण्ड झुण्डा फुटे भाल सौं लाल
 खुसो हाल हूँ कै नच्यौ काल दै ताल
 कहुं पाइकैं धाइकैं साइकैं संधि
 परे आइकैं चाइकैं छाइकैं अंधि
 खुटे खग हथ्यौं जुटे वीर सामग्र
 लुटे स्वाम के काम संग्राम के धाम
 वहाँ तेग तेगा सहै सूर सावन्त
 भरैं श्रौन धारा परै पेट तैं अन्त
 कहुं खंड खंडे भुजा दंड औ मुंड
 दुरे रुंड पै रुंड और डुण्ड पै डुण्ड
 भरौ फुलभरी सो भमाभम्म समसेर
 करी कौचको सो परी ढेर की ढेर
 सपट्टे लपट्टे भपट्टे भरैं तेह

(९५)

परैं वान किवान वल्लन के मेह
गहैं हथ सौं हथ औ मथ सौं मथ
भरैं वथ सौं वथ लेटे लथा पथ
रहेले पठानो करी यौं घरो मार
वली वीर जइँ बजायौ घनौसार
कटे भूपटे सोहटे खेत पट्टान
जहां सिंह सूजा करयौ घोर घमसान
परे चारिहू ओर तैं दक्खिनी टूटि
भजे खेत पट्टान लीने कछू लूटि
फते पाइ सूजा खडौं खोलि नौसान
तमैं भानि ऊ औ महासान सौ भान ॥ ११

दोहा

जङ्ग जीति सूरज वली आयौ जहां नवाब
तब वजीर पट्टान पै भागैं कियौ दबाव ॥ १२ ॥

कवित्त

सैलनु धकेला तैं पठान मुख मैला होत
केते भट मेला हैं भजाप भुव भङ्ग में
तङ्ग के कसैं तैं तुरकानी सब तङ्ग कीनी
दङ्ग कीनी दिल्ली औ दुहाई देत बङ्गमें
सूदन सराहत सुजान किरवान गहि
धायौ धीर धारि वीरताइ की उमंग मैं
दक्खिनी पछेला करि खेला तैं अजब खेल
हेला मारि गङ्ग मैं रहेला मारे जङ्ग मैं ॥ १३

लुप्य

है कलकान पठान समैं मन मांहिं विचारयौ
करि मलार सौं संधि बखत आपनौ गुदारयौ
तीन भाग भुव करी एक मनसूरहिं दीनी
एक दई मलार एक अपनी करि लीनी

(९६)

उलटगौ उजीर दिस पूर्व कै गङ्ग तीर को राह गहि
पर दल विदारि परदेस तैं श्रीसुजान आयै घरहि ॥१४॥

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति बदनैस नंद सुजान हैं
जाने दिलीदल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कल्लुक सुदन कहगौ छन्द बनाइ कै
पुनि गङ्गपार पठान मारिय अंक सप्तम गाइ कै ॥ १५ ॥

इति सप्तम अङ्क ॥ ७ ॥

सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री ब्रजेन्द्रकुमार सुजानसिंह
हेतये कवि सुदन विरचिते सुजान चरित्रे पठान युद्ध

उभय वर्णनो नाम

चतुर्थ जङ्ग

समाप्त ॥ ४ ॥

श्री
हर
ग
ग
रव

मह
घा
हु
दे
तव
जि
भव
रह

यै।
जे।
सा।
सो।
सी।
सा।
रै।

अथ पंचम जंग लिख्यते

छप्पय

अनकप आनन अमल कमल कर कोस दोस हत
औषधीस सुभ सोस कोटि तैंतीस करत नत
हंस अंस अवतंस वंस भवभाँछि उजागर
एक दसन सुचिवसन रसन नवनिधि सिधि सागर
जगमात तात उतपातहर जग विख्यात मोदक असन
रवनीय रवन वानीवरद जयति जयति मूषक लसन ॥ १

दोहा

ब्रह्म सिद्धि धरि विन्दु निधि वरष गतागत मांह
घासहरे पै कोप करि चढ़गौ सूर नरनाह ॥ २
हुतै नगरपुरहुत कै सूरज सफदरजङ्ग
दोउन मिलि मसलति करी करनौ जो जो ढङ्ग ॥ ३
तब वजीर मनसूरनै कहौ कि सिंहसुजान
जिन्हौं न मुझकौं तन दिया तिन्हैं करौं विन जान ॥ ४
अवल मुझै बड़ गूजरै ताखत करना जानि
रफते रफते और भी रहे मुखालिफ भानि ॥ ५

मल्लिका छन्द

यों कहौ वजीर धीर	बुलियौ सुजान वीर
जो कछु कहै नचाव	ताहि कौजियै सिताब
साहिकौ हुकुम लेउ	आपुही मुहीम देउ
सो वजीर चिन्त धारि	साहि पै गयौ विचारि
सीसु नाइकै सलाम	भाषियौ अनेक काम
साहि के हरामखोर	ते बड़े मरोर जोर
बैं सुनी दिलीस तब	बोलियौ तबै सगव्व

(९८)

चाहियै तुझै नवाब ताहि कीजिये सिताब
साहिकौ हुकुम पाइ आपने अवास आइ
श्रीसुजान का बुलाइ यौ नवाब ने सुनाइ
सांहेने तुझै सराहि एक बन्दगी सुचाहि ॥ ६

दोहा

हुकुम साहि कौ है यही तुमकौ सिंहसुजान
राउ बहादुरसिंह कौ ता खत करनौ जान ॥ ७
सरोपाउ समसेर दै फुरमायौ मनसूर
घासहरे पै कुंवर जी जानातुमैं जरूर ॥ ८

चौपाई

हयं गय सरोपाउ समसेर ले सुजान कीनी नहिंदेर
करि सलाम निज डेरन आइ करों कूच दुन्दुभी बजाइ
उतरि पार कालिन्दो तीर डेरा करे समौगर वीर
कोल मांभ बैठ्यौ सुनि राउ ताकौ करत सुजान उपाउ
पेसौ कछु व्योत चितघरिण याहि घेरि घासहरैं करिण
थोरी चमू आप दिंग देखि लिख्यौ देस कौ पत्र विलेखि
श्रीवजराज राज सिरताज अपने आप सुधारन काज
देखत पत्र सीख दै लालै सुत जवाहरै सहित रसालै
और देस में जो कछु सैन ताहि भेजियौ कहिकै बैन
पत्र बचाइ तुरत वजपाल बाल्यौ सिंहजवाहर हाल
सीख दर्ई वजपति ने जवै सूजा पास जाह तू अवै
जो कछु फौज देस की और पीछै भेजौ तेरी गौर ॥ ९

दोहा

सीख पाइ बदनैस तैं सिंहजवाहर वीर
करि सलाम ताही घरी साजी सैन गंभीर ॥ १०

कवित्त

कर रकवाहे किल बाकी कुहो काविल के
खुरासानी खंजरीट खंजन खलक के

गादे गढ़ ग
जरकस के
चरखि तु
पिलवान

(९९)

गूढ़ गिरिगिरी गुलगुल से गुलाबरंग
चहर चगर चटकीले हैं बलक के
जरदा औ जागजिरही से जग जाहर
जवाहरहुकुमसौं जवाहर भलक के
मंगसी मुजनस सुनोचीस्यामकर्न स्याह
सिरगा सजाये जे न मंदिर भलक के

छन्द नाराच

सज्जियै तुरंग ते	कुरंग गौन मंजनै
परिंद मान मंजने	नरिंद प्रांन रंजनै
सुरंग स्याह से लिया	दुरंग बोज केहरी
कुंभेत संदली दुवाज	हैं सुरक्ख जेहरी
कुला समंद सूर से	सजाव खिंग हैं हरै
गरा गुलाब आननै	अनेक रंग जे भरे
नवीन जीन कीनते	अरीनुमान खंडनै
दिगोस होसके करें	ब्रजेस ग्रेह मंडनै
किते पदाति जाति	राति रूपते भयावनै
कितेक लाल पोस	आस पास के सुहावनै
किते जजालदार	आवदार लावदार है
कितेनिसान वान सान	के भरे तयार है
अनन्त रथ सथ ही	मनौ सुचन्द भान के
भरे विलन्द सान मान	ढाहने बिमान के
विसाल लाल पालकी	अनेक नालकी सजी
चमू सुचारि रङ्ग की	अनेक रङ्ग है गजी ॥ ११

छन्द त्रिभंगी

गाढ़े गढ़ गज्जन सुर गज भज्जन मानहुं अज्जन गिरि राजै
जरकस की झूलनि रवि ससि तूलनि धावत झूलनि गल गाजै
चरखिनु आकरवैं सदजल वरवैं परदल धरवैं भले भले
पिलवान पुकारैं आकुस भारैं कहि कहि हारैं दले दले ॥ १२

॥ ११ ॥
उ
रेण
सेखि
ज
गलै
न
ल
१

(१००)

सिँदूर भुसंडे बहु विधि मंडे तिनपै भंडे फहराने
दन्तनु की सोभा है जसु गोभा दिस दिस लोभा दरराने
चरननु के धरते भरके परते दानवधरते मले मले
पिलवान पुकारैं आंकुस भारैं कहि कहि हारैं दले दले ॥ १३

दोहा

सवै सैन तैयार हुव करि दुन्दुभी धुकार
सिंहजवाहर निकट हुव जैजै शब्द अपार ॥ १४

छन्द अनुगीत

तिथि त्रोदसी सनमुष ससी रवि राहु कौ बल पाइ
धरि ध्यान हिय मधि प्रीति सों हरिदेव कों सिर नाइ
सुभ लग्न में निरविघ्न चढिदिय तनय सिंह सुजान
फहरान पीत निसान प्रबल प्रताप पावक मान
अति दीह दुन्दुभि वज्रियं मनु गजियं घन घोर
बल सजियं गल गजियं चहुं ओर ज्यौं पिक मोर
ढमकन्त ढोल ढमाक डफला तबल ढामक जोर
सहनारि तुरही वंकिया भभकार भेरनु सार
करि करि सिलाह सनाह चिलतहं ओपची वरवाह
भरि भरि उक्काह सिपाह चढिदिय सहित संग उमाह
चहुंवान कूरम जादवा राठगौर गौर बघेल
पंमार अरु परिहार सेंगर सोलकी चन्देल
निर्वान सुरकी तोमररु पुण्डोर पोरच पूर
सीसौदिया खीची खगार जघार जाइस सूर
वर वैस पुनि वड़ गूजरौ गहलोत सजिय बुँदेल
चहुं वरन उद्धत धरन के संग चढिदियौ करि रेल ॥ १५

कवित्त

वखत विलन्द तेरी दुन्दुभी धुकारन सौं
दुन्द दवि जात देस देस सुख जाही के

(१०१)

दिन दिन दूनौ महिमंडलु प्रतापु होत
सूदन दुनी में ऐसे वखत न काही के
उद्धत सुजान सुत बुद्धि बलवान सुनि
दिल्ली के दरनि बाजे आवज उखाही के
जाही के भरोसैं अब तखत उमाही करै
पाही से खरेहैं जो सिपाही पातसाही के १६ ॥
दबत अदब महि पवय से पीलनु सौं
गवर गरद अरिठदनु निघट कर
ववर के बंस के अटव्वर के रच्छक हैं
तच्छक अलच्छन सुलच्छन के स्वच्छ घर
जवर भुजवर सुभटनु सघट हर
नटत न हटत न थकत न खग धर
उग दुग दंडन दरिद्र दुःख खंडन
प्रताप आप मंडन जवाहर तिहारे कर ॥ १७

छन्द कडषा

चलत उच्छलत हयवलित कञ्चन करनु
ललित मदकलित गजराज गाए
भलित नीसान उज्जलित असमान लगि
खलित खल नारि धुधुकार पाए
धूरि धारानि सौं पूरि ससि सूर कौं
चूरि विटपीन भुवि पूरि छाए
सुभट उदभट लियैं ओज दस दिस कियैं
सैन सजि सूर सुत जवहिं धाए ॥ १८

छन्द पटुड़ी

सौ साहि करिय चारिक मुकाम पुनि करहु कूच अति ओज धाम
फिर उतरि पार जुमना अपार पुनि दयो गोपपुर किय बिहार
यह खबरि पाइ कै श्री सुजान किय कूच समोगर तैं अमान
करि कूच इहं आप जवारि लखि श्रीसुजान हिय हरख धारि

तब सिंह जवाहर पास आइ किय राम राम निजु सीस नाइ
 *सबकौ निहार वदनेस नंद आनंद पाइ उर मैं विलंद
 सब समाचार पंराउ पाइ तजि कोल गयौ तट गंग धाइ
 इत सूरज हू सुत सहित कोल आप बजाय दुर्दभि अतोळ
 तब कही सिंह सूरज अमान अब है वड़ गूजर कौन थान
 सुन कही दूत वह गंग तीर यह खबर ठीक परि है अधोर
 यौ सोधु पाइ वदनेस पूत किय हिय विचार तवही अभूत
 एक जाति बाज वर साजिलेउ अरु सब वहीर ह्यां थांभि देउ
 मत यौ सुजान कौ सुनत बीर करि करि सिलाह आप गंभीर
 द्वैसहस ह्यंदनि सजिउ दंड वह सिंह जवाहर बल अखंड
 हय दोइ सहस सूरजहु संग यौ चार सहस हय लै अभंग
 करि करि निसान कौ घोर घोर कौनौ पयान उर धरि मरोर
 वड़ गूजर हू यह खबर पाय आयौ सुजान मेरे उपाय
 लरनौ न बनै या भूमि मोहि निज भूमि मांभ होनी सुहोहि
 वड़ गूजर हू निज दुग्ग राह तजि गंग तीर सजिवे सनाह
 दस कोस भूमि के अंतराइ दोऊ कलिंदनंदनि मभाइ
 घासहरैं दाखिल भयौ राउ निजविवरव्यालकै करिउपाउ ॥ १९

छन्द हरगीत

भूपाल पालक भूमिपति वदनेसनंद सुजान है
 जाने दिली दल दक्खिनी कीने मंहा कलिकान है
 ताकौ चरित्र कछुक सूदन कछौ छन्द बनाइ कै
 करि फौज भेरिय राउ घेरिय प्रथम अंक सुनाइ कै ॥ १
 इति प्रथम अङ्क ॥ १

दोहा

उग्ग † दुग्गविंवैर घसि व्याल रूप है राउ
 ताकौ दूक्यौ आनि कै सूरज ज्यौ खगराउ ॥ २१
 रविराकामकरंद की सूरज रोपिय राति
 है दल पैदल संग लै हल करिय रिस धारि

* पाठांतर—सुत

† पाठांतर—दुग्ग

यह छन्द
 चहुं
 एक
 अरु
 लखि
 सुनि
 अरु
 अरु
 तिहि
 निज
 उत
 अरु
 यह
 सिवा
 सुख

गीत ना
 उद
 ग धार
 ल
 धान
 धीर
 अभूत
 देव
 गंभीर
 रसंद
 मंग
 र
 य
 होहि
 राह

उ॥१९

॥१

(१०३)

छापय

ठुक्रिय दिग्घनिसान पुंजगिरवरगन गुंजिय
 पीतकेतु फहरानि देखि दुसमन मन मुंजिय
 चंचल तुंग तुरंग जङ्ग हित भरत बलंगनि
 पाइक साइक संधि अगाहुव करत कलंगनि
 इम सैन साजि सूरज चढ़िय जिहिं सम सूर न भूमि विय
 वढ़ि वीर विकट तिहिं दुगगतनु घोरदृष्टचहु ओर दिय ॥३
 जोजन अर्थ अकार दुग दुगम मधिसर वर
 दच्छिन पच्छिम ओर प्रवल जग रक्षौ पूरि जर
 वसु हजार नर सुभट रहे समुहाइ शख गहि
 लोह जंत्र चहु ओर तासु तट कौन सकै लहि
 लखि ताहि सूर सूरज बली सिंह जवाहर सौं कहिय
 तुमं जङ्ग धनद दिस तैं लहौ पुढ द्वार आपुन गहिय ॥ ४

तोटक छन्द

यह आयुस पाइ सुजान तनं लहि सिंह जवाहर मोद घनं
 चहुं सैनपतीनु बुलाइ लियं तिन सौं यह आइसु आपु दियं
 इक सूरतिराम सुगौर कुलं विय कूरम भर्थ वली अतुलं
 अरु दौलतराम सिलाह कियं पुनि गुजर राज हरषि हियं
 लखि चारिहु सैनपतीनु बली तिन सौं हित जङ्ग जताइ भली
 सुनि भर्थ सुदुगाहि जङ्ग लहौ सिव की दिस तैं निज जोर गहौ
 अरु राजहि गुजर सौं कहियौ दिस वाइय तैं गढ़ कौं गहियौ
 अरु सूरति दौलतराम दुमौ गढ़ द्वारहि कौ वल पूर किमौ
 तिहिं अग धरौ बहु पैदल कौं पुठवार कह्यौ बहु है दल कौं
 निज यौं वल राखि सुजान तनं करि दुं दुभि दीह अवाज घनं
 उत सूरज हू ततवीर कियौ भट मीर पनाह अगार दियौ
 अरु गोकुलरामहिं वाम भुजा रन जित्तन कीजहि हथ धुजा
 वह कूरमसिंह प्रतापु महा गढ़पूरब द्वारहि कौं उमहा
 सिवसिंह तिहीं तट जोर गह्यौ हरिनागर तासु परैं उमह्यौ
 सुखराम सुमातुल सौं कहियौ तुम मीर की मर्दति मैं रहियौ

अरु तोमरराम सुचंद वली हरिनागर की पुठवार भली
 वलिराम सुवल्लभ दुग्गपती सब सैन सजै सबकौ मदती
 अरु जे वरछैत वली तन के तट सिंह सुजान महा मन के
 इमि सूरजसिंह जवाहर ने वलु थापि कियौ अरि ठाहर ने
 लखि ताहि बहादुरसिंह महा उर कोह भर्यो रन कौउमहा
 दुति देखतु दीरघ भुंडन की अति उन्नत देह वितुंडन की
 करि चौकस चारिहु डंडन की मति मंडन की अरि खंडन की
 निज मातुलदच्छिन ओर धर्यौ वह छत्रिय धर्म गरूर भर्यौ
 दिस उत्तर ओर जवाहर की तहं भीर भरी जुग नाहर की
 इक जालिमसिंह सुपेहल कौ वह वीर महा भुव ठेहल कौ
 अरु देवियसिंह सुभ्रात वली तिहिं के तट राखिय भांति भली
 दिग पच्छिम हाथियराम धर्यौ अरुमानधाता तट तासु कर्यौ
 धरि पूरब आपुन मंत्रिय कौ अरु आप रह्यौ सब जन्त्रिय कौ
 अरि पांच हजार बैदूकनि कौ बहु तोपजजाल अचूकनि कौ
 पुनि छत्रिय धर्म सम्हार हियै गढ़ पुबहिं द्वार विचार कियै
 हित जंग कढ़्यौ वह राउ तवै सत सात तुरंगम साजि जवै
 सत वेद सुपाइक अग्न धरै वड़ गूजरयौ रन कौ निकरै
 लखि सूरज सूरन हल कियं उत सिंह बहादुर कोह कियं ॥ ५

देहा

रन भुगिनि जुगिनि जगौ सुनि दुन्दुभि धुंकार
 महा भयानकभुव भई खल भल दुग्ग अपार ॥ ६

छन्द नूफा

खल भल परी दुग्ग मभार दलवल दपट देखि अपार
 कलवल करत नर अरु नार छल वल कोट ओट निहार
 दर वर धाइ सूरज सूर अर वर पारियौ पर पूर
 हरवर कही राउ निहार नर वरकरौ सलक सम्हार
 भरभर हौं न लागी चेाट भर भर कांगुरन की ओट
 घर घर धुन्धमांकधमाक घर घर धुंघमाक घनाक
 तरतर परत गोली घोर कर कर कै रही चहुं ओर

सूरज
गोला
गोला
गोला
गोला
चारों
सूरज
चारों
दे दे
करि
गढ़ के
तापर
प्राची
कढ़वड़
गढ़वड़
गोले
धुंवां
दुद्धत
देखें
तासी
गढ़ को
दुरजै

५
४
२
५

५
५
५

भलो
द्वती
मन के
ठाहर ने
उमहा
न को
इन को
प्रयो
हर को
ठ को
ति मली
करौ
प्रय को
न को
किये
जवे
रें
हय ॥ ५

(१०५)

सरसर जवर जङ्गनि अङ्ग
गोला गोल में गन्नात
झोला बाइसों फफात
चोला सुभट के ले जात
होला हौन लागै सैन
चारपौ ओर मांची घोर
सूजा देखिं ऐसौ हाल
चाह्यो*त्यौ जवाहर वीर
दै दै दुहं दिग्घ निसान
करि करि दुहं दिष्ट करूर
गढ़ के ईस की दिस ओर
तापर दवट मोर पनाह
प्राची औ उदीची ओर
कड़वड़ बजत टाप हयन्द
गड़वड़ भयौ चाहत सूर
गोली मौर सी मननात
धूवां त्यौ पराग उडात
दुहृत तरवरन की डार
देखैं प उदीपन साज
तासैं हँ सकाम सरीर
गढ़ की भूमि सो नव नारि
बुरजैं उरज ही के भाइ

भरभर उठत उवाल उतङ्ग
तोला लागते मन्नात
बोला काल ज्यौ हंकात
खोला ढोल ज्यौ दुरजात
ढोला ढोल ज्यौ लागै न
धूँवा धुंधरी गढ़ कोर
फूले नैन ज्यौ गुलाल
गाह्यो†चहत जुद्ध गम्भीर
घाप दै हयंद धवान
सूरज ओ जवाहर सूर
निरख्यो मोरचौ अति घोर
पूरव सहित सूर सिपाह
मांची रारि ऐसी घोर
भड़भड़ होत शब्द विलन्द
भड़वड़ आयुधन की पूर
पिकज्यौ गोल कुहकत जात
गन्धक गन्ध सौरभ गात
साई होतु है पतभार
गढ़ज्यौ सदन हैं रितुराज
घाप सामुहैं जदुबोर ‡
भूषन वल्ल शस्त्र विचारि
तिन कौ गह्यो चाहतु धाइ ॥ ७

कुराडलिया

पुबहिं दरवाजैं सुन्यौ वड़ गूजर वड़ हथ्थ
तहां चलयो सूरज वली रोक्क्यो सुभट समथ्थ
रोक्क्यो सुभट समथ्थ तथ्थ समुभाइ सुजानहिं
परे वीर बहु धाइ हथ्थ गहि गहि किरवानहिं

* पाठांतर—चारपौ

† पाठांतर—गाह्यो

‡ पाठांतर—प्रजवीर

गहि गहि मौन गरूर पूर अपने हिय हुबहिं
तहीं उड़त बहु सारु भारु ज्यों भुनतु अपुबहिं

चामर छन्द

द्वै धवान धाड़्यौ घुमाइ सेल सांग कौं
लै कमान बान भान और दुग्ग आग कौं
सूथियौ जहां सुराउ अप्पु सूर संग लै
ह्वै गए घलासुमेल जट्ट जूह जङ्ग लै
लेहु लेहु नद को अहद सद वढिढ्यौ
मारु मारु उत्तह अनेक वीर रहिढ्यौ
बज्जई हथ्यार वेग सज्जई तुरङ्ग कौं
गज्जई बंदूक अज्ज उद प्रान भङ्ग कौं
तज्जई न खेत देत लेत घोर घाउ कौं
भज्जई अनेक दुग्ग प्रान के बचाउ कौं
तथ्यई अजीतसिंह पथ्य ही सुराउ तै
वडिढि वीर आड़्यौ पिता सु अग्ग चाउ तै
सक्ति कौं सम्हारि हथ्य सत्रु पैं चलाइयौ
यौं हरषि राउ ह्वै वरषिवान धाड़्यौ
देखि सिंह जालिमा तुरंग हकि अग्ग ही
तासमैं सुरामचन्द लै हयंद वगही
त्यौं अनेक सूरवीर आयुधौं उभारि कै
जुट्टियौ अरीउ जुद्ध उद कुद्ध धारिकैं
जुट्टियौ हतै दवान सेल सांग संग ही
गुट्टियौ गयंद सेर जे सुरुद्र रङ्ग ही
फुट्टि रामचन्द गौ दवान लगि जङ्ग में
जुट्टि कै सुमारु भौ अजीतसिंह अङ्ग में
लगियौ बंदूक इक जालिमां संरीर में
इक आनि लगियौ सुराउ पाउ पीर में
जुट्टि फुट्टि तुट्टिगे कितेक बार संग में
ताहि चाहि राउह मलीन चित्त जंग में

उर
सेन
दैव
सी
बहु
पुर

सो सब
तिहं बार
सुत तो
यह बात

(१०७)

तात भ्रात गात पात न्हात श्रौन रंग मैं
दुग्ग कौ मुर्यौ सुराउ चाउ चित्त जंग मैं ॥ ९ ॥

दोहा

मुर्यौ देखि बन राउ कौ वकसराम गहि तेग
मानो गज मदमंत पर धायौ सिंह सवेग ॥ १० ॥

सोरठा

निकट जाइ नरबीर नाम सुनायौ टेरि कै
राउ महारनधीर एक खाइ एकै दर्ई ॥ ११ ॥

छन्द प्लवंगा

लयौ मोरचौ मारि मोर सुखराम ने
तुपक तीर तरवार जंग करि चाबने ।
वकसराम असि खाइ फिर्यौ फिर नोठ दै
रक्त रंग्यौ रन राउ धस्यौ गढ़ पीठ दै ॥ १२ ॥

छप्पय

उत्तर दिसि गढ़ बिकट निकट जुट्यि जग जाहर
सेनापति तिहिं चारि रारि हित सिंह जवाहर
दै दवान किरवान बान धाइय तिहिं ठाहर
सहिय घोर धमसान तोप जङ्गाल हियाहर
बहु तोरि फोरि मुरचान कौ मोरि सुभट अरि उग्य हिय
पुर द्वार रुक्मि ठाड़ौ वली सवै दुग्ग मुसमुंद किय ॥ १३ ॥

छन्द पटुड़ी

सो खबरि पाइ बदनैस पूत	निजु तनय काम कोनौ अभूत
तिहं बार सांडिया दिय पठाय	यह कहौ वाहि समुझाइ धाइ
सुत तोहि सपत मेरी अनेक	पग अग्य देइ धरि हिय बिवेक
यह बात कहा ता काज कोहु	कोजत इतेक बिन हेत लोहु

(१०८.)

मैं कही ताहि सुत मानि लेउ या मसलति पै निज चित्त देउ
जो जहां पहुंचिय सुभट जाइ सो भूमि देउ ताकौ बताइ
दिन कहौ लैइ ओटहिं बनाइ निस देउ मोरचा बहु खुदाइ
यौं जहां तहां करि सावधान तू उसरि मोरचा दै सयान
तुम जो न मानिहो यह अमान तौ मैहूं आवत तिहीं थान
यौं कहि पठाइयो श्रीसुजान जहँ हुतौ जवाहर रन अमान
उनि कह्यो आइ वाही विधान जब सुनिय जवाहरसिंह कान
चित्त सोचि सोचि यह गुन निधान तब कही ताहि उद्धत भुजान
यह तौ न बात इह समैं मान पै मोहि कह्यो उनकौ प्रमान
पितु बानि मानि चिम करी सोइ जो जहां हुतौ सो तहाँ लोइ
निज उसरि दुगं तैं तीर चार लिय आप मोरचा हिय विचार
उत राउ गयौ रनतैं सुमार लखि ताहि दुगं कल बल अपार
सब जान्यो जो धुर धरनहार सो भयौ प्रथम रन मै सुमार
सब छोड़ि कोट अरु प्रान आस तजि तजि हथियार हूप उदास
वह राउ महा धीरज निधान ह्वै घरी दोइ मै सावधान
तब कही धीर क्यों सूनसान कह पलटि गयौ गढ़ ते सुजान
सो सुनत कहौ जो हुते तीर है फौज जहां की तहां धीर
रन संग तुमारे गए धीर ते सब सच्छत देखे सरीर
लखि तुम्हें महा घाइल सुभंग यौं भए मोरचन तैं सुभंग
यह सुनत राउ चहुंघा निहारि सुत भ्रात गात घाइल बिचारि
धरि धीर उठ्यो वह तिहीं तैं चित चाहतु है परदल सुभंग

छप्पय

सखज बख बंधाई जान चढ़ दिय नरबाहन
भलभलात रस रुद्र नैन मानों कन दाहन
धरिय मुच्छ पर हथ्य तथ्य सेंधूहि घुराहिय
दै निसान धुंकार सूर गोमुखहि पुराइय
गुन गाइक गावत विरद गिरद सुभट संघट्ट हुव
बल बढ़िय कढ़िय पुनि सदन तैं महा धीर हठिसिंह हुव ॥१५॥

(१०९)

तारक छंद

निजु मंदिर तैं कढ़ि बाहिर आयौ
लखि सैन सबै मन धीरज पायौ
गढ़ पूरब द्वार चलयौ अनुरानौ
तहां आइ कह्यौ यह बैन सयानौ
पहि बार रहौ सब चौकस भाई
अरि कौ नहि देखन देउ जु खाई
समयौ यह धीरज ही धरिवे कौ
नर बीर पराक्रम के करिवे कौ ॥ १६ ॥

दोहा

दुग्ग द्वार चौकस रहौ गाढ़े करो कपाट
रैन दिना जागत रहौ जानौ अरि ए जाट ॥ १७ ॥

दीपक छंद

थौ कहत चहुं ओर	फिर दुग्ग करि जोर
वह राउ बुधबान	करि सूर सनमान
जे जहां हैं ज्वान	तहँ थापि बलवान
धरि और पुठवार	हिय जान सिरदार *
वह दुग्ग के द्वार	तहँ राखि बहु भार
अरु तोप जज्जाल	हयनाल गयनाल
करि दीन फिर त्यार	लगि हौन बहु मार
गहि कोट की ओट	बंदूक की चोट
लगि हीत कहुं मोट	कहुं लोट कहुं पोटा
फिर देत भौ मारु	बरसाइ बहु सारु
ब्रजचोरहु भूमि	गहि रहे गढ़ भूमि
करि घोर घमसान	भई रैन छिपि भान ॥ १८ ॥

* पाठांतर - निरधार

(११०)

दोहा

टूटि फूटि बहु सुभट गे दिखा दिखी इत उत्त
रैनि भए भड़के भए जैसे अच्छर दुत्त ॥ १९ ॥
निसा जानि सूरज वली बेलदार बुलवाई
सुभट हुते जे दुग्ग तट तिन पैँ दए पठाय ॥ २० ॥
जैसी पाई भूमि जिन तैसी ओट बनाइ
भुव खुदाइ परिखा निकट दिए मोरचा जाइ ॥ २१ ॥

हरगीत छंद

भूपाल पालक भूमिपति बदनेस नंद सुजान हैं
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलुक सुदन कहौ छन्द बनाइ के
रन दूग घासहरौं प्रथम दिन दुतिय अंक सुनाइ के ॥ २२ ॥ २ ॥
इति द्वितिय अङ्क ॥ २ ॥

छंद दुपई

या विधि वासर ईस समर दुहुं ओर
जबर जंग जजाल परिय घन घोर ॥ १ ॥
चंडी चलत भुसंडी खंडी सैन
मंडी रारि उदंडी छंडी हैन ॥ २ ॥
तब चित माहिं बिचारिय बदन कुमार
चहुं दिसि गढ़हिं निहारिय व्है असवार ॥ ३ ॥
दच्छिन पच्छिम ओर हुतौ जो नीर
सो कहुं कहुं गया सुख सुगढ़ के तीर ॥ ४ ॥
ताहि बिलोकि बदन तनै सिंह सुजान
दुग्गहिं चहुंदिस घेरन कियहु बिधान ॥ ५ ॥
सुतहिं जान बलवान सुसमर प्रवीन
दुग्गहिं दच्छिन ओर मोरचा दोन ॥ ६ ॥

(१११)

आपुन पच्छिम आस बिलासहिं कीन
सूरज सुबुधि समथ्य समर किय पीन ॥ ७
पितु कौ आइसु पाइ जवाहर तथ्य
दुग्गहिं दच्छिन ओर दबटि किय हथ्य ॥ ८
भूरज राखन हार सुसूरज बीर
जथा जोग बल थापन कियहु गंभीर ॥ ९

छंद पदुरी

दिसि चित्रभान हरबल सुभाल
थपि वैरि दुग्ग कौ चमूपाल
थरि तासु पुब दुरजन ससथ्य
बलिरामु तासु तट थप समथ्य
पुनि थप्पिय तोमर रामचंद
सो जुद्ध बुद्धि में है* बिलंद
पुनि तासु पुब गढ़ पुब द्वार
हरनागर थप्पिय बल अपार
थरि निकट तासु उदभट समूह
दल्ला सुमेव चाहत फतूह
पुनि रतनसिंह मैडू नरेस
थप्पिय सुजान तजि मन कलेस
अर पुहुपसिंह कुसलेश नंद
वह मस्तराम गौतम बिलंद
इक किसनसिंह उद्धत सुगात
सादूल नंद थप्पिय सुभ्रात
सत पंच बीर थपि मीर संग
महमद पनाह थप्पिय उमंग
सुखराम सुमातुल बल निधान
थप्पिय सुजान उद्धत भुजान

* पाठांतर—जागत

धरि तासु भ्रात नंदनहिं सथ्य
 हरिनाराइन जो रन समथ्य
 दिगसिखा आदि तैं ईस लगि
 दिय जोर मोरचा गढ़हिं खगि
 दिस बित्तपाल थप्यौ सुहाल
 किरपा सु राम गुजर गदाल
 दै सुभट जाल थप्पिय कराल
 बलिराम सुबलम दुग्गपाल
 पुनि सहित सैन थपि जैतसिंह
 फौदा तनूज ठाकुर अरिंग
 पुनि रहित भौत रनजीत रक्खि
 रुप्पिय अमान दुग्गहिं धरक्खि
 अरु तासु तटहिं बहु गहिय जोर
 उद्धत अनूपसिंह रन कठोर
 वह हठौसिंह सब सहित सैन
 उत्तर दुवार गढ़ रुप्पिय लैन
 तट तासु भर्थासिंहहिं समप्पि
 अति बिकट भूमि हिय जान थप्पि
 गढ़ मरुत कौन थप्पिय सुजान
 बहु बीर सुहरसै के अमान
 ईसान आदि लगि पवन आस
 दिय मोरचान किय गढ़ उदास
 गढ़ वरन ओर प्रथमहिं गंभीर
 खूंटैल बीर थप्पिय सुधीर
 स्यौसिंह बीर बहु सुभट जाल
 परताप कमठकुल सैनपाल
 सत चार संग भट लै कराल
 दिय मोरचानि गहि गहि सुढाल
 पुनि प्रबल बलहिं साजैं जुझैर
 वह रुप्पिय गोकुलराम गौर

(११३)

ब्रजसिंह आदि चहुवान बीर
सूरत्तिराम सुत कुसल धीर
अरु स्यामसिंह पैघोरवार
बिय स्यामसिंह थाना कुंवार
जैरुण्य सुमनसाराम दोह
अरु पाखारिया हू सहित लोह
पुनि सहोराम हण्णिय अदं द
अरु फतेराम ऊधमा नंद
कुलपूज राजकुल सावधान
घमंडी अमान सुत चंद्रमान
हमि किते बीर बरछैंत संग
आपुन सुजान हण्णिय अभंग
गढ़ पूरब ऊत्तर बरनु ओर
यौ श्री सुजान किय घोर जोर ॥ ३

दोहा

देवीसिंह अरु अवैसिंह श्री ब्रजेश सुत धीर
राखे सिंहसुजान दे दोऊ बीर सुतोर ॥ ४ *
गढ़ नैक्रत दच्छिन दिसा अति उदभट भट सथ
दिप मोरचा जोर करि सूरज सुत वड़ हथ ॥ ५

छंद तोमर

दिस जानि नैक्रत ओर	तहं थण्णियो कर जोरि
वकसी सुमोहनराम	द्विज सज्जि सूर उदाम
हिंग तासु राजाराम	अति सूरता कौ धाम
धरि धीर बलका बीर	चहुंवान साहिब तीर
घनसिंह ठाकुरदास	गढ़ निकट कीन निवास
बल सहित दौलत राम	लगियौ करन संग्राम
पुनि पैमसिंह जुभार	अरु पृथीसिंह पंवार
नरराज सिंहअजीत	सब भ्रात सहित अभीत

* यह दोहा हवरी अति नै नहीं है ।

परसातमा रुपि तथ्य सब आत सहित समथ्य
 तेहि संग हरिवल बिप्र ललि गोल जुजिभय छिप्र
 तहं रुपियौ अति भीर हठिसिंह है नर बीर
 वह मेदसिंह सजोर बहुतै सुभट्ट कठोर
 गहि सेल सांग कपान गढ़ लेन कौ समुहान
 तिनतै सुदहिनी ओर दिय मोरचा अति घोर
 बलवान सुरतिराम सब सैनपाल उदाम
 तिहं संग जादौ बीर सुलतान समर गंभीर
 रनधीर तिरखाराम रन सुद्ध भीखाराम
 औरौ अनेक सुभट्ट रुपियौ सुगौर सघट्ट
 धरि तासु कौ पुठवार वह मेदसिंह कुंवार
 अरु ल्यौ भवानीसिंह गढ़ लैन रुपिय धिंग
 पुनि श्री दलेल अमान थपियौ महा बलवान
 तिहिं के अगार उदार दै सुभट संग अपार
 वह उदैराम सुनंद है सदाराम बिलंद
 तिहिं तैं सुपच्छिम ओर द्विज उदै भान सजोर
 जहं हुतौ गूजर पूत राजाराम रन साबूत
 तिहिं पुढि धरि मजबूत अबधूत ऊधम पूत
 तिहिं निकट सुभट अनेक रुपिय धरैं रन टेक
 अरु आप सब पुठवार सुत श्री सुजान कुंवार॥ ६

छप्पय

धीरनराइन बलीराम बलसिंहखुसालहिं
 मान गुमान अमान संग ए तात आत गहिं
 अमरसिंह श्रीराम चौधरी सिंहअजीतहिं
 औरौ बहुत सुभट्ट लिप संघट्ट अभीतहिं
 मतिबंत करन अरि अंत कौ गुर महंत रच्छक रहिय
 सब मोरचान पुठवार है सिंहजवाहर रन लहिय ॥ ७

छंद त्रिभंगी

धरि चारिहुं ओरन पैदल घोरन देत मरोरन मुच्छन कौ
 बहु तोप जंजालन अरु हथनालन भरि घुरनालन गुच्छन कौ

बहु
छंद
लखि
बहु
बल
कोक
उदु
हृदय
कदक
बहु
चहुं
महो
भुज
करि
टको
धर
गिवा
पहुं

उदु
सब
सुनि
गुप
पुनि
करि
सुनि
पुर

समय
अथ द्वि
बीर
र
हान
घोर
म
मीर
म
ह
र
गि
न
र
घोर
त
देक
वार॥ ६

चहुं कोनन घेरिय ज्यौं ग घेरिय गौन निवेरिय दुगग रहा
छंडत बहु चंडिय जोर भुसंडिय धूम धुमंडिय घोरमहा ॥ ८
लखि दुगाहि घेरा निपटहि नेरा सांभ सवेरा मांभ करै
बड़गुजर बंका तजि जिय संका दै दै डंका सार जरै
बलकैरस बीरै सुभटनुधीरै फिर गढ़ तीरै डार डरै
चौकस चहुं डंडनि करि बल मंडनि निज भुज दंडनि तेग धरै ॥ ९
दुहुंधां बंदूकें चलत न चुकैं उठत भभूकें धुँकारै
छूटैजञ्जालैं होत दुसालैं मानौ कालै हुंकारै
कड़कड़ धुनि छाई तत्ततड़ाई धधड़ड़ाई धूम धरा
धदर धर हालैं धूम करालैं सद महा लै घूमि घरा ॥ १०
चहुंधां भरंगोला ज्यौंजम बोला मानों ओला अररानै
मूडौ लै उडुँ पेटौं बुडुँ तोरें गुडुँ फररानै
भुज दंडौ तोरें मस्तक फोरें यौं दुहुं ओरें भकभोरें
करि काल कलोलैं इत उत डोलैं नहिं मुख बोलैं टकटोलैं ॥ ११
टकटोरें काली खुसौ कपाली दै दै ताली भूत नचैं
धर ओनित आली परी नराली खैंच शृगाली भौन सचैं
गिद्धांगन कौवा भरें गलौवा तहाँ चलौवा चंड भए
षट्गंग खुलाने मुंड डुलानै कहुं फुलाने खंड खप ॥ १२

छंद मधुभार

दुहुं ओर उद्ध किय घोर जुद्ध गढ़ देखि रुद्ध पुर लोग कुद्ध
सब हूँ उदांस गए राउ पास अति वास धार कहियौ पुकार
सुनि राउ बीर तुमकौ न पीर तुमतौ अभीत हम तौ* समीत
नृप की सुरीति करियै सुनोति लखिदेसकाल निज बुद्धि हाल
पुनि बलु बिचार करियै सुरारि अरु साम दाम है भेद काम
करियै उपाय जव ना बसाय तब जुद्ध आई नृप कौ उपाइ
तुम तौ प्रवीन हम हूँ अधीन तजि रोस देउ गढ़ राखि लेउ
पुर चहुं ओर घिरियौ सुघोर नहिं है निकास लखि आस पास ॥ १३

रहिय
य ॥ ७

को

दोहा

पुर परजा पतिनी तनय बचें दिपहूं बिच *
तौ सलाह करि राउ तू है सब हो के चित्त ॥ १४

सर्वेया

दोस बिना रचि कोस धरै तजि कोस कभू सब देस बचावै
 देसहु त्यागत नग्र बचै तजि नग्रहु कौं परजा सुख ध्यावै
 दै परजा पतिनी न तजै पतिनी हि तजै तनु जौ सचु पावै
 सुख तजै सब कौ सुख तौ नृप दैत सरीर धरौ न लगावै ॥ १५

दोहा

सब नीतिन की नीति यह राउ रंक सब कोइ
समौ देखिकैं अनुसरै अंत सुखी बहु होइ ॥ १६

सोरठा

यौ सुनि बोल्यौ राउ अब उपाय नहिं संधि कौ
 जौ सब करौ दवाउ तौ जालिम कौं भेजियै ॥ १७
 यह सुनिकैं पुर लोग आप जालिमसिंह तट
 है अति † बांको रोग सो कटि है तुम तैं वली ॥ १८

दोहा

सब को मसलति जानके जालिम सिंह बिचार ‡
कौल बचन करि राउ सौं चल्यो मिटावन रारि ॥ १९

छंद दुपई

जालिमसिंह बैठि नरबाहन जब गढ़ बाहिर आयौ
जाकौ देखि सिंहसूरज नै बहु सनमान करायौ ॥२०

* पाठांतर—पुर परजा पतिनी दियै तनय और ग्रह भिन्न ।

† पाठांतर—यइ ।

‡ पाठांतर—कुमार ।

आ
ता
अम
अब
अरु
अम
धार
अम
वैदं
मिं
कुस
अम

(११७)

जो कुछ अरज करो जालिम ने सो सूरज नै मानी
तुरत आइ सो कहौ राउ सौं जो कुछ दैन बखानी ॥ २१
तबही राउ कहौ जालिम सौं कहौ कहा करि आय
कैसे करी सलाह कुंवर सौं तब जालिम समुभाए ॥ २२
कहे दैन दस लाख रुपैया तोप रहकला सबै
जब ही ए पहुंचै सुजान पै उठै मोरचा तबै ॥ २३
यह सुनि कहौ राउ मैं देहौ दस के ब्रह्म भौरौ
तोप रहकला देउं न एकौ स्थानौ कहौ कि बौरौ ॥ २४

सोरठा

ये सुनि जालिम बैन महा हठीले राउ के
फिरि न दिखाए नैन तरफरात हो ज्यौ तज्यौ ॥ २५

दोहा

जालिमसिंह मर्यौ जबै खबरि पाइ कै सूर
जान्यौ अब हो राउ कौ घट्यौ न नेक गरूर ॥ २६

छंद पावकुलक

जालिमसिंह जु मोपे आयो	ताकौ फेरि जुबाब न पायौ
तातैं लेनौ सौधौ याकौ	तब उपाव करिहौ मैं ताकौ
अमरसिंह मंभा सुत बोल्यौ	तासौं मंत्र आपुनौ खोल्यौ
अब तुम जाउ राउ के पासै	देखौ वाके मन कौ आसै
अरु गढ़ कौ सौधौ सब लैयौ	चौहाननहु कौ समुझैयौ
अमरसिंह सुनि सूरज बानी	चल्यौ दुगा कौ चतुर प्रमानी
घासहरैं में कियौ पयानौ	सूर सुपूत सुसील सयानौ
अमरसिंह गढ़ में थैं पैठ्यो	मानौं सनि आठे घर बैठ्यो
बैठ्यो हुतौ राउ जहां वंका	अमरा आयौ तहां निसंका
मिले परस्पर दोऊ त्योंही	करि सनमान बिराजैं ज्योंही
कुसल बृंभि दोउ बतराने	प्रथम राउ पर्वन बखाने
अमरसिंह तुमहूंकलू जानी	सूरज क्यों हमपै रिसठानी

उमरावन सौं जो धर लीनी
और जु है याके मन माहीं
एक बात मेरी सुनि लीजै
असदखान मोकों मति जानौ
रस्तमखां आतुर हो मार्यौ
सिकरवार गुजर मैं नाहीं
यही जानि मोपै चढ़ि आप
जानतु मैं तुम हो बल पूरे
जो दिन दस पहलैं कहि देते
अबहु हरी भूमि बिनु चाहै
है कन पान दुग्ग में जौलैं
जब बारूद अन्न बिति जैहै
गहि करखग दुग्ग के द्वारें
मंगल मई भूमि करि दैहौं

सो सो तजि सूरज कौं दीनी
मोपै सो बनि आवत नाहीं
तापै अमरसिंह चित दीजै
सैदसलावतहूं मति मानौ
धीरज सो जातौ नहिं टार्यौ
गढ़ी मढ़ी जिन की तुम ढाहीं
घने घोस के सोच घटाए
पै अचकां आप नहिं सूरै
तौ यह भुव पेसे नहिं लेते
दुग्ग न पैहौ रन अबगाहै
तौलैं गनौं न तुम से सौ लैं
तब हौनी हँहै सो हँहै
अपनै कर्म धर्म उर धारैं
कीरति सुता रची गति पैहौं ॥ २७

दोहा

घरनी घरनी नरन को बरनी हैं जो साथ
करि करनी भरनी दुऔ फरनी प्रभु के हाथ ॥ २८

सोरठा

जो इन कौं करि भोग हूँ बियोग जीवत रहै
तिन कौं फिरि न संजोग गाम नाम आराम कौ ॥ २९
ऐसे बचन अनेक बड़ गुजर बलक्यौ जवै
तब हिय धरे बिचेक अमरसिंह नैं यौ कह्यौ ॥ ३०

कवित्त

करनी करै न अनकरनी* कहैई कूरहठ
अपजस कौ निधान वही खरुहै
सांचौ सीलवंत सूर सरस सनेही सुचि
प्रभु सौं प्रतीति पनी पालक सुनरु है

*पाठांतर—अनकरनी।

कहोतैं राव हः
कहावै सापि ;
दियोतैं आसा
कछु सोऊ न
अभू तो छोड़
पठायो हुतो ?
कहाँ मैं आए
अरे प पिता
नृपति जो आ
असन कौं दे
सुत मन मांभ
पिता सौ पुत्र
यहू मैं कहत
सुनो जब रा
कहो जब रा
वही जो मा
इती ततबी

दोनो
 ताहों
 दोजे
 नो
 टारौ
 बाहीं
 ए
 हरे
 लेते
 है
 ला लो
 र
 वेहाँ ॥ २७

१५ ॥ २८

१ ॥ २९
 वे
 ते ॥ ३०

(११९)

काम क्रोध लोभ मोह ईरखा न जाके मन
 पर दुख भंजन दयालु ताको घर है
 सुदन सवर सरवज्ञता सुघर सोई नरह
 अमर है अमर हू अमरु है ॥ ३१
 बारे बड़ गूजर बकतु कहा बार बार
 ब्रज में ब्रजेस भयौ बदन प्रचंड है
 ताको सिंह सूजा सुत भूजा के अधीन सब
 तू जाको विरोधी रह्यौ चाहतु अदंड है
 जैसें जैबिजै जगदीस ते जनमु पाइ
 जगत में जान्यौ ल्योही तुह भयौ चंड है
 जाको यह खंड चढ़ि आयौ बलवंड
 सोई तोको धरि दंड महा उद्धत उदंड है ॥ ३२

छंद वैतवै

कही तें राव हम बिन दोष आही करी तकसीर तेरी घनी ठाही
 कहावै साधि द्वैतैं तू हमारौ करौ महार सौ तैं व्यौतु न्यारौ
 दियौ तैं आंसदखाकी जंगटारौ जुदाई करि भयौ मनसूर प्यारौ
 कछु सोऊ न तोपै बनी भाई वही मनसूर तोको दुखदाई
 अभू तौ छोड़तौ नाहीं हठै तू नहीं सिरदार जान्यौ है सठै तू
 पठायौ हुतौ जालिम सिंह काहे कही ना करी ताके प्रान दाहै
 कछौ मैं आइ तोसौ मोत नातैं लही दुरबुद्धि ऐसी कहि कहातैं
 अरे ए पिता पांचौहैं संमानैं जनम जो देइ दूजौ गुरु प्रमानैं
 नृपति जो आपनौ तीजौ सुजानैं महा भय तैं बचावै ताहि मानैं
 असन कौ देइ पांचौ ए बखाने बड़े धन धर्म इन सौ हार माने
 सु तू मन मांझ सोचै क्यों न भाई कहौ किनि भूमि तैं का पास पाई
 पिता सौ पुत्र जो हठि जुद्ध चाहै वही जसु किच्छि खोवै दुःख गाहै
 यहू मैं कहत तोसौ मूढ़ टेरें गयौ गढ़ जानि आयौ मैजु तेरें
 सुनो जब राव ने ये अमर बानी भरी छल की तबै हिय बुद्धि ठानी
 कही जब राव ने सुनि अमर भाई सही तेरी कही मो चित्त आई
 वही जो मामलति पहलें चुकाई करौ सो जाय तेरे हाथ भाई
 इती तंतवीर करनी और भैया जु मोपै माल तिनके करि रुपैया

(१२०)

कछु जो चाहिये तौ आप लीजै नहीं तौ दिली कौ सब भेज दीजै
पठै जन आप साहूकार कीजै गिरौ धरि माल हुंडी हाथ लीजै
घिर्यौ गढ़ जान कोऊ ना पतीजै निसांजौ होइ त्यौही निसां लीजै
निसांकी सुनत बानी अमर मानी सुजाने पास ज्यौ की त्यौ बखानो
यही सुनि कही सूरज सही कोनो नहीं तौ जर गई हम जान लीनी
पठाये अमर वाकी माल आछें निसां वाकी करौ हम करे पाछें

छंद पट्टरी

सांचे बचन बिचार बदन सुत के सबै
अमरसिंह सिरनाइ गयौ गढ़ में तवै
माल सबै लदवाइ राव कौ तथ्यही
दिल्ली दियौ पठाइ मनुज निज सथ्यही ॥ ३४
छली बहादुरसिंह लिख्यौ निज पूत कौ
लीजो याहि सम्हारि आपुने कूत कौ
पोतदार जो आयौ इनकौ साथ है
ताकौ वाले देउ तुमारे हाथ है ॥ ३५

दोहा

बाबूराय वकील सौ दीजौ ताहि मिलाइ
ताके हाथ पठाइ कै दीजो वाहि बताइ ॥ ३६
पितु कौ कागद बांच कै सुत ने माल सम्हार
सूरज के अनुचरन सौ कीनौ ज्वाब बिचार ॥ ३७
खिमानंद ने जय करी अति तागीद जताइ
फतेसिंह तब यै कही देंहौ निसा कराइ ॥ ३८
बाबूराइ वकील पै तबही गयौ लिवाइ
करी हुती ताकीद सो दीनी ताहि सुनाइ ॥ ३९

सोरठा

सो सुनि बाबूराय खिमानंद सौ यै कही
हम पै पहुंचे आइ ये दस लाख सुजान के ॥ ४०

सब भेज दीजे
हुँदी शाय लीजे
ही निसां लीजे
तियौ बखानो
म जान लीनी
म करे पाछे

॥ ३४

॥ ३७

॥ ३९

॥ ४०

(१२१)

खिमानंद तुम जाउ कुंवर बहादुर सौं कहौ
दीनौ तुम कौ राउ जो चाहौ सो कीजियै ॥ ४१

दुपई छंद

खिमानंद यौं ज्वाब पाइकैं सूरज के ढिग आयौ
जो कछु कौतुक भयौ दिली में सो सब आनि सुनायौ ॥ ४२
सुनि सुजान मुसिकाइ राव की ए छल बल की बातैं
कही कहा जानतु मैं नाहीं बड़ गूजर की घातैं ॥ ४३
ज्यौं पयपान भुजंगै दीजै केवल विष ही वाढ़ै
पटल पेटि ज्यौं धरै दहन कन जहां परै तहां डाढ़ै ॥ ४४
ज्यौं खल सौं कीजै सजनता सजन सौं खलताई
लहै न सिद्धि एकहु जग में कहा रंक कहा राई ॥ ४५

दोहा

बदी करै तासों बदी करत दोसु नहिं होइ
अब याकौं हैं मारिहैं होनी होइ सु होइ ॥ ४६

छंद हरगीत

भूपाल पालक भूमिपति बदनस नंद सुजान हैं
जाने दिली दल दक्खिनी कीने महा कलि कान हैं
ताकौ चरित्र कछुक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै
गढ़ घेरि थापि सलाह फेरि उथप्पनौ समुझाइ कै ॥ ४७
इति तृतीय अङ्क ॥ ३ ॥

दोहा

माधव वदि छटि भूमिसुत सूरज हिय निरधार
दुग लेन निजु दल बलन कहि भेज्यौ हित रार ॥ १
आस पास बा दुग कौ सुभट रहे जे घेरि
कहि भेज्यौ तिन सौं गुपत आजु न करनी देर ॥ २
एक जाम निस भोर की * सुनि टामक कौ सह
चहं ओर तैं दुग पै हल्ला करौ मरद ॥ ३

* पाठांतर—जब निशि रहे ।

(१२२)

सो सुजान की आन सुनि करि सलाह चहुं कोद
समौ निहारत जुद्ध कौ सूर मानि मनमोद ॥ ४
त्यौहीं सिंहजवाहरैं कहि पठ्यौ ता वार
घरी पांच छः राति सौ लेउ दुग ललकार ॥ ५

प्लवंगा छंद

पितु कौ आइसु पाइ जवाहर चाह सौं
फूल्यौ मुख ज्यौ, कमल दरस दिननाह सौं
अति आनंदित होय जुद्ध उत्साह सौं
रहौ आजु तैयार कछौ जु सिपाह सौं ॥ ६
तीन पहर निस गई भई वह बेर है
सूरज कहि हरिदेव गहौ समसेर है
गढ़ की उत्तर ओर चलयौ रिस धारि है
मनौ त्रिपुर के नास धयौ त्रिपुरारि है ॥ ७
त्यौहीं गोकुल रामसिंह परतापु है
जैतसिंह हठी सिंह अनूप सु आपु है
रनजीतनु रनजीत सु बछू चौधरी
भरथसिंह सब अग धयो जिहिं नौधरी ॥ ८
काइथ कुल नरसिंह और सुखराम हैं
हरनाराइन बीर धस्यौ गढ़ सामुहैं
महा धीर रनबीर * गहैं कर खग कौ
मीर पनाह उछाह लयौ गढ़ मग कौ ॥ ९
पुहुपसिंह किसनेसु नंद सार्दूल के
पुहुपसिंह सुत कुसल जवारि समूलके
मस्तराम द्विज मस्त दस्त गहि तेग कौ
चंचल भोज तनूज संग ही वेद † कौ ॥ १०
अजमतिखां अति उद्ध सुदह्या मेव है
हरनागर सैनेय बिप्र रनदेव ‡ है

* पाठांतर—महाबीर रनधीर

† पाठांतर—वेग को

‡ पाठांतर—नरदेव

(१२३)

रामचंद कुल पांडु चंड है घाइयो
तब ही दुरजन सिंह दुग्ग समुहाइयो ॥ ११
बलो बीर बलिराम बहुत भट संग हैं
हरिबल दबल्यो बैरि चमूपति जंग है
जैतिसिंह जैरुणा सु मंसारामु हैं
पाखरमल प्रचंड सु सूरतिरामु हैं ॥ १२
तौफा अरु स्यौसिंह स्यामसिंह बीर हैं
फतेराम सादूल सु लक्ष्मन धीर है
स्यामसिंह ब्रजसिंह सुरजुवांग है
प्रोहित प्रबल अभंग घमंडी जंग है
देबीसिंह उदंड अखैसिंह बीर हैं
ए सुजान के संग धप धरि धीर हैं ॥ १४

दोहा

पूरब पच्छिम उत्तरौ तोन्यौ दिसि तैं धाह
घासहरे के दुग्ग पै सुरज दीने पाह ॥ १५
दुग्ग दच्छिन दिस तच्छनो हियैं धारि उत्साह
जाहरसिंह जवाहरौ धायौ सज्जि सिपाह ॥ १६

छप्पय

पितु कौ आयसु मानि समौ पहचानि जुद्धहित
बहु सुभट्ट संघट्ट लिपउ गवर गरट्ट तित
जिते हुते मुरचानि तिनहिं निजु हुकुम पठाइय
मैं आवतु तुम सथ्य तथ्य गढ़ करहु चढ़ाइय
सुनि वेहु सब चौकस भए लए हथ्य आयुध सवर
इत सिंहजवाहर सिलह करि गहिय ढाल तरवार कर ॥ १७
जुहैं अगा मुरचानि सैन सिरदार रारि हित
गौर सुसूरतिराम संग जादव जुभार मित
दौलतराम सुभट्ट ठट्ट जबर सु भुजबर
सदाराम रन सिंह प्रेम प्रथिसिंह नाम नर

(१२४)

द्विज उदैमान स्यौसिंह अरु हरीसिंह कहि जोध जुत
बलकासुराम साहिब सहित परसेतम श्रीराम सुत ॥ १८
राजाराम सु नाम तीन सत संग बीर धरि
किसुनसिंह औधूत बहादुर हठासिंह भरि
साकर खी* जैसिंह मेदसिंह विजै राम गनि
चैनसिंह धनसिंह जङ्ग ठाकुर सुदास मनि
नर राज सिंह रन रतनहू थानसिंह हठिसिंह विय
द्विज मोहन नैऋत कौन तैं दुगग ओर सनमुख भइय ॥ १९
सिंहदलेल कुंवार मेद अरु सिंह भवानी
सिंह खुस्याल गुमान मान नृप तनय अमानो
बीरनाराइन बीरराम बल सभाराम नर
सदाराम श्रीराम अमरसिंहहु अजीत बर
मतवंत सत सुमहंतहू सिंह जवाहिर निकट हुव
जैसे सुरेस सुत जीव संग वृत्ति हेंत किय क्रुद्ध भुव ॥ २०

देहा

सब तैं स्याम निसान लै सीदी जुटगै अगार
पाइक कौ नाइक बली परयो अंत ज्यों भार ॥ २१

हरि छन्द

दिसि वित्तपाल ओरैं	बहु सुर सूभट जोरैं
धायै सुजान धोरैं	गढ़ की सफील तोरैं
इत तैं तनूज आयौ	रसबीर बीर छायाँ
गढ़ दच्छिन दिस धायै	रवि पूत ज्यों लुहायौ
लहि सैन संग चंडी	घन सख बख मंडौ
करि सेलसांग तंडी	सकतीर औभुसंडी
कोढंड वान तानै	वरछानि बाँधि वानै
खंजर कटार डोरी	खषुबानि मूठि जोरी
विछुवा सुवांक पट्टे	लट्टे उनुलेत कट्टे
फरसा दुधार भल्ले	वल्लम फिराई चल्ले

* पाठान्तर—साकर खां जैकृष्ण मेदसिंह विजैराम भनि ।

तेगा असोल रोही सिप्पर किदोसिरोही
 चिलतहनु अंग काछें सुर बार अंग राछें
 बहु टोप ओप भाछें कर देत मुच्छ भाछें
 सजि सव्वबीर बंके चलिदुग्ग ल्यों निसंके
 कछु भूमि मौनलीनी फिर लेउ लेउ कीनी
 गढ़ चारिहु दिसा कौं खाई लई चलाकौं
 यौं सुनतु सव्व बानी गढ़ भूमि खलभलानी
 प्रेतादि पूत जग्गे घर छोड़ि छोड़ि भग्गे
 सिव सिवा बैल साज्यौ भैरव भयान गाज्यौ
 भय भीत भूरि बट्टौ तहां मीचु डाड़ कट्टी
 वेहद नद बळ्यौ सुनि राव कोह मळ्यौ
 तबही तुरंग चळ्यौ निजु आलय तैं कळ्यौ
 फिरचारिहुदिसाकौ यह कहि फिर्यौ लराकौ
 अब देउ मार बीरौ अरि आइ जुठगौ नीरौ
 सब हौ मरद भाई रहि है यहै बड़ाई
 लखि आप पास भाई तिन सौं यहौ सुनाई
 अब लेउ दुग्ग द्वारे सब आपु मोरचा रे
 यह सुनत राउ बानी सबही सुरारि ठानी
 दागी कराल तोपैं किलकारि काल कोपैं
 जज्जाल जाल छंडी टेरी उदंड दंडी
 हयनालहु धुंकारी ज्यौं जोगिनी हंकारी
 फुक्की घनी भुसंडी रहकला धूम मंडी
 अररान गोल लग्गे फररान बान दग्गे
 कररान धनुष सुन्ती मररान बीर दुन्ती
 धररान कूर लागे तररान सूर आगे
 चररान बास उट्टी सररान तीर मुट्टी
 भररान भीर भारी ढररान श्रीब सारी
 करिकैं अनंद* हांहां लीनी चढ़ाय बाहां
 इत लेउ लेउ सदे उत देउ देउ वदे
 अति घोर सोर उठगौ मनु सिंह सह रुटगौ

घन धूम धाम माहीं सुनवत नाम नाहीं
 गढ़ चारिहु दिसा कौं लखि जाट के हला कौं
 बड़ गूजरहु कोह्यौ पंचानन ज्यौं छोह्यौ
 गढ़ दच्छिन दिसायौ जहं सूरज सुत धायौ
 तानै यही सुनाई छत्री कहाइ भाई
 अब हो तुम्हों सहाई अरि आनि लगे खाई ॥ २५

छंद भुजंगी

सुनें राउ बानी सवै सूर मानी
 महाघोर घमसान की रार ठानी
 इतै बीर सीदो हमीदौ उढायौ
 धरें स्याम नोसान सों सूर धायौ
 तवै गौर सूरतिहु राम पिल्यौ
 लिये तीन सौ सूर सौं दुग्ग मिल्यौ
 रुढ़्यौ गूजरौं मैं लिये बीर ताजा
 तनें दूदिया कौ महावीर राजा
 जुट्यौ पगगही अगगही षगग लिन्ने
 जगी ज्वाल के भल्ल से नैन किन्ने
 धयौ आपुने मोरचा तैं छुहायौ
 सजें सूर दौलतिहूराम धायौ
 उदैराम पूता सदाराम उठ्यौ
 तहां सामुहैं ठाकुरौदास रुठ्यौ
 बली बीर बल्का प्रथीसिंह पैमा
 धरें धीर परसोतमौ बिप्र खैमा
 इतै उच्च तैं बीर दोऊ हँकारे
 चढ़े कोटवेरा धरा पै निहारे
 उदंडी भुसंडीन के मेह पारे
 धराधावते आवते भु जिडारे
 सही मारु धीरौं नहीं पाइ टारे
 परे टूटि कै स्याम नोसान वारे

(१२७)

लई धाई खाई महावीर सीदी
कही जाहुरे भागिकैं वेगि गोदी
लख्यौ राव ने स्याम नोसान खाई
सवै आपनी फौज कौं यौं सुनाई
कहूँ दुगग मेरे इसे बीर हाते
घने जट्ट के ठट्ट या भूमि सोते
सुने राउ के सूर पेराब बेंना
कल्लू बीर कूदे भरैं कोह नैना
कल्लू कोट की ओट तैं चोट चल्ली
भुसंडी सुहंडीन की ज्वाल भल्ली
इतै बीस के तीस सौं कूदि सीदी
उतै कोट कैं कूद कैं चोट लीदी
धमाधम्म में यौं भमाभम्म बीती
छमाछम्म समसेर की मारु कीती
भभूकैं उड़ैं यौं भबूकैं फुलंगा
मनो अग्निबेताल नछैं खुलंगा
जरैं ज्वाल की भालकैं बीच जुट्टे
मनौं देव वारुद के व्याह छुट्टे
तरैं नीर यौं ऊपरैं अग्नि छाई
तहां बीर सीदी लड़्यौ नाखि खाई
अधौं ऊध कीयो दुहू मार माहीं
गयौ जूझि सीदी टर्यौ पाउ नाहीं
कट्यो देखि सीदी हट्यौ लोग केतौ
लख्यौ सूर के पूत ने आप तेतौ
धयौ पगगही अगग वा दुगग मगगैं
लियौ हथथ खगगैं हिये मै उमगगैं
चह्यौ आव तौ पुट्टिपै आप स्वामी
तहां दैरि कैं गौर ने सैन थामी
कह्यो वा समै पास जे सूर तासौं
अरे भाजिकैं जोरि हो नैन कासौं

(१२८)

इती भाषिकैं दुग्ग ल्यौ बीर दौरौ
 मृगाधीस ज्यौ मृग के जूह झौरौ
 यही जान कैं दूदिया नंद कोह्यौ
 गहैं ढाल सम्सेर सैं सूर रोह्यौ
 दुहूँ आपने आपने गोल धक्के
 तहां गोल गोली करैं वीर पक्के
 परैं वान किरवान वरछानु धारा
 लरैं मांस माटी अनूठौ अखारा
 तजैं बीर हांडी भरी ज्वाल माला
 मनौ होलिकाही भवैं* भष्य आला
 भरैं कांगुरैं कांगुरैं फुलभरीसी
 मनौ दीपमाला परै यैं ढरीसी
 कहूँ वान कूकैं उठैं यैं भभूकैं
 किधौ आग वरसाइ कैं प्रेत धूकैं
 छुटैं घोर हुक्का करैं मारु भारी
 धुवां मेघतैं ज्यौ परैं बिज्जुरारी
 इसी मारुहु मै धसे फांदि खाई
 दुहूँ बीर वक्सीनु की वीरताई
 गहैं कांगुरैं दुग्ग पै चट्टि चालैं
 वली गौर सथी सुपीथामहालैं
 बिना प्रान हूँ कैं परे खेत माहौं
 जुटे जाइ जादौ निसंके तहांहौं
 चढ़्यौ बीर राजा करै जोर रल्ला
 फंद्यो धाइ खाई कर्यौ लेउ हल्ला
 तरैं कांगुरैं कैं जुटे सेनपत्ती
 जहां सारधारा की ज्वाला भरत्ती
 इतै सेल सांगैं बरच्छा बरच्छी
 किहूँ वान किरवान कम्मान अच्छी
 उतै चंड कोदंड उद्दंड छंडै
 धनै खंड भाटेनु की मारु मंडै

(१२९)

सिला ठीम ठाहैं इलाबीर वाहैं
 धड़ा घड़ु सहैं भड़ाभड़ु हाहैं
 जड़ाजड़ु बीती गडावड़ु ऐसी
 ढडाठड़ु लंका करी राम जैसी
 सनासन भनाभन छनाछन सुन्नी
 भनाभन फनाफन ठनाठन दुन्नी
 महाघोर घमसान सम्सान फैल्यौ
 तहां सार असरार ज्वाला कि मैल्यौ
 कितो छूटि हंडीनु की देह भंडी
 कितो वान की ज्वाल ते जारि खंडी
 किते तीर की पीर सौं धीर धुके
 किते पोटरि बारि बारुद फुके
 किते ज्वाल हुकेनसौं मारि मुके
 तऊ वीर कुके न चुके न लुके
 कहुं भाल भाठेनु सौं लागि फाटे
 कहुं मारि लाठेन सौं भूमि पाटे
 जरे कै मरे यों परे सुर सोहैं
 कटे मुंडहु की डटी बंक भौहैं
 घरी तीनि की राव यों रारि ठानी
 घरी एक हो रैन में हार जानी
 तहीं सिंह सूजा तनै आह खाई
 सबै आपने सुर कौं दै दिखाई
 लखैं वीर कौं वीर दूने रबकैं
 रण दुगग पै पाउ सबै बबकैं
 भए कांगुरौ तेग तेगों तमकैं
 लखैं राउहु दुगग दूजैं चमकैं
 जवै कोटपै सिंह कौ सिंह आयै
 तवै राउहु दूसरे दुगग धायै ॥ २३ ॥

छंद नीसानी

इथ्यौ सिंह जवाहरै लड़ि राउ हटायो
 उथ्यौ सिंह भरथ ने देवोसिंह ढाया

मज्झैं मिलिया राव सैं मंसा रिस छाया
 उसने भी बंदूक दै गढ़ राउ फटयाया
 पुव ओर गढ़ हुबसैं बहुवीर उछल्ले
 तिस वेलां सिंभूतनै चढ़िया गढ़ हल्ले
 उस उपर * हथियार दे बैरी भरभल्ले
 उसनू श्री हरिदेव जी रक्खा निजु पल्ले
 हिक्र भट्टि सिर खाइ कै गढ़ उपर चढ़े
 तिस कढ़ा लख खगनू नहिं बैरी वढ़े
 तिथ्यौं मीर पनाह भी बकसी रनबंका
 हभौं वीर हँकारि कै गढ़ चढ़ा निसंका
 उथ्यौं मारु धनी पढ़ी सथी मुख मोढ़े
 हंडी हुकै अगिदे गढ़ वालों छोड़े
 तिसवेलां उस मीरने सब से यों अख्या
 नहों भटौंदा कम्म जो पग पीछें रख्या
 खाइ धनी दै नोननू एकही नहिं किज्जै
 किच्चि वधै इस लोक में पग अगौं दिज्जै †
 होर जुवाली बंधनू फिर कोई बुज्जै
 बिन साईं दे हुकम सैं कोई रन जुज्जै
 यों कहि वीर उछल्लिया गहि सिप्पर कत्ती
 दिया पग गढ़ उपरां जहं भार भरत्ती
 इसी गल सुनि मीरदी औरौ भट पिल्ले
 सेल सांग समसेर ले पग दै गढ़ भिल्ले
 मारु मारु मुख अस्त्रिया चोयां उन नक्खी
 किस्सु तोर तरवार ‡ दी रक्खी भी चक्खी
 दुग्ग चढन्ते मीरनू गोली धड़ फोड़ा
 तौभी सैयद बड्डे नाहों मुख मोड़ा
 तिस वेलां उस मीरने पढ़ी गल अक्खी

* पाठांतर-बेला

† पाठांतर-सहुदि किज्जै

‡ पाठान्तर-किसतरी तरवार दी

असी कम्म तौ कटि गया दिल की दिल रखी
 है कोई ऐसा साहिबों मेंड़ा दिल रखै
 तनक सहाड़ा हथ्य दै गढ़ भीतर नखै
 भाई वंदे भानजे सुनि सैयद गलां
 हम्मों पास सुनाइयां गढ़ हम ले चलां
 तहां लोह करि वें बेली गढ़ लोकधरक्खा
 सैयदजादां मोर ले गढ़ ऊपर रक्खा
 हेक विगादर होर भी तिस वेलों भड़ियां
 दाय वीर तिस नालही घायल हो पड़ियां
 अप्य अप्य दै मोरचों तजि वीर हकाले
 हम्मों मारु घनों करी गढ़ करि करि आले
 किच्चे पट्टे कट्टिप नट्टे गढ़वाले
 चढ़े दुग्गमद सूरदे नहत मतवाले
 श्रीसुजानदे गोल* नू गढ़ ऊपर जाना
 हुई खुसी उस मोर नू दिल तेह सिराना
 तेह गए' उह मोर ने दिल व्याकुल जानो
 कहा आपने सथिथयों मरना पहंचाना
 सूरज मेरा साइयां तिससे यह मरजी
 करि सलाम मुझ ओर सै' कहनीं ले मरजी
 मोर तसददुक होगया पहिला गढ़ पाया
 फिदवी के दिल में रही नहीं बैरी छाया
 तू साहिब ने सो रचा दिन ओज सवाया
 बचै न दुसमन एक भी तुस्सैं करि दाया
 यों सुनाइ सथीनु सैं वह रखसद हुवा
 मोर स्वामि के काम पै घासहरै मूवा
 फते हुवा गढ़ वाहला बहुलोका विलुखा
 कोलाहल पुरा में पड़ा हाहा सूर सुखा

* पाठान्तर-लोग

† पाठान्तर-गढ़ लोग

‡ पाठान्तर-गढ़

(१३२)

जिसने लोह सम्हारिया जट्टोंते कट्टे
हट्टे बट्टे पाड़िए घर घर दहवट्टे
कोट कांगुरो पुरगली मरहट्ट लखाया
कहीं मुण्ड कहीं खण्ड है कहीं फट्टी काया
कहीं भभूके अग्नि दै धूँवा घुमड़ाया
कहीं निंगुर कुड़िए कहीं कहीं भाया जाया
कहीं मामू कहीं भानजा कहीं सहुरा साला
कहीं माइ कहीं पुत्त है बहुवा विनु वाला
जिसनू सूरज चन्द दी उप्पम कवि टोही
तिसनू लाज जिहाज दी कुलकानि अमोही
हम्मौ खड़े पुकार दै सूरज दी दोही
हुण रैयत हैं रावली करुणाचित जोही
वह मतिमन्दाराव था कर्मा दा मारा
सूरजराज कुंवार सै जिन दोष विचारा
असी हाल एहा हुवा रख्यो निजु साया
जेहा जिसनू लोड़िये तेहा फल पाया ॥ २४

छंद सुंदरी

यों पुर लोग पुकारत आरत वार फिकारत ठौर ठण
छोड़ि तिनहैं वजवीर बली अति उद्धत धामनु धाइ गए
जीवत जानत राव बहादुर जासु लिये भटभूरि हए
छंडत चंड भुसंडिनु ठंड सुमंडित मोरचा फेरि नए ॥ २५

इंद्रवज्र छंद

पैछ्यौ किलेमें तब * रावरायौ मानौ कटो पूंछ फनी विसारयो
दीनौ मलीनौ लखि कोट दूट्यौ भाई सहाई सुनि प्रान बूट्यौ
फूट्यौ कि लूट्यौ निजुनग्र चाह्यौ वेटा कि भाई विनुचित दाह्यौ
स्वासा लई आसतजी जियाको नाहीं प्रियाकी न किस् भियाकी
सम्हारिके फेरि उठ्यौ छुहानो मानौ सठ्यौ प्रेत महाभयानौ
बोल्ह्यौ अरे वीरन हारि मानौ छत्रीनु कौ धर्म गहौ पुरानौ

* पाठांतर—उल

(१३३)

मरना हमें बीस बिस्से बिचारौ हैगी नफा सत्रु जुमारि डारौ
यों भाषिकैं कोट फिरौ अमानौ दूजे गढै राउ घमसान डान्यो २६ ॥

छंद हीरग

छुटत इत तोप दुटत पहहारसे
बुटत अथउद्ध धूम छुटत अंधियार से
कुटत महि गोल गोल फुटत है छारसे
लुटत कहं हुटत नहिं मौचुके अहारसे
धुङ्कत जज्जालजाल हुंकत भौचाल से
फुङ्कत बंदूक व्याल फुंकते कराल से
कुकत बहु कुहक वान मुकत दुहुं ओर हैं
झुकत गहि ओट कहं लुकत बिनु सार हैं
भरत भार परत सार लरत कोट ओर हैं
अरत इक परत इक ढरत लोट पोट हैं
धद्धरभभभभर भभभभर वैरहो
कक्ककर पप्पपर तत्ततर है रही ॥ २७

छंद मरहठा

पुर कोटहु दुट्टिय बहु भट कुट्टिय पुर लुट्टिय बेहाल
सुत आतहु कट्टिय भुवतैं हट्टिय घट्टिय तोप जज्जाल
जल अघहु वित्तिय दाऊ रित्तिय कित्तिय रन दिन तोनि
घाइन अघवाइय श्रोन वहाइय राउ समर अति पीनि ॥ २७
तब भाई बंदन विकल विलंदन समभायो बहु राव
पुर देस लुटायौ लोग कटायौ तऊ न आई आव
पहलैं गढ़ घेर्यौ अव अरि नेर्यौ तासैं नहीं बचाव
तबही नहिं मानौ भई सुजानी करियै साम उपाव
कछु है कुल वाकी पुर परजा की जीवनता की एहु
मिलिबौ अभिलाषौ नरमी भाषौ राषौ रहनौ गेहु
जौ जीवत रहिहौ फिर बल गहिहौ लहिहौ वैरसतेहु
अव रारि थंभाओ लाजहिँ चाहौ जाहौ फेरिन छेहु ॥ ३०

छन्द उलाला

यों सुनत राउ सब के बचन अपनौ चित निहचैकरौ
मिलनौ न मोहि मरनौ सही तवहिं वक्र विधि उच्चरौ

छन्द दोधक

हौ सब सूर सहायक मेरे जुद्ध करे तुमने बहुतेरे
हौ तुम जान अजान न कोई लाज रहै करिये अब सोई
पै इतनौ मत मो सुनि लीजै दीन भयँ अरि सौं बहु जोजै
सूरज सौं मिलबौ मत दीजै जौ यह जानत तौ भल कीजै
भूमि यहै तुमकौं फिर दैहै औरन संग तुमैं घर लैहै
तोप जजाल तुरंगम वाकी ते हमपै रहिहैं तुम ताकी
और यहू तुमरे मन भावै वैरिनु सौं मिलि जीवतु आवै
जो कबहुं हम जीवत छोड़ा तौ करिहै अपनौ करि ओड़ा ॥३२

दोहा

साहब नैवत में भयौ पायौ राव किताब
वार गीर पदवी हु कौ तुम सब करत उपाव ॥ ३३
सौ जुग रहि वैकुण्ठ में भोग पलक सम जाइ
निमिष एक नर्काहिं लहै कोटिन कल्प विताइ ॥ ३४
रिपु प्रताप कानन सुनै राजसीनु दुख होइ
नैननं लखियै दीन हूँ या सम नर्क न कोइ ॥ ३५
और कहत परजा बचै पतिनी तनय सम्रात
विना आरबल भोग ए तजै न कोऊ गात ॥ ३६
गीता हूँ मैं यौं कछौ वेद पुरानन दोहि
अनहोनो होनी नहीं होनी होइ सु होहि ३७ ॥
आव राखि है मर्म छत आव अन्न प्रिय देइ
विजै और नहिं होइ रन भजै न दीनति लेइ ३८
जे मानत जुग जुग जियै तिनकौ सब सौं हेत
ते जानत मृतु* सत्ति है तिन कौं प्यारौ खेत ३९

छन्द दुपड़

अब जो मिलाप सो होनहार है सो मैं तुम सों भाखी *
 अरु करौ सवै मिलि आपु सितावी जो मसलति करि राखी
 जल बूडत नाव राखि है सोई जोई करिया पूरै
 सब करौ सलाह देव जो मांगै मैं कहातुम तैं दूरै
 यह सुनत राउके वचन सबन मिलि चलत अरावै राखै
 चढ़ि दुगग कुंवरसों मिलन आइ है चहुं ओर यों भाख्यौ
 अरु देउ पठाइ वेग रथ बहलैं कढ़ै कबीला जैसौ
 सब लोग वागकौं लेउ काढ़िकैं सहित लाज जिय पेसौ
 बहु ए पुकार सुनि श्री सुजान कहि यह बात हम मानी
 अब ह्वै हैं कंहा गरीबनु मारैं निकसौ करें अमानी
 तव परे लोग खरराइ दुगग तैं सूरज की सुनिवानी
 ज्यों जीरन जार तोरिकैं भाजै मोन देखि दिग पानी
 सब सख वख सौं जत्र तत्र ह्वै परे कूदि भयभीते
 मुख देत दुहाई श्री सुजान की विकल भए मुख पीते
 तैं लिए राखि वदनेसनंद ने गढ़ खाली करि डार्यौ
 सब रहे पांचसै मनुज राउ संग सूने डंडाचार्यौ ॥ ४०

छन्द विजोहा

देखिया हालकौं दुगग के चालकौं राउवा ल्यौ जवै पास देखे सवै
 ढील क्यौं हैं करौ भाजिवे की घरी प्रान राखौ अरे होहु मोतैं परे
 खान पानौ दियौ भाना मानौ कियौ राखिया आसकौं जंग के पासकौं
 आज सोही घरी भाजिवे की करी सिंह देवी नहों पूत जोता कहों
 और चौहान हूं जालि माहू कहुं राम चंद सैवली जंग जा सों भली
 भोज सेनापती जुद्ध का जो मति मात भ्राता भवै प्रान दीने सवै
 आज वे जौ नहों वात तौ मैं कहौ पै प्रलापै कियौ फेरि थंभ्यो हियौ
 नैन रत्ते करे हृथ मुच्छौ धरे ओठ ओठों पिसे दंत दंतैं धिसे
 राउ देख्यो इसौ सिंह धायौ जिसौ इक मोयांत हों बोलि उठौ जहों

* पाठांतर—अभिलाषी

† पाठांतर—बाभ

बैकरौ
उभरौ२
। सोई
बहु जोई
मल कीजै
लैहै
शकी
तु भावै
ओड़ा ॥ ३२

३३

३४

५

(१३६)

राउजीक्यौवकौ वखतनाहौतकौ कैसुजानैमिलौ जंगकौकैपिलौ
तैखुलायाहमैं संगलीजैदमैं देरकीजैनहौ सथहैंसबही॥४१

छन्द चौबाला

ऐसे वैन सुनत बड़गूजर उठ्यौ ढाल तरवार लियें
गयौ तुरत ही भौन भोतरें जंगरंग की राखिहियें ॥ ४२
क्रुद्ध दोठिसौं राउ गयौ घर लखि काइर मुख सुकि गए
तजेतुरंत * अंग के आयुध टलाटलीके व्यौतलप ॥ ४३
राउ चढ़ौप्रासाद सैनिकें किय पररंभन प्रानपिया
मृदु मुसिकाइ मंगाइ वारुनी पान परस पर दिया लिया॥४३

छन्द घनाच्छरी

बैठे एक आसन सुवासन के वासन से
भूषन उजासनु प्रकास बहु कीनौ है
सरस विलोकि फेरि कर के परस भए
दरसि दरसि दोऊ रति मति कीनौ है
भुजन उसारि लीनी उर सौं लगाइ प्यारी
अरस परस अधरामृत कौ लीनौ है
दोऊ जलजात मुख मानो मनजात जान
इंदु अरविंदु कौ मिलाप कर दोनौ है ॥ ४४

कवित्त

सैन के सदन दोऊ राजत मदन भरे
वदन विलोकि कै ललकि लपटाने हैं
उरसौं उरज मिले अधर सुधरु चारु
चूमत कपोल लोल लेचन लजाने हैं
हार उरभाने मुरभाने हैं कुसुम भार
अंग मदसुदन तऊन अरसाने हैं
बैन तुतराने सतराने भौंह तानें
रससाने मुसिकाने ललचाने रतिमाने हैं ॥ ४५

* पाठांतर—तजि इथियार

रदयो
सल्यो
मिल्यो
अरे इत
इती सु
रहै मा
कहे उ
विलोकि
कियो उ
फिस्यो
कह्यो
यहो सु
हुते ह
लस्यो

चल्यो
करिय

* १

(१३७)

जौलैं रह्यौ अंग मैं अनंग तौलैं संग कीनो
रति रंग भीनो उठ्यौ जंग मनुकीनो है
चुहटौ चिबुक चांपि चूँ विलोल लोइन कौं
रस मैं विरस कह्यौ बचन मलीनो है
मिलन हमारौ फिर हूँ है परलोक प्यारी
मन तैं न न्यारी प्रेम पंथ पग दीनो है
गहि भरि लीनो कछु ऊतर न बाल दीनो हाल
से हवाल राउ अंक भरि लौनो है ॥ ४६

सोरठा

फेरि राउ धरि धोर कह्यौ वैन वर वाम सौं
प्यारी होत अधोर सत्रु मारि फिरि आई हौं ॥ ४७

छन्द मुक्तादाम

कढ़्यो रति मंदिर तैं वहराउ चढ़्यो रन रंग दियो मुख ताउ
चल्यो फिर नारि विवाहित गेह हुती दुहिताउ वधू जिहि नेह
मिल्यौ इक सेवक मद्धि अवास सुपुच्छिय ताहि विलोकि उदास
अरे इत आइय क्यों तुव भाइ कही उन शत्रु चढ़े गढ़ भाइ
इती सुनि राउ कही रनवीर धसौ रनवास लहौ मति पीर
रहै मम लाज करौ वह काज सवै मम गेह संघारहु आज
कहे जब राउ सुने इमि वैन भले कहि कै जु चल्यो भरि नैन
विलोकिय भौन पतिव्रत नारि वधू दुहिता संग राज कुंवार
कियौ उन जौहर वीर भुलाइ तिहू तिय के दिय सीस उड़ाय
फिस्यो वह वीर गहँ कर खग खड़ो जहँ राउ भयौ तिहिं अग
कह्यौ महाराज कह्यो वह काज कहा करौ ढील चढ़ौ अब बाज*
यहो सुनिराउ कही हयलाउ कहा अब ढोल निसान वजाउ
हुते हय तथ्य तयार समथ्य चढ़्यो वड़ गूजर दै सिर हथ्य
लख्यो दग फारि सुभदनु ओर रहे सत डेढ़ चढ़्यो जव घोर ॥ ४८

छन्द छप्पय

चल्यो जङ्ग कौं राउ रङ्ग मनु उदित दिवाकर
करिय दुग परनामं फेरि कोरति तनया घर

* पाठांतर—आज

कटि कृपान कम्मान वान आयुध कर लिन्निय
 धरि मुच्छन पर हृथ्य तथ्य डङ्का करि दिन्निय
 सुनिकै निसान खलभल परिय लेहु लेहु चहुं ओर भुअ
 गढ़ पै जवान व्रजभान के आसमान मधवान हुअ ॥ ४९
 प्रथम चण्ड करि चण्ड बहुरि परचण्ड पवन चलि
 अन्ध धुन्ध भुवण्ड उमड़ि घन धूम धूरि हलि
 तड़ तड़ान तड़ितारु गज्ज मण्डिय उदण्ड अति
 अद्ध उद्ध बेहद् नद् हुव प्रवल सिन्धुगति
 भरभरिय वारि भरि भरि भटकि करि सिलाह दुग्गहिं मद्रिय
 सुरराज उद्ध व्रजराज अग जवहिं राउ रन कौ कदिय* ॥ ५०

छन्दकन्द

कदरौ दुग्ग तैं राउ दै घोर नोसान
 घरी तीन असमान में ज्यौं रह्यौ भान
 जुहे डेढ़सै में रहे एक सौ जवान
 चढ़े राउ के सङ्ग आसा तजै प्रान
 किलै पुव द्वारे पिल्यौ आइयौ वीर
 तहां सूर के सूर की ही भरी भीर
 तहां राउहू जङ्ग कौं आन औसान
 लप हाथ टङ्कारि कम्मान औवान
 चल्यौ मन्दहो मंद बैरीनु के फन्द
 मनौं कार के बादरों में धस्यो चन्द
 चल्यौ गाहतौ चाहतौ जूह के जूह
 मनो पथ के पूत पैठ्यौ चकाव्यूह
 कियौं नीर गम्भोर कौं चीरतौ ग्राहु
 सुराधीस की सैन में ज्यौं धसै राहु
 चहुं ओरते आयुधों के छप जाल
 परैं तीर बन्दूक जज्जाल की भाल
 तरे तेग तेगा धलामेल हूँ सेल
 वरच्छी वरच्छान की है महारेल

* पाठान्तर—चाड़य

अनी सैं अनी यैं धनी सैं छनी देह
 परैं तीर गोली अटा तैं घटा मेह
 सितारे निसानाथ के साथ तैं छूटि
 परैं राव के सूर यैं जङ्ग में टूटि
 चलयौ आपने भौन तैं तीर के मान
 तहां मोरचा रोपि सिम्भूतनैं आन
 पर्यौ डीठि ताकी चलाकी करो वीर
 दई राव के अङ्ग बन्दूक की पीर
 गई फोरि गोली तऊ ना धुक्यौ धीर
 कर्यौ तथ्य सन्धान कम्मान में तीर
 इती मारुहू कौ लियो ओड़िकें सार
 मिल्यौ बीच त्यौही प्रथोसिंह पंमारु
 जुरी डोठि सैं डीठि दोऊ तकें घाउ
 प्रथोसिंह बोल्यो कहां जाइहै राउ
 रहे बीस कै तीस सथ्योतिहों सथ्य
 कटे कै हटे भूपटे दुग के पथ्य
 चितै रावहू ने कियो वान कौ घाउ
 दियो वान पमारहू ने बच्यो राउ
 गजै घोर आकास भू पै वजै सार
 परैं मेह दोऊ छयौ जोरु अन्ध्यार
 टुटे कन्ध कन्धा लुटैं के बुटे जात
 फुटे सोस के श्रौन धारान सैं न्हात
 लुटैं वाज कै यैं खुटे हथ्य हथ्यार
 जुटेहू कुटे हू रटैं मारुही मारु
 घनी भीर कौ चीर कै सो कट्यौ धीर
 रहे राव के संग में पांच ही वीर
 फंधौ कोट खाई उठाई तहां बाग
 मनौ पैनि प्राची लगै कट्ठियौ नाग
 कहैं चारिहू ओर तें लेउ रे लेउ
 कहूं देउरे देउरे देउरे देउ
 तवै चित्त चित्यौ सुबडगूजरौ नाहु

(१४०)

लई काढ़ि समसेर धायौ महाबाहु
जिते मे वदल्ला सुहल्ला करौ तथ्य
जहीं तेग तेगा कड़े एक ही सथ्य
भमाभम्म बीती धमाधम्म ता दौर
भरो फुलभरी सी मनौ विज्जु की झार
जुख्यौ देखि राबै बुटे तीनि ता वार
रह्यौ राव के सङ्ग मैं एक असवार ॥ ५१

छापय

तवै मेव यह कही वीर ठाढ़ी रहि ठाढ़ी
अव नहीं जीवत जाइ लोह करिहौं रन गाढ़ी
सुनत राव हूँ कुद्ध जुद्ध मैं तेगहिं भारिय
तहाँ मेव गहि छेव तुरङ्गम तै गहि डारिय
भूपारि परी छै तीनि असि वड़गूजर के अङ्ग पर
लिय सीस काटि सथी सहित रावरण्डु सोयौ समर ॥ ५२

कवित्त

खेलना पनारौ पूना मांडौ गज नई ऊना
रनथं भौर जा सितारे हूँ कौ दुर की
कालिंजर गोपाचल इंदौर महेवा कौन
काढ़ी नरवर वैड अलवर उरकी
विंधाचल निकट वकाई वड़गूजर की
घासैरैं बजाई गढ़पती राजु धर की
अड़ राखी पंड राखी मैड रजपूती राखी
राउ रज राखि राह लोनी सुरपुर की ॥ ५३
भटनिसमूह उदभटन सरीरवारे
तीर वारे तरल तुरंगम सजाइ कै
चंडकर कर से प्रचंड कर खग धरि
अग धरि पग पल चरनि गजाइ कै
डंका दै निसंका वीर वंका श्री जवाहिर
सुजाहिर हूँ धायौ पर दलनु भजाइ कै

(१४१)

भूजर उपारिकै कहुं जरनि राखी तिनि
ऊजर करौ है बड़ गूजर बजाइ कै ॥ ५४

पट्टड़ी छन्द

विन सोस परगौ वह राउ खेत रन विजय शब्द सूरजहिं देत
वज्जे सहदानै घोरि घोरि बुलत फतूह सूरजहिं ओर
पुनि श्री सुजान हू हरषि पाइ भट भेटि जुद्ध श्रम दिय मिटाइ
अरु सिंह जवाहर हू हरषि निज सुभट भेटि मौजहि विरषि
पुनि अमरसिंह मंभा सुनंद निरष्यौ सुजान नै बुधि बिलंद
घासहरै थपिय सो अमान बहु सुभट ताहि सौपिय सुजान
यौं सबै थान करि सावधान पलख्यौ सुजान पुनि दै निसान ॥ ५५

कवित्त

दलन दलैया दीह देसन दवैया उगग
दुग्गन दरैया खल खंडन रहै सू क्यौसौ
छितिके छितिसनु को छाती छनि छार भई
पेषत प्रताप तेरौ प्रबल भभूक्यौसौ
सूदन सवलसिंह सूरज तिहारे धाक
धूमनु करत रहै दक्खिनी विझूक्यौ सौ
सहित अमीर पीर धोर न धरत उर
चौकि चौकि चाहत चकत्ताचित चूक्यौसौ ॥ ५६

हरिगीत छंद

भूपाल पालक भूमिपति वदनेस नंद सुजान हैं
जानैं दिलीदल दक्खिनी कोने महा कलिकानहैं
ताकौ चरित्र कलूक सूदन कह्यौ छंद बनाइकैं
वह राउ मारिय गढ़ विदारिय अंक चौथो आइकैं ॥ ४ ॥ ५७

इति चतुर्थ अङ्क

इति श्री मन्महाराजाधिराज ब्रजेन्दनन्दन श्री सुजान सिंह
हेतवे कवि सूदन विरचित सुजान चरित्र घासहरौ विजय
नाम षष्ठमो जङ्ग समाप्तम् ॥

अथ सप्तम जंग लिख्यते

छप्पय

धरि सत रज तम रूप स्रजति पालति संघारति
आरत लखि सुरराज विपति असुरनकौं पारति
धूम चंड अरु मुंड महिष रकता रज भंजति
सिंभु निसुंभु चवाइ चारु दस लोकन रंजति
जाकी विभूति परब्रम्ह हू निरगुन तैं गुनमय वरनि
मुनि देव मनुज सूदन रटत जयति जयति शंकर धरनि ॥ १

दोहा

गत पुरान सत वरष दस मधुरितु माधव मास
सुरज हित मनसूरकैं गह्यौ दिली पै गांस ॥ २

छप्पय

सप्त दीप कौ दीप दीप जंबू अति आगर
नव खंडनु वरखंड भर्थनूप खंड उजागर
तासु मद्धि मधिदेस वेस देसनु की मनिगन
मथुरामंडल निकट पांच पथ महि अनूप भनि
हैंद्रीप खंड अरु देव बहु तन मै ज्यौं तन सीस लहि
भाभोग नीति नर प्रीति जुत नागनगर सुर वेस कहि ॥ ३
तासु मद्धि परसिद्ध नागपुर संतन राजा
तनय तीन भए तासु भोष्म भूमि भारथ काजा
तिहिं विमातते अनुज चित्रवपु विय विचित्र रज
जिहिं वालनु तैं भए अंध पांडुक सुविदुर अज
सत एक एक सुत अंधकैं पंडव कैं पांचै भए
वृषपूत भीम अर्जून नकुल सहदेव देवनु दए ॥ ४

दोहा

पंडुमरगो मुनि श्राप तैं रहे पांच हू पूत
अंध नृपति तिन कौ दए पंच पथ मजबूत ॥ ५

लिख्यते

लति संघारति
 पुनकौ पारति
 ज मंजति
 कन रंजति
 तै गुनमय वरनि
 जयति शंकर धरनि ॥ १

मधुरितु माधव मास
 दिलो पै गांस ॥ २

आगर
 गगर
 मनिगन
 पनूप मनि
 तन सीस लहि
 गर सुर बेस कहि ॥ ३
 राजा
 राय काजा
 विचित्र रज
 विदुर यज
 चै भए
 देवतु दए ॥ ४

पांच हू पृत
 पथ्य मजवृत ॥ ५

पानीपथ सुनि पथ दुमौ बागपथ्य तिलपथ्य
 इंद्रपथ्य पुर थप्पियौ पंडु पूत समरथ्य ॥ ६
 देव लोक ज्यौ गगन मै वलि पुर ज्यौ पाताल
 इंद्रप्रस्थ स्यौ भूमि पै रच्यौ धर्म नर पाल ॥ ७
 स्वारथ कौ भारथ रच्यो पारथ कृष्ण सहाइ
 अंध वंस निरवंस करि गए हिमालय धाइ ॥ ८
 अर्जुन सुत अभिमन्यु की पतिनी गर्भ मैभार
 कृष्ण कृपा तैं सो वच्यौ भयौ भूमि भरतार ॥ ९
 सो नृप तच्छक ने डस्यौ श्री शुक कियो उधार
 जन्मेजय ताकौ तनय वैर बहोरन हार ॥ १०
 इंद्रपथ्य यौ पंडु कुल भुगतौ बरष अनेक
 फिरि आई चौहान कै विलसी धरै विवेक ॥ ११

छन्द पटुड़ी

चहुंवान करौ बहु बरष राज प्रथिराज जुद्ध कीने दराज
 लिय सात बार गोरी सुबंध पुनि भयौ भूप तिय नेह अंध
 बारह सै सेवत अंत आई लीनो सहाव दिल्ली दबाइ
 रन पकरि प्रथीराज सहाव गजनई दुग्ग लैगौ सिताब
 तहां गयौ भट्ट बरदाइ चंद नृप सहित साहि कीनौ निकंद
 तब तैं सु बढ्यो तुरकान घोर रोजानिबाज भुव भई गोर
 पुनि भयौ साहि अल्लावदीन दिल्ली भतार कर्तार कीन
 सत दोइ बरष भुगतो पठान पुनि भयौ चकत्तासाह आन
 तूरान भूमि तैं पग्न जोर तैमूर साहि आयौ कठोर
 ताकौ किरान पद भयौ साहि मीरां जुसाहि ताकौ सराहि
 सुलतान महम्मद पुनि दिलीस तिहि अबूसैद बलबंड ईस
 हुव उमर सेख पुनि साहि चंड बखर जुसाहि ताकौ उदंड
 ताकौ जुहिमाऊं साहि हूअ तासौं पठान सौं भयौ अजुह
 लीनो पठान दिल्ली छिड़ाइ वह साहि हिमाऊं गौ पलाई
 पुनि भए दिल्ली पति सोपठान दो सेर सलेमहु साहि जान ॥ १२

देहा

प्रगट हिमाऊं कै भयौ अकबर साह उदंड
 तिन पठान मारे सबै राज करौ अति चंड ॥ १३

छन्द पटुड़ी

वह भयै चकत्ता अति अमान जिन जीतो वसुधा नि जक्रवान
 ईरान और तुरान लीन अरु * फिरंगान सरहद्द कीन
 हवसान और खुरसान जीति तिलंगान आपनी करी नीति
 किलवाक साहि की आनमान इसफाह वजे जाके निसान
 बुगदाद जीतियौ बदकसान अरवान और ईरान जान
 किय रूमसाम आसामं जेर डारगै कुसावहू कौं वखेरि
 कसमीर जीति वहुनी नीरदेस दिय कोहकाफहू में कलेस
 कहकह दिवाल दह दह प्रताप मरहट्ट ठट्ट लिय साहि आपु
 मारू मलार सारठ दवाह दच्छिन दिसाहि जीत्यौ वजाह
 अंग बंग तिरलंग दाहि अरु द्रविड़ देश लौनै उमाहि
 वह आठ काठ अरु घोर घाट दंगाल गौड़ मगधोस डाट
 करनाट और लीनी वराट नद ब्रह्मपुत्र मारगै उचाट
 परवती भूप करि आप हथ बरफान देस लोन्यो समथ
 चौदह हजार भुवकौ समान किय आन चकत्ता निज भुजान
 यौ कहगै राज अकवर उदंड पंचास और हैवर मुचंड
 पुनि जहांगोर डुवतास पूत दिल्ली जुसाह उद्धत अभूत
 बाईस बरस वसुधाहि भोग पञ्चन्तु पाइ हुव भूमि जोग
 सुत साहिजहां ताकौ दिलोस तिन कियौ राज वरसै चतोस
 पुनि भयौ साहि औरंग साहि जिन तुरक रीति कोनो उमाहि
 पञ्चास बरस किय राज घोर दिसि दच्छिन जाको भई गोर
 पुनि भयौ बहादुरसाह उद्ध जिन गहि कृपान किय बहुत जुद्ध
 किय पांच बरस वसुधासुभोग लाहौर तख्त हुव भूमि जोग
 सुत भयौ मौजदो पातसाहि एक बरस भूमि करि भोग ताहि
 पुनि भयौ साहि फर्रूक जु सेर छह बरस राज कोनो सुवेर
 पुनि भयो फोलदरजाति साहि किय मांस तीन प्रभुता धराहि
 पुनि साहजहां पति साह जान वह चार मांस भुव भोगमान
 पुनि भयौ साहि महमंद साहि तिहिं तीस बरसकिय राजचाहि
 जब साहि महम्मद तजे प्रान सुतसाहि अहम्मद भौ जवान ॥१४

* पाठांतर—पुनि

† पाठांतर—वय

धा नि जकवान
 सरहद् कीन
 नी करी नीति
 ताके निसान
 तान जान
 कौ वखेरि
 में कलेस
 साहि आपु
 जील्यो वजाइ
 लीनो उमाहि
 धोस डाटे
 रो उचाट
 न्यो समध्य
 निज भुजान
 मुचंड
 त अमृत
 रूमि जोग
 रसै वतीस
 कीनो उमाहि
 को भई गोर
 किय बहुत जुद्ध
 रूमि जोग
 रि भोग ताहि
 ने सुवेर
 प्रभुता धराहि
 भुव भोगमान
 कय राजचाहि
 भौ जवान ॥ १४

(१४५)

दोहा

पातसाहि अहमंद कैं भौ वजीर मनसूर
 पोता मुलक निजाम कौ वकसी भौ मगरूर ॥ १५
 तूरानी वकसी भयो ईरानी सुवजीर
 नाचाखी दोऊन मैं दिल्ली पति के तीर ॥ १६

खुन्द नोसानी

एक रोज पतसाह दो वकसी लै मरजी
 चिन वजीर दोवान मैं कीनी यह अरजी
 हजरत सफ़दर जङ्ग मैं क्या अदब बजाया
 नाजर फिदवी साहिका दै दगा खिपाया
 हो वजीरहिन्दवान दा यह इसम बढ़ाया
 नाहक उरफि पठान सैं भगनां ठहराया
 दै मलाइ दखनीन कौ सब मुलक लुटाया
 साहिजिहानाबाद मैं जद सैं यह आया
 तद सैं हुकुम हज़ूरदां नहि एक बजाया
 पोता मुलक निजामदा जब यौ बतराया
 सो सुनिके पतसाहि भौ दिल मैं सब ल्याया
 तिसो वस्त मनसूर सैं यौ कहि भिजवाया
 जाना अपने मुलक कौ हजरत फुरमाया
 जद यौ सुना वजीर ने दिल मैं खुनसाया
 तौ भौ दिन दस बीस लौं दिल मैं नहि लाया
 फेरि साहि मनसूर कौ अहदी लगवाया
 साहिजिहानाबाद तैं तदही कढ़वाया
 तूरानी मिलि साहि सैं यौ बैर बढ़ाया
 ईरानी मनसूर कौ पुर सैं कढ़वाया
 बड़ा कुंवर अरु काइदा मनसूर गंवाया
 स्वासा लेत भुजङ्ग ज्यौ उस रूप लखाया
 करि आपुस के वैरनू कहि कौन सिराया
 जेहा खेलाखेल नू तेहा फल पाया।

दिल्ली सँ बाहर हुवै मनसूर रिसाया
 जुजवी फौज निहारि कौं पुर मै मंढराया
 अहङ्कार दिल में चढ़ा तद ब्यौत उपाया
 जे रफीक थे आपने तिन कौं बुलवाया
 पूरव सँ निज फौज नौं जलदो फुरमाया
 चाकर मेरा है वही जो आवै धाया
 घासहरे कौ कुंवर भी फरचा करि आया
 खबर पाइ मनसूर भी खुसियौं सेछाया
 तिसी वखत मनसूर ने फरमान लिखाया
 रहमति दै कहि आफरौं इलकाब बधाया
 कुंवर बहादुर आवना करि मेरा साया
 तुरानी गलवा दिया मुझकौं अकुलाया
 इसी वखत के वास्तै इखलास बधाया
 चाहौ मैड़ी जोन्दगी तौ आवौ धाया
 यौं लिख सफदरजंगने फरमान पढाया
 घासहरै था कुंवर जी रनरंग अठाया
 तिस कागज के वांचतै सूरज मुसिक्याया
 अपना विरद संभारिया दिल और न लाया
 अच्छी साइत देखिकै डङ्गा लगवाया
 सिंह जवाहर संगलै तदही चढ़ि धाया
 पंद्रह सहस सवार लै पैदल बहु भाया
 आनि फरीदाबाद मै डेरा करवाया
 फेरि कूच करि दूसरा रविजा तट आया
 तहं फरजंद वजीर कै मिलना ठहराया ॥ १७

सोरठा

पुनि मिलि सिंह सुजान सफदरजंग वजीर सौं
 डेरा किए अमान खिदर बाग रविजा तटहिं ॥ १८

कलहंस छन्द

दिन दूसरै मनसूर सूरज पास कौं
 दरबार है असवार सो इखलास कौं

लखिकै वजीर सुजान हू सनमान कौ
 बहु भाइ अदबु वजाइ दै बहु मान कौ
 ढिंग देखि सफदरजंग सिंह सुजान कौ
 सब पूछियौ बिरतन्त आवन जान कौ
 फिरि आपनो सुहबाल भाषि वजीर हू
 मुगलान जो कलकान की चहुं वीर हू
 भरि स्वास लेत उसास देखि अकास कौ
 विसवास कै इक आस है तुव पास कौ
 यह मैं मुकरर है किया तुम सैं कही
 अब तौ दिली दहवट करनी है सही
 इस वास्तैं तुम कौं बुलाइय मैं बली
 करनी न देर सुजान मोदिल कौं भली
 जब यौं कही मनसूर सूरज सौं सबै
 समझाइयौ सुवजीर कौं बहुधा तवै
 तुम हौ पनाह सनाह या हिंदवान के
 नहिं आपु लाइक बात ए गुन आनके
 गहि एक कै सुविगारि त्रासत देस कौं
 रहिहै यहै सुकलंक पेस हमेस कौं
 अब तौ यही जुसलाह है मिलि साहि सौं
 करिकै दिलीपति हाथ जङ्ग जुताहि सौं
 सुनियै जुसफदरजंग वैन सुजान के
 मुरझाइ आनन नैन वैन वयान के ॥ १९

महालच्छिमी छन्द

फेरि मनसूर वाल्यौ यही सिंह सुजा कहा तैं कही
 टेक तूरानियौ की रही आव मेरी जिन्हौं ने लही
 साहि भी है उन्हीं का सही होइगा क्यों हमारा वही
 आस मैं एक तेरी गही आप उम्मेद मेरी दही
 एक फर्जद जलालदौं दौम बीबी उसै पालदी
 आपने संग लीजै इन्हें जिंदगी चाहियै है जिन्हें
 गोद ए देइ तेरी बली सीख दीजै मुझे जो भली

(१४८)

जंग कैहौं दिली सैं करौं नेस नाबूद बैरी करौं
नाहिं तौ सोस टोपी धरौं हाल ही जाइ मक्कैं मरौं

छन्द मधुभार

मनसूर बैन सुन कै सचैन कहियौ सुजान करि सावधान
कहि है नवाव करिहौं सिताव पुर सहित साहि हनिहौं जुवाहि
अबकैं दिलीस रहि है न ईस* मुगलान सब तजि हैं गरब
पुर इन्द्र जोर करि हैं निजोर तुव सत्रु मारि वकसी बिगारि
यह पातसाहि रहि है न चाहि मुदई जितेक तितने अनेक
सबते* मिटाइ पुरकौं लुटाइ लहि तौ प्रतापु करि हैं सु आपु
तजियै सुछोहु गहियै सुलोहु मत एक पहु धरि चित्त लेहु
चकते सर्वस नहिं और अंस इकु पातसाहि करियै सुचाहि
तखतै चढ़ाइ धरि छत्रताहि तबदै निसान चढ़ियौ अमान॥२१

दोहा

हम चाकर हैं तखत के सकती करी न जाइ
यह उपाइ करि हौ अपुन तौ बलु सवै बसाइ ॥ २२
चार लाख बदनैस कै है दल पैदल त्यार
ते नवाव के जानियौ हुकम बजावनहार ॥ २३
अब दिन डू मैं रामदल आयौ जानौ पास
श्रीहरिदेव भली करैं क्यों तुम होत उदास ॥ २४

सौरठा

यह सुनि कैं मनसूर दोऊ कर ऊंचे करे
फिर मुख आयौ नूर कह्यौ बहादुर आफरौं ॥ २५
इस डाढ़ी की लाज कुंवर बहादुर है तुमैं
है यह काज दराज होवैगा तुम हाथ सैं ॥ २६
अब सवार तुम होउ जाइ माँदगी कटक की
फ़ालिह बजावैं लोहु साहितस्त बैठारि कैं ॥ २७
लख्यौ सुदीन वजीर सूरज सवै कबूल किय
हैं सवार रनधीर दिल्ली के सनमुष भयौ ॥ २८

(१४९)

सुवङ्गा छन्द

सूरज सफदरजङ्ग जवाहर सङ्ग लै
 दै दै दिघनिसान सैन बहु रङ्ग लै
 प्रथम दिना पुरइन्द दिखायौ साथ कौ
 ज्यौ किसान लहि सगुन करै कृषि हाथ कौ ॥ २९

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमि पति बदनेसनन्द सुजान हैं
 जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलिकान हैं
 ताकौ चरित्र कलूक सुदन कह्यौ छन्द बनाइ कै
 मनसूर सूरज मिलन दिली प्रथम अङ्क सुनाइ कै ॥ ३०
 इति प्रथम अङ्क

दोहा

फेरि आइ मनसूर ने कोनौ भेद उपाइ
 पोता काम जुबकस कौ लीनौ वेग मंगाइ* ॥ १

छप्पय

ताहि तखत बैठारि धारि सिर छत्र जटित जर
 चवर मोरछल ढारि कियउ इतमाम आम घर
 अरुन वरन नौसान तानियौ अरुन वितानहिं
 सहदाने घन धोरि दियौ उमरावनु मानहिं
 उद्धत हयन्द सुगयन्द नर बहु सुभट्ट हाजिर प्रबल
 सूरज सहाइ मनसूर नै थय्यौ साहि अकबर अदल ॥ २

छंद पावकुलक

अकबर अदल साहि धरि आगैं सफदर जंग जंग अनुरागैं
 अपनी चमू साजि गज चढ़्यो तुरानिन पै अति रिस बढ़्यो
 इसमाइल राजेंद्र गुसाई सफदर जंग भए अगवाई
 छद्दस सहस हयंद हंकारे हे वजीर के संग तयारे
 तबही सूरजहू ने डंका सब तैं आइ चढ़्यो रन वंका

* पाठान्तर-लीनो गुप्त बुलाइ ।

१. धेरी करी
 २. मरक मरी

३. करि सावधान
 ४. अहि हनिहौं बुवाहि
 ५. तजि हैं गार
 ६. रि चकली बिगारि
 ७. तितने अनेक
 ८. तापु करि हौं सुपापु
 ९. धरि चित लेइ
 १०. हि करिये सुचाहि
 ११. चढ़ियौ प्रमान ॥ २९

१२. न जा
 १३. वि बसा ॥ २२
 १४. सार
 १५. बार ॥ २३
 १६. पास
 १७. उदास ॥ २४

१८. करे
 १९. आफर ॥ २५
 २०. सुर्ग
 २१. से ॥ २६
 २२. टक की
 २३. रि कै ॥ २७
 २४. किय
 २५. मयौ ॥ २८

तातँ अग जवाहर धायौ सजि कै सैन दिली समुहायौ
 पंद्रह सहस तुरंगन वारे ब्रजवासी चढे रन रारे
 अन गिनती पाइक ललकारे दिल्ली के लूटन पग धारे
 सफंदरजंग जोरि दल पतौ चढ़यौ इन्द्रपुरकौ भय दैतौ
 जिते हयंदगयंदन वाले ते सब रेती के पथ चाले
 पाइक लगी राह मन भाई जो जाके सनमुख ही आई
 एक ओर तैं लूट मचाई करत किसान खेतज्यौ लाई
 पुर बाहर जे हे पुर छोटे ते सब भए इही दिन बोटे
 किसनदास* सरवर दै पाछें वारह पुरा लूटियौ आछें
 लियौ तोप खानौ करि हल्ला अरबसराइ मचाई अल्ला
 इतनौ देखि वजीर सिहानौ फिर डेरनु कौ कियौ पयानौ

मालती छंद

अहमदसाहि सुनैअकुलाहि रह्यौद्रगचाहि कछू न बसाहि
 सवैउमराइ लपसुबुलाइ कह्यौसमुभाइ करौसु उपाइ
 गजदियखान तवैदिंगमान करौजुसलाम भरयौजह आम
 कह्यौजुनिहोर दुहंकरजोर हुवामनसूर वजोरगरूर
 जुथाउसनाम कियावहकाम हुवावदराह जुखातरखाह
 जिसै फुरमाइ करौसुविदाइ वहैअवधाइ गहैउसजाइ
 कह्यौअवरास जुहैमुभपास सुहाजरहाल सुजानहुमाल ॥४

दोहा

जान माल सै साहि का फिदवी हाजर हाल
 रजा होइ सुगुलाम कौ मनसूरा क्या माल ॥ ५

छंदकुंडलिया

अरजी वकसो की सुनत साहि अहम्मद साहि
 पोता मुलक निजाम कौ कियौ वजीर सराहि †
 कियौ वजीर सराहि और यह मतौ उपायौ
 समसांमुद्दौलाहि मोर वकसो ठहरायौ

* पाठांतर—किसनरास

† पाठांतर—वकसो किये सराहि

ठहरायौ सबदेन तोपखानौ रन गरजौ
 सुनी अहम्मद साहि गाजदीखां की अरजी ॥ ६
 तबहो उन दोऊन कौं सरोपाव समसेर
 सादलखां सु नजीमखां जान पठान रहेल
 जान पठान रहेल साहि तबयौ पुरमायौ
 रेती के मैदान मोरचा तुमैं बतायौ
 तुमहैं बतायौ सबै अरायौ लैकैं अबही
 उस हरीफ कौं लेउ जंग कौं आवै तबहो ॥ ७

छन्द संखजारी

सुनै साहि बानी सबै भीर मानी करी सावधानो चमूं साजि आनी
 लयैं तोपखाने मनो देव दाने रूपे जाइरेती हुती तोप जेती
 किती हाथ बाहैं सुकोऊ अठाहैं कलू बीस हथथी धरी एक सथथी
 सहसदे। इपेसी भुजा मीचु कैसी किती अष्ट धाती किती लोह जाती
 कलू वाघ मुकंजी किती मुख रुक्खी धरी एक मोटी तहां दोह छोटी
 करैयौं जजीरा बदे धीर धीरा सुतरनाल मंडो सुहथनाल चंडी
 तहां वानबारे हजारौं सभारे कडैं गोल गोला करैं तोल तोला
 भरैं एक दारु ररेंमार मारु नकीधौं सुनाई चलो अग भाई
 यहै सद छाया नहों पारु पायौ सरे* वीर वानैं चढ़े लै निसानैं ॥ ८

छन्द तिलक

तव सादल खां सुनजीम जहां सुहरौल भए तन तेह छप
 अरु सैन पती इनकौमदती पुठवार रह्यौ बहु जोर गद्यौ
 सुअमीर जिते सब संगतिते बहु तोपन कौं अरि लोपन कौं
 धरि अगधुके महि जात रुके बहु स्याम धुजा बहु रंग कुजा
 सित स्याम घनी बहु नील बनी इकजोजन लौं भुव छाइ दलौं
 सजि सैन चले सब वीर भले रिस बैन कहे रस वीर गहे
 मनसुर जहां गहि लेइ तहां ॥ ९

दाहा

निकट अहम्मद साहिके रह्यौ गाजदीखान
 वकसीतैं जु वजीर भौ जुद्ध हेत बलवान ॥ १०

बुली समुदायौ
 रन रारे
 पग धारे
 कौ मय देतौ
 पथ चले
 मुख ही भाई
 खेतज्यौं लार्
 ते दिन बोटे
 टियौं घालैं
 भाई भला
 कियौ पयानौ
 न बसाहि
 सु उपाह
 तजह भाम
 रगकर
 भातरखाह
 ठसज्रा
 भातहुमाल ॥ ४

ल
 ५

हि
 हा
 मे

छंद लीलावती

सुनि सफदरजंग उमंग अंग धरि जंग हेत तदवीर करी
 राजेंद्र गुसाईं इसमाइलखां दुहुनि संग भटभीर भरी
 वेकरि हरौल सन मुष्ण हँकारिय जितहिं अरावौ घोरि धरौ
 गहि जमुना तोर वीर धरि धारैं हय हंकिय नहिं विलम करौ ॥ ११
 पुनि श्री सुजान अरु सिंह जवाहर करि सिलाह धरि आहवढे
 लैमसलत अकवर अदल वजोरहिं सहर पुराने चाइ* चढे
 है दल संव संग अग धरि पैदल तिनहिं वीर यह हुकुम कियौ
 अब लेउ ईंट करि देउ ईंट सौं दिल्ली सहर हम तुमहिं दियौ ॥ १२

छप्पय

जब सुजान नर कहिय तनय जाहर सु जवाहर
 तब सुनि सब ब्रज वीर हरखिहुंकिय ज्यौ नाहर
 करिय हल बहु मल रल पुर मदि मचाइय
 कहत देव हरिदेव देव पति की जु दुहाइय
 चहुं ओर सार अति घोर हुच तोरि फोरि भवननु भरिय
 दिल्ली दरयाव बहु आव जुत सूरज दल दल दल करिय ॥ १३

छंद त्रिभंगी

करि करि ललकारे	गली गल्यारे	तेरि किवारे	पुर वारे
गहि करनि पनारे	लहि उपरारे	उच्च अटारे	पग धारे
वज्जंत कुठारे	लत्त लठारे	पैरि दुआरे	भुवपारे
तारिनु भनकारे	कहू कुसारे	तिष्ण छुरारे	पटतारे ॥ १४
पटतारे तारे	खुटे दुआरे	फुटे तिवारे	चैवारे
भज्जे घर वारे	ज्यौं पषवारे	बहु हटवारे	भौभारे
केते हथियारे	सोस फिकारे	हारिभगारे	डर डारे
अटके लरिटारे	भटके न्यारे	होत अगारे	हकारे ॥ १५
हक्कारे पारे	जाटौं मारे	मुगल महारे	मनहारे
आरेके आरे	बारह द्वारे	कछु न सम्हारे	गहि डारे
ऊंचे घर वारे	खड़े पुकारे	हुवा कहारे	करतारे

(१५३)

रव हा हा कारे घोर महारे बूढ़े वारे चिक्कारे ॥ १६
चिक्कारनुपारे धावत रारे आरे जारे ले जारे
लै कै तंरवारे देत धवारे दिल्लीवारे बेजारे
गए हक्कावकारे लगत धकारे हूँ विकरारे गहि नारे
ब्रज वासो प्यारे भरत सरारे सांभ सकारे असरारे ॥ १७

छन्द ललितपद

रारे लेह लेह करि धाप गेह गेह चढ़ि साजे
सूरज सुभट कटक पुर कटकनु थँमे लाल दरवाजे ॥ १८

कवित्त

लाल दरवाजे पर सूरज सुभट गाजे
ताजे ताजे बीर हृथ आयुध दराजे हैं
भाजे पुर लोगन कपाट दरवाजे दीने
ऊरध भुस डिनु कै उद्धत* अवाजे हैं
कहूं सर वाजे छर बाजे लमछर बाजे
बाजे बाजे भाठिनु सौं भोरे सिर साजे हैं
जंग के लराजे उभराजे लहि छाजे ओट
केते लोट पोट मिले आजे पर आजे हैं ॥ १९
पावत पराजे दरवाजे वारे भाजे देखि
केते लोट पोट कोट चोटन सुमार में
टूटत किवार हाहाकार ता बजार परी
वार वार विकल विलंद भीर भार में
आप आप कहत बग्गाए माल मौंहरेनु
जापहु गंवाए नारि सहित अगार में
माए कहूं वाए बाल रटनि बुवाए ताए
लेहरी ददाए तो चचाए आप खार में ॥ २०
खारौ खतरानी कतरानी सतरानी फिरै
वांभनी विन्यानी तुरकानी धररानी हैं
काइथी अरोरी थोरी वैसनि तमोरी गोरी

* पाठांतर—उद्धत

री
ने
धरौ
॥ ११
हवदे
चढ़े
क्रिया
॥ १२

र
र

॥ १३

वारे
धारे
रें
रे ॥ १४
रे
रे
गरे
॥ १५
रे
हारे
रे

काहिनो किरानी औ भटगानी भहरानी हैं
 हीरी बहु कीरी नर नीरी तोरी पीरी भई
 सूरज के तेज चंद कला ज्यों परानी हैं
 नूपुर बलय बलयानु रसनानु धुनि
 मानहुं प्रभात पंखी वानी मंडरानी हैं ॥ २१
 डोलती डरानी खतरानी बतरानी वे वे
 कुडिपन बेखी अणी मी गुरुन पावाहां
 किथे जला पेउ किथे उज्जले मिडाउ असी
 तुसी कोलप्रोवां असी जिंदगी वचावांहा
 भट्ट ररा साहि हुवा चंदला बजीर बेखो
 पहा हाल कीता बाह गुरुनू मनवांहा
 जांवां किथे जांवां अम्मा बावे के ही पांवां
 जली एही गल्ल अष्वैं लष्यौ लष्यौ गली जांवांहा ॥ २२
 आव्या तमें आगल न ल्याव्या माटी कागलनै
 डागला नड़ीटू को कठामरून लीध्यूं छै
 डीकरी न छैया साथैं मोकल्या न मामी हाथैं
 घरणू न आथे भूडा पौतियौं न दीध्यूं छै
 हालरू हम्हारू वाट माहें जारे आवी जोयूं
 हहरू हमारू पूढी पेला माहं वीध्यूं छै
 चीध्यूं छै न पाहै सीधू खावानैनहाहै हवै
 सिव जो सहाहै जिनें एवूं हाल कोध्यूं छै ॥ २३
 केकरां सभागो भीसू भाई भाग्यौ टापरसें
 आपुरे बटाऊ ए लुटाऊ घर घालेहैं
 पापरी नवापरी मुगौरी भांडैं घाली पड़ो
 लोड़िये न के के लेके आप सासू लाले हैं
 काके पैर पाके मूनै आके लेन जाके भागे
 तागे हू न छूटे फूटे पेसे आनि ताले हैं
 केवे हुवा केवे लेवे लेवे देवे देवे देखि
 वे वे ज्वाले भाई अब तेरे हम बाले हैं ॥ २४
 कौठे रह्या ठाकरां कि ठाकरां पधारया वीरा
 चाकरां न लारैं म्हें ऊमारै पग धांवांछां

श्री भहरानी हैं
 योरी भई
 श्री परानी हैं
 नि
 झरानी हैं ॥ २१
 वे वे
 न पावाहां
 डाउ पसी
 श्री वचावांहा
 ८ बेखो
 मनवाहा
 ही पांवां
 गली जांवांहा ॥ २२
 कागलनै
 लीप्युं
 मायो हाथें
 न दीप्युं
 लो जेयुं
 हं दीप्युं
 है ही
 डाल कोयुं है ॥ २३
 टापरसें
 आलेहें
 श्री पड़ो
 तसु लाले हैं
 न भागे
 न ताले हैं
 नि
 आले हैं ॥ २४
 रजा वीरा
 ग बांवांहा

(१५५)

जाया काटया जाटरां जनायौ है जुलम दें
 जेठें देठें म्होंवीतो सवाई रा कहांवांछां
 जिसी भालि वाजी तिसी गली चली वाजी
 म्होता टारडा न टारडी अवार कोठयां पाषांछां
 काकाजी कागला का अगार ओजौ वाईजी थे
 ल्यांवांछां जी ल्यावां कोई आंवांछां जी आवांछां ॥ २५
 महलसराइ सैरवाने बूझा बूझ करौ
 मुझै अपसोच बड़ा बड़ी बीबी जानीका
 आलम में मालुम चकत्ता का घराना थारै
 जिसका हवाल है तनैया जैसा तानीका
 खमे खाने बीचसैं अमाने लोग जानें लगे
 आफतही जानो हुवा ओज दहकानी का
 रव की रजा है हमें सहना बजा है वख्त
 हिन्दू कागजा है आया ओर तुरकानीका ॥ २६
 वसुधा न आवा मोर भैयन न पावा याक
 तुपक की न लावा गांठि डीबू आन घावाहै
 चाकरी की लकरी की फकरी विहानी कीन्ह
 मनई न कनई दिहांन यां बतावाहै
 अस कस कीन्ह म्यार दिल्ली का नवाव खार
 चीन्हत न सार मनसूर जट्ट ल्यावा है
 तुहिकां न मुहिकां कहीं लुहिकां रही न जाग
 भाग कुल और तोपखान वाघ व्यावा है ॥ २७
 ईंघें चालि ईंघें ऊंघें ऊंघेंके धरौ है थारो
 टालौ भी न चाल्यौछै चरैया घनौ पाला कौ
 वेटौ थांभि वेटौ भौंडो लागिसे चपेटौ कयै
 कूणकै लपेटो फेटो लाग्यौ घरघाला कौ
 गाड़ी एक पाड़ी दोह नाड़ी तीन पीजनीन
 नागला तुलावाचारि मूने सोच जाला कौ
 आला कौ रखौसै आला जाला कौ न जाला चौध्यौ
 ताला कौ न लाध्यौसै भरोसौ करौ मालाकौ ॥ २८
 कैहां जैहों कैहां जैहों तैंहां तैं न पेहां आओ

देखन न वेंहों क्यों ललाजू उभरानें हो
 भैंयां वैयां नैयां लै लुगैयां लैयां पैयां चलौ
 वारौ न अर्यैयां कहूं जाट खुभरानै हो
 कैसी करी भैंयां मोड़ा मोड़ी न कन्हैयां घरे
 खात हैं लुचैयां कभू पेट न भरानै हो
 चैयां चैयां गहौ चैयां नैयां नैयां ऐसें वोलो
 बढ़ि दैया करी दैया हमें काहे खुभरानेहो ॥ २९
 वरनौ कहाँ लौ भुवलोक में जहां लौ भई
 दिल्ली में तहां लौवानी सूरज प्रताप ते
 मुगल मलूकजादे सेख बेसलूक प्यादे
 सैयद पठान अवसान भूले लापते
 आया रोज क्यामत मलामत सैं पाक हुवे
 रहैगा सलामत खुदाई आप आपते
 जार जार रोती क्यों वजार मीरजादी यारों
 जिनका छिपाउ महताव आफताव ते ॥ ३०

छन्द पट्टड़ी

यौ पर्यौ सार दिल्ली अपार	पुरलोग पुकारत वार वार
ब्रजवीर हंकारत डार डार	फटकार खग सेलनु उसार
कलवल गलीनु खलभल वजार	छलवल संभार भजत अगर
इक तजत आयुध छोर छोर	इक लजत आनन मोर मोर
इक गजत दामन फोरि फोरि	पुरगली गल्यारे तोरि तोरि
भहरात फिरत नर खोरि खोरि	हाहा रटंत कर जोरि जोरि
इक कहत धिक्क अहमंद साहि	नहि देखतु या पुर की दसाहि
जिहि जियत इंदुर यौ कुटंत	गज वाज ऊंठ वृषभा लुटंत
महिषी महिष्य गो लच्छ लच्छ	पडरादि बच्छ लूटैं समच्छ
अज अजा भेड़ मैठा कुरंग	खच्चर सु गोरखर खर दुरंग
बहु मोल स्वान पाले लबंग	बिल्ली विलाव नहि तजत अंग
चीते सुरोभ सावर दवंग	गैडा गलीनु डोलत अभंग
अरु स्याहगोसर विश्रंग अंग	रिच्छादि खौरिहा छुटे अंग
लुटियौ सुवाज जुरा विहंग	जिनकी सिकार कौवा कुलंग

(१५७)

ही

ता

रे

ग

नेहो ॥ २९

।

वहरी सुबेसरा कुही संग जेगहत नीरचर बहुत खंग
वहु लगर भगर पुनि चगर तंग जे हनत सुसा बुज्जर उतंग
वांसा वटेर लव भौ सिचान धूतीरु चिप्पकाचटकमान
दहियर सुतुरमती वगुलहान सुरखाव आव के जीव आन
जल मृगनि सहसरव कहनहार तूती सुतीतरा वहु प्रकार
वहु रंग देस के कीर वेस जो सुनत वैन बोलत हमेस
मैना मलूक कोइल कपोत वगहंस और कलहंस गोत
सारस चकोर खंजन अछोर तमचोर लाल बुलबुल सुमोर
चकई हरील पिहो अपार खुमरो सुपरेवा वहु प्रकार ॥ ३१

छन्द रोला

३०

र बार
नु उसार
त अगार
ार मोर
रे तोरि
रि जोरि
नि दसाहि
ा लुटंत
अमळ
र दुरंग
तजत अंग
अमंग
हुटे अंग
ा कुलंग

तुपक तीर तरवार तमंचा तेगा तीछन
तोमर तबल तुफंग दाव लुट्टियौ तिहीं छन
पट्टा पट्टी परस पासि विछुवा वर वांके
वल्लभ वरदा वरछि धनुष लिय लूटि निसांके
बुगदा गुपती गुरज डाढ़ जमकील वतारो
सूल अंकुसा छुरों सुधारो तिष्य कुठारो
सिप्पर सिरी सनाह सहसमेखी दस्तानै
भिलम टोप जंजीर जिरह लुट्टिय मस्तानै
पक्खर गक्खर लक्ख राग वागेरु निषंगा
आयुध और अनेक और चिलतह वहु अंगा
पुनि वासन भर लुट्टिय देग देगचा रकावा
चमचा चमचो जाम तवा तंदूर गुलावा
चपनी लोटा चिलम पोस सरपोस जमावा
हुक्का हुक्की कली सुराही अरु अफतावा
तंविया कलसा कुंडि ततहरा बटली बटला
दुकरा और परात डिवा पीतर के चकला
बेला बेली लुटै तमहड़ी लुटिया भारी
अमृतवान अमृतीरु थार रकेवी वहु थारो
प्याली गंगाजली टोकनी गंगासागर
कुंजा जंबू डवा और तांवे की गागर

(१५८)

छलनी चलनी डोहि घोर करछी वहु करछा
पौना भाञ्जर तई विलाई परछी परछा
करवा कौं पर पानदान चौघरा तवेला
अरघा संपुट धूप आरती लेत सकेला
अष्टा अरु आधार भर्त के बहुत खिलौना
परिया टमटी अतरदान रूपे कै सौना
पीलसोज फानूस कुपी तिखटी सुमसालें
सड़सी सुवादरांत डंदारे कुसा सम्हालें
भाड़ दुसाखे भाम बसुला वरम हथौरा
टांकी नहनी घनी अरा आरी सुमथौरा
कुंदरा खुरपा वेल गुल सफा छुरा कतरनी
नहनी सौंहन परी डरी वहु भरना भरनी
पीढ़ा पलिंग मचान दुसेजा तखत सरौटी
खरसल स्पंदन बहल बहुत गाड़ी सुनबौटी
डोला अरु चंडोल घने म्याने सुपालकी
कंचन रंजित सुभग टुटों अरु लुटों नालकी ॥ ३२

छप्पय

दुंदुमि पटह मृदंग ढोलकी डफला टामक
मंदरा तबल सुमर खंजरीं तबला धामक
जलतरंग कानून अमृतगुंडली सुवीना
सारंगोर रवाव सितारा महुवरि कीना
सहनारि भेरि तुरही दरक वंसी गोमुख वाँकिया
अलगाय ताल कठतालतर भालरि भांभ निसां कियां ॥ ३३

दोहा

मदनभेरि अरु घूंघरा घंटा घनै मतीस
मुहचंगी कौं आवि दै आवज लुटे छतीस ॥ ३४

सोरठा

तंबू पाल कनात साएवान सिराइचे
रावटीहु वहु भांत पुनि कुन्दरा कलंदश ॥ ३५

(१५९)

मसनद गदी उसीस सतरंजी जाजम जबर
परदा चंदनी ईस कालीचा दुलिचा घने ॥ ३६
सीतलपाटी टाट लोई कम्बल ऊन के
वची न एकौ हाट खेस निवाराह आदि दै ॥ ३७

छन्द त्रिभंगी

रुमाल दुसाला पट्टू आला चूनी जालासोभ वनी
मखमल बन्नाते अरु सकलाते भांतिनु भातै छोट घनी
बहु रंग पटवर पसमो कंवर धवलसुघंवर * कौनगनै
जरदोज मुकेसी दाना केसी मसरु वेसी लेत वनै ॥ ३८
बादला दरवाई नौरङ्ग साई जरकस काई भिलमिल है
ताफता कलन्दर बाफतबन्दर मुसजर सुन्दर गिलमिल है
श्रीसकर विलन्दी दूरिघरन्दी मानिकचन्दी चौखानै
किमखाव सुसालू खादीखालू चोलै चालू जग जानै ॥ ३९

छरपय

नीमा जामा तिलक लवादा कुरती दगला
दुतही नीमांस्तीन कादरी चेला भगला
तम्बा सूथन सरो जांधिया तनियां धवला
पगरी चीरा ताजगोस वन्दा सिर अगला
दुपटा सु दुलाई चादरै इकलाई कटिबन्द वर
कञ्चुकी कुल्हैया ओढ़नी अङ्ग वल्ल घोती अबर ॥ ४०

अरिल्ल

चोटी चुटिला सीस फूलवर	वैना बन्दी बन्दी सुबर
वेसर नथ बुलाक सु लटकन	जाट जूह लागे सब भटकन
पीयर पर्न भुलमुली तरिवन	बहुखलेल झूमिका सुभरमन
कर्नफूल खुटिला अरु खुंभिय	लोलक सौनसोकहुं चुम्भिय
गुलीबन्द पचमनीयां चौसर	तीनलरी पचलरी सतौसर
चम्कली सु हमेल हांसवर	बीजनि वैरी उरवसीनु भर

* यादांतर — सुकंवर

विद्रुम मुक्तमाल मनिमालहु कञ्चन रजत रतन के जालहु
 रसना छुद्रघण्टिका लिन्निय बहुबाकुथरी जानन दिन्निय
 बाजूबन्द बराकरदिन्निय बङ्गरो चूरा लेत न गिन्निय
 टाड पछेली छिन्न छिनाइय चूरेचूरि चुरी चटकाइय
 कङ्कन गुजरी पहेंची अनगन दुहरी तिहरी जटित रतनगन
 छल्लाघनी भंगूठी कञ्चन आरसीरु जङ्गीर भमङ्कन
 पाइल औ पगपान सु नूरु चुटकी फूल अनौट सुभूपर
 तेहरि* भांभन गुजरी दुदिय बहुभूषनमें एक न छुदिय ॥ ४१

छप्पय

कलगी तुरी और जगूसिरपेचसु कुण्डल
 मोती गुरदा और गोखरु रुद्रराख भल
 तोरा कण्ठी माल रतन चौकी बहुसाङ्कर
 वेढा पहुंची कटक सुमरनी छाप सुभाकर
 किङ्किनी कौन्धनी पैजनी हथ सङ्कर भङ्कर खुटे
 आभरन नरन बहुभांति के फुटे बुटे दूटे लुटे ॥ ४२

पावकुलक छन्द

कस्तूरी केसर कसमोरी हैं कपूरकचरी सुकरीरी
 कुटकीकिटी कपूर कलाये कङ्कूड कासिनी कवाये
 कंकक चूरकटोर करझा किसमिस कैथ कुलीजन कझा
 काथ करौंजी कारीजीरी काइफरौ कुचिला कनकोरी
 कुकरौन्दा करहरी कतीरा कनक कटाई कारीजीरा
 कुलथी कमलगटा सुकबेला ककरासिंगी कन्द सुकेला
 कमलमूल किरवार कसेरु काचनून कर मूल कनेरु
 खिरनी बीजखरी खसजूरा खार खोपरा बीज सुखीरा
 खूवानी खसखस के दानें खण्डखार खुम्मी खस जानें
 गोरोचन गेरु गोगोली गौन्द गिलोइ गोखरु ओली
 गन्धक गुझाफल गङ्गोला गोपीचन्दन लुट्यौ अतोला
 गुलगुलाल अरु गोरखमुण्डी घास घोमसा घाइल घुण्डी

* पाठान्तर = जेहरि

नौजा नरियर नेतरवाला	नोम निसौत निर्विसी नाला*
नीलाथोथानीलनिर्मली	नागरमोथा नगद चिलमिली
चव चिराइता चित्रक चीता	चोक चोबचीनी चरलीता
चंदन चुंक चिरौंजी चपरा	चोख चांवरी चन्दकलपरा
छारछबीलौ छिकनि छुहारी	जावित्री जङ्गल जुरारी
जाइफलौं सुजवाइन जीरा	जँडीजरी जलँजर तोरा
भकझोरी टकटोरी टोरी	ठौरठौर डोरी गहि डोरी
तेजपत्र तज तालमखानै	तिवी तमाखू तुखमतारनै
तुलसी बीज तुरझ तुरझन	देवदारु दन्ती दुखभञ्जन
दुद्धीदल दाडिम के बकला	दूव दालचीनी द्रगदकला
धना धमासाधूम सुधुन्धी	धौर धौहकोछाल धुरन्धी
पित्तपापरा पाहपतङ्गी	पत्रजम्पनी पोपरै पङ्गी
पथरसगा पचरङ्ग पमारौ	पाडरा फूल पापराखारौ
पोलप्रखान भेदपनपारा	परवरपाती पतर पचारा
फलोंफटकरी फूलदुफैना	वादामी ब्रह्मी व चवैना
वाइविरङ्ग वेल वालङ्गा	वोजबन्द वालेसुरवङ्गा
चेरजरी सुविलैया बूटी	वरु वहेर वावची लूटी
वासौ वन्सलौचनौ बन्दा	वेलगिरी सुबहेर विलन्दा
विही ब्रह्मदण्डी विसवेरा	भारङ्गी भिण्डी सुभंगेरा
भैंसा गूगल भङ्गभिलाप	भोडरभाह सुभेट भाप
मिरच मोचरस मैदा लकरी	मुरदासन मतंसिल मिस मकरी
मलयागिर महंदी मुहलैठी	मस्तंगी मुहमूंदी मैठी
मैनफरौ मुण्डी मधुमोथा	मुद्दमूसली दोरु चौथा
मौखमुलका मृत मुलतानी	मैथीमालकाङ्गी सानी
मैद मैडुकी मोधमिमाई	मदन मखाने मिसरी भाई
मोममहावर मूली बीजा	अकरकरा अजमोद अलीजा
आलूचा अमिली अँवहलदी	आल आंवरा साल अफलदी
असगन्द अगर आविली अण्डी	अर्कअतीस आंवला ठण्डी

* पाठांतर—आला

† पाठांतर—पासर

‡ पाठांतर—मुह झंठी

इसवगोल इन्द्रजौ जानौ	इन्द्रानी इलाइचो आनौ
ऊंटकटेर एलुआ पला	रेवतचीनी राई रेला
रूमो रतनजोति रसवन्ती	रारेरङ्ग मांटी रुद्रवन्ती
लौंगलौंग चूरो लगलाही	लोद लछमना लहसन काही
लांफलेखनी लाचनवाला	इसबन्द सौतलचीनी आला
सांठसौंफसालिम जुसुपारी	सौंधसनाइ सिलखरोसारी
सज्जो सौंचर सेंवर सौरा	सांखाहूली सोपसिकोरा
समुंदफैन साबुनौ सुपैदा	सिङ्गरफ सैदुर सारसमैदा
सौनमक्खि सङ्गिया सुहागा	सूलसम्हालू सवरस सागा
हरदहोंग हरतार धरीती	हरडाहाल्यौं हिरमिचहीती
हुलहुलहिहल हिमामहुदस्ता	फूलमूल कागद के दस्ता ॥ ४३

दोहा

अमल अफोमहिं आदि दै चेवा अतर फुलेल
सोसी चीनी मोनके मुहरदरावी रेल ॥ ४४

छन्द त्रोटक

लुटियोलडुवा बहु भांतिनके	नुकती अरु मोदक पांतिन के
कलकन्द सुमैथिय मूंगदला	सिमई सतसूत मगद भला
सुठि सेव सु औरिहु गौन्दगिरी	खुरमा मठरी भरिली गठरी
गुपचुप्प गुना गुलपापरियां	खजला सुखजूरि खड़ापरियां
अमृतीरु जलेबिनु पुञ्जलुटे	खिरसादर भित्ति चुटेसुफुटे
गुभियां गुलकन्द गुलावकरी	तिरकौनु सुहारिन मोटभरी
बहुघेबर वावर मालपुवा	अरु सेबक चौरिन लेत हुवा
हलुवाहिसमो बहुफेनिनु को	कतरी रसनासुख चैननु को
कहुँ लेत निवात बतासन कौं	सुगिन्दौरनए रनवासिन कौं
अरु खोवन ढेर बखेर दए	बहुखांड खिलैनन लेत भए
अरु लाइचदाननु गोद भरै	दधि दूधन के परसाद करै
कुजतीतिल सकर रेवरियां	बहुपाक पुडारजुसेवरियां
पकवान जथा रुचि और घना	बुहरी परमल्ल सुखोल चना ॥ ४५

छप्पय

गेहूं चांवर चना उरद जव मूंग मौंठ तिल
चौरा मटर मसूर तुवर सरसौं मडुवा मिल

संवांपसाई मका कांगुनी कोदैं मकरा
 चैना कूरीवटी सिंगारे कुलथी सकरा
 धृत तेल नैन गुड़ तलरस मिले विरस मौटन खुटे
 पुरइन्द अन्नकौ कूटज्यौं सवरस कोटिन मन लुटे ॥ ४६
 सामयजुर रिग निगम अथर्वन धर्म पतञ्जल
 मीमांसा वेदान्त न्याइ साहित्य तर्क भल
 विष्णु वायु सिव अग्नि गरुड नारद वलिरच्छक
 मच्छ कच्छ वाराह पद्महरनच्छक तच्छक
 पुनिस्कन्द भारकण्डे भविष ब्रह्मवर्त्त ब्रह्मण्डवर
 भागवत मेघ मधु रघु कुंवर पुनि किरातनैसध अवर ॥ ४७
 छन्दकोस व्याकर्न कर्म ज्योतिस निरुक्तिरस
 मन्त्र जोग धनु गान वैद्य स्त्रोदय गनती जस
 सामुद्रिक पुनि कोक सर्पवानी अरु भारथ
 नाटकभासादेस यमनवानी ग्रन्थारथ
 लखिकें अधर्मसुअनीति अति सबविद्यनु चलनै रदिय
 पुरइन्द छोड़ि ब्रजवास कौ ब्रजवासिनु के कर चढ़िय ॥ ४८

देहा

देस देस तजि लच्छिमी दिल्ली कियौ निवास
 अति अधर्म लखि लूटमिस चलो करन ब्रजवास ॥ ४९

छन्द भुजङ्गी

लुटैघौसदिल्ली निसांज्वाल जारै मनौसूर कौ तेज पापै पजारै
 जरै रङ्ग रंगे घने काठ खम्भा हलैज्वालकीभालज्यौं पातरंभा
 ठुटै गोलमगोल टोडा सुहाटी मनोस्वर्नकी खानतैं सोठकाटी
 जरै बङ्गलाबङ्गली चित्रसाला मनौपेपने कौ रुप्यौख्याल आला
 जरैदारुकी पुत्रिका यौदतीसी मनौ धाम की वामठादी सतीसी
 कहैं आंचसौं काञ्चके भौनफूटैं महातेजसौं ज्यौं वृथातेज बूटैं
 जरी यौदरीची तिवारी अटारी सतौमेरुकी शृङ्गजैसी निहारी
 वरङ्गा वरङ्गी करीयौजरी हैं मनौ ज्वालनैवाहुलच्छौकरी है
 जरी सोटि प्रासाद तेभू परी है सिलामेरु के सीस तैं ज्यौं ढरी है

जरै वांस बैां कांस उधै फुलंगा नचै भूमि कौ पूतकै कोटि अंगा
 कहुं जालके जालमै ज्वाल झोरै किधौ धाम धारा धरौ विज्जुदौरै
 सिखाकी सिखातै धुवांव्यौ मधायौ भजैतामसौ राजसीज्यौ सतायौ
 किक्करी किवारे उसारे पनारे जरै जालि पानै करे मौन न्यारे
 उड़ै साख सौंगी धनैवान भारे फिरै आग लेती मनौ दै हँकारे
 फिरै वायु के वेग सौं वाइ मीता सुरेसापुरै आपुनै रूप कीता
 चहुं ओर यौ ज्वाल माला निहारी दूहै यादिली बादलाज्यौ सिंगारी ५०

कवित्त

धर्म सुत धाम जान जमुना निकट मान
 सर्व मेद जज्ञ कौ बनायौ व्योत पूर है
 पत्र फल फूल सब औषध समूल रस
 षट अनतूल धात धान धन भूर है
 अंडज जरायुज औस्वेद उज्जिजहवि
 करौ पूरनाहुति चकत्ता कुल मूर है
 औजकी अग्नि इंद्रपुरसो अग्नि कुंड
 होता श्री सुजान जजमान मनसूर है ॥ ५१

दुपई छंद

कलिकी आदि कूरमघवाने वृजपै कोपु जतायो है
 वही अकस धरि श्री व्रजेस सुत इन्द्र पुरहिँ लुटवायो है ॥ ५२

हरगीत छंद

भूपाल पालक भूमि पति वदने सनंद सुजान हैं
 जानै दिली दल दक्खिनी कोने महा कलिकान हैं
 ताकौ चरित्र कळूक सुदन कह्यौ छंद वनाइ कै
 दिल्ली लुटाइय पुनिदहाइय दुतिय अळू सुनाइ कै ॥ ५३
 इति द्वितीय अळू

छंद त्रिभंगी

सत सहसौं धावत अयुतौ आवत लच्छौ पावत भाल धरौ
 सरज गुन गावत त्रिद बुलावत जग ललचावत चाल परौ

कोटि भंगा
परी विजुदरै
जेयौ सतायौ
हरे भौन न्यारे
नौ दै हँकारे
रूप कीता
जौ सिंगारौ५०

सबही विधि ताजा सकल समाजा छिनमें राजा रंक किए
ज्यों धनपति धावै सुरग न पावै हाथ लड़ावै हरष हिए ॥ १
हिय संकत नाहीं आवत जाहों खाली नाहीं गोद* भरे
जैसी गति लंका करी अतंका रघुकुल बड़ा आनि अरे
ज्यों रच्छसखंडे यमन बिहंडे जदुकुल चंडे सुखरासी
जलधरजिमि गज्जत वारिद वज्जत यौधुनिसज्जतव्रजवासी ॥ २
व्रजवासी सगरे करि करि दगरे दिह्यो वगरे लूटि करै
मनसूर विचारै अब को रारै याहि संभारै संक भरै
सुरजहिं बुलायौ कहि समुभायौ सोदलु हायौ समुहायौ
अब लूटहि थंभौ जंगहिं रंभौ करौ अचंभौ मन भायौ ॥ ३

दोहा

मन भायौ हूँ है सबै सुरज कही नवाव
अबमें लूटहि वंद करि लैहौ जंग सिताव

छंद अनुगीत

यौं कहि सिताव सुजान उडिय मनहुं तुडिय ईस
दिग बोलि सिंह जवाहरै किय हुकुम विस्वावीस
अब फौज राखहु एकठी अरु करहु लूटहि वंद
सुत तो बिना यहको करै नहिं आन कौ परवंद
यह सुनत जाहर सुत जवाहर तात हुकुम वजाइ
तिहिं वार हूँ असवार धाइय दई लूट मिटाइ
ज्यों वायु के वस वारि वाहक मंत्र के उतपात
त्यों सलभसावरके प्रयोगहिं छिनक में उड़िजात
लखि ऊर्ज नामो वदनतै है तारकौ विस्तार
त्यों श्री जवाहर नै कियौ सब लूटकौ परिहार
पुनि सैन सज्जिय पटह बज्जिय गज गरज्जि हयंद
यौं सुनतहो मनसूर चडडिय दैन दिह्यि दंड
दुहुदल उमंडिय रज घुमंडिय भावुजा के तीर
सुत सहित सुरज सरपट्यो सजि सुभट संग वजीर
उत सादला सुनजीमखां अरु खानदौरा पूत

* पाठान्तर-भेद

६ ॥ ५१

१ है
वायौ है ॥ ५२

हैं

कैं ॥ ५३

प्ररो,
रतौ

धरकै अरावौ अग रूप्पिय कोठरा मजबूत
 इत सहर दिल्ली उताहि जमुना मद्धि वडिढिय भीर
 कुरुखेत ज्यौ सुत अंध पंडव रचिय जुद्ध गंभीर
 तहँ तुमलनह गरह उडिडय रुह बुढिय काल
 हरष्यौ कपालो दैन ताली हेत माल कपाल
 गंधर्व किन्नर अपहरा भइ गगन में अति भीर
 रसमसो चंडीकसमसो जग जुगिनी जुतवीर
 मसहार, काप नभ पुराए धरनि धाप स्यार
 भुवभर भरानी भय दवानी खर खरानी व्यार
 लगे कूर धरषन सूर हरषन दुहँ परषन वार
 दल प्रवल घोर घटा जुरी रस सार वरसन हार
 उत साहिअहमद सुभट रूप्पिय इतहि सफुदर जंग
 तिहि संग सूरज अरु जवाहर ठठिय जंग अभंग*
 तहँ छुटत बान भयान सहसन रहकला हथनाल
 जज्जाल पुनि धुरनाल अयु तन जवर जंग कराल
 अगगगग अगगग अगगगं सगगसग गगसंन
 धगगग धगगगग धगगग धंमांक धुंकर धन
 धधकार धधधधधध धंधू धाई धूमक धाइ
 भभकंत भक्क भड़ाइ भंकत भडडडडंभ भाइ
 भंनात भद् भड़ाक भड़ भड़ भभक भूरि भयान
 भडकंत भभकत भभभभंभटभेष भासतभान
 अति घोर घोष घुरगौ जहां घर घरत जमुना नीर
 भर भरत गोली गोल ओला इंद्रपुर के तौर ॥ ५

सारंग छंद

छाया महा धूम धूली घटा घोर उठै जहां रंजकै विज्जु सी जोर
 पज्जै धनी तोप गज्जै निरझार देखै दुहँ सैन के जात आकार
 धुंधी घरा धूसली धूम गुझार मानौ प्रलैकाल कौ घोर आंधियार
 ओलानु के भेस गोलानु के मेह फोरै घने मुंड डोरै कहुं देह
 बौछारि गोलीनुकीचारिहुंओर बानौन की घोर मानौ उड़ै मोर

१ भीर
गंभीर
ल
रूपाल
१ भीर
र
शार
यार
धार
हार
जंग
प्रसंग*
ल
ल

लुट्टे कहुं वाज फुट्टे कहुंभाल गोलानु की गैद खेलैं मानैं काल
सन्नात घन्नात फन्नात नासांस भासै नहीं भानघोर आस आकास
तामैं घुर्यौघोषज्यौगाजकौपात कै सेलके सीसपै वज्र को घात
सहुं सुन्यौकै गरहुं लखी नैन भैचक्र से सूर ठाड़े दुहुं सैन
नीचैं तपै भूमि ऊपर तपै भान भारी भयदान जारैं जगत प्रान
या हाल कौ देखि सूजा भर्यौतेह बोल्यौ तज्यौ वीरहो संक संदेह
है हैलख्यौहाल गोपाल जोभाल पतौ भयजाल है भूत के ख्याल
है भाग पूरे सुदिह्यौ लह्यौ खेत है स्वामकौ काम कालिंदरी रेत
यातैं गहौ खेत अमौ पगो देत या तोपखाने घरो चार मैं लेत
यौ भाषि सूज्या लख्यौ पूतकीघोर ठाड़ौ हुतौ पास ज्यौ भान हैभोर
भारथ्य मैं भीम पारथ्य के मान कंसारि ज्यौ काम बैरीन के जान
दोऊ महाबीर दिह्यौ रुपे धोर लंका खगे राम ज्यौ लछमना घोर
सूजा कहैं वै न सुने सवै सैन मुखछौं धरे हथ्य रत्ते किए नैन
हथ्यैगहे सेल लत्तौ तुरीहंकि जैसैं कपि जूह लंका परैं दंकि
संका तजैं दीह डंकानु कौ देत हंका करैं वीर वंका दिलीहेत ॥ ६

दोहा

सेल सांग समसेरसर गहै भुसंडो हथ्य

मसकि मसकि वानीनु कौं हल्ल करी इक सथ्य ॥ ७

छंद हनूफाल

सबते अग गोकुल राम	कुंभानी प्रताप उदाम
सिंह भरथ्य सूरतिराम	धरिहिय स्वाम काम उदाम
व्रजसिंह वंस कौ चहुंवान	स्यौसिंह है गदाल अमान
तिरखा जादवां सुलतान	भीखाराम सिंह गुमान
मोहनराम द्विज बल धाम	राजाराम दौलति राम
बल्लु घोर बाला बीर	हरि बलराम कृष्ण गंभीर
तिहिं को पुट्टिघाइय छिप्र	हरि नागर चमूपति विप्र
किरपा राम दानी राम	दुरजनसिंह मुहकम नाम
दबट्यौ जेअ सुभट समूह	वह बलिराम लेत फतूह
रनसिंह उदैसिंह खुस्याल	हरिवलिराम छत्तर साल
मेदां जैतसिंह संतोष	पहोपा रतनसिंह सरोष

१ नीर
र ॥ ५

जुसी जेअ
त आकार
घोर घंघियार
१ कहुं देह
नौ उहुं मोर

किरपा विप्र लक्ष्मन दास अरु जैकृष्ण मनसा पास
 तोफा स्याम सिंह सुजोध धीरज सिंह भीम अरोध
 सकता और दाता दौर पाखरमल्ल पारी रौर
 उदभट सुभट लै इक सथ हरनारइनौ समरथ
 तोमर रामचंद तिलोक ठाकरदास सैंगर थोक
 धनसिंह गौर गंगाराम फत्तेऊधमासुतस्याम
 हरमुख रतीराम अजीत प्रोहित है धर्मद अमीत
 सेखावत उमेद प्रचंड बलभ सिंह कमधुजचंड
 स्यामहु सिंह थानापूत हरजी राम जो मजवूत
 पैमा प्रथी सिंह पमार मंगू सदा राम अपार
 मंत्री सदा राम सुकुद्ध राजू रतन सिंह अरुद्ध
 नाथूराम खैमाविप्र वाला और गिरिधर छिप्र
 हरि सिंह हठी सिंह अजीत वकसीराम जंग अभीत
 जैसिंह तुला हठी जोर बलका अमरसिंह * कठोर
 साहिवराम जालिम जीत रंजूसदाराम सुनीति
 दलामेव साकिरखान गुलखाँकिते और पठान
 हैपुरुषोत्तमौ श्रीराम मेदाविजैराम उदाम
 बहादुर सिंह औऔधूत कन्हैराम वैदा † पूत
 साजै सूर बहु सावन्त ‡ श्रीगुरु रामकृष्ण महन्त
 सुत कुसलेस सूरतिराम मुहकमसिंह उद्धत नाम
 हैसुखराम मातुल उद्ध स्यौसिंह उदैमान समुद्ध
 देवीसिंह औ अखैसिंग सूरज अनुजधाइयधिङ्ग
 तिनके मद्धि सिंहसुजान नवग्रह जूह जैसैमान
 सिंहदलेल सिंहखुस्याल मेदहुसिंह वजपतलाल
 उदभट सुभटसिंह भवान वीरनराइनौ बलवान
 बंकेमानसिंह गुमान उद्धतराम बलमंतवान
 बुधिवल सभाराम बिलन्द ए वदनेस भूपतिनन्द
 एते श्रीजवाहिर सङ्ग षटमुख सहित गन ज्यौ जङ्ग ॥८

* पाठांतर—सभर सिंह

† पाठांतर—वैदा

‡ पाठान्तर—वह गुरु

देहा

सेरसिंह रनजीत अरु जैतसिंह हठिसिंग
सिंहअनूपचंदौल किय भूप अवारि अरिङ्ग ॥ ९
उतहि अहम्मदसाहि दल इत मनसूर सुजान
इन्द्रप्रस्थ जमुना निकट करौ घोर घमसान ॥ १०

छन्द संजुता

घमसान घोर जहां घुरौ	तिहिं जुद्धतै भट ना मुरौ
गति मंद मन्द हयन्द की	सुपदाति घोर गयन्द की
सुधि धारि दिह्ली कोट की	इत दिष्टि सूरज जोट की
अतिघोर मार जहां घुरौ	दसह दिसा भई धुन्धरी
धरधरन्धरन्धरधरं	भड़भभरम्भड़भभरं
तड़ तत्तरं तड़ तत्तरं	कड़ ककरं कड़ ककरं
घड़ घघरं घड़ घघरं	भरभभभरंभरभभभरं
अर ररं अर ररं	सर ररं सर ररं
धर ररं धर ररं	ढर ररं ढर ररं
खर ररं खरररं	फर ररं फर ररं
कड़ डड़डं कड़डड़डं	सड़डड़डं सड़डड़डं
बहुसह कौ इक सह है	तमघोर धूम गरह है
जगअन्त कौ अंधियार सौ	रितुसोत कौ नीहार सौ
छुटि वान भासत भासते	ग्रहपात जिमि आकासते
मषसर्व धूम महाल सी	मनुकाल राति करालसी
सरसैकरौ सर राहटे	लखि ब्याल ज्वाल उछाहटे
नर वाज कुञ्जर खाहटे	विलपाइ मानहुं चाहटे
लगि गोलगोल घराहटे	लखि काहरौ थरराहटे
मुखमर्दकै मरराहटे	भुजदण्ड होत फराहटे
चहुंओर गोलिनुकी भरी	छुटिसारकी मनु फुलभरी
करिधार कुम्भकरी फिरैं	पिलवान अंकुस दै भिरैं
लगियौ तुरङ्गनि थरथरा	नथुनान लगिय फरफरा
इहि भाति दुहुं दल सांकरौ	फर भूमि घोर निसाकरी
भुजदण्ड कण्डित उड़िय	कहुं जंघ ऊर गुड़िय

मनसा पास
सिंह भीम बरोध
पारो रार
समरथ
सैंग धोक
सुतस्याम
पमं प्रमीत
कमधुजचंद
मो मजवूत
गम प्रपार
सिंह वरुद
गिरिधर द्विप
प्रमीत
सिंह कठोर
सुनोति
घोर पगान
प्रशाम
विदा पूत
महन्त
उदत नाम
सुमान समुद
धारपाधिक
सैमान
प्रपतलाल
बलवान
प्रमंतवान
पतिनन्द
स गन ज्यो जङ्ग ॥८

कहुं रुण्ड मुण्डनु रुण्ड है
 लगि गोल फूटत पेट है
 महि होत श्रोनितलाल सी
 गजवाज श्रोनित यौ भरै
 तिहिंवार रामसुचन्द नै
 धनुवान हथ्य सम्भार कै
 निजखेत जान हरषियौ
 तबही सुगोली लगियौ
 वहधीर वीरहिरङ्गतै
 सत दौरि सूरतिरामनै
 गुलतासुगोली सौं फुटी
 तुलसी फुट्यौ पपहेरिया
 बहुतै सुभट जहां फुटे
 बहु होत लोटक पोटीहो

कहुं कुण्ड है कहुं डुण्ड है
 मनु देत काल चपेट है
 फुटि जात रङ्ग पखाल सी
 टुतिढाक फूलन की धरै
 हयहङ्कि जुद्ध विलन्द नै
 हित स्वाम कौ उरधार कै
 सरसार धार वरषियौ
 उरफोरि श्रोनित जगियौ
 नहिंवाग मोरिय जङ्गतै
 किय हल जुद्ध मचावनै
 करकी न वाग तऊ लुटी
 तिहिं जाय सुरपुर हेरिया
 गोली खुटे धरनी लुटे
 तऊ जहू ठट्ट हटे नहीं ॥ ११

कवित्त

श्रोनित अरघ ढारि लुत्थि जुत्थि पावड़े दे
 दारु धूम धूप दीप रङ्गक की ज्वालिका
 चरवी कौ चन्दन पुहुप पल टूकनु के अछलत
 अखण्ड गोला गोलिनु की चालिका
 नैवेद्य नीकौ साहि सहित दिली कौ दल
 कामना विचारो मनसूर पन पालिका
 कोटराके निकट विकट जङ्ग जोरि* सूजा भली
 विधि पूजाकै प्रसन्न कीनी कालिका ॥ १२

छन्दत्रोटक

तिहि औसर सिंह सुजान तन अतिसिंह जवाहिर रोस मन
 हय हङ्कि धमङ्कि उठाइ रन जिमि सिंह क्वा कदि सैनधन
 वरषा जहू गोलिय गोलनुकी गरजै बहुबानन बोलनु की
 चमकै वरछा जिमि विज्जु छटा उमड़े पुरन्द सुभट घटा

(१७१)

बरसा सरसार अचूकन की वहु तोप जजाल बंदूकन की
 तित जाहरसिंह जवाहर भौ तिहिं ठाहर जुद्ध अठाहर भौ
 इत उत्त धमाधम खूब भई कहु साहि चमू हहराइ गई
 फुटमुण्ड अनेकनु रुण्ड गिरे वहु गोलनु सौं गजवाज खिरे
 कहुं अंग उड़े गति चंगनु की लखि दाबहिं देह पतंगन की
 कहुं अंतन दंतन पांति परी मनु रेसम रंगनि सूकि धरी
 वहु लुथिनि श्रोनित धारभरै मनु भारथ रूप अपार धरै
 अति उद्धत जुद्धत रुद्ध रयौ उहुं आकुल व्याकुल जोग भयौ ॥१३॥

कवित्त

तूरातै तरेरदै दरेरनुसौं दिछी दावि
 प्रवल पठानना उड़ायौ पैन पत्तासौ
 कूरम राठौर हाड़ा खोची भौ पँवार राना*
 बानाडारि छूटेवांधि कीनौ एक वत्तासौ
 सूदन सपूत ससिव स अवत सवीर
 ताही दिछीपति कौं लपेटि राख्यौ गत्तासौ
 जाहर जगत्ता है जवाहर प्रताप तत्ता
 जाके करकत्तासौ चकत्ता जारगौ लत्तासौ ॥ १४ ॥

दोहा

प्रवल अरावौ साहिकौ विकट सहरपुठवार
 वृथा जुद्ध करिवौ इहां होत सुभट संहार ॥ १५ ॥
 यों समुभाइ सुजान नैं आइ जवाहर पास
 घरी चारि दिन के रहत डेरनु कियौ निवास ॥ १६ ॥
 जे सच्छत आप सुभट तिनकौ कियौ उपाय
 जिन पायौ पंचत्तु कौं ते जमुना पहुंचाय ॥ १७ ॥

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति बदनसनंद सुजान हैं
 जानें विली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं

* पाठावर-संगार

हैं
 ठ सी
 धरें
 नै
 र कै
 तौ
 यो
 ५
 ३
 १
 या

११

नन
 नन

(१७२)

ताकौ चरित्र कलक सूदन कछौ छन्द बनाइ कै
रन कोटरा तट करिय सुरज अंक तृतीय अघाह कै १८ ॥ ३
इति तृतीय अङ्क ।

छन्द मंथान

सूजाव मन्सूर भेले भए सूर वोल्थी भएँ ताप मन्सूर यौ आप
मेरा तुही अब कै दूसरा रब कीना जु तौ काम पाया बड़ा नाम
लीनी घनी जंग दिल्ली करीदंग लूटा इता लोग लूटा नहीं रोग
दै तोप की ओट दूटा नहीं कोट हैगी मुझै चोट कोया जिन्हें खोट
लीयै तुझै जोट मारौं दिली कोट करना कछु तोहि सो भाषियै मोहि
मन्सूर के वैन सूजा सुने ऐन कीनौ यही तंत दोनौ तवै मंत
रेती तजौ आपु औटगो घनौ तापु लीजै अबै भीलकीजै नहीं ढील
ह्वां आइ हैघोर कालिंदरी तोर तासौं कहा जोर डारै दलै बेर
यातैं उतै माव कीवौ हमैं साव ॥ १

दोहा

इतमें लूटि चुके दिली उतमें रही अदग
ह्वां वे वाहर आइहैं तब ही वाजै खग ॥ २

छंद हंस

सूरज बानी सो सब मानी कूंच करायौ देर न लायौ
दुंदुभि हंके देत अस के डोल दमामैं वाजत आमैं
गोमुख गज्जे तूर गरज्जे हथिय घोरे पैदल थारे
उच्च पताका पार न ताका यौदलुउठगौ ज्यौघनतुठगौ
देत हरेरै भीलहिनेरै देरनु देकै चौकस कैकै
फेरि उमाछौ जुद्धहिं चाछौ सूरज वंका देत अतंका ॥ ३

घत्ता छंद

इसमाइल राजेंद्र गुसाई हे नवाव के हरवल चंड
देसवार है जुदे दिलीसौ सहस सहस हय लै वलवंड
सिंह सुजान सुभट सैनापति सूरत गौर दयौ तिहिं सथ
हरसुख नाम द्विजन में दोरघ लियै भुसंडी सेलनुहथ
वत तैं आइ साहि अहमद भट रुपिय कुपि अरावौ तथ

(१७३)

लागनि लगी परस्पर बीतनि गोली गोल गथ्य लथपथ्य
हय हंकत संकत नहि हंकत चारनौ करत दिली तट दौर
आयुध सजै वज्रै बहु डंका सुरपतिपुर पारी अति रौर ॥ ४

छन्द उद्भुत

दुहुंभोरबन्दूक जहँचलतवेचूक रवहोतधुंधूक किलकारकहुंकूक
कहुंधनुषटंकार जिहिवानभंकार भटदेतहङ्कार सङ्कारमुहसूक
कहुंदेखिदपटंत गजवाजभपटंत अरिव्यूहलपटंत रपटंतकहुंचूक
समसेरसटकंतसरसेलफटकंतकहुंजातहटकंतलटकंतलगिझूक ॥ ५
हुवजामजबदेइ दुहुंरुद्रसमोइ इमिजुद्धजहँहोइ उहिंकोइमहुटंत
उतसाहिदलजोरकियसखभरघोरदियरत्तरसमो रचहुभोरखुहटंत
तबगौरसमरथ्य सूरत्तिइकसथ्य राजेंद्रगिरितथ्य वड़हथ्यचुहठंत
लियजंगगहिसंग बहुभंगरनरंग जहँहोतभटभंग उतमंग लुहटंत ॥ ६

छप्पय

तिहिं फरमंडल बीच परिय गोलिय भर भरभर
तहँ फुटिय करगौर भ्रौन छुटिय छत छर छर
तऊ न चलिय धीर वीर भगहिँ हय हंकिय
तथ्यहिं हरसुखविप्र छिप्र धाइय अनसंकिय
तबही अचान राजेंद्र गिरि लगि गोलो तनतैँ छुट्यौ
वह सूर समर मधि स्वाम हित परमहंस गति कौं बुट्यौ ॥ ७

दोहा

मर्यौ सुन्यौ राजेंद्रगिरि मन वजोर दुख पाइ
जुद्धभूमितैँ सुभट सब डेरनु लिप बुलाइ ॥ ८

वसंत तिलका

अत्यंत शोक मत्तसूरहिं चिनहायौ राजेंद्र बाजु फरमंडल काम आयौ
स्यौही नवाब उमराउ गिरै बुलायौ दैकैंगय दसिरपाउगदीलसायौ ॥ ९

दोहा

थपि गहौ राजेंद्र की गिरि उमराउ अनूप
विदा किए फिरि जुद्ध कौं इकतैँ दोइ सरूप ॥ १०

छंद तोमर

तब सूरसिंह सुजान	बकसी महा बलवान
कुल गौर गोकुलराम	चित चाहिकै संग्राम
लखि भ्रात घाइल हथ	हुव क्रोध के बस तथ
चढ़ियौ अनीक सजाइ	गहरौ निसान वजाइ
लहि हुकुमसिंह सुजान	रन कौं चलयौ बलवान
पहुंच्यौ दिली तटधाइ	दिय धूम धाम मचाइ
उत साहि सैन सँघट्ट	गहि ओट तोप गरट्ट
इतजट्ट ठट्ट अघट्ट	किय घोर सैन भपट्ट
परहेत देत धवान	करि लावदार दवान
कहुं सिंधिवान कमान	धरि मुट्ठि हथ कृपान
इत उत्त चाहि अभीत	हित स्वाम प्रीत प्रतीत
तहां आइयो भटसाहि	भुव वाढ़िकै समुहाहि
धरि अग्र स्याम निसान	कबची कितेक जवान
कितने कि भालनबंद	करहौं हय द निछंद
वरछी अनेकनसांग	सम्सेर सिप्पर आंग
वढ़ियो सुखेत सभोज	चढ़ियो कुमेतनिवाज
लखियै सु बकसी वीर	हुवरोस कै बस धीर
कहियौ सुभट्टनुटेर	रन लेउ होहि न शेर ॥ ११

छन्द गंगोदक

यौकही गोकुला दौकुला सुख
 सोमोकला सूरसामंत सौ ता घरी
 देखि दिल्ली दले दीह डंकानु दै
 दैर कौनी वली देत सखौ भरी
 आपने आपने वाज ताते किय
 नैन राते मनौ भानकी भाभरी
 टाप ठन्नाहटे होत फन्नाहटे
 गोलियौ आहटे रंजकौ की भरी ॥ १२
 चंडको दंड सौ बान संधै किते

११ बलवान
 इके संग्राम
 के बस तथ्य
 इन वज्राह
 ली बलवान
 शम मचाह
 सोप गरह
 सैन भपह
 शर दवान
 पथ रुपान
 मोत प्रतोत
 समुहाहि
 ५ जवान
 निछंद
 २ पांग
 निषोज
 स कीर
 न शेर ॥ ११

(१७५)

सेल समहारिके सांग भोजे भटा
 काढ़ि समसेर कौ वीर धाप घने
 धूम धारा धरै विजु की सी छटा
 धद्धरा धद्धरी वद्धरा से गजें
 लेउरे लेउ दात्यूरे के कीरटा
 मास आसाढ़ की आपगा सी बढी
 सूरसैना धई तोरि दिल्ली तटा ॥ १३
 धाड़ लुट्टे बली देह फुट्टे किए
 कोइ लुट्टे मही बाज लुट्टे जही
 गौर की दौर की दौर भारी परी
 मारि गोलीनु सां साहि सेना दही
 वानकम्मान दम्मान देते भप
 सेल समसेर की चोट नाहीं वही
 जट्ट ठठ्ठौ सही जिच्छि किच्छी लही
 दिष्टि दिल्ली दलौ राह दिल्ली गही ॥ १४
 फेरि पाछै लग्यौ देखि वैरी भग्यौ
 सेल सांगौ खग्यौ गौर नै शैरकी
 हंकि वाजो धयौ छोहकै उगयौ
 सिंह रूपै भयौ मृग पै दौर की
 चाहि बेऊ मुरे दै दवानौ जुरे
 धम्म धम्मा घुरे चार ज्यौ दौर की
 लागि गोली गिर्यौ गोकुला ज्यौ खिर्यौ
 प्रान नाहीं घिर्यौ स्वर्ग में दौर की ॥ १५

देहा

लगत भुसंडी मर्म छत गौर कही यह बात
 छातौ भांडौ फूटि गौ धंभौ न वैरी जात ॥ १६
 वकसी कौ पेसौ बचन * मेघ राज रन धीर
 गौर उठाइ हय द तै घर्यौ गय द सरीर ॥ १७

१२

छन्द गीतिका

इहि छे उपाइ दिलीस सैनहिं जात वार न लगाहीं
 गज बाज पैदल छोड़ि कै थल जुद्ध तैं भल भगहीं
 पुनि आइ सूरज के सुभदनु दिक्खि गोकुलरामकैं
 रन भूमि तैं धरिलै चले गज पाइ दुःख उदाम कैं
 सुनि सिंह सूरज ता घरी रनजित्ति बकसी जुभुभियै
 मनलै उसास उदास दूतहिं फेरि बात न बुभुभियै
 पुनि गौर कैं बरठौर भेजिय सब्ब सूरन सथ्य दै
 गति धाड़कैं परलोक की रविलोक की विधि हथ्य दै
 ढिंग आय सूरज मल्ल के मनसूरने तबयै कहौ
 अब कूचही करना सही इस खेत सैं न वफा लही
 नहिं चून घीव सबील हो तसदीह सबही की सही
 न हरीफ वाहर आवते जिस वासतैं तुमने गही
 मत मानिकैं मनसूर कौ बदनेसनंद कबूलकैं
 तिहिं वार कूच कराइयौ सुचिराक दिल्ली कूल कैं
 करि एक दोइ मुकाम दोउन फेरि कैं तिल पत्तिली
 तह ईत बहदिय मेघ चहदिय फेरि जंग सुमत्तिली ॥ १८

उलाला छन्द

यह खबर गाजदीखान पै साहिजिहानाबाद हुव
 मनसूर सहित सूरज वली उलटि गए तिल पत्ति धुव ॥ १९

छन्द नोसानी

पोता मुलक निजामदा सुनि एही गल्लौ
 हुकुम मांगिया साहि सैं हुय भगैं चल्लौ
 फुरमाया पतिसाहि भी अच्छी दिल जोई
 अग अरावा लें चढ़ौ हर बल करि कोई
 करि सलाम रुखसद हुमा गाजुदौ आया
 संग पठान रहेल लै पुर ही तट छाया
 तद गाजदी खान जी दंती मति ल्याया

यमौ
 हुकुम
 ईदल
 एही
 काल
 यह
 हरि
 ब्रह्म
 बल्ल
 कूरम
 सैं ग
 मोहन
 सूरि
 हरन
 राजा
 सबै
 सेल
 हम्मौ
 घरी
 देखि
 जंग
 तिस
 वय्ये

नि
 उ
 के
 जी

शरावर
 शरावर

(१७७)

अगँ गढ़ी मिदान दी * रहेल पठाया
हुकम गाजदीखानदा रहेलौ पाया
हैदल पैदल सथ्य लै तदही चढ़ि धाया
एही फौज रहेल दी फर रूप लखाया
कालजमन करि कोह नू काविल सँ धाया
यह संदेस सूरज बली तिलपति मैं सुन्ना
हरषि उठा सब अंग मैं रन काजँ दुन्ना
अद्धी निसां गई जवै बलिराम बुलाया
बल्लू बाला दुरजनैं आगँ भिजवाया
कूरम सिंह प्रताप भी अरु गोकुल सेना
सै गर ठाकुर दास और हरनागर पैना
मौहन हरसुख स्यामसिंह हरिवल स्यौसिंगा
सूरतिराम कटारिया अरु धौं कलधिंगा
हरनाराइन पाखरा सुखराम असंका
राजा गुजर भरथसिंह चढ़िया भट वंका†
सवै जवाहरसिंहदै भट सूरज भेजे
सेल सांग वंदूक सर हथ्यौ धरि नेजे
हम्मौ सुभट चढ़ाया सूरज विन डंका
घरी चारि पीछू चढ्यौ आपुन अनसंका
देखि गढ़ी मैदान दी वैरी दल दिहा
जंग बिचारन लगिअ चढ़ि वाजिनु पिहा
तिस वेलां सूरज बली करिकै धकपेला
उथ्यौ ही बहु सूर लै हुंवा भट भेला ॥ २०

देहा

निरषि रहेले की चमू श्री सुजान किय क्रुद्ध
दुष्ट दिष्ट आप भलै कह्यौ चाहि चित जुद्ध ॥ २१
देव देव हरिदेव की जाइ दुहाई लच्छ
जो बिपच्छ नहिं तच्छ है गच्छत सच्छत अच्छ ॥ २२

* पाठांतर = चढ़ि मैदान दी

† पाठांतर = दै डङ्गा

१ लम्हाई
२ लम्हाई
३ लम्हाई
४ लम्हाई
५ लम्हाई
६ लम्हाई
७ लम्हाई
८ लम्हाई
९ लम्हाई
१० लम्हाई

११ लम्हाई
१२ लम्हाई
१३ लम्हाई
१४ लम्हाई
१५ लम्हाई

१६ लम्हाई
१७ लम्हाई
१८ लम्हाई
१९ लम्हाई
२० लम्हाई

छन्द त्रिभंगी

सुनि सूरजवानी रिस लपटानी धरनि सिहानी भूखभरी
पलके आहारी ललके भारी अंबरचारी भीर करी
गिरि धूरि जटी के जुद्ध जुटी के मख कुटी के रौर परी
मारु सुरलीना आवज बीना नृत्यहिं कीना तेह घरी ॥ २३

देहा

तेह घरी असि करकरी सूरज परगन चाहि
कहौ सूरसेनाधिपनु* सत्रु न जीवत जाहि ॥ २४

छन्द भुजंगप्रयात

जहाँ सूरके सूरलै सेल सांगै चहुँओरतै घोरयौ सोर साजा
सतौं संधि कै तीर को दंडतानै सहस्रौं सरोही लियै हंकि वाजा
किते तेग तेगा जुनव्वीनुवारे भुसंडीनु कौ छंडिकै फेरि गाजा
धरालेहुरे लेहुरे लेहु छाँयौ कहुँ देहुरे देहुरे देहु वाजा ॥ २५
घलामेल हूँ कै चलासेल सांगै ढलामेल दोनौ नला बीच भाजा
अलाकै हँकारे रुहेला सँभारे भलावाल सारे डला श्रौन ताजा
तरातर तरातर यहै सद सुन्यौ धराधर धराधर परे स्वाम काजा
भमाभमभमाभमवजैसारधारा लखैजुद्धकौदेवतादैत्यलाजा ॥ २६

वृद्धिनाराच छन्द

जुटे रुहेले जट्टहीं	न कोई वीर हट्टहीं
सुपक एक डट्टहीं	भपट्टहीं लपट्टहीं
अनेक अग वाहट्टहीं	कितेक मार छाँहट्टहीं
किते परे कराहट्टहीं	हकार सौं रपट्टहीं
कहुँक हथथ हथथहीं	भरै कहुँक वथथहीं
परे सु लथथ पथथहीं	सपट्टिकै चपट्टहीं
उताल चालहालसौं	धवत कोह ज्वाल सौं

* पाठांतर = सेनाधिपति

† पाठांतर = कवय्य

अभंगी

ॐ धर्म सिखायो भूषणरी
हरिचारी घोर करी
॥ हे भव कुरो के रौर परी
भूषणरी कोला तह परी ॥ २३

१

॥ सत्य भाहि
ग्रीष्म भाहि ॥ २४

ग्रीष्मपात

॥ श्रीगुरु पोरयौ सार साजा
एयो सरोही लिये हँकि वाजा
एतनु को छँकि केरि गाजा
॥ रौर रौर देहु वाजा ॥ २५
कालिदास रौनो नला घीच भाजा
ललकेल सारे डला भोन ताजा
भरार बराबर परे स्याम काजा
॥ श्रीगुरु पोरयौ सार साजा ॥ २६

॥ रुन्द

॥ रौं वीर हरौ
कचुहौ सपहौ
किलेक मार हाहौ
कार सी रपहौ
॥ कचुका पपहौ
पण्डके चपहौ
॥ न कोह जाल सी

(१७६)

गहैं कृवाल ढाल सैं	अरीनुकौ कपटहौ ॥ २७
धमंकि धिंग धावहौ	तमंकि तेग आवहौ
भमंकि कै चलावहौ	बुलावहौ बलकि कै
कटंत कंध* कुंडला	छुटंत बाहु डुंडला
फटंत पेटा रुंडला	दुलावहौ ढलकि कै
लरै कहुं छुराछुरी	परै कवंध रातुरी
कितेक टूटि जाछुरी	हुलावहौ हलकि कै
भलकि भाल भालहौ	भलकि भालभालहौ
रलकि घाव घालहौ	घुलावहौ घलकि कै ॥ २८

छन्द नीसानी

उथ्यौ ठाकुरदास भी सैंगर समुहाया
हथ्यौ सक्ति संभालिया वैरी बहु पाया
कै कि सांग रहेल दे उर अंदर घत्ती
देखी दूजै आबदी भारी कर कत्ती
जिसी हथसै सै हथी छुट्टी दगड्टी
तिसी हथ दै उप्परां रहेले सट्टी
करकट्टा जिस डुंड सै सैंगर यैं सोहा
मनौ दंड लै काल भी रन मंडल कोहा
मार करी उस संथ यैं मथी पर सैना
हुवा तथ्य समसेर दा लै ना कै दैना
स्यामसिंह गहि सेलनू धसिजंग अखारे
तने घत्ते रत्ते अरीफर मंडल पारे
इक घावतिस जंघा में रहेलौ कीता
तौभी वीर न हाट्टिया अगौ पग दीता
हरि नाराइन तिस घट्टी वाजी करि तत्ता
घसा कुरंगौ जूह मै पंचानन मत्ता
किते रहेले तिन किए कचौ सैं लत्ता

* पाठांतर—कंद

† पाठांतर—बाहु

‡ पाठांतर—जंग

(१८०)

अनै मुं ड फर पाड़िये धर थर फरकसा
हम्मौ बोरै दीचली जहां सांग सिराही
भारि रहेलौं दी अनौ किच्ची रंग लोही
हिकहिक देहीय नूँ सरसांगौं फोड़ा
हिक सीस भुज पाइ भी तरवारौं तोड़ा
कोइ कर्न विहूनया नासा बिन कोई
झौंद फटे कोई पड़े स्वासा बिनु होई
कोई अस्यौं* फिरावदे हूबे रन रुते
कोई प्रान गंवाइयां सुख सेजौं सूते
कहीं अंत छुटे पड़े कहिं दंत उघारे
कहुं बिना हूं मुं ड ले सीने गहि फारे
मारु मारु मुख अक्खदे दे दे हकारे
सेख रहेले भागिए छुट्टा ककारे
गिरते पड़ते घत्तिये करिकत्ते कत्ते
सूरज सूर पुकारदे सूरज दी फत्ते ॥ २९

देहा अमृतधुनि

कहिं कहिं अति श्रोनित उमगि गहिं गहिं अरिनु उदंड
खदि धाइय वदनेस सुत खग्ग गहि रनमंड
खग्ग गहि रनमंड समर उदंड हलनि
खंडकरि नित खंडत खलनि विमुंडदरनि
भुंड कटिय समुंड पफटिय चमुंड जयरहि
तंडव करत उमंडत धरनि वितुंड कहि कहि ॥ ३०

कवित्त

हेला देत आए वगमेला ज्यौं रहेला बीर
मैदान गद्दी के तीर सुभट महारथी
तेई काटि डारे रुंड मुंड झुंड डारैदै
चमुंडनु अहारे भौ प्रसंग जुद्ध पारथी
कघिर के थारे परे बीच असरारे पारे

(१८१)

रविजा मिलाप कौ सुरेस भयो सारथी
सूदन सुजानसिंह विक्रम निधान मंहि
जान वान गंगा कौ करी कवान भारथी ॥ ३१

छंद मालिनी

सुभट सिमटि आण सुर के पास घाण
हरषनु हिय छाण जंग की जैति पाण
धन धन रव लाण कंठसौं लै लगाण
समर धम मिटाण मान सनमान पाण ॥ ३२

हरगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति वदनेस नंद सुजान हैं
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महाकलकान है
ताकौ चरित्र कल्लुक सूदन कसौ छंद वनाइकें
रन मै गढ़ी मैदान पाह्य मंक चौथैं आइ कैं ॥ ३३ ॥

इति चतुर्थ अङ्क । ४

छंद सादरा

दिन वीत दस बीस पुनि धारि मन रीस
सजि सैन भयदैन चढ़ि नंदवजईस
लिय साही तुकलान गढ़ भूमि बलवान
जहं कालिकाथान रन देखि मरदान ॥ १

छन्द निसिपालिका

सूरदल देखि उत साहि बलसज्जियो
वाज गजराज गजि* तूर बहुवज्जियौ
केतफहरान गहरान घन दुंदुभी
सख खहरान ठहरान चकचु धुभी
वान किरवान तन वान धरि कढ़दिये
जान भरिसान मरदान बहुबहदिये
होइ असवार तिहिंवार इक ओरतैं
गोल करि गोल बहु मोल हय सोरतैं ॥ २

छन्द रुचिरा

साहि अनीक विलोकि वदन सुत चरहिं बुलाइ कह्यौ तबही
है इन मैं को को सेनापति दूत दुहुं कर जोरि कही ॥ ३

छन्द पावकुलक

ए जहां स्याम निसाननुवारे ते पठान ठाढ़े रन रारे
है जित धुजा नील सित चंडी सो रुहेल को सैन घुमंडी
जहां भगोही उड़ै पताका तहां दक्खिनी जंग चलाका
लाल सेत जहां ए धुजडाही यहै सैन वकसी की बाढ़ी
जहां सेल सांगैं बहु भाले सो अंबरी रिसाले वाले
जिन के वाज करत बहु छंदा जे वाला साही मति मंदा
तिनके निकट गरूर सिपाही बेजानौ सब आला साही
लिए चारु वाजी वल पूरे नीम वास ए हैं रन रुरे
जो यह गोल अंग बढ़ि ठाढ़ी सो सिरदार बदकसी गाढ़ी
जो यह चमू फिरति है दौरी सो सवार पाइक पेसौरी
जहां सदढका धर धरवी ब्रजपति नंद जानिए अरवी
जो भुव स्याम घटा रही दवसी ठाढ़े तहां सुभट रन हवसो
जहां भुसंडिनु कौ भर भारी ते इतबारी निपट हजारी
हैं जहां लाल लाल खल कारे नादिरसाही टोपी वारे
आस पास इनके भय दानौ रुप्यौ तोपखानौ समसानौ
सब की पुट्टि छाह दल चंडौ दे रन दाखिल है बलवंडौ
नाम गाजदीखां बलवंडौ विक्रम बलित बुद्धि परचंडौ
श्रीसुजानसुनिकै चर वानी जुद्ध बुद्धि निहचै मन ठानी
अपने सेनापती बुलाए जंग हेत आगैं रुपवाए
जोजन अर्थ अर्ज पर सैन ना निरखि सूरबल थण्पि सचैना ॥ ४

छन्द मुक्तादाम

करे इक ओर बल्लू बलिराम रुपाइय बीर दुहुं भुजवाम
हरिवल वैरि चमूपति तथ थप्यौ तिनके तटही समरथ
रुप्यो तिहि पुठ* लियै बलघोर चमूपति है हरि नागर जोर

* पाठांतर = पुठ

(१८३)

थप्यो भुज दच्छिन ओर सुनाम सुकूरमसिंह प्रताप उदाम
जुहोँसिवसिंह कियौ बलवान बली ब्रज सिंह रूपौतिहिं थान
लियै किरपा सब नाहर सैन ठहौ तिनके तट हीरन लैन
सहस्र सवार लिए मनसूर किए सुचंदौल सुजान गरूर
कियौ हिय अगगसुभट समाज घमंडिय प्रोहित राज सलाज
रह्यौ सबको पुठवार सुजान दिली दल दावहि कान्ह प्रमान
रञ्चौ अधजोजन व्यूह अनीक बजाइय दुँ दुभि मारुव ठीक ॥५॥

छन्द घतानंद

यौ थपि सिंह सुजान व्यूह अमान सकल सूर सेनाधिपति
सहिय पटह निसान तूर भयान समर हेत चलि मंदगति ॥ ६ ॥
फहरत पीत निसान तड़ित समान कै प्रताप ज्वाला लपट
परगन इंधन जान लखि ललचान लागि उछाह मारुत भपट ॥ ७ ॥
देत कवाँद कमान भरत दवान जग हेत रस वीर लहि
करत हयंदन छँद सुभट विलंद सेल सांग नेजान गहि ॥ ८ ॥

छप्पय

इहि विधि दुहुँ भट पिलिय खिलिय लखि सुभ संधारनि
भट पट मनमथ दहन गोसु तहँ लगिय भारन
स्वान सवार सपट्टि एक रद तथ्य मनाइय
वाम पुट्टि सुखदानि आनि फर मंडल छाइय
पल भषन हार पुलके गगन प्रेतपूत कुहिय किलकि
सज्जिव विमान देबांगना हरषि बदन उट्टिय चिलकि

दोहा

वासर के तीजे पहर साहि सुभट करि रहल
जुटे आइ स्यो सिंह सह लै मरहट भुज भल

छन्द पट्टुडी

उत साहि सुभट मरहट सजोर धाप भुज भलनु दै भकोर
हर हर हकार धर धर धवान भर भर भराक इततै दवान
मुख जयति देव हरिदेव सह भपटै ब्रजेस वीरहु मरह

कड़कंत धनुष करी कवाद सटकंत तीर जुद्धत जवाद
 गटकंत गड़ावड़ होत सेल भड़कंत भुसंडी घाल .मेल
 अड़कंत दुहू हित स्वाम काम फड़कंत तुरंगम हू महाम
 भड़कंत भरत आयुध अनेक खड़कंत अंग अस्तनि कितेक
 रड़कंत इक्क लगि हय चपेट फड़कंत फरहिं भर पिठि पेट
 ठड़कंत देखि परके हयंद धड़कंत नहीं जुद्धत सु छन्द *
 तड़कंत तेग सिप्परनु लागि चड़कंत अस्ति हय टाप भागि
 पड़कंत पड़े सेलनु अरकि घड़कंत घाव श्रोनित सरकि
 तिहिं चौसर गूजर सारदूल नेजा उठाइ धाइय सफूल
 दिय सत्रु हिये मै घाव घोर पुनि काहि तेग भारिय सजेर
 इक दवाटि दक्खिनी ने उ ताल किय गुलफ घाव तेजा दुसाल
 तंह सेनपती स्यौसिंह धाइ हय हंक सेल मेलिय घुमाइ
 ज्यौ छुधित वाज लखिगन कुलंग चुंगल चपेट कर देत भंग †
 छरं इक्क दोइ हाथर चलाई पर लख पथ दोने गिराइ ‡
 तहं एक दक्खिनी दृग बचाइ दिय जंघ मांझ भाला घुमाइ
 स्यौसिंह भयौ सौ सिंह रूप हनि साहि सुभट मृग से अनूप
 हुव लाल लाल बसुधा कराल श्रौनिच जाल ज्यौ कोह ज्वाल
 जहं सेल सांग समसेर ठाल बंदूक बान जझाल जाल
 गहि गहि सुजान भट चंड चाल दिय घोर मार दिय लोह भाल
 मुख मार मार कै भरत सार विकरार भगे दखिनी अपार
 रन बिजय पाइ स्यौसिंह बीर घाइल सुमार फर रुपिय धीर ११

दोहा

विचल पाइ दखिनी निरपि करौ सुदखिनीनु जेर
 नीव वांस सब संग लै परे घमंडी ओर ॥ १२

छन्द भुजंगी

बजी चारिहू ओरतैं टापवाजी मनैं मेह आसाढ़ की बुंद गाजी
 पुकारैं दुहू ओरके बीर हाँ हाँ करी भौंह बांकी चढ़ाई सु बांहां

* पाठांतर—घड़कंत नहीं रव छंद छंद ।

† पाठांतर—चुंग

‡ पाठांतर—पर लख पथ दो वों स्ववाइ ॥

छुटी वान कम्मान दम्मान भारी किहूँ भाल भाले वरच्छी सभारी
इतै जट्ट जुट्टे उतै साहि सैना भिले जुद्धकौं उद्धकै कुद्ध नैना
किहूँ चाप टंकार हंकार पारी किहूँ धूक व दूक मै ज्वाल भारी
किहूँ लैस कत्ती धरत्ती घुमाई किहूँ सैल की रेल हथथौं चलाई
तहां आपने आपने हथथ किन्ने तिनहैं देखिकै अंवरी मोद भिन्ने
टुटे सारं सन्नाह भन्नाहटे सौं परै छूटि कै भूमि खन्नाहटे सौं
भुसंडीनु फुट्टे मही पिट्टि लुट्टे छरौं खाइ दुट्टे सरौं फेरि जुट्टे
किते रत्त मत्ते उमत्ते घुमत्ते तुरत्ते उठे फेरि लै हथथ कत्ते
लरत्ते परन्ते वदक्ती उमंडे दिसा पुव के से जलहा घुमंडे
लखैं यौं वदक्ती चमू माहि पैठे धप सूर सूरज सबै इकैठे
तहां यौं घमंडी गहैं सैल धायौ मनौ द्रौन को पुत्त है छोह छाया
किधौं पूत जमदग्नि कौ जंग रुद्रगौ वदक्ती सहसवाहु पै घाउ बुद्रगौ
हनें सैल सौं जाहि भू मै पटककै सहसवाहु कीसी भुजाले कटक
लखैं त्यौं वदक्ती भरे जी अचंभे लिखे चित्र के से रहे थान थंभे
हुती एक पै त्यार बंदूक त्यौंहीं दई फूंक कै धूक मुठभेर ज्यौंहीं
लगी आन नैजाव भौ जीभ खंडी धुफ्यौं बाजतै त्यौं धरापै घमंडी
गिरगौ देखि कै शत्रु सबै सपट्टे लिए आपने आपने सख कट्टे
पलक लागतै वाजचद्रगौ घमंडी ललकारकै तेगकी जंग मंडी
र ग्यौ रत्त सू हथथ समसेर सोहै मनौ देह धारै रसै जान कोहै
फुटै जावकै जीभयौ कट्टि आई तहां देव नरसिंह की मोह पाई
गहे तेग नंगी करी जंग चंगी हनी साहि की सैनयो औन रंगी
तहां नंद बदनस कै द्रिष्टि दीनी उदैमान कीसी प्रभा अंग भीनी
तुरी तेज कैसै हथी हथथ लिभी हियै देव हरिदेव की याद किन्नी
मृगाधीस जैसै करो जूह दट्टे षगाधीस ज्यौं ब्याल जालै भपट्टे ॥ १३

छन्द त्रिभंगी

भपठ्यौ करि हल्लनि लै भट भल्लनि अरि दल मल्लनि समुहायौ
जित प्रोहित जुद्धगौ गोली फुट्टगौ औनित छुट्टगौ दरसायौ
सरसांगनु बुद्धगौ सेलनु तुद्धगौ घन सम उद्धगौ वरसायौ
धुनि धीर धमंकनि तेग भमंकनि विज्जु चमंकनि सरसायौ ॥ १४
सरसायौ जुद्ध वट्टि विरुद्ध अहिधर कुद्ध ज्यौं रन मै

(१८६)

तिरसल सकत्ती रत्निरत्ती ज्वाल भरत्ती भरि गन मैं
करि खंड निखंडे यमनि उदंडे धरनि विहंडे परचंडे
बहु रुंडनि मुंडनि डुंडनि झुंडनि श्रोनित कुंडनि फरमंडे ॥ १५
फरमंडे हथ्यौ लथ्यक पथ्यौ लुथ्यनु जुथ्यौ काटि करे
घन घाह भभवकृत सेलह वकृत कोह दवकृत जात टरे
बहु सखन घाहत कोह कराहत फिर फिर चाहत भूमि परे
दे दे रव रट्टिय भट्टकपट्टिय डट्टिय कट्टिय भूमि भरे ॥ १६
भरि वथथनिपटके दै दै भटके हयतै पटके श्रौन भरे
अस्तिनुके चटके टापनु वटके अंतनि अठके जाइ परे
केते घट घटके आयुध कटके केते सटके संक भरे
तिहिं सूरज वंका दै रन हंका करि भरि फंका दूरि करे ॥ १७

दाहा

कटे फटे निबटे हटे लखे साहि दल जंग
फटे पाइ सूरजबली लख्यौ सुप्रोहित भंग ॥ १८

कवित्त

द्रोन अघवाई द्रोनी कप अचवाई खाई
साई तै जगाइकै बुभाई प्यास चण्डी की
ताही खेत प्रेतनु पलाकै भट पीठिनुके
मुंडनु के वाट हाट आमिष उदंडी की
सुदन दिलीसदल चाहिकै समर गाहि
साहि की प्रतापानल खग जल ठंडी की
लागिकै भुसुंडी जोभ जाव जुग खंडी तऊ
छंडी है न जंग भंडी कित्ति यों घमंडी की ॥ १९

सौरठा

प्रोहित लख्यौ सुमार हय पै सिंह सुजान नै
ज्यौ तनु लहै करार ल्यौ तुम कौ मैं लै चलौ ॥ २०
कछू भूमि चढ़ि वाज कछू खाट कछू पालकी
लै प्रोहित ब्रजराज दाखिल निज डेरनु भयौ ॥ २१

कवित्त

पाई गननाइक सौ तैंही गननाइकता
त्यो ही दिगपाल दिगपालता प्रतीति की
तेज पायौ रवि तै मजेज सतमष पास
अवनी कौ भोगिवौ अधिक नाथ नीति की
सीलताई ससितै पवित्रताई पावक तै
लाज पाई सिंधु तै सुनीति वेद रीति को
सूदन अभीत सर्वज्ञता सुबुद्धि सूजा
दोनी जगदीस विधि तोही जङ्ग जीति की ॥ २२]

छन्द समानिका

बीतिगे कळुदिना जङ्गके किए बिना
एक घोस भोरहीं दै निसान घोरहीं
है सवार तथ्यहो लै अभीर सथ्यही
सो वजीर आइयौ मन्त्र कौ उपाइयौ
श्रीसुजान पास कौ कूचके प्रकास कौ
थापि मन्त्र ता घरी कूच की हियैं घरी
तबही पयान कै ईति भीति मान कै ॥ २३

तुँग छन्द

उठत प्रबल सैना	कहत सुथल लैना
भनहुं जलद घाप	उमड़ि घुमड़ि आप
हय गय रथ प्यादे	सुतर सुभर लादे
गगन घन पताका	बहु वरन बलाका
धम धमत दमामैं	पटह वजत आमैं

छन्द मनहरन

पयान करौ मनसर सुजान निसान धुजाननु पैयनु पार
विचार हियैं यह खेतहि देत कढ़ै मुदई कहुं भूभि अगार
तजी तिलपत्ति बजी सुरही सुरजो सब सैन बजावत सार
दियै गढ़ बल्लभ कौ पुठवार किए भटभीरनु थान अपार ॥ २५

(१८८)

छन्द मदनहरा

साखवरि पाइ पोता निजाम कौ

अब वजीर मनसूर टरगौ

उत कूच करगौ

तबहो सजाइ सादल नजीब खां

सकल अरावौ अगधरगौ

यह हुकम करगौ

तुम हरवल चलौ मीर बकसी लै

आज बदरपुर जाइ परौ

रन फजर करौ

मुझ कौ भी पास जानियौ

अपने निमक साहिका दिलहिं धरौ

खतरा न डरौ * ॥ २६

वे आइसु पाइ गाजदौं खां

कौ अब अमीर भलभलहिं रढे

हिय हरषि बढे

सादल नजीब महमूद

आखबत जैता गूजर सहित कढे

रवजुद पढे

सब नीमवास दखिनी पे सौरी

सङ्ग मीर बकसीहिं चढे

तन तेह उढे

दै दिग्घ निसान वान बहु गोमुष

तूर बांकिया सह बढे

भुव गगन मढे ॥ २७

दोहा

हुकुम गाजदौं खान कौ सब अमीर धरि सोस

बड़ौ अरावौ अग धरि हय सहस्र चढ़ि बोल ॥ २८

साहिजिहानावाद तै ह्वै जोजन भुव वद्वि
सब डेरनु चौकस करिय फेरि जुद्ध कौ चद्वि ॥ २९

छन्द चर्चरी

सो सुनै मनसूर सूरज सूर वोरनु सज्जियं
वज्जियं बहु दोह दुन्दुभि व्यौम भूमहि गज्जियं
ह्वै सवार न वार लगिय रगिवगिय सायुधं
ह्वै धवान जवान धाइय धुन्ध काइय वायुधं ॥ ३०
वाज कै गजराज पाइक सन्धि साइक चलियं
कोस चारि धरा लई भट जुद्ध कुद्धहि रलियं
ह्वै हरौल सुजान वद्विय सन्न सूरनु सङ्ग लै
भास पास वजोर रुप्पिय जङ्ग हेत उमंग लै ॥ ३१
तत्थही छन हत्थ आयुध सत्थि सो बलिराम है
गत्थ सौ सुखरामसिंह प्रताप कूरम नामु है
जत्थ जोरि बलुबली बलवण्ड सूर कटारिया
हत्थ सांग सप्हारि लछुमनदास पाखर रारिया ॥ ३२
विप्रमोहन रुप्पियौ हरिनागरौ भट जूहलै
मेदसिंह सिधावतौ * हरिवल्ल वैरि समूह लै
है वली ब्रजसिंह किरपाराम नाहर को ममां
दवि भूमि खड़े भए लगि हैन जङ्ग भमोभमां ॥ ३३

छप्पय

तावल तै कद्विय अमान चद्विय हयन्द वर
वद्विय रस रद्विय सुवीर हरिदेव नामगर
पद्विय रन मद्विय सुलोह डद्विय अनीक पर
डद्विय दग गद्विय भुजान लद्विय कमान कर
धरि मुच्छ हत्थ बड़ हत्थ नर सत्थ सहित सनमुष धइय
अरिसाल सु वैरीसालसुत मुहकमपन मुहकम भइय ॥ ३४

छन्द कन्द

कद्वौ सूर सैनतै सूर ता वार
अमिमन्यु ज्यौ जुद्ध कौ कुद्ध लै सार

मति गान के जुद्धतै वढिह मातङ्ग
 गनै नाहिं काहु घनै कै हनै भंग
 रुक्यौ नाहिं रोक्यौ धुक्यौ सामुहैं जुद्ध *
 चमू कन्दरातै मृगाधीस ज्यौं क्रुद्ध
 कियौ तेज बाजी उमंगैं भर्यौ अङ्ग
 महासुर के लच्छनै अछ लै रङ्ग
 गहै सेल समसेर समसेर हूँ वीर
 लखौ साहि सेना भखौ ना लही धीर
 लख्यौ दीह दिली दलौं ने बख्यौ खेत
 कछौ कौन है कौन है रेफ ते लेत
 सवाधान हूँ कै सतौं बीर दै हाँक
 कढ़े साहि की वाहनी तै भरे सांक †
 रटे लेउरेलेउ पावै नहीं जान
 हटे फेर संकै करैगो धनौघान
 बिलोकैं बकैं आपुसों मैं भरे भीर
 नहीं जाउरे या चलै कै कहुं तीर
 तवै तीर गोलौजुको चोट संभारि
 सबै ठौर ठाढ़े रहे रोषियौ रारि
 जवै सत्रु देखे बड़े आपनी ओर
 तवै रोस कै रंग मैं आप कौं बोर
 मुहकमहू हूँ मुहकम ता वार
 तहाँ चित्तचित्यौ यही सार संसार
 हियै स्वाम के काम को बानिकौं घान
 मुखै देव हरदेव हरिदेव कौ गान
 घुमाए सहथी चल्यौ गोल पै धाह
 उदंडो भुसंडो छरी बीच ही काह
 लगै मर्म गोली गिर्यौ भूमि गन्नाह
 तिहीं बार सथी गए भाज ज्यौं वाह
 निहार्यौ महीपै कही सत्रु ता बेर

* पाठांतर—शुद्ध

† पाठांतर—बाँक ।

(१९१)

मरगौरे मरगौरे लहौ सीस कौं घेर
 सुनै सह कौं धाड़्यौं सूर के सूर
 उतै साहि सैन सपट्टी मनौ हूर
 हुते दूरि ए वे सुनीरे गए आह
 परे पै करै सांग समसेर के घाह
 लटकैं धरातैं कटकैं लयौ सीस
 परगौ ईस के हार में सो बिसे बीस
 तहां बीर बलिराम आयौ गहे रीस
 महा छोह सौं ओठ दतौं गए पीस
 चले सीस सो काटि तेई लण दीस
 गही सेल सांगैं दई बीस कै तीस
 कुटे हू फुटेहू खुटे साहि के लोग
 लियै सीस पैठे चमू आपनी जोग
 लख्यो खेत खाली सुवलिरामहू चाहि
 नहीं या चमू सौं चमूमें धरगो जाहि
 बिचारगो सही जुद्ध कौं चित्त के मांझ
 हटौ साहिको सैन भू पै भई सांझ
 मुहकम को लहास लै आइयौ तब
 बस्यौ आपनी फौज में सो बिना गब ॥ ३५

कवित्त

एक दस सौक में न सहस अयुत बीच
 लच्छ दस कोट में न काहू नर दम है
 साहस समूह सूरवीरन कौ साहोदार
 सनमुख धायौ कहा कलिहू में कम है
 सदन समर साहि सैन तन तूल गनी
 हनी देह गोलिन न खाई खेत खम है
 तन मन पन रन ऐसै मुहकम होइ
 जैसौ वैरीसाल सुत जूझगौ मुहकम है ॥ ३६

सोरठा

यह सुनि सिंह सुजान निरखि सांझ मन मौन गहि
 सहित वजीर अमान दाखिल निजु डेरनु भए ॥ ३७

(१९२)

हरगीत छंद

भूपाल पालक भूमिपति बदनैस नंद सुजान है
जाने दिली दल दक्खिनी कोने महा कलिकान है
ताकौ चरित्र कलूक सूदन कह्यौ छंद बनाइ कै
रनजित्ति एक सुविजित्ति मुहकम अंक पंचम पाइ कै ॥ ३८ ॥ ५
इति पञ्चम अङ्क ।

छन्द पावकुलक

पुनि गाजदोखान चिंतिथौ चित्त मैं
माधौसिंह बुलाइ करौ निज हित्त मैं
आपा और मलार वेग बुलवाइयै
आपुन हो पुठवार इन्हैं उरभाइयै ॥ १
तव फरमान लिखाइ बहुत इलकाब दै
भाईपनो जताइ तेग सिरपाव दै
अकबर मान समान आप दिल मानियौ
इस वख्त सैं सख्त और नहिं जानियो ॥ २
हस्त रोज के बीच कस्त करि आवना
दस्त आपके पस्त हरीफ करावना
यों फरमान लिखाइ डाक चलवाइ कै
माधौसिंह हिं पास द्यौ पठवाइ कै ॥ ३ ॥

दोहा

फेरि दक्खिनिनु कौ लिख्यौ आपुगाजदोखान
सूरज औ मनसूर मिलि किया तख्त कलकान ॥ ४
जद सैं किवलेगाह कौ संग लै गए आप
तद सैं इन्हैं मुखालफी हम सैं रक्खी थाप ॥ ५
अवधि आगरा साहि नै तुमकौ दियौ बताइ
नगद खर्च जो फौज का चामिल लै ना आइ ॥ ६
एक चांदके अंदरौं तुमैं आवना रास
यह लिखि सुतर सवार कौ भेज्यौ दक्खिनिनु पास ॥ ७

छंद सुमुखी

पुनिदल सज्जिय घोर घनै पटह गरजिय मेघ मनै
फहरत हैं सित स्याम धुजा अहन हरीत सुनील दुजा

(१९३)

चढ़त चमूं चतुरंग महा उड़ि रज अंबर भान गहा
सहित अरावहिं कूंच कियौ तवहिं फरीदहिबाद लियौ॥८

छंद खंधा

साहि सुभट धरि अग्न अरावौ आनि फरीदावादिहिं छाप
सूरज सफदरजंग तुरंगन भेजि सवार अधिक अकुलाए
या विधि वीति गए बहु वासर हय गय सुतुर घने हनि लाए
वेऊ जवरजंग गहि ओटनु चाटनु देत कोस भुव आप
तौलैं अंतरवेद जवत करि गंगा न्हाइ हुकुम पितु पायौ
रविजा दरस परसु वृन्दावन सूरज पास जवाहर आयौ
सो सुनिकै मनसूर मुदित है फेरि समर कौ मत ठहरायौ
हिम्मत बढ़ति सुभट कौ रन मै ज्यौं हुकमो आयुध कर आयौ॥९

छंद मोदक

सूरजहू अपने चित सोचत जङ्ग बिना चित सोच न मोचत
माधव भौ देखिनी जव आवहिं तौ इन सौं नहिं जंग रचावहिं
जो लग वे नहिं आवन पावत तौलैं साहस एक उपावत
एक भपट्ट करौं बिनु संकहिं है मनसूर हजूर सुबंकहिं
तोपनु ओट करै बहु चाटनु ते असि सांग हनौं अरि मोटनु
यौ निहचौ करिकैं अपने मन बोलि नवाब करौ रन कौ पन॥१०

छन्द वैतवै

सजे सब सैन कौं यारौ तहां मनसूर आया है
कहौ क्या है बहादुर दिल सुजा नै यौ सुनाया है
नहीं बढनेक कौं जानौं मुझे तौ दस्त साया है
भला जो होइ सो करना खुदा नैं तू बताया है
तवै मनसूर सौं सूजा दुई कर जोरि कैं भाखी
हुकुम जो आपकौ पाऊं सही करि जङ्ग में राखी
रहौ पुठवार पै ठाढ़े सुमुदर्ई को डरावे कौं
उठायैं आज मैं बागैं निहारूंगा अरावे कौं
भय पट मास संगर को घने भट फोरियौ याने
बिलोकैं ताहि क्यों रहियै हियौ उनमान ना मानै

जान है
लिकान है
बनाइ कै
म पाइ कै ॥३८॥५

१
१
यौ
॥२
१
६
॥३॥

खान
ठकान ॥ ४
थाप ॥ ५
ताइ
आइ ॥ ६
निनु पास ॥ ७

मेघ भौ
दुनील दुजा

(१९४)

सुनी मनसूर ए बातें कही तौ देर क्या करना
कहौ जिस वार सैं मुझकौ नहीं टरना सही लरना
यही ठहराईकें दोऊ जवाहर सौं जताया है
रहौ पुठवार सैं मुहकम तुमैं हम यौं बुलाया है
रहौ चन्दौल तुम गाढ़े करैं हम जङ्ग तो आगैं
तुमारे चारिहु वकसी उठावैं सङ्गही बागैं
निसां इस ठौर सैं खातर वजीरै यौं सुनाया है
तुमारे लोग वागौं सैं हमैं इतकाद आया है ॥ ११

छन्द आभीर

यह सुनि सूरज पूत अति रन पन मजबूत
बोलाई बुद्धि निधान हाथ जोरि मुख बानि
आपु करी बहु जङ्ग मैं जब न्हायौ गङ्ग
अब रहियै पुठवार मोहि बतैयै रारि
कोजै अरज कबूल जो चित चाहत फूल ॥ १२

कबित्त

पूत मजबूत बानी सुनिकैं सुजान मानौ
सोई बात जानी जासौं उरमें छमां रहै
बुद्ध रीति जानौ मत भारत को मानौ
जैसौ होइ पुठवार तातैं ऊन अगमा रहै
वाम घौर दच्छिन समान बलवान जान
कहत पुरान लोक रीति यौं रमां रहैं
लाल जू समर घर दोउन की एकै विधि
घर मैं जमा रहै तौ खातर जमा रहै ॥ १३

दोहा

मरजी पाइ सुजान की सिंह जवाहर वीर
हुकुम मानिकैं बापकौ भयौ चंदौल गंभीर ॥ १४
भर्तेशिंह अरु लाल जी राजा गुजर तत्थ
सुरति सेना जुत करे सदा राम के सत्थ ॥ १५

छन्द तोमर

तबही सुजान अमान उठि जुद्धकौ बलवान
 किय वाम ओर वंजीर तिहि सङ्ग सैन गंभीर
 पठयौ सुदच्छिन ओर करि सदाराम सजोर
 पुनि बोलि सिंहप्रतापु यह कह्यौ सूरज आपु
 धसि सामुहैं बड़ हथ्थ तुष निकट सिंहभरथ्थ
 तिहिं पुब बलू वीर थपियौ सुजान सुधीर
 बलिराम सूरतिराम सुखराम तोफाराम
 पुनि जैतसेवा पूत अरु पाखरा मजवूत
 जैकृष्ण मनसाराम वह स्यामसिंह सुनाम
 किसनेस पुहपा वीर सजि सैन चडिढ्य धीर
 किरपा सुलकमन दास हरिसुख मोहन पास
 हरि नागरी द्विज जोर हरिवल कियौ इक ओर
 फतेसिंह ऊधम नंद ब्रजसिंह बुद्धि बिलंद
 बहु और सूर समूह रनकाज चडिढ्य जूह ॥ १६

छप्पय

अखैसिंह अमनैत घोर वर हरिनाराइन
 कुसल पूत मजवूत तथ्थ सूरति रन चाहन
 देवीसिंह कुंवार और बहु जट्ट ठट्ट गति
 चारि वर्न असि धर्म सबै सिरदार सार भनि
 दिन्न माग चतुर्थम के समैं उर उछाह सुभटन बढिय*
 सूरज समान सूरज बली समर काज हय परचढिय १७

गगनंगन छन्द

ठंडन दुविन बिहंडन मंडन किय बलबंड है
 दंडन धरिय उदंडन सक्ति डंड परचंड है
 खंडन चहत वितुंडन कटि बंधिय किरवान है
 संकर मनहुं भयङ्कर चडिढ्य सिंह सुजान है ॥ १८

* पाठांतर—चडिय

(११६)

कुंडलिया

चढ़दिय जब सूरज बली बड़दिय भूरि गरद
मढ़दिय अवनि अकास उड़ि रढ़दिय निज मुख सद
रढ़दिय निज मुखसद आलु सब मो मत किजिय
अनहौनी नहिं होइ तोपखानो असि दिजिय
दिजिय अरिहिं न जान मासपट की रिस कढ़दिय
यां कहिकै तिहिं बार जङ्ग हित सूरज चढ़दिय ॥ १९

कवित्त

भूतनु सहित भूतनाथ मजबूत भए
पूतनु जगायौ सुनि चण्डिका अवास मैं ।
चरवी चरैयनु कै घरवी रखौ न कोई
घरवी अघरवी घुमानै भूष प्यास मैं ।
वीर वामं बिहंसि विहंसि कै विमान चढ़ौ
हरि मन हरषि वजायौ बोन हास मैं ।
जा समैं संमर काज पास मैं सुनायौ सूर
वा समैं अनन्त मोद बाढ्यौ भू अकास मैं ॥ २०

पट्टड़ी छन्द

जब्यै सुजान किन्नो पयान सबै सुभट्ट दै दै निसान
ज्यौ भीम भीम भारथ रिसान तुरकान कौरवन करन घान
आवज अनेक बज्जै भयान अति उद्ध पताका फरहरान
हहनन्त हुध हङ्कत कियान ठहनन्त टाप लगत पषान
ठहनन्त ढाल ढकनि ढलान खहनन्त कवच धावत धवान
छहनन्त जङ्ग हय घूघरान भहनन्त जिरह लगह पमान
ठहनन्त सिप्यरनु लगि कृपान भहनन्त भूरि भेरी भयान
सहनन्त सेल सरसर सरान फहनन्त प्रवल पाइक अमान
ढहनन्त छेनि छुवत छवान धहनन्त घण्ट गजगति गरान
दहनन्त दाव जिमि दिष्टि आन धहनन्त धिङ्ग धूमनु धवान
करि लाव दार दौरघ दवान गहि सैल सांग हुव सावधान

केतेक धीर स
गुन गाइक किय
सुनि सूर बदन
मुख देव देव
तहां सदाराम स
कूरम प्रताप व
हरिनाराइन र
ए सब सुभट्ट
धमसान हेत
यह घोर कुला
जे तोपखान
जे हपे तोप
जज्जाल भुसण
लंबहर अनेक प
तहं जबरजङ्ग
कहुं सरसरान व
वन अचल अचा
तिहं कीन और
मुनि भीति चलि
गल के समान
इत जइ ठट्ट भ
तिन कियौ सुभट्ट

कितेक दु
कितेक छु
कहुं क रु
समेत वा
कहुं कवा
कहुं कपा
कितेक ब

केतेक धीर सन्धी कमान केतेन तेग राखी भुजान
 गुन गाइक किय वीरनु बखान सैंधू सुर पूरिय तिहीं थान
 सुनि सूर बदन जिम उग्रौ भान हुव मुच्छ केस मुख सिंहमान
 मुख देव देव हरदेव भान हिय स्वाम काम पन किय जवान
 तहां सदाराम सब सहित पान विय भर्तिसिंह अरि दुःखदान
 कूरम प्रताप वलिराम जान सूरत कटारिया उर लुहान
 हरिनाराइन रन चण्डवान लक्ष्मिन पाखरिया किय उठान
 ए सब सुभट्ट भपटे हलान समुहान दिष्ट करि तोपखान
 घमसान हेत बढ़े गुमान आयुध अनेक भवसान भान
 यह घोर कुलाहल तुरक कान परियो अचान रिस भलभलान
 जे तोपखान के पासवान बहु मुगल सेख सैयद पठान
 जे रुपे तोपखाने सयान तिन लोह जन्त्र भारिय कसान
 जज्जाल भुसण्डी रहकलान हथनाल घोर घुरनाल तान
 लंबछर अनेक पल भष बचान जहं अप्रमान कुहके सुवान
 तहं जबरजङ्ग गजिय गरान ते लगि कसान भर भर भरान
 कहूं सरसरान कहूं फरफरान इमि सलक होति धर धर धरान
 वन अचल अचानक भर भरान वह प्रवल धूम चढ़ि आसमान
 तिहं कीन और उपमान भान मनु विन्ध्यअचल पाइय पपान
 मुनि भीति चलिय उठि रतन सान कैसे सस्वास पावक प्रमान
 गल के समान गोला वगान फुंकार सद कलकान कान
 इत जइ ठट्ट भपटे मिलान हुअ गोल गोल बीचहिं मिलान
 तिन कियौ सुभट्ट बहु कचरघान तऊ सूर सूर नहिं बिलबिलान २१

छन्द नाराच

कितेक दुष्टि सोस चुष्टि ग्रीव फुष्टि दुष्टियं
 कितेक खुष्टि पीठ पेट खेत माहिं लुष्टियं
 कहंक रुण्ड मुण्ड डुण्ड बुण्ड पाइ उष्टियं
 समेत वाहु डण्ड ढाल उष्टि जेम गुष्टियं
 कहं कवाल अन्तजाल लोह भालं बुष्टियं
 कहं कपाल बाल जाल व्याल रूप लुष्टियं
 कितेक बच्छ फूटि अच्छ कच्छ तच्छ गच्छियं

इ कुरि गरि
 दिव दिव मुख सद
 मो मत किजिय
 सि दिखिय
 की रिस कहिय
 सूरज चहिय ॥ १९

इ दे दे निसान
 करवन करत धान
 पताका फरहरान
 प लगीत पवान
 बघ धावत धवान
 रह लमाइ पमान
 रि मेरी भयान
 इल पाइक भमान
 ट गगगति गरान
 नू धूमनु धवान
 गिंग हुव सावधान

कितेक लच्छ दूक ह्वै उड़ैत जेम पच्छियं
 कितेक ख्याल ख्यालही कराल काल भच्छियं
 कितेक फरफरन्त रत्त नीर जेमि मच्छियं
 वरषि गोल गोलियं हरषि साहि के भटं
 धरषि सूर सैन कौ करौति भेष ज्यौं नटं
 तहां उदाम काम कौ सदासुराम रुद्धियं
 महाउताल उद्धियं गह्वै कवाल मुद्धियं
 छुटी दवान अन्धधुन्ध धुन्धमाक धुङ्करं
 मनौ मलिन्दयाचलै फनिन्द वन्द फुङ्करं
 इतै उतै घमाघमो भई जु सार छार की
 वृषादि भान की समीर छार अन्धकार की
 तहां सदासुराम कै दवान घोर लगियं
 फुटी सुवाख पिट्टिहू तऊ न बीर वगियं
 सुमार चोट खाइ कै दिवान खेत खगियं
 अपार गोल चाल में चमू विहाल दगियं
 छटे फटे बटे कटे हटे कितेक तारनं
 विलोकि श्रीसुजाननै थप्यौ संघार कारनं
 हथौं संभारि सैं हथी पसारि दिष्टि कोह की
 जहां खरी परै भरौ असार गोल लोह की
 हयन्द हकि अगियं भयंद भेष धारियं
 मनौ पड़ाननै चल्यौ क्रवंच पै समहारियं
 धमझि धिङ्ग धाड़्यौ खमकि वाज उद्ध कौं
 मनौ दवागि पानकौं करौ सुकान्ह कुद्ध कौं
 उठाय वाग उप्परौ सुविप्परौ फराक में
 महा अराक अड्डियौ धमांक धुन्धराक में
 तहां धरा धरी करी भराभरी भरभरं
 भराभरी भराभरी खराखरी खरभरं
 धस्यौ असार मारुमें कुमार श्रीव्रजेस कौ
 घटा गुवार में भयौ प्रवेस ज्यौं दिनेस कौ ॥२२

छप्पय

उहिं औसर सुखराम मान दीवान तनयवर
 हय भपट्टि हुअ अगग सिंह सम जहं सुजान नर
 कह्यौ तत्थ यह वचन महाराजा कुं वार सुनि
 उगग दुगग रचि चार कहा येा ही मरियै भुनि
 उत काठ लोह कै अगनि भर इत मनुष्य संहार हुव
 विनिदिष्टि सनुआए करत नहिं साहस यह कुमति तुव २३
 लखि बोल्यौ नृप कुं वर भलभलत भाल सुसांगहि
 कै मुहि दै रन जान नाहिं अब हनतु तोहि रहि
 पुनि भाषिय सुषराम काम लाइक भल किज्जहि
 मोहि मारि जब भग पगग अगगौ जब दिज्जहि
 सब देस दुगग दीरघ पिता सुत सोदर तुअ मुख चहत
 दौं दाव कीट ज्यौं परत क्यौं निजु स्वारथ हमहू कहत

छंद भुजंगी

तहां बोलियौ रोसकैं फेरि सूजा अरे सामुहैं ते' परै क्यौं न तूजा
 जु रैं जुद्ध के दुगग औ देस कैसौ कहा वाप बेटा सु मैया अनैसौ
 जु है दार सों कोस सों देह नातौ बन्ध्यौ नेहमनसूरसों सो कहाँ तौ
 बिना ताहि देखै नहीं बाग मोरों कितौ तोपखानैं तजौं देह तोरों
 तिहीं काल वेहाल उत्ताल आयौ हट्यौ खेत इसमाइलौ संकटायौ
 लखै जाइ सूजा खरौई रिसावौ कहैं राधिकुरे धिक्कुतूमाजि आयौ
 गहैं संग मनसूर तोसे कपूतैं लहै जित्ति कैसैं सबै साथ धूतैं
 भर्यौ भीतिसौं वां कल्लवैं सुन्यौना गयो भाजि कै नैन पाछैं कर्यौ ना
 तहीं खेत मैं पाखरौमल्ल आयौ लख्यौ सिंहसूजा महाछोहछायौ
 तवै पाषरा बुद्धि जी मैं बिचारी अड़्यौ जङ्ग सूजा तहां यों उचारी
 चलौ साथ मेरे वजीरै दिखाऊं कितौ तोपखानै फते लै कराऊं
 इत्तौ वानि सूजा सुनै वाज हंक्यौ चल्यौ पाखरा संगही ह्वै असंक्यौ
 दई घोर अंधार मैं घोर घाई कभू सामुहैं दाहिनै वाम घाई
 घरी अद्ध मैं लै वजीरै दिखायौ लखै सूर मनसूर हू जीव पायौ

कही आफरों आफरों सिंह सूजा नहीं हिंद हिंदू सरी तोहि दूजा
तहां नन्द बदनेस कै फेरि भाषी लखौ जङ्ग मेरी रहौ पुष्टि साषी॥२५

पट्टड़ी छंद

सुनकै सुजान वचननु वजोर कहियौ हजार रहमति सुवीर
तुझ कौ न दोस मेरा कलाम नहिं जंग काम हुइ निसासाम
इस बख्त सख्त तैं की जु मार सवही सिपाह हुई सुमार
तिसका सुमार करना जरूर अब अबस जङ्ग करना गरूर
नहीं आफताव की रही जोत अपना न गैर मालूम होत
खुसबख्त मुझे करना जु तोहि तौ डेरनु दाखिल करौ मोहि
अब बड़ी फजर जो हौनहार रब की रजा सु करना विचार
सूरज समझायौ यौ वजोर पुनि डेरनु लायौ धीर धीर॥२६

दोहा

यौ तोपनु की जंग मैं सूरज कियौ अवाद
ज्यो होरी भर बीच तैं हरि राख्यो प्रहलाद॥२७

छन्द त्रोटक

पुनि भोर भयै बहु तोप दगों इतउत्त धमाधम हौन लगों
छिपि भान गयौ निस फेर भई दुहुंओर भरी भर लोहमई
पुनि ऊगत सूर मरथ्य गयौ उनि साहि कही रहि जाय लयौ
गज ग्यारह ऊंट तुरङ्ग घनै हनि लावत भौ मजबूत मने
पुनि कोनिय दैर दिलीस दलं गढ़बल्लम पूरब ओर भलं
दस खेत प्रमान रहे जबही बलिरामहिं सूर कछौ तवही
चढ़ि जाइ इन्हें दबटाइ अरे बढ़ि आवतु है चहुं ओर खरे
यह आयसु सिंह सुजान दियं उठियौ बलिराम हरषि हियं
असवार भयौ गढ़तैं कदियं जिमि सिंह छावावन तैं बढ़ियं
तब छतरसाल संतोष हुवौ अरु रामवली असवार हुवौ
पुनि जोधहु सिंह सवार हुव गढ़ बैरि रहां तिहिं अगहुव
अरु पाषरहु लखिमन्न महा हय हंकि धर्मकिय जोर गहा
सत अर्ध सवारनु लै दवटगौ भपटगौ अति साहि दलै लवटगौ
दस पांचे बंदूक तहां धमकीं पुनि सांग कि सेल असै भमकीं

उतहु
इततें
उतहु
लखि
हयतें
हनि
सबहि
मरते
बलिर

(२०१)

उतहु सिरदार महा मनकौ किय आनि असीलनु कौ भनकौ
इततैं बलिराम उठाइ हयं कर सेल घुमाइ हरीफ हयं
उनहुं असि भारिय रोस सनं बिचही गहि काटिय सेल रनं
लखि जोधहुसिंह उठाइ परं हिय सेल हवकिय मीर मरं
हयतैं सुगिरयौ वह भुमिभरं बलिराम दई एक तेग गरं
हनि तासु सिरै बलिराम बली तिहिं सैनहिं धाइय देतु भली
सबही भट चोटनु देत भए अपने अपने अरि बांट लए
मरते परते भट साहि भजे रन पाइ बिजय भट सूर गजे
बलिराम फिरौ दिंग सूरजकौ सुबजाय बिजय रन तूरजकौ २८

दोहा

कलुक घौस बीते तहां आयौ माधव भूप
दस हजार असवार की साजै सैन अनूप ॥ २९
प्रथम गाजदीक्षां मिल्यौ पुनि मनसूर सुजान
मधुकर ने समभाइकै मनौ संधि कौ दान ॥ ३०
तुम हम सेबगसाहिके हुकम बजावन हार
आपुस के ग्रहंकारसों हेतु दिली संहार ॥ ३१
यों कहिकैं अमिरपति सबकौं दियौ मिलाइ
साहि अहम्मद सौं तुहं दोने बिदा कराइ ॥ ३२
चल्यौ अवधि के मुलक कौ दर कूचन मनसूर
सूरजहुं कौ सीख दै पठयो ब्रजहिं जरूर* ॥ ३३
सिंह जवाहरसों कह्यौ होल करहु मुकाम
संग तुमारे हम लखे धोअजेस यह काम ॥ ३४

कवित्त

मदन के जोरही सौं मदनकौ साध्यौ जिनि
थलन संभार्यौ केलि जल के प्रवाह तैं
घन के समान बड़े बन कौ बिहारी सब
जन की बिसारी सुधि तन के निबाह तैं

पारांतर - सूरजहुं कौ रंग लै प्रज कौ चले जरूर

(२०२)

सुदन उक्ताह तै कहतु कवि राह तै
सुचाहतै ई चाहतै प्रवट बैरी थाहतै
दिल्ली नरनाह गजग्राह मनसूर गह्यौ
माधव नै आइ ज्यौ लुड़ाया गजग्राह तै ॥ ३५

छन्द पवंगा

सिंह जवाहर संग चलयौ कमठेसह
आप कामां तहां मिले बदनेसह
लै आप पुरदोष कियौ सनमान हैं
मधुकर नेह जताइ गयौ निज थान हैं ॥ ३६

हरिगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति बदनेस नन्द सुजान हैं
जानै दिली दल दक्खिनी कीने महा कलिकान हैं
ताकौ चरित्र कलूक सुदन कह्यो छन्द बनाइ कै
कियसंधि कूरम दुहुनकी रचियंक सप्तम आइ कै ३७ ॥७॥

इति श्री मन्महाराजकुमार जदुकुलावतंस
श्री सुजानसिंह हेतवे कवि सुदन
विरचिते सुजानचरित्रे दिली
विध्वंसनो नाम सप्तमो
जंग सम्पूर्णम् ॥

अथ अष्टम जंग लिख्यते

कवित्त

सारे द्रोण भोषम करारे जल जयवृद्ध
गांधारी तनय इन्दीवर सोमवारे हैं
सत्य महाप्राह कप प्रवल प्रवाह जहां
मितिके निबाह करन हीके कर भारे हैं
घोर मच्छ कच्छ से बिकर्न असुथामा बीर
दुरजोधन भोर ज्यौं भ्रमत से निहारे हैं
सिंधु सो भयान सेन सरिता समान तहां
करिया प्रमाण हरि पण्डव उतारे हैं ॥ १

दोहा

ठारहसै सुद सोतरा हिमरितु महिना गोप
दच्छिन दल दिल्ली दलनु कीनौ ब्रज पै कोप ॥ २
करि मिलाप बदनेस सौं कूरम सिंह सुजान
देखि भर्यपुर देव कौ बहुरौ कियौ पयान ॥ ३

करी छन्द

चलत कही मधुकर भूपाल	दखिनो आवतु तुम पै हाल
जो तुम करौ आपनी संध	तौ हम ताकौ करै प्रबन्ध
तब सुजान मधुकर सौं कही	हमें आपु करिहौ सो सही
जो कछु पहल मामलति भई	सो महाराज सबै सुनि लई
बा माफिक वे मानै आज	नाहौ तौ नाहौ महाराज
ये बातै कूरम धरिकान	कोनौ अपने देस पयान
पुनि सुजान बदनेस कुमार	लग्यौ करन निज चित्त विचार
है वह चारि उपाइ उदण्ड	साम दाम भेदहु पुनि दण्ड
तब ही रूपराम बुलवाइ	सोहू सब विधि पूरन भाइ

रूपराम सां कही सुजान दखिनिनु पास करो तुम जान
तिनके दलकौ सबै सुमार और जु उनके मनकी सार
वे जो कहें सु धरिकैं कान कोजौ ज्वाब महाबलवान
समाचार ये सबै सिताब भेजतु रहा ज्वाब पै ज्वाब
ताकौ सबै भांति समुझाइ दोनौ दखनिनु पास पठाइ ॥ ४

मनोरमा छन्द

धीते कछु घौसही में जहां आधी निसां डांक आयौ तहां
दोने समाचार ताही घरी मारगौ दगा दै बलू चौधरी
सूजा कही कौनकी रीति सौ बोल्यौ तबै डांक ता नीति सौं
भूपै लिये आप आप इहां दिल्ली गयौगाजदीखां तहां
नीरै सुने दखिनी आयौ सो गाजदीमोद सां छाया
भेज्यौ अतालीक ताही घरी मारगौ दगा दै बलू चौधरी
खाली करौ दुग कौ द्वारसै मिलना मुझै बेगि महार सै ॥ ५

चौपाई

सुनि महमूद आखबत पेसे बल्लमगढ़ पै आयौ
भेजि वकील चौधरी सौं उन बहु इखलास जतायौ ॥ ६
मुझै गाजदीखां वजीर ने तेरे पास पठायौ
चारिक बात करें हम तुमसै सबै काम बनि आयौ ॥ ७
अगर करें हम दगा तुम्हौं से तसवी खुदा बतायौ
इस्सै कसम और नहि कोई भाई सै क्या दायौ ॥ ८
यह सुन कै गढ़ के भीतर तैं बल्लू बाहिर आयौ
बेटा दोइ सज्जु लै कढ़ियौ कालन मौजस पायौ ॥ ९
आवतु देखि चौधरी कौ महमूद आखबत तबै
ठहगयौ मिलनौ खिलवति कौ गरकर राखे गब्बै ॥ १०
तहां मिलाप चौधरी सौं करि कहि कहि मोठी बातें
पुनि सारति करि दई तिन्हें जे दबकि रहे लगि घातें ॥ ११
तबही ताकि एक नेवाके पेसकवज गहि धूसी
दूजै धाई दूसरी घातें ग्रीव तेग सौं धूसी ॥ १२
दोऊ पूत सहित बल्लूके सीस काटि उठि धायौ
तातें घरी चारि पाछें हौं चलयौ आप पै आयौ ॥ १३

(२०५)

उक्तंच दोहा

दगाकरै तासैं दगा निश्चै जानै होइ
जैसी गति बानै करी लहि है तैसी सोइ ॥ १४

सोरठा

सो सुनि सिंह सुजान तुरत बेलि बलिराम कैं
कह्यौ दीघ कैं जान लाला सैं जाहर करौ ॥ १५
कहनीं यहै सिताब सबै वरूथनि साजिकैं
बरसाने कैं जाव महति आगैं भेजियौ ॥ १६
हैं सवार बलिराम आयौ दीरघ नगर कैं
जो कह्यु करना काम कह्यौ जवाहरसिंह सैं ॥ १७

सैनिका छन्द

सो सुजाननन्द सोचि बाघरी आइयौ ब्रजेस पास ता घरी
सांख मांगि धीव्रजेस सैं तबै दै निसान कूच कै चमू सबै ॥ १८

दुपई छन्द

तबै जवाहरसिंह कूच करि दै देरा बरसानैं
चहुं ओर की खबर लैन कैं तहां सैन सरसानैं ॥ १९
तौ लौ सब बल्लू के बेटा सहित कुटुम्बहिं आए
तब महमूद आखवत हू नै आगैं पाउ बढाए ॥ २०
इत मैं रूपराम हू पहुंच्यौ जहां दखिनी आवत
रघू औ आपामलार मिलि रूपराम सुख पावत ॥ २१
चलत चलत दखिनी बढि आए जैपुर डेरा दीने
प्रथम भूप कूरमसैं कररे ज्वाब स्वाल प कीने ॥ २२
चाकी सहित दाम सब दीजै ब्रज कौ हरवल हूजै
माधव कही कह्यौ सैं करिहैं अब लीजै जो पूजै ॥ २३
जौलैं साहपुरा बू दी कौ रूपनगर औ कोटा
ए नृप कजू भए दखिनी सैं नैकोठी कौ जोटा ॥ २४
राना कौ दीवान आइयौ साई सो पुर धारौ

(२०६)

सब मिलि सामिल भए मलारै काहू रखौ न गारौ ॥ २५
 द्वादस लाख रुपैयाँ दैकें पुनि माधव नृप भाषी
 हरगोविन्द होइ तुम सामिल जौ ब्रज की अभिलाषी ॥ २६
 ये सब समाचार जैपुर तँ माधव भौ दखिनी के
 रूपराम लिखियौ ब्रज भूपै साठ हजार अनौके ॥ २७
 और लिख्यौ अबकै ए दखिनी तुम सौं जङ्गहि जोरें
 आपुन सावधान हँ रहियौ देस दुन्द की ओरें ॥

दोहा

जैपुर सौं फरचौ करयो आपा भौ मल्लार
 रूपराम बुलवाइ कै पूछरौ कहा विचार ॥ २८

सोरठा

पुनि बोल्यो मल्लार दो करोर छां देउगे
 मैं अब होत सवार रूपराम तुव देस पै ॥ ३०

दोहा

अबकै सुरजमल्ल नै लूटी दिखी खूब
 दो करोर क्या बहुत है लिखि भेजै किनि तूव ॥ ३१

सुगीतिका

तब दै असोस दुहून कौ द्विज राम परम प्रवीन
 सुनिष जुवाब मलार के तब बोलियो मृदुपीन
 बड़ भाग हैं तुम सैन के ब्रज देखिहैं भरि नैन
 कछु लैन की विधि ना बने तह देन की कछु भैन
 यह आप के मन होइगी कछु दैन आश्य रूप
 हिय सङ्ग मानि पठाइयै हम पास श्री ब्रजभूप
 इखलास राखनु आपसौं निज प्रोहितै पहिचान
 सुभ जानि दोऊन कौ करै हम ज्वाब स्वाल प्रमान
 तुम सिंह श्री वदनेस सौं किय लैन दोइ करोर
 यह बात मोहि न सुभहों वह देइगौ अनरौर

(२०७)

सत कोटि हैं उहिं भौन मैं गजवाज ओर न छोर
दस साहि के दल लूटिकैं दरवार ओढ़तु ओर*
यह तासु की निज टेउ जानत सो बखानत राउ
दधि दामहुं नहिं देखेगो उठि खर्च कोटिक जाउ
तुम/तासु पै जुग कोटि चाहत मोहि है सु अंदेस
मिलिहैं जुसारहि सार सौं अब कै मिटै न कलेस ॥ ३२

दोहा

उताइत के परताप तैं चारि लाख मो पास
आपु लेउ सब कुसल सौं मोहि दुहुन की आस ॥ ३३

हरिपद

रूपराम के घचन कान धरि यह बोली मल्लार
खण्डी लै प्रोहित के घरतैं बाढ़े कुजस अपार ॥ ३४

छन्द ललित पद

कोटि किलौ खाई बन भाई जल घल जोर सु कहियै
सो कितेक बजराज बदन कै सौ सब सांची लहियै ॥ ३५

छन्द भुजङ्गी

तवै रूप नै बात सांची उचारो
बजाधीस के ठाठ की बात भारी
असी चारि के कोस को कोट घांको
किलेदार है सांवरो चारि घांको
इतै वान गङ्गा उतै भानु जाई
विधाता बनाई चहुं ओर खाई
हवेली किलेदार की कोस नौ की
कलिन्दी सुनोरैं प्रलै के नमौ की
किले बीच पायौ तहां जन्म स्यामैं
किलेदार ता ठौर पायौ सुनामैं

* पाठान्तर—दस पातसाही लूटि कै दरवार ओढ़तु ओर

यहां तीनही कोस पै बुर्ज पैसौ
 घने दुष्ट मारे तहीं नाम तैसौ
 अरिष्टा वकी औ तृनावर्त मोहा
 तबै नाम ताकौ महावन्न सोहा
 तहां गोकुले जानियौ आप चित्तै
 सुचित्तै सुचित्तै दुचित्तै दुचित्तै
 हवेली तरैं तीनही कोस नीकौ
 रच्यौ सांवरे ने वहै बाग जोकौ
 तहां तासुने दुष्ट ठाके घने हैं
 अघा से बघा से विधाता मने हैं
 हरे वांस केसी नथ्यो काल कालो
 पिपौ दाव कौ गोपिका प्रीति पाली
 थपी राखि वै ताहि वृन्दा सुदेवी
 धर्यौ नाम वृन्दावनं सिद्धि सेवी
 दिसा नीर की जो जनें छै उरैहैं
 गिराधीस ताकौ सुराहू छुरै हैं
 तहां मात राखे अमातै विदार्यौ
 वृषादैत्य औ संखचूड़ पक्षार्यौ
 हत्यौ धेनुका इन्द्र कौ गर्व गार्यौ
 जथा जोग्य सोते नहीं कान धार्यौ ॥ ३६

छन्द दाव

घरस सात के स्याम सिरोमनि खेलत घर घर डोलैं
 माथैं मुकट पोतपट कटि मैं पाइ पैजनी बोलैं
 लोचन नीलकमल से सोहैं भौहैं अलि अबली सी
 जो ब्रजवधू निहारति उर मैं सो रहि जात छली सी ॥ ३७
 कानन लसत झूमका प्रभु कै नाक बुलाक सुमोती
 मनौ सुधानिधि वदन जान प्रभु रच्छक राख्यौ गोती
 चारु कपोल गोल गुदकारे अरु सुन्दर सी ठोड़ी
 परति धाड़ कै होड़ाहोड़ी सबकी डीटि निगोड़ी ॥ ३८

गुञ्जमाल वनमाल लालके उरके धीचं विराजै
 मनौ स्यामघन मध्यसमूरो सुरपति चाप सुराजै
 सहित नाल करकंज मनोहर पहरें रतन करुला
 मानौ रतनसान जुगकन्दर उमै कोकनद फूला ॥ ३९
 पीपर पान समान उदर वर कोमल नवनीतहु तैं
 नाभि गंभीर तरङ्गनि त्रिवली में वृद्धतु भवगहु तैं
 भनक मनक किंकिनि कटि कुंजति जब कितहु कौं दौरें
 मांगत ग्वाल खेल के दावहि भजत नन्द की पौरें ॥ ४०
 छोटीसी कछनी कौं काछें कयहुंक बाछें पाछें
 निकसत नन्द बवा के सङ्गहि ग्वालनु देखत आछें
 तरवा भरुन स्याम सुन्दर के जे मुनि मन के वासी
 भक्तन कौं विसराम यही है उर राखति कमला सी ॥ ४१
 या विधि सौं ब्रज माहिं रमत हैं नन्द नंदन सु कहावै
 पौरि पौरि फिर ब्रज वनितन की सब के हिये सिरावै
 एक दिना सब ब्रज वासिनु के पूजा इन्द्र उछाही
 चौरासी कोसहिं ब्रज मण्डल घर घर चढ़ी कराही ॥ ४२
 कृष्ण एक ग्वालिन कूं पूछी तुमरें आजु कहा है
 तब उन कही हमारें लाला पूजा इन्द्र महा है
 यह सुनि कही गुपाल लाल वह इन्द्र सु कौन कहावै
 गोपो कही जाउ मन मोहन पूछौं अपने बावै ॥ ४३
 कछु रिस रंजित नैन किए हरि नन्दरायढिग आय
 बाबा कहौ कौन के हित ये तुम पकवान कराए
 तबहि नन्दजू कही स्याम सौं हमरें सुरपति पूजा
 गोधन गिरि पै वाहि चरचिहैं यह दैहैं मुख पूजा ॥ ४४
 तब मधवा राजी हूँ ब्रज में बरसैगो जल नीकै
 बरस दिना कौं होइ सुचीते हम नृप ब्रज भवनी के
 ऐसैं कही नन्द ने जबही मोहन महा रिसाने
 को है इन्द्र कौन की पूजा हमतौ वाहि न जानै ॥ ४५
 तुम सब लेउ बोलि ब्रजबासी में गिरि पै चलि बैठौं
 करिहौं गिरि गो ब्रज की पूजा तौ तुम्हरे घर पैठौं
 बहुत भांति समझायौ सुत कौं पै एकौ नहिं मानी

डरे नन्द इकलौता बंटा कही कृष्ण की ठानो ॥ ४६
 चलौ पुत्र गिरि गोवर्धन पै आवैं सब ब्रज बासी
 करिहैं गिरि गो ब्रिज की पूजा क्यौं सुत होत उदासो
 यों कहि नन्द स्याम संग लीने गोवर्धन पै आप
 पहुँच्यौ सुन्यौ नन्द ब्रजपति कौं सब ब्रजबासी धाए ॥ ४७
 ठौर ठौर ब्रजबासिन गावति आवति लै पकवानै
 बाजत ढोल मृदङ्ग भांभ डफ मङ्गल गीत बखानै
 कृष्ण जाइ बैठे गिरि ऊपर नन्द संग ब्रजबासी
 पूजन लगे मेरु संग स्यामै गन्ध फूल सुखरासी ॥ ४८
 तब मोहनजू सिंगरे ब्रज कौ घृत पकु भोग लगायौ
 आनि और यों ब्रजरानी कौं अपनौ बचन सुनायौ
 सब ब्रजबासी रहे चकित हूँ बड़े अचम्भौ मान्यौ
 तब वा मेरु सिंगरि कौ नाम सु आनि और यह गान्यौ ॥ ४९
 यह सुरपति के दूत देखि कै खबर इन्द्र कौ कीनी
 बलि जो देत तुम्हैं ब्रजबासी कृष्ण नन्द सुत लोनी
 सो सुनि इन्द्र कही दूतन सौं कृष्ण कौन कौ छैया
 कैसो रूप वहिक्रम कैसो कौन वीर को भैया ॥ ५१
 तब उन दूत कही पुरहूतैं बलि कौ वीर सुनैया
 बरस सात कौ नरम गात कौ नन्दगोप कौ छैया
 यह सुनि इन्द्र कही दूतन सौं ब्रज सब आजु बहाऊ
 कृष्ण नन्द बलिराम बेरिहौं तौ मैं इन्द्र कहाऊ
 लप दानवै कोटि मेघ गण चढ़ि पेरावति धायौ
 चौरासी कोसहि ब्रज मण्डल घोर रूप दरसायौ
 तडित लई तरवार ढाल धन ब्रज लेपनु चित धार्यौ
 घोर सद् चहुंघोर पवन सौं इन्द्र काल किलकार्यौ ॥ ५३
 मूसल धार अखंडित मंडित महा प्रलै जलु लायौ
 कड़कै तडित पवन भकशोरन कोरन वृच्छ ढहायौ
 हाइ हाइ ब्रजवाल पुकारैं कहुं बचाउ न पायौ
 गोपी गोप खाल बालनु मिलि तब गुपाल गुन गायौ ॥ ५४
 करुना लखि करुना निधान नै मन यह मतौ उपायौ
 बाम पानि कौ छगुनी ऊपर हँसि कै गिरि सु उठायौ

ताके तरै आप मन मोहन बंसी शब्द सुनायौ
 गाय गुवाल और ब्रजजीवन अपने पास बुलायौ ॥ ५५
 सात दिना दिन राति मूढ़मति इन्द्र सलिल बरसायौ
 गिरिघारी गिरि राखि फूंक पर ब्रज कौ आप बचायौ
 तब मधवा मन मारि हारि कै बड़े सोच सौं छायौ
 भयौ कृष्ण अवतार भूमि पै मेरौ गर्ब गरायौ ॥ ५६
 कंपित जिय संकित सौ सुरपति उठि चरननहीं धायौ
 सुर द्रुम कामधेनु पेरारति चरन भेट लै आयौ
 नारि नवाइ दुहुं कर जोरै कृष्ण चरन सिर नायौ
 दीनदयाल दीन लखि इन्द्रहिं सुरपुर फेरि पठायौ ॥ ५७
 रूप राम आपा मलार कौ गिरिवर समौ सुनायौ
 झूठ नहीं यह साषि भागवत आप व्यास मुनि गायौ
 ता कुल मैं वदनेस भूप* है तुम सुरपति पद पायौ
 कलि की मद्धि स्यामजू ने फिर वही बनाउ बनायौ ॥ ५८

दोहा

दन्दिन दिस गिरि पूंछ है उत्तर दिस मुख नैन
 तहां सरोवर द्वै सरस राधाकृष्ण सुपेन ॥ ५९

छन्द काव्य

तहंते बाइव ओर डेढ़ जोजन के अंतर
 रच्यौ बुर्ज सो स्याम ग्राम जो नन्द निरंतर
 जोजन मण्डल एक नन्द लै वसे स्यामघन
 समौ कंस कौ देखि रमै लै ग्वाल बाल गन
 जहां कियौ जलपान पानि सों आपु कृष्णवर
 सो वह अबहू बन्यौ नाम है पानि सरोवर
 तातैं जोजन एक बुर्ज कामा सो कहियतु
 वहै कोट कौ कौन वहां भोजन थलु लहियतु
 उरैं कोस है च्यारि बुर्ज बरसानौ सुन्दर
 जहं की गली बुहारि अजौं बिधि ईस पुरन्दर

तहां स्याम की जोति आप राधा पटरानी
 वसै तीनहु लोक वहै जाकी रजधानी
 बने दानथल मान खोरिसांकरी भनोषरि
 ता प्रभाव कौ लहै सिंधु सातौ सम पोखरि
 ह्रां गहवर कौ देखि राउ गहवरही आवै
 ऐसौ जग में कौन देखि सुनि सीस न नावै*
 दुहुन बीच संकेत राधिका नन्द कुंवर कौ
 सो श्रिय कौ कहि सकै भेदु पियप्यारी घर कौ
 तासौं जोजन एक परम मन्दिर जग जान्यौ
 नन्द और घृषभान दुहुनि के हित सरसान्यौ
 अलख नन्दसर तहां अलख अमरेस दृगन कौ
 मुनि नर खग पुनि उरग दरसु नहीं भयौ मृगनु कौ॥६०

छन्द भुजङ्गी

इतै कौ सफीलै किए बुज जाठौ तिन्हों के सुनै राउजी नाम पाठौं
 किए कोस छः सात के अंतरासौं उमै जोजनों के बने गिर्द तासौं
 प्रथम सिंसिनी कौचहु चक्र जानै लखौ सिंसनै चार नावै अमानै
 अजौ एकही कूखि के लाख भाई तहां भूप बदनेस पाई बड़ाई
 वहै सिंसिनी साहि ताकौं न पामै किते मीर उमराउ आप जु कामै
 भखें सातहु पात साहौ लसी है तहां लच्छमी देह धारै बसी है
 तहांतैं उमै जोजनौ बाँच दैकै रच्यौ बैरिनामैं सुवैरी बितै कैं
 वसै भूप के पूत कौ पूत बकौ प्रतापी प्रतापा तनै सो निसकौ
 प्रतापा कहौ कौन तौ मैं बताऊं लर्यौ दुग भूपाल में जो अगाऊं ॥
 तहां राउ बाजी लखे हाथ बांके फिर्यौ आइ कैं बैरिही तीर ताके
 थप्यौ तासुतैं जोजनैं तीन पूरौ धर्यौ नाम ताकौ भरथवा सुर्यौ
 घनौही घनौ तासु के तोर छाये तहां चित्तहु नै नहीं गौन पाये
 जटाजूट कौसौ जटाजूट फैल्यौ फिरै नीर मन्दाकिनी रूप रैल्यौ
 गिराधीस धारी तहां थान कीनौ रहै सिंह सूजा जहां मोद भीनौ
 तटै तासु के तीनही कोस गाढ़ौ सुतौ सागरै मोगरै बैर वाढ़ौ
 अवारै लखौ जो अपारै जुरारै उहां स्याम कौ चारिहु घां पसारै

* पाठांतर—ऐसों को जग माहि देखि जु न सीस ननावै

निहारौ तहाँ चार कोसैं अमानी सही सौंर कासौं ठहै खून खानो
 बड़े डैर सां एकपै घैर सोहै लरौ भूप विसुनेस गो मानि लोहै
 तिहीं खेत मैं वीर खेतै निहारौ रच्यौ* लच्छमी घेर कुंभेर रारौ
 लसै भूप जाँसैं सुतौ दीघ नामैं सुराधीस के धाम की सोभ तामैं
 भरे चारिहु ओर हैं नीर तामैं अटवी सुश्रुंगी घरे एक धामैं
 तहां कूप का सार वापी जु सुझै सबै मानसर की प्रभा कौं न बूझै
 जहां आठहुं भाति के कंज फूलैं मनौ नीर आकास तारे अडलैं
 तहां हंस हंसी चकी चक्र डोलैं किते अंड जाती करै हैं कलोलैं
 तटैं बाग हैं राग के भौन मानौं फुलैं फूल दैवौ जिन्हें जी सुहानौ
 वसैं चारिहु वन कर्माधिकारी मनौ देव गन्धर्व हीं देहधारी
 तिन्हों के धराधाम घैरे हजारौं रथै पालकी हैं करी वाज द्वारौं
 बनी गौख वे जौख की मौख सौहैं पताकानु केकी पिकी ही भरौहैं
 दूरी चीतिवारी दुवारी अटारी लगी जाल जारी सरद मेघ भारी
 अलंकार धारी जरी तार सारी फिरैं चंचलासी तहां गेह वारी
 रहे पूतना तीनसौं पूरि होई बिना बीस बेटा नहीं जाट कोई
 फिरैं बालका काम के बालका से सबै भूमि के तालका पालका से
 बड़ी हाट बाजार व्याहार वारे धनाधीस के धाम के से घरारे
 जहां देखिये चार तौ नैन कोरैं ठगैं रूप जानौ परै बीटि भोरैं
 सदा बैल के कन्धही पै जुगा है पिया प्रेम प्यालौ मदी सो हुगा है
 जहां झूटकौ भोजने अंत देखौ महा मोह तौ सांवरे में सुपेखौ
 बिना आपके नांव कोधी न कोई सदा जङ्ग की जीति कौ लोभ होई
 इही भाति सौं सबही कोट साजा वज्रें दुन्दुभी बुजें बुजौं दराजा
 सबै अन्न धनौ दही दूध ताजा जहां सत्रु के लोह कौ तोप बाजा
 कंगूरी कंगूरा भुसण्डी समाजा लसै बीस बेटा बड़ौ सूर गाजा
 लखैं ताहि बैरी धरा को न भाजा बली सूरके पूत पाँचौ अवाजा
 जवाहर बड़ौ साहिबी कौ समाजा वही स्याम जाके करै कोर काजा
 सुराजै तहां सिंह बदनैस राजा सुराधीस के धाम को सोभ साजा ६१

छप्पय

इन्द्र इटायै सहर अग्रि गोपाचल दुग्गाहि
 दच्छिन पुरी कल्यान नैरिहि नोमरान महि

(२१४)

वरुन हरयाने सौम मरुत दिस गढ़ मुकतेसुर
उत्तर दिग गढ़राम ईस सहपऊ परै धर
इतनीक भूमि वसुदेव सुत बदन सिंह भूपहिं दई
तुरकान तेज परि हरि सकल आन पीतपट की भई ॥ ६२

दोहा

तुम तारे नृपजे धरनि ते पारे ब्रजराज
दस हजार भट आपसौं चाहत समर समाज ॥ ६३
चारि लाख बदनेस कै हैदल पैदल त्यार
किलेदार गिरवर धरन ताकी सैन अपार ॥ ६४ ॥
कोट किलौ परिषा सुभट भाई भोय समाज
मंत्रो सिंह सुजान सुत ब्रजपति को जुवराज ॥ ६५ ॥
ताहि तुम्हें पर भूमि मैं बजो तेग कै वार
कहा कहौ सो आपुही जानत राउ मलार ॥ ६६

हरिगीत छन्द

भूपाल पालक भूमिपति बदनेस नन्द सुजान है
जानै दिलो दल दक्खिनी कीने महा कलिकान है
ताको चरित्र कलूक सूदन कह्यौ छन्द बनाइ कै
ब्रज बरन रूप मलारसौं किय प्रथम अंक गनाइ कै ॥ ६७ ॥ १
इति प्रथम अङ्क ।

दोहा

रूपराम के वचन सुनि बोल्यो राउ मलार
सत्ति सत्ति तैने कह्यौ ब्रजपति को व्यौहार ॥ १
जो धरनी धरनी जुतै रूपराम सविलास
ताहि देखिहैं नैन सौं सब दक्खिन तो पास ॥ २
कलू उमाह्यौ हो हमैं कलू बुलाए साहि
बड़ गूजर कौ मारिबौ सुनि आए भुव गाहि ॥ ३

कवित्त

गुज्ज भुज्ज द्रविड़ तिलंग बङ्ग गौड गढ़ा
मण्डला उड़ीसा लै बघेल औ बुंदेल खण्ड

भारखण्ड मगध मलार गङ्गापार डांग
 ऊमटउचाट मालुया में मैं न राख्यौ चण्ड
 हाड़ौती दुंढाहर भदावरि दिलीपतिके
 सहित उजीर उमराइ राय पाए* उदण्ड
 सेवा संभा साऊ रामराजाके जलेबदार
 एक ब्रज देस बंदनेसही रह्यो अदण्ड ॥ ४

संजुता छन्द

पुनियौ कह्यौ सु मलार नै थल वै सबै सु निहारनै
 लखि रूपराम विवेक कै बंद जानितू अब नेक कै
 यह मैं कहौ निज टेक कै ब्रज भूमि दक्खिन एक कै
 तब दो करोरहि लेहिंगे ब्रजराज दाम न देहिंगे
 पटपीत की उन ओट है इत आपु संकर जोट है
 दुहुं की धुजा फहराइंगी रन दुन्दुभी घहराइंगी
 इतके उतै ठहराहिंगी ठहराइकै भहराहिंगी
 तब मामलति है जाइंगी जुरिजङ्ग कै ठहराइंगी
 यह भाषि राउ मलार ने पुनि बोलि आप कुंवार ने
 ठिग देखि खंडू सौं कही अब कूचही करनौ सही
 सजि आपुनी सब वाहिनी धरमेव की अवगाहिनी
 मिलि जाहि सो करि आपनौ लहि दाम संगहि थापनौ
 अरु जो गहै हथियार कौ पठवाइयौ जम द्वार कौ
 दर कूच में वन खूँदिकै पुनि सांघकी धरि रुन्धि कै
 मथुरा थकी करि आपनी करि हाथ थापउ थापनी
 बहु घौस कौ नहिं काम है ब्रजभूमि फेरि मुकाम है
 धरिसीस आयुस बाप कौ दलसाजि खण्डू आप कौ
 असवार चार हजार सौं किय कूच संग बहार सौं
 अतिदीह डंकनु देन भौ भुव मेव की पथ लेतु भौ ॥ ५

छन्द विद्वनमाल

तब खंडू मेवात खूँदिकै चलयौ साधिकौ आयो ।
 सो सुनि कै महमूद आखबत आगे मिलिबे धायो ॥ ६

* पाठांतर—सीमे

कतेसुर
 र
 भूपहिं दरे
 तपट की मर ॥ ६२

राज
 मर समाज ॥ ६३
 सार
 अपार ॥ ६४
 समाज
 सुपराज ॥ ६५
 शार
 मलार ॥ ६६

जान है
 लोकान है
 भाइ कै
 गताइके ॥ ६७ ॥ ६८

लार
 रोहार ॥ ६९
 सा
 पास ॥ ७०
 ह
 गाहि ॥ ७१

ल खण्ड

(२१६)

खंडू सेां महमूद चाखवत मिलि कै यह ठहरायो ।
आपुन करौ कूच होड़िल पै मै मेवन पर आयो ॥ ७

छन्द चपला

आवे है खंडू मेवातै रूपा ने भेजो ये घातै
मल्लारै आयो ही जानै ढोलै ना कीजो जो ठानै ॥ ८

छन्द सालिनी

खंडू धायौ भूमि मेवात आयौ आयौ आयौ चारिहु ओर छाये
मानौ दावागि डोलै रिसायौ मारयो चारयो सामुहैं जाहि पाये
काहु गधै जाइ पवै बसायौ दैकै दामैं धाम काहु बचायौ
लूट्यो कूट्यो मेव देसै भगायौ ताके आगे दुगग ऊदारखायौ ॥ ९

दोहा

आयौ राउ मलार सुत सुनि सुजान कौ नन्द
जुद्ध काज उद्धत भयो अंग अंग आनन्द ॥ १०
यह सुनिकै सूरज बली उतमैं राउ मलार
दोउन कै चिन्ता बढी जाने पूत जुभार ॥ ११

छप्पय

दोऊ उमरि अराक दुहुन उदमाद रारि हित
दोऊ जानत जीति हारि जानत न दुहुं चित
नहों जीति या जोति हारि सैं होत हारिही
दोऊ निजु निजु सुतनु लिख्यौ जलदी बिचारिही
खंडू न जङ्ग मो विन रचहु सपथ लिखी मल्लारने
हां निसां करतु ब्रजराज की रूपराम इहि कारनै ॥ १२

कुण्डलिया

त्यौही सिंह जवाहरै लिखियौ सिंह सुजान
सुत तुमकौ मो सोस की करनी सौंह प्रमान
करनी सौंह प्रमान आन दादा की किजिय
चारिहुगाततबीर भीर मोही सिर दिजिय

(२१७)

दिज्जै खंडू जान आनि मरिहै यह यौहों
दीपक रीति पतङ्ग हमैं इतनै यह त्योंहों ॥ १३

होहा

तांत सौंह सम मंत्र वस अङ्ग सुजङ्ग उमङ्ग
फिरयौ जवाहर सिंह ज्यौ पंचानन रिस रङ्ग ॥ १४

पवड़ा

तवै जवाहर सिंह दीधमैं आइयौ उततै सिंह सुजान ब्रजेस बुलाइयौ
ज्यौ असुरनकै हतन जतन हित देवता मतौ करै जगदीसई सविध सेवता

कवित्त

दीरघ में दीरघ सभा कै चारि डूंगनुकी
वैठ्यौ ब्रजराज बदनैस महाराज है
पूरन पुरुष परि पूरन विराजै साज
सूरन कौ मण्डल अखण्डित दराज है
सनमुख सूरज जवाहर लसत दोज
मानौ गुनतीन देहधारी कौ समाज है
कैधौ सिवलोचन निगम दुख मोचन कौ
कैधौ तीन देवता बिचारै सुरकाज है ॥ १६

मुक्तादाम छन्द

सभा मधि यौ उचर्यौ ब्रजराज	मनौ मृगराज दराज गराज
सुनौ तुम चारिहू डूग उदण्ड	सवै बुधिवन्त सवै बलवण्ड
कियौ इत आवनु राउ मलार	कहौ कछु आपन चित्त बिचार
कहौ कबहुं, तुमही कहि देउ	सुनौ मत मो चित कौ सुन लेउ
दियौ हरिदेव हमैं यह राज	नहीं हिय हौस रही ब्रज आज
लरे उमरावन सौं बहु बार	किए पतिसाहिन के घर द्वार
इते पर दुगा रचे हम चार	यही दिनचित्त बिचित्र बिचार
गयौ लरिकापनु ज्वानिय जोर	जुरापन जङ्ग करौ घनघोर
मिलै तिनसौं माहि आवति लाज	बिना रन और रचौं न इलाज
ब्रजेस बिचार सुन्यौ सब कान	करयो वह चारिहू डूग प्रमान १७

(२१८)

दोहा

तब सुजान बदनैस सौं अरज करी कर जोरि
महाराज मेरी सुनौ विनती सब हित होरि ॥ १८ ॥
ज्यों चूरामनि के मिलै पहिले जाइ अगार*
त्यौं काहु कै जाइवो सो क्यों करै अवार ॥ १९ ॥

सोरठा

सुनत कही बदनैस भर्यो देस भैयानु सौं
यह तौ बड़ौ अंदेस को खोटौ को बेस है ॥ २० ॥

दोहा

यह आवन मल्लार कौ बेस कसौटी मानि
कंचन से भैयानु को परख परैगी जान ॥ २१ ॥
ज्यों सब आप दक्खिनी त्यौं ता संगी जानि
जो राखनि हरि देवहै तौ तिनु की भै भानि ॥ २२ ॥
यह बानी बदनैस की सुनत सबै सिरदार
सत्य सत्य सब कहि उठे महाराज निरधार ॥ २३ ॥

सोरठा

ताही सभा मंभार बोल्यौ भोपति भाटवर
महाराज निरधार हैंनहार बानी सुनौ ॥ २४ ॥

कवित्त

हारे देखि हाड़ा मन मारे कमधुज वंस
कूरम पसारे पाइ सुनत नगारे के
केते पुर जारे केते नृपति संघारे तेई
जोरि दल भारे अज भूमि पै हंकारे के
रारे मधुसूदन सवारे बदनैस प्यारे
अज रखवारे निजु बंस अवधारे के

* पाठान्तर—आगे जाय अगार.

(२१९)

होत ललकारे सूर सूरज प्रताप भारे
तारे से छिपैंगे सब सुभट सितारे के ॥ २५

दुरद छन्द

गजा चहुवान मंत्री सिरौ बदनेस जंत्री
कहौ करि जोरि वानै यहै ताँ बेर तानै
भली महाराज है है विजै हरिदेव दैहै
करौ ततवीर सोई नहीं अब ढील होई
अवै चित, सों विचारौ भरै ज्यौं दुग्न चारौ
तहां सिरदार राखौ सिरौ मुख तैं जुभाखौ
रहै को आप पासै कहौ चित माहिं भासै ॥ २६

मधुभार छन्द

जगसिंह बैन सुनिकै सचैन बदनेस तब कहियौ सुजब ॥ २७

छन्द ताटक

रहौ चित और ना भासै जवाहर सिंह मो पासै
रहै गंजसिंह तू ह्माई करैंगे जंग ज्यौं चाही
सुजानै सीख में दैये भरथपुर बैर कौं जैये
बहादुरसिंह करि गाढ़ौ भरथौ कुम्भे रहो ठाढ़ौ
जहां सिरदार जो जानौ तहां कौ तहांई ठानौ
कहौ तो ताहि जो यानौ सबै विधि तू महा स्यानौ
पिता की सीख की बानौ सुनै सूजा सबै मानौ
कही तौ सीख है मोकौ करौ गढ़ भीतरे थोकौ
रुपा महाराज की चाहौ मलारै खेत में ढाहौ
इती कहिकै बली सूजा पिता के पास कौ पूजा
तहां सिरनाइ कै कढ़्यौ तुरंगै ता समैं चढ़्यौ
चल्यौ पुरभर्य कौं धायौ महा मन मोह सौं छायौ ॥ २८

छप्पय

पुनि महाराजधिराज चित्त बदनेस विचारिय
मोहन मोदी बोलि ताहि निज वचन उचारिय

कही किती ततधीर अन्न घत तेल नेन की
 सो सांची कहि देउ और विधि करौ हौन की
 यौ सुनत सुगंगाराम सुत चारि लाख नर नित कही
 द्वै वरस लरौ मल्लार सौं खान पान मोपर सही ॥ २९
 सो सुनि कै ब्रजनाथ ताहि स्याबास सुनायौ
 फेरि दुग दीवान निकट भज्जूहि बुलायौ
 कहौ बचन यह ताहि तयारी दारू गोला
 हाजर कहि सो मोहि तवै भज्जू यह बोला
 महराज लरौ निहचिन्त ह्वै वरसन लौं मल्लार सौं
 जो जहां चाहियै सो जिनसि पहुंचै एक हकार सौं ॥ ३०

दोहा

मोदी औ दीवान की अरज सुनत महराज
 रहौ जवाहर के निकट यहै तुमारौ काज ॥ ३१

पड़ोड़ी छन्द

यौ भाषि उठ्यौ ब्रजभूमि नाथ	गजसिंह सुमंजो गह्वै हाथ
लै निकट जवाहर सिंह आपु	गढ़ मोरचान को करन थापु
नरबाहन चढ़िय श्री ब्रजेश	हय राज जवाहर चढ़िय बेस
गजसिंह तुरंगहि है सवार	पहुंचे सुप्रथम जैपुर दुवार
तहां थपिय सब चहुंवान सूर	गजसिंह सुभाइय बल सपूर
पुनि राउर तन सब सहित सैन	सिरदार थप्यौ ब्रजराज पेन
लखि द्वार फेरि पाहार ताल	सुलतान और बहु सुभट जाल
तहँ करिय सूर बहु रेल पेल	ब्रजराज पूत थपिय दलेल
पुनि तासु परे थपि स्यामसिंग	जहँ थानसिंह सुत समर धिंग
गढ़ नैरित दीरघ दिसा घोर	लखि बासु जहां टोकैत जोर
वे उही थान थपियौ सपूत	अह बोरनराइन आपु पूत
पुर अचल द्वार भट भोर भार	थपियौ खुसालसिंह ही कुंवार
पुनि बरई बन्धा की जुपैर	धरि मेव पुञ्ज लाल जी गौर
तिहँ निकट भवानीसिंह वीर	बदनेस नन्द रक्खिय सुधीर
दरवाजै कामा बहन और	बल्लू सुत थपिय करि सजोर

वे विसन्दास पुनि किसन्दास अरु रामसेवग हूप प्रकास
 पुनि बाइव दिस गढ़ बुर्ज गाढ़ तहँ जट्ट मेव गूजर सुबाढ़
 उत्तर दुवार वरसान ओर गूजर गदाल सुत सहित जोर
 द्विज रूपराम सुत तिहीं थान मनसा अरु सुरत सहित पान
 सिरदार सवन जे दिस धनेस थपि जोधसिंह सुत श्री ब्रजेस
 गढ़ ईस कौन करि सावधान बहु सैनपती थापे अमान
 गिरिराज द्वार दिसि इन्द्र ओर सुत दयाराम जाहर सओर
 अरु अटल बिहारी सैनपाल दौलत्तराम बहु सुभट जाल
 सुत रामबलै तिहिं थान राखि यह बचन ताहि ब्रजराज भाखि
 गिरिराज द्वार पै बिहजद्वार रहि सावधान मो बचन पार
 पुनि बहज द्वार थपि जैत सिंग फौंदा तनूज ठाकुर अरिग
 थपि अग्नि दुग्ग दिसि सुभट जूह अर अऊ द्वार सिरदार व्यूह
 गढ़ दच्छिन दिस लखि धरनिजुद्ध देवीजु सिंह सिर मौर उद्ध
 लखि दच्छिन दिग कौ थून द्वार मंभासुत सबै वल अपार
 गिरि से सुभट तेऊ सुराखि तहँ कह्यौ सिरौ ब्रजराज भाखि
 हैं सबै मोरचा तो सहाइ यह जानि जवाहर चित्त लाइ
 तेरौ जु मोरचा यहै आइ तुम लेउ ताहि आपुन बनाइ
 अरु अऊ द्वार में रहौ नित्त तू जानि जवाहर आपु चित्त
 अरु रहे बाहरे मरहलानि तहँ थापि आपने भट अमानि ॥ ३२

देहा

हुकुम मानि वदनेस को सिंहजयाहर धोर
 सिखा दिसा के मरहला थपि जसवन्त सुयीर ॥ ३३
 अऊ द्वार जौ मरहला जीवारामहिं थापि
 तृतीय मरहला नौ लखा बिजैराम कौ आपि ॥ ३४
 मेदसिंह ताही निकट सारदूल कौ मन्द
 थाप्यौ थौथे मरहला सत्रुन करन निकन्द ॥ ३५
 रह्यौ मरहला पांचयौ ताल पहारहिं तीर
 थाप्यौ ऊधमा स्याम कौ जंग जुरै जौ वीर ॥ ३६

मोहठा छन्द

बुज पुर्जो धरी तोप मोटी एक मोटी तहां दोइ छोटी
 जाल जज्जाल के कोट द्वारौं बानवारे रुपाए हजारौं
 भोर कीनी सफीलौं महाही पैंडही पैंड पै द्वै सिपाही
 कांगुरौं कांगुरौं मारु मण्डो रन्ध्र रन्ध्रौं उदण्डी भुसण्डी
 अद्ध की उद्ध की मारु वण्डी दाहिनै बाहिनै चोट चण्डी
 तीर द्वै तीन लैं पार खाई डैर दै मोरचा भू रखाई
 दोइ ही दो हजारौं सवारौं रोपियौ कोट के द्वार द्वारौं
 वे रहैं बाज की पीठि चढ़े सेल समसेर तूनीर मढ़े
 चौर केते दवानै चलैया पाइ चालाक प्यादे बलैया
 यों करी चौकसी चारि घां की सत्रु के लोप कौं मैह बांकी
 मण्डि कै सैन यों चार डण्डा सावधानी दिना राति मण्डा
 लाख बन्दूक तौ लेख नीकी तयार जानौ अनोके बनो की
 दुग्ग दीघै महाराज साज्यौ वैठि दोवान में फेरि गाज्यौ ॥३७॥

छन्द सारवती

जो इहि दुग्गहिं आनि गहै सो घृत अन्न बिना न रहै
 जे नर चाकर हैं हमरे ते मन वंछित लै बगरे
 पूरव मोर अपूरव हैं ते न किहुं विधि कष्ट लहैं
 और सवै थल चौकस सौं घास वरुदहिं कौ परसौं
 दीठ परै पर दूतन कौ पैठन देउ न धूतन कौ
 यों कहिकै ब्रजराज बली जाइ बिराजिय सैन थली
 ताहिन सिंहजवाहर नै चित्त कियौ गढ़ ठाहर नै
 अस्त भयौ रवि राति परी है असवार सुगस्त करी
 दीरघ दुग्गहिं सोभ भरी मानहुं सिन्धु सुता नगरी ॥३८॥

मानक्रीड़ा छन्द

बदनु सुत चाइकै भरथपुर जाइ कै
 थपितु सिरदार कौ जतन हित रार कौ ॥ ३९ ॥

छन्द स्वागता

भाजि देस इत कौ उत आयै ताहि वास बन बीच वसायै
बीच बीच अटबी चहुं घाई जोरि मोरचन बुज बनाई
रुख रुख तर हैं नर नारी जोतिवन्त मुख चन्द उजारी
कुञ्ज कुञ्ज तर हाट बिराजै ज्यों सुरेस बन देव समाजै
नग्न रूप सब कानन कीनौ आस पास परिखा करि दीनौ
फेरि दुगग सिरदार सुथापे थान थान तिनके करि आपे
दै दिवान पद थापि सुचैना धर्म पूत मनसा रन लैना
है सिताब द्विजराज प्रमानौ ताहि सौंप सब दुगग अमानौ
रोपि तोप अरि लोपन वारी बुज बुज करिकै भर भारी
सूर पूर करियौ दरवाजै तूर दुन्दुभिन होत अवाजै
देव देव हरिदेव जहां हैं सत्रु भोति तिहि ठौर कहां हैं ॥४०

छन्द कड़पा

फेरि नववास गढ़ पास रच्छा करन थापि सिंभूतनय रनहिं रुरे
पुछ पुर द्वारजुत बुद्ध हरि गोविंदहि चारि मैयान जुत बलहिं सुरे
चारिहु ओर बन्दुक धरि घोरदों कांगुरे कांगुरे भट सुपूरे
भरथपुर साजि जहँ भरथपुर राखियौ विकट बनथान नहिं मै कछुरे
॥४१

दोहा

करि चौकस पुरमर्थ की कहौ ब्रजेस कुंवार
लरनो मोहि अनेक थल रहनौ ह्यो निरधार ॥ ४२

कुण्डलिया

लिखि पठयौ गढ़ बैरि कौ कागज सिंहसुजान
चौकस करि कुम्भेर कौ मै आवतु वा थान
मै आवतु वा थान दुगग की होइ तयारी
करौ मोरचा सबै तोपखानौ सब जारी
सब जारी करि देउ सत्रु आवतु है अठयौ
सिंह बहादुर पास सांडिया कौ लिखि पठयौ ॥ ४३

सवैया

तात समान सुजान कौ सासन मानि बहादुरसिंह बली नै
बालि सबै सिरदारनु कौ गढ़ के चहुंघोरन मोरचा दीनै
पांचहु द्वार जंजालन के भर तोप जंवरन चौकस कीनै
बैरि सजाइ गजाइ सबै विधि बैरिनु के बध के पनुलीने ॥ ४४

दोहा

अरज लिखी परताप सुत श्रीसुजान कौ फेरि
हुकुम आपके सौं इहां को करि सकै अवेरि ॥ ४५
समाचार लहि बैरि कै ब्रजपति कौ जुबराज
करौ कूंच कुंभेर कौ साजन सुमट समाज ॥ ४६

सोरठा

उततै राउ मलार जैपुरतै कूंचहि कियौ
जैसैं सलभ अपार उठै प्रजा संहार कौ ॥ ४७

कवित्त

सहस नगारे सहसनुही निसान धारे
सहस सहस जूथपति न उमण्ड की
अवनि अवास देस दुगनु भै त्रास देत
विकट निवासन उदासत घुमण्ड को
सूदन सरित शृङ्गी कुपथ सुपथ कीने
मानौ बारिधारिनै मृजादवेलि खण्ड की
उद्धत उदण्ड की मलार आपा चण्ड की यौ
आई सैन घोर कलिकाल वलवण्ड की ॥ ४८

छन्द करहेची

जयपुर द्वारहिं उठत मलारहिं असगुन मंडिय प्रवल घमण्डिय
गदगद बानिय कढ़त कहानिय बिनु अहलादहिं सब जन वादहिं
गहवर आइय दगजल न्हाइय मुख रुचि उड्डिय चित जिम गुड्डिय
दग जब वामहिं फरक हिलावहिं सब तन कमिय उड्डरज भण्डिय

(२२५)

रजकु मलीनहिं वसमनु लीनहिं सनमुख आइय रज तिय धाइय
पवन मयानक चलितिहि थानक पलचर आवत सनमुख धावत
गिध रव रहिदय धुज पर चढिदय हय गज धुकत गवनहिं चुकत
गगनहिं चिल्लिय गनकरि टिल्लिय अगिनिसधूमहिं लखत चमूमहिं
जटिल सुतेलिय उखटत मेलिय सगुन सुदच्छिन उलटि सुलच्छिन
इन उतपातन गनिय सुजात न सब अबहेलिय रन मद झेलिय
वस परिकालहिं भवत सुभाळहि ॥ ४९

दोहा

अनु 'कन तै' लख मन करै लख मन अनु सम होइ
यह इच्छा जगदीस की निजु मन घटती कोइ ॥ ५०

छन्द नील

डङ्कुनि देत अतङ्कुनि सङ्कुनि दूरि धरै
गोमुख तूरनि पूर चहुँदिस भीति भरै
वाज चढ़े गजराज दराजनु धावत भे
चावत तेज रचावत दूँद मचावत भे
अंबर धूरि अडंबर कंबर पूरि दण
स्याम घटा समरूप पटा कर विज्जु लण
पवय सवय दवि करे चहुँघां दगरे
कन्दर कन्दर अन्दर वन्दर से वगरे
सुन्दर मन्दिर डाइ विलन्द रसाल हरे
तेरि महीरुह वोरि किते पुर राख करे
तकि तिन्है जिय सकि भय नर चकित से
जकित सेरु ससकित से अति थकित से
भालनु के अति जाल मनौ जल धार धरा
भूष जवासिनु जारि उदारि उजारि करा
या विधि सौं जुग कूच मलार दवार किये
बारि उदारि उजारि किते पुर छाँडि दिये ॥ ५१

सोरठा

तहाँ फेरि मलार रूपराम द्विज सौं कही
तैं कछु करौ सुमार या दलतैं दस गुन करौं ॥ ५२

छन्द हारी

आतङ्क बानी मलार गानो रूपा सुजानी सोचिन्ह आनी
तासौं पुरानी गाथा वषानी ऐसौ गुमानी सङ्का न मानी
बोलीयो मलारै ताहो सुवारै ॥ ५३

प्रमानिका

बड़ौ प्रतापु आपु कौ	उथाप भूमि थापु कौ
सवार चारि लाखहु	समेटि जङ्ग भाखहु
तऊ न दुगग तोरिहौ	वृथा अनीक जोरिहौ
किलेजुदार या घरा	सुजङ्ग जीतिकौ घरा
छ कोटि सैन कौ पतो	करी जुतासु की गती
प्रसङ्ग कान दै सुनौ	न झूठ ता समैं गनौ
मलार बोलि आमजू	कहौ सुरूपराम जू
सुरूपराम ता घरी	करी कथा उजागरी ॥ ५४

पढ़डो छन्द

सतजुग मदि मुचकुन्द भूप	इछ्वाकु वंस उद्धत अनूप
तिन कियौ देवतनु को सहाय	करि जुद्ध दैत्य मारे अघाय
सब असुर वंस करि खण्ड खण्ड	सुर थान थान सुरराज मण्ड
तब सबै देवता हौ प्रसन्न	मुचकुन्दहि भाषिय धन्न धन्न
वर माँगि भूप सो होइ चित्त	तैं करे बाहुवल हम सुचित्त
सुनि भूप कही वर एहि देहु	चित्त वासुदेव सौं होइ नेहु
एक और माँगियतु वर दयाल	मो नैन बीच निद्रा कराल
मैं सोयो चाहत बहुत काल	निर्विघ्न कीजिए लखि हवाल
सुनिकै नरेश के ए सुबैँन	वर दोनो देवन हौ सचैँन
जुग तीन अन्त लौं सेइ ईस	नहिं कोइ जगावै विसैं वीस

(२२७)

अरु आनि जगावै जो भुवाल तो दृष्टि पाइ पावै सुकाल
पुनि वासुदेव कौ दरस होइ हो महाभागवत रहौ सोइ
यह देववृन्द तैं बरहिं पाय सिर नाइ फिरौ मुचकुन्द राय
लखि मथुरा तैं दच्छिन दिसाहि चामिल तरङ्गिनी तट सराहि
तहं अचल कन्दरा लखि इकन्त छितिकन्त वहां सोयो सुखंत॥५५

दोहा

सो नृप सोयौ कन्दरा बहुत काल गए बीत
या व्रज की रक्षा करन प्रगटे कृष्ण अभीत ॥ ५६
सोधि सोधि या धरनि में मारे असुर उदण्ड
कालजमनु काविल भयौ दैत्यराज परचण्ड ॥ ५७
दिसा आठहू जोति कै जुद्ध अघानौ नाहिं
वैठि मेरु की सिखर पै रन सोचत मन माहिं ॥ ५८
तहां गगन मग आइयौ मगन कलह को रूप
गान करत हरि के गुननु नारद भेष अनूप ॥ ५९

छन्द लभङ्गी

ससि असंलटूरी चहुयां पूरी जोति समूरी भाल लसैं
दृग दुति भपकौंहों भौह बढौंहों नाक चढौंहों अधर हँसैं
श्रुति हरि रस प्यासे कुण्डल भासे रसना खासे वचन वसैं
कम्बुक गल चञ्चल तुलसी सञ्चल वकला अञ्चल फँट कसैं ॥ ६०
कर कन्धहि वीना तार नवीना गति जति भीना धुनि करतौ
उर उदरु लट्यौ सो लङ्क छट्यौ सो गति उचट्यौ सो डग धरतौ
दुति सरद घटा सो तिलक छटा सो जगत उदासी राग रयौ
रिषिराज पुरानौ हरि मन जानौ निपट सयानौ आइ गयौ ॥ ६१
लखि कालजमन नै चलि अगमन नै रोकि गमन नै वैन कह्यौ
तुम कौन कहाँते अति अतुराते कहौ सुहांतैं गगन चह्यौ
सुनिकै मुनि भाषी नारद आषी त्रिभुवन साषी फिरत रहैं
पाताल निवासी व्यौम विलासी भूमि प्रकासी सांचु कहैं ॥ ६२
सुनि असुर जुनीके वैन मुनी के बन्दन नीकै चित्त कर्यौ
दे प्रभु सतनामी त्रिभुवन गामी में रन कामी यों उचर्यौ

(२२८)

तुम ने कहुं चाह्यौ जगत सराह्यौ नृपति उमाह्यौ मोहि कह्यौ
तासौ रन मंडौ दण्ड उदण्डौ निज बल खंडौ देखि रहैं ॥ ६३

सोरठा

सुनि मुनि बोल्ह्यौ वैन कालजमन सांची कहैं
तो सम जुद्धहि दैन मथुरा में श्रीकृष्ण हैं ॥ ६४
यह कहि कै मुनि बात बातरूप मग जात भौ
कालजमन के गात हरषि उठे रन लैन कैं ॥ ६५

छप्पय

कालजमन तिडिं काल लाल लोचन कराल तन
अति उताल चलि चाल ढाल किरवाल धारि पन
छह करौर गज बाज जोरि मुच्छन मरोरि मुख
क्रिय पयान घन के समान नीसातु स्यामरुख
दसहू दिसान खलभल परिय थलजल जल दल दल करिय
वहु जमन जाल विकराल बल ज्यौं अकाल ज्वाला भरिय ॥ ६६

छंद वगहंस

कालिजमन	जोरिजमन	साजिसवन	घाइघवन
अचल सकल	खखल भखल	भवन भवन	तेज तवन
अक सक	थक पक	थरथरात	अदित जात
धूरि मगन	आस गगन	इन्द्र नगल	छोडिगल
जमन राज	बल दराज	समर चाह	अति उछाह
चलत चाल	अति उताल	परवर पुर	आइ असुर
कृष्ण पास	तबहि दास	दिय पठाइ	रन सुनाइ ॥ ६७

दोहा

जमन राजकौ जमन वह मथुरा आयौ धाइ
कालजमन कौ आइवौ कृष्ण दियौ सुनाइ ॥ ६८
और कह्यौ जो हो कह्यौ जमनराज रन काज
घने दैत्य तैने हने काढ़ौ बैर सुभाज ॥ ६९

हरि छन्द

सुनि दूत वचन बोले ब्रजचन्द वैन खोले
 हम जुद्ध कौ न जानै नहिं सख हाथ ठानै
 हम कौन असुर मार्यौ तुमने जु रोस धार्यौ
 जो आपु हतन आवै तातै दई बचावै
 ताकौ कहा सुकीजै हमकौ न दोस दीजै
 हम नन्द गोप द्वारै बछरा सुगाइ चारै
 दधि दूध मांगि पायै नवनीत चोरि खायै
 कबहुं न धाम धापे गोपीनु भच्छ आपे
 मुनि मात तात द्वारै हम आपु पेट पारै
 नहिं गाँउ ठाँउ कोऊ कहियौ जु आपु सोऊ
 तिनसौं सु जुद्ध कैहौ जस कौन भूमि पैहौ
 अरु जो न जमन मानै तौ ठीलहु न ठानै
 आप अतिथ्य पासै कैसै करौ निरासै
 धरि कान कृष्ण बानी उन दैत्य सों वखानी
 इत कृष्ण वृष्णि जामै लोला ललाम खामै
 सोई मतौ उपायै जन ज्यौ न खेद पामै
 परिवार कौ बचावै अरु दुष्ट कौ खिपावै
 लरनौ बिचारु कै कै बलिराम मंत्र दै कै
 यह भाषि उठे दाऊ लखि जंग में अगाऊ
 जग कन्त है इकन्तै कोनौ विदा अनन्तै
 चित चिन्त विश्वकर्मा लोनौ बुलाइ धर्मा
 श्री कृष्ण जो बिचार्यौ तासौं मतौ उचार्यौ
 ततकाल सिन्धु कूलै मथुरा समान भू लै
 रचि पुरी एक नोकी मनि जटित हेम ही की
 जा ओर धाम जाकौ तैसो बनाइ ताकौ
 नहिं नून भाँति काहु बीथी अगार ताहु
 जमुना समान रंगै रचि गोमती तरंगै
 पल एक माहिं कीजै फिर मोहि सोधु दीजै
 सुनि विश्वनाथ बानी विसुकर्म सोइ मानी ॥ ७०

दोहा

आयुस लै श्रीकृष्णकी विश्वकर्म ता बार
इच्छा माफक रचि पुरी मथुरा की उनहार ॥ ७१
सो सुनिकै बसुदेव सुत माया जोग संभारि
तासैं यह आशा दई सर्व जनै तहँ धारि ॥ ७२
हलै चलै कौऊ न जन खेद न पावै रंच
सब जादव ह्यांते उहां पहुंचै बिना प्रपंच ॥ ७३
रजधानी जादवन की बिना मथुरिया लोग
पहुंचाय द्वारावती छिन मै माया जोग ॥ ७४
सोए ह्यां जागे उहां जादव छप्पन कोट
या ब्रज की भय हरन कौ रहे कृष्ण बलि जोट ॥ ७५

मारु छन्द

स्याम राम सोइ दोइ धाम धाम चैन होइ ॥ ७६

निगालिका

प्रभात भौ सुहात भौ हलो छलो जगे बलो
तिहीं घरी उठे हरी न देख कछु करी ॥ ७७

कवित्त

पैंठि बांध्यो मुकट समैटि घुंघरारे बार
कुण्डल चढ़ाय कान कलगी सुघट की
जांधिया जकरि कै अकरि अंग राग करि
कटि मै लपेटी कसि पेटी पीतपट की
भृगु पद अंक डाल सकति श्रिया कौ चिन्ह
सूदन सनाह बनमाल लाल टटकी
कोटिन सुभट की निहारि मति सटकी
सुसुन्दर गुपाल की धरनि भेष भटकी* ॥ ७८
मद भरे लोचन विसद अंग आभा चारु
लच्छ लच्छ हंस की सी सोभ अवतंस की

(२३१)

ताल अंक उरपै बिसाल नीलपट फँट
सत्रु कोन संस संस सक भरि कंस की
आयुध अनेक रेवती के कन्त जूके तऊ
सायुध भए हैं हल मूसल प्रसंसको
जमन के वंस की निवंस की बिचारि चित
वसुदेव अंसकी है लाज जदुवंस की ॥ ७९

छन्द नीसानी

सज्जि खड़े वसुदेव देव घर मण्डन हारे
कालजमन तिहिं कालही आया ललकारे
बरुन दिसा खुर खेह सौं हई घन अन्धी
स्याम निसानी सै छई डंकौ धुनि बन्धी
वेखि तिन्हें श्रीकृष्ण जो हलधर सै अक्खी
इसदे लरने दी क्रिया अस्सी दिल रखी
अण्य रहौ पुरद्वारनू चौकस चहुंखण्डे
हुण वेखां दल जमनदे केहे परचण्डे
एगलां करि स्याम जो परि पूरन साई
हुवे पुरी सै नाहले जमनौ अगवाई
उस बेलादी स्यामदी भानै नौ पैठी
कोटि कोटि मनमथ दी गहि जौम अमैठी
पक्ष पक्ष प्रिय को प्रभा अवतंस प्रकासै
नव नीरद घन तड़ित ज्यौं पीताम्बर भासै
सुर धनुसी गोपाल ही बनमाल बकौही
मुक्तावलि वगपंतिसी मुभ दगनि लगौहीं
अङ्ग अङ्ग मनि जटित के भूषन जु प्रकासै
मोर पच्छ सिरमोर ज्यौं निर्तन चहुंघां सैं
भौहैं पिकसी चकि रहौ किङ्किनि धुनि कूकै
सीत पवन मुसिकान की आनन्दित झूकै
पांचजन्य धुनि सङ्ग की गजनि मंहि पूरी
उथ्यौं गोमुख वांकिया पटहा पन तूरी
कालजमन विकराल ज्यौं ग्रीष्म कौ तापैं

ताहि बुझावन नू उठे घनस्याम सु आपैं
 तिथ्यौ आया जमन भो बाजी करि तत्ता
 ज्यौ पञ्चानन जूह लै पञ्चानन मत्ता
 वेखि जमननू कृष्ण जो पही गल अक्खो
 रक्खु खड़ी इस सैन नू तन ज्यौ अमरक्खो
 दुन्दजुद्ध अस्सी तुसी भुज दण्डी मण्डै
 लरने आया तू वली लोकां क्यौ खण्डै
 तेही जानति अङ्ग मै तेही जग जोहैं
 उतरि खड़ा हो खेत मै करु विक्रम सोहैं
 ए गल्लां सुनि जमन कै कोहानल उठो
 तजि तुरङ्ग कुहा मही बन्धै दड़ मुट्ठी
 सरई अङ्गा अङ्ग मै सिरताज ढढौही
 असित रङ्ग डाढ़ी बड़ी करि अखड कढौही
 अप्रमान हस्थीन दा विक्रम बड़ काया
 करि कुलांट अन्तक मनौ किलकार सुधाया
 कोल आइ श्रीकृष्ण कै ए वचन उघाड़े
 कंस मल करि कुवलिया तै ही जु पछाड़े
 वो वल तै डा अज्ज मै इस जङ्ग अखाड़े
 कढौगा इस हस्थ सै भेखैं भट साड़े
 यौ कहिकै गज्जा वली वारिद ज्यौ वज्जा
 तिसनू तिसी फराक मै गिरिधरन तरज्जा
 अरे जमन इस लोक मै सो तन वल बड़ा
 वो तू अज्ज उरज्जिहै अन्तक को उट्टा
 अज्ज अप्प दे विक्रमै भठ कथन वाले
 जङ्ग न जित्तैगे कधी विन फैकै भाले
 आउ करै कथन कहा मिजमान घली का
 मधु मुर केसी कंसदा लेजाह सली का
 इसी गल्ल धरि कन्न मै जमना हो तत्ता
 मसकि ओठ दल्लौ तल्लै दीदैं कै रत्ता
 हिक पणधरि अमानू कर मुक सम्हाला

(२३३)

तिस दे पैर धमक सै भुवमण्डल हांला
हाहाकार लोका पड़ा देवां घर सल्ले
वोहि वोहि देवी रटें साईं तुभ पल्ले
कालजमन दे मुकनू श्रीकृष्ण चुकाया
दूध दही लुटि चक्खना आड़ा सो आया
जमन हथ्य खाली करा वलि जी के भाई
छल्ल सम्हालि उछल्लि कै कीती चपलाई
उस बेलां गोपाल जो दिल मांहि विचाड़े
इसदा काल नहीं कहा विधि हथ्य असाड़े
इसैं भक्ति मुचकुन्द दी लोचनदी भर सैं
भस्म करावा निमिष में चलना दरवर सैं
होर असाड़े दर सदा भुक्खा मुचकुन्दा
हिक्क काज में दो करीं मेड़ा वो बन्दा
पेसो चित विचार कै कर थाप सम्हाली
कालजमन के गाल पै असिनी सी घाली
लखि गज्जे सुर सव्वही अछे जी अछे
असुर अङ्ग घुम्या कछू गोपीपति गच्छे
कालजमन पल हिक्क में मूरछ सैं चेता
वैखि भगा श्रीकृष्ण नू हो लेता देता
बन्धै मुट्ठी बज्जी सी भगगति सन्नाले
हंसि बोल्या तथि कान्ह जी आले वे आले
जमन जोर कर धाइया तन भरत जकन्दे
मानौ राह सपट्टिया भक्कन नू चन्दे
कही लपट दै भपट दे दोनो ही चल्ले
मुचकुन्दा दे गोइ रे उड्डे जां छल्ले
सूता था जिस मेरुदी कन्दर दे अन्दर
तिथ्यौं पैठे स्याम जी छलवली लुकन्दर
सूता लखि मुचकन्द नू ठकि निजु पीतंबर
अलष अलष ही हो गय गहि रूप धरंबर
उसठां आया जमन भी अम्बर लखि भरमा

(२३४)

तव लक्ष्मां वो जादवां सूता ज्यौं घरमा
जुष्टि जङ्ग में भगना निन्द्रा तुभ केही
खेल न होवै जुझना सुण्यां दी देही
धौं कहि कै मुचकुन्द कौ पैरौं से घत्ता
सो जग्गा हग लाल सैं ज्यौं जवा भरत्ता
तिसदी चाहन सैं कढ़ी दाहनि उस वेली
कालजमनि तिसनै किया खक्खा दी डेली *

दोहा

दरसन लहि गोविन्द को महाभाग मुचकुन्द
करि प्रनाम लाग्यो करन अस्तुति बुद्धि विलन्द ॥ ८१

छाप्य

जैजै श्रीव्रजचन्द नन्दनन्दन अनन्द निधि ।
सगुन सच्चिदानन्द छन्द बन्दन सुखन्द विधि ॥
वृन्दारकवृन्दनि विलन्द जयमन्दिर दायक ।
जै वृन्दाबन पुलिन रचित लीला रुचि लायक ॥
जगमगत सुजंस चौदह भुवन सेवक को सङ्कट हरन ।
जै कीजै नृपति व्रजेन्द्र की † जै श्रीगोवर्धन धरन ॥ ८२

इति श्री सम्पूर्णम्

* इस्त लिखित प्रति में यहीं पर 'इति' है परन्तु छापे वाली में नीचे लिखा
दोहा और छाप्य भी है यही छाप्य हाथ की लिखी पुस्तक के साथ लगी हुई
सोतीराम रचित वंशावली में भी है ।

† पाठान्तर—जै रत्ननाथ जटुनाथ जय जै जै गोवर्धन धरन ।
(यह पाठ छापे की पुस्तक का है)

